

MAPSY 06



वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

Personality: Theories and Assessment

व्यक्तित्व: सिद्धांत एवं मूल्यांकन



वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

पाठ्यक्रम अभिकल्प समिति

संरक्षक प्रो. अशोक शर्मा कुलपति वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा	अध्यक्ष प्रो. एल.आर. गुर्जर निदेशक (अकादमिक) वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा
---	--

संयोजक एवं सदस्य

** संयोजक डॉ. अनिल कुमार जैन सह आचार्य एवं निदेशक, शिक्षा विद्यापीठ वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा	* संयोजक डॉ. रजनी रंजन सिंह सह आचार्य एवं निदेशक, शिक्षा विद्यापीठ वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा
---	--

सदस्य

प्रो. (डॉ) एल.आर. गुर्जर निदेशक (अकादमिक) वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा	प्रो. एच. बी. नंदवाना निदेशक, सतत शिक्षा विद्यापीठ वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा
प्रो. विजयलक्ष्मी चौहान (सेवानिवृत्त) मनोविज्ञान विभाग मोहनलाल सुखाडिया विश्वविद्यालय, उदयपुर	प्रो. आशा हिंजर (सेवानिवृत्त) मनोविज्ञान विभाग राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर
प्रो. दामीना चौधरी (सेवानिवृत्त) शिक्षा विद्यापीठ वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा	डॉ. रजनी रंजन सिंह सह आचार्य, शिक्षा विद्यापीठ वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा
डॉ. अनिल कुमार जैन सह आचार्य, शिक्षा विद्यापीठ वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा	डॉ. कीर्ति सिंह सहायक आचार्य, शिक्षा विद्यापीठ वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा
डॉ. पतंजलि मिश्र सहायक आचार्य, शिक्षा विद्यापीठ वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा	डॉ. अखिलेश कुमार सहायक आचार्य, शिक्षा विद्यापीठ वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

*डॉ. रजनी रंजन सिंह, सह आचार्य एवं निदेशक, शिक्षा विद्यापीठ 13.06.2015 तक

** डॉ. अनिल कुमार जैन, सह आचार्य एवं निदेशक, शिक्षा विद्यापीठ 14.06.2015 से निरन्तर

समन्वयक एवं सम्पादक

समन्वयक	विषय वस्तु एवं भाषा संबंधी सम्पादन
डॉ. अनिल कुमार जैन सह आचार्य, शिक्षा विद्यापीठ वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा	डॉ. अनिल कुमार जैन सह आचार्य, शिक्षा विद्यापीठ वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

इकाई लेखन

1 डॉ. अनिल कुमार जैन (इकाई 1,2,3) सह आचार्य एवं निदेशक शिक्षा विद्यापीठ व.म.खु.वि.वि., कोटा	2 डॉ तरुण कुमार शर्मा (इकाई 4,5,6,7) मनोविज्ञान विभाग, एमएलएस यूनिवर्सिटी, उदयपुर (राजस्थान)
3 डॉ वर्षा जोशी (इकाई 8,9,10) मनोविज्ञान विभाग, एमएलएस यूनिवर्सिटी, उदयपुर (राजस्थान)	4 डॉ रेखा पालीवाल (इकाई 11,12) मनोविज्ञान विभाग गुरुनानक गर्ल्स पीजी कॉलेज, उदयपुर
5 डॉ रवनीत हांडा (इकाई 13,14,15,16) मनोविज्ञान विभाग, एमएलएस यूनिवर्सिटी, उदयपुर	

आभार

प्रो. विनय कुमार पाठक

पूर्व कुलपति
वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

अकादमिक एवं प्रशासनिक व्यवस्था

प्रो. अशोक शर्मा

कुलपति
वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

प्रो. करण सिंह

निदेशक
पाठ्य सामग्री उत्पादन एवं वितरण प्रभाग
वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

प्रो .एल.आर .गुर्जर

निदेशक (अकादमिक)
वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

डॉ. सुबोध कुमार

अतिरिक्त निदेशक
पाठ्य सामग्री उत्पादन एवं वितरण प्रभाग
वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

उत्पादन 2015, ISBN : 978-81-8496-510-0

इस सामग्री के किसी भी अंश को व.म.खु.वि.वि., कोटा, की लिखित अनुमति के बिना किसी भी रूप में अन्यत्र पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है। व.म.खु.वि.वि., कोटा के लिए कुलसचिव, व.म.खु.वि.वि., कोटा (राजस्थान) द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।



वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

अनुक्रमणिका

इकाई सं.	इकाई का नाम	पेज नं.
1	व्यक्तित्व का उद्गम , अर्थ, प्रकृति एवं विशेषताएं, व्यक्तित्व के उपागम (प्रकार एवं शील गुण उपागम)	1
2	“व्यक्तित्व की अवधारणा एवं व्यक्तित्व विकास, व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाले कारक”	23
3	व्यक्तित्व का ऑकलन, व्यक्तित्व के परीक्षण, व्यक्तित्व के प्रमुख मुद्दे	45
4	व्यक्तित्व के मनोगत्यात्मक सिद्धान्त	58
5	व्यक्तित्व के सामाजिक मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त	71
6	व्यक्तित्व के अधिगम सिद्धान्त (पावलोव एवं स्किनर), मानवतावादी एवं आत्म सिद्धान्त (मैसलो, रोजर्स)	85
7	मिलर एवं डोलार्ड का व्यक्तित्व सिद्धान्त	98
8	व्यक्तित्व के शीलगुण एवं प्रकार उपागम, शीलगुण एवं प्रकार उपागम में अंतर	105
9	ऑलपोर्ट की व्यक्तित्व शीलगुण सिद्धान्त, टाइप ए तथा बी व्यक्तित्व सिद्धान्त: व्यक्तित्व के शीलगुण उपागम	124
10	आइजेन्क का व्यक्तित्व सिद्धान्त तथा व्यक्तित्व का बिग फाइव कारकीय सिद्धान्त	138
11	व्यक्तित्व मूल्यांकन के उपागम : आत्मन, प्रेक्षण व व्यवहारात्मक मूल्यांकन में प्रतिक्रिया की समस्या	146
12	व्यवहार मूल्यांकन एवं व्यक्तित्व के अन्य मापन	161
13	व्यक्तित्व विकृतियों का परिचय एवं प्रकार	176
14	व्यक्तित्व एवं मनोविकृति विज्ञान: मनोस्नायुविकृति के प्रकार, कारण एवं उपचार	188
15	व्यक्तित्व एवं मनोविकृति विज्ञान: मनोविकृति कारण एवं उपचार	208
16	व्यक्तित्व एवं मनोविकृति विज्ञान: समकालीन उपागम एवं मनोचिकित्सा-व्यवहारात्मक, मनोविश्लेषणात्मक तथा मानवतावादी उपागम	222

इकाई - 1

व्यक्तित्व का उद्गम , अर्थ, प्रकृति एवं विशेषताएं,
व्यक्तित्व के उपागम (प्रकार एवं शील गुण उपागम)

Origins, Definitions, nature and Characteristics of personality, approaches to personality: type and trait

इकाई की रूपरेखा

- 1-1- प्रस्तावना
- 1-2- उद्देश्य
- 1-3- व्यक्तित्व का उद्गम
- 1-4- व्यक्तित्व के अर्थ एवं प्रकृति
- 1-5- व्यक्तित्व की परिभाषाएं (अर्थ)
- 1-6- व्यक्तित्व के पक्ष
- 1-7- व्यक्तित्व की विशेषताएं
- 1-8- व्यक्तित्व के प्रकार उपागम
- 1-9- व्यक्तित्व के गुण उपागम
- 1-10- सारांश
- 1-11- शब्दावली
- 1-12- स्वमूल्यांकन हेतु प्रश्न
- 1-13- सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1-1 प्रस्तावना

यद्यपि व्यक्तित्व शब्द बहुत व्यापक है और व्यक्तित्व शब्द का प्रयोग हम विभिन्न अर्थों में किया करते हैं। जब हम किसी व्यक्ति के बारे में कहते हैं 'मोहन का व्यक्तित्व अच्छा है' तब प्रायः इसका अर्थ साधारण जन शारीरिक रचना, सुन्दरता इत्यादि से लेते हैं, कुछ लोग किसी व्यक्ति के विचारों के प्रकटीकरण के आधार पर उसे अच्छा कहते हैं। कुछ उसे अन्य के साथ किए जाने वाले व्यवहार के आधार पर अच्छा कहते हैं कुछ लोग उससे यह सब गुण देखना चाहते हैं अर्थात् 'व्यक्तित्व अत्यन्त व्यापक शब्द है जिसे हमें उसके उद्गम से समझने की आवश्यकता है। तभी हम इसकी प्रकृति, विशेषताओं को उसके उपागमों को समझ सकेंगे। प्रस्तुत अध्याय इन्हीं सभी मुद्दों पर प्रकाश डाल रहा है।

1-2- उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप :

- यह जान पायेंगे कि 'व्यक्तित्व' का उद्गम कैसे हुआ?
- व्यक्तित्व का अर्थ एवं प्रकृति जान पायेंगे।
- व्यक्तित्व की विभिन्न विशेषताओं को समझ सकेंगे।
- व्यक्तित्व के विभिन्न प्रकार उपागमों के बारे में जान पायेंगे।
- व्यक्तित्व के विभिन्न गुण उपागमों के बारे में जान पायेंगे।

1-3 व्यक्तित्व का उद्गम (Origins of Personality)

व्यक्तित्व शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के 'परसोना' (Persona) शब्द से हुई है। 'परसोना का अर्थ कृत्रिम या मिथ्या आभास (False appearance) है। प्रारम्भ में व्यक्तित्व सम्बन्धी अवधारणा इसी पर आधारित थी। व्यक्ति की बाहरी वेशभूषा, बाहरी आभास एवं शारीरिक बनावट को ही व्यक्तित्व का नाम दिया गया जबकि वास्तविक स्थिति इससे भिन्न है। इस विचारधारा को सतही दृष्टिकोण (Surface view) का नाम दिया जा सकता है। इस दृष्टिकोण का आशय स्पष्ट है कि व्यक्ति जैसा लगता है वही उसका व्यक्तित्व (Personality is as one appears) है। वाटसन तथा शरमैन आदि ने इसी मत का समर्थन किया है।

व्यक्तित्व की व्याख्या के लिए जो दूसरा दृष्टिकोण सामने आया उसे तात्विक दृष्टिकोण (Substance view) कहते हैं। यह दृष्टिकोण व्यक्ति के आन्तरिक गुणों को महत्व देता है। वारेन एवं कारमाइकल इसके समर्थक हैं। इनके अनुसार विकास की किसी भी अवस्था में व्यक्ति का समग्र मानसिक संगठन ही उसका व्यक्तित्व है। इसमें व्यक्ति के चरित्र के सभी आयाम, बुद्धि, स्वभाव, कौशल, नैतिकता एवं अभिवृत्तियां इत्यादि, जो कि विकासात्मक प्रक्रियाओं के कारण प्रदर्शित होती हैं, सम्मिलित हैं।

इस प्रकार स्पष्ट हो रहा है कि व्यक्तित्व की व्याख्या या तो बाह्य आभास या स्वाभाविक गुणों के आधार पर करने का प्रयास लम्बे समय तक होता रहा है। परन्तु इनमें से कोई भी दृष्टिकोण उपयुक्त नहीं है। वास्तव में व्यक्ति के अन्तर्गत व्यक्ति की सम्पूर्ण विशेषता आती है उनमें पारस्परिक समन्वय पाया जाता है। समन्वय के अभाव में व्यक्ति की विशेषताओं का उपयोग तथा महत्व घट जाता है। क्योंकि व्यक्तित्व का प्रमुख कार्य समायोजन स्थापित करना है और इसके लिए समन्वय आवश्यक है।

सिसरो द्वारा उल्लेखित अर्थ - जैसे जैसे समय बीतता गया, वैसे वैसे पर्सोना (Persona) शब्द का अर्थ परिवर्तित होता चला गया। ईसा पूर्व पहली शताब्दी में रोम के प्रसिद्ध लेखक कूटनीतिज्ञ सिसरो (Persona) ने उसका प्रयोग चार अर्थों में किया - (1) जैसा कि एक व्यक्ति दूसरे को दिखाई देता है, पर जैसा कि वह वास्तव में नहीं है, (2) वह कार्य जो जीवन में कोई करता है, जैसे कि दार्शनिक (3) व्यक्तिगत गुणों का संकलन, जो एक मनुष्य को उसके कार्य के योग्य बनाता है और (4) विशेषता और

सम्मान, जैसा कि लेखन शैली में होता रहा है। इस प्रकार तेरहवीं शताब्दी तक पर्सोना शब्द का प्रयोग विभिन्न अर्थों में होता रहा।

1-4 व्यक्तित्व के अर्थ एवं प्रकृति

व्यक्तित्व सम्बन्धी उपर्युक्त धारणाएँ उसके अर्थ की पूर्ण व्याख्या नहीं करती है। 'व्यक्तित्व' में एक मनुष्य के न केवल शारीरिक गुणों का वरन् उसके सामाजिक गुणों का भी समावेश होता है, किन्तु इतने से भी व्यक्तित्व का अर्थ पूर्ण नहीं होता है। कारण यह है कि यह तभी सम्भव है, जब एक समाज के सब सदस्यों के विचार, संवेगों के अनुभव और सामाजिक क्रियाएं एक सी हों। ऐसी दशा में व्यक्तित्व का प्रश्न ही नहीं रह जाता है। इसीलिए, मनोवैज्ञानिकों का कथन है कि व्यक्तित्व - मानव के गुणों, लक्षणों, क्षमताओं, विशेषताओं आदि की संगठित इकाई है। मन के शब्दों में - "व्यक्तित्व की परिभाषा, व्यक्ति के ढाँचे, व्यवहार की विधियों, रूचियों, अभिवृत्तियों, क्षमताओं, योग्यताओं और कुशलताओं के सबसे विशिष्ट एकीकरण के रूप में की जा सकती है।"

"Personality may be defined as the most characteristic integration of an individual's structure, modes of behavior, interest, attitudes, capacities, abilities and aptitudes"

आधुनिक मनोवैज्ञानिक व्यक्तित्व को संगठित इकाई न मानकर गतिशील संगठन और एकीकरण की प्रक्रिया मानते हैं। इस संबंध में शार्प व शगलर ने लिखा है - "जटिल पर एकीकृत प्रक्रिया के रूप में व्यक्तित्व की धारणा आधुनिक व्यावहारिक मनोविज्ञान की देन है।"

"The concept of personality as complex but unified process is contribution of modern empirical psychology"

1-5- व्यक्तित्व की परिभाषाएं (अर्थ)

'व्यक्तित्व की कुछ आधुनिक परिभाषाएँ दृष्टव्य है -

बिग व हण्ट - "व्यक्तित्व एक व्यक्ति के सम्पूर्ण व्यवहार प्रतिमान और इसकी विशेषताओं के योग का उल्लेख करता है।"

"Personality refers to the whole behavioral pattern of an individual-to the totality of its characteristics." – Bigge & Hunt

ऑलपोर्ट - "व्यक्तित्व व्यक्ति में उन मनोशारीरिक अवस्थाओं का गतिशील संगठन है, जो उसके पर्यावरण के साथ उसका अद्वितीय सामंजस्य निर्धारित करता है।"

"Personality is the dynamic organization within the individual of those psycho-physical systems that determine the unique adjustments in his environment." - Allport

ड्रवर -”व्यक्तित्व शब्द का प्रयोग , व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक नैतिक और सामाजिक गुणों के सुसंगठित और गत्यात्मक संगठन के लिए किया जाता है, जिसे वह अन्य व्यक्तियों के साथ अपने सामाजिक जीवन के आदान प्रदान में व्यक्त करता है।”

“Personality is a term used for the integrated and dynamic organization of the physical, mental, moral and social quality of the individual, as that manifests itself to other people, in the give and take of social life.” Drever

व्यक्तित्व, व्यक्ति के विषय में एक समग्र धारणा है। डेविल ने कहा है - “व्यक्तित्व व्यक्ति के संगठित व्यवहार का सम्पूर्ण चित्र होता है।” (A man’s personality is the total picture of his organized behavior. Deshiell) बीसौंज एवं बीसौंज की धारणा है - ‘ व्यक्तित्व, मनुष्य की आदतों, दृष्टिकोणों तथा विशेषताओं का संगठन है। यह जीवशास्त्र सामाजिक तथा सांस्कृतिक कारकों में संयुक्त उपक्रम द्वारा उत्पन्न होता है।”

“Personality is the organization of person’s habits, attitudes and traits arises from the interplay of biological social and cultural factors.” – Biesonj and Biesonj

मन ने कहा है -”व्यक्तित्व एक व्यक्ति के व्यवहार के तरीकों, रूचियों, दृष्टिकोणों, क्षमताओं, योग्यताओं तथा अभिरूचियों का सबसे विशिष्ट संगठन है।”

“Personality may be defined as the most characteristic integration of an individual’s structure, modes of behavior, interest, attitudes, capacities, abilities and aptitudes.” – N.L. Munn

1-6- व्यक्तित्व के पक्ष

व्यक्तित्व के बारे में निम्नांकित पक्षों का उल्लेख किया जा सकता है -

- 1- **गत्यात्मक संगठन (Dynamic Organization)** - यह अवधारणा यह इंगित करती है कि व्यक्तित्व प्रतिमान सतत् रूप में विकसित तथा परिवर्तित होते रहते हैं ताकि समायोजन स्थापित होता रहे। अर्थात् व्यक्तित्व गत्यात्मक होता है।
- 2- **संगठन एवं व्याख्या (Organization of System)** - ये सम्प्रत्यय यह इंगित करते हैं कि व्यक्तित्व में अनेक घटक पाये जाते हैं और वे परस्पर अन्तर सम्बन्धित तथा संगठित होते हैं।
- 3- **मनोदैहिक (Psychophysical)** - इसका आशय यह है कि व्यक्तित्व में मानसिक तथा शारीरिक (स्नायुविक) दोनों प्रकार के कारकों का समावेश होता है। अर्थात् मन और शरीर के संकार्य (Operations) परस्पर मिश्रित रूप में संगठित होकर कार्य करते हैं।
- 4- **निर्धारित करना (Determine)**- आलपोर्ट का कहना है कि व्यक्तित्व व्यक्ति के व्यवहार का निर्धारण करता है। व्यक्ति के कार्य या व्यवहार के पीछे उसका व्यक्तित्व ही होता है।
- 5- **परिवेश के प्रति विशिष्ट समायोजन (Unique Adjustment to Environment)**- किसी परिस्थिति या परिवेश में व्यक्ति द्वारा किया गया समायोजी या अनुकूलन व्यवहार विशिष्ट

या अनौखा होता है। किसी परिस्थिति में लोगों के व्यवहार में कुछ न कुछ विशिष्टता (अन्तर) अवश्य पाई जाती है। इसीलिए व्यक्ति के समायोजन को विशिष्ट या अनौखा कहा जाता है।

1-7- व्यक्तित्व की विशेषताएं

व्यक्तित्व शब्द में अनेक विशेषताएं निहित होती हैं। व्यक्तित्व में निम्न विशेषताओं को देखा जाता है -

- 1- **आत्म चेतना (Self Consciousness)** - व्यक्तित्व की पहली और मुख्य विशेषता है - आत्म चेतना। इसी के कारण मानव को सब जीवधारियों में सर्वोच्च स्थान प्रदान किया जाता है और उसके व्यक्तित्व की उपस्थिति को स्वीकार किया जाता है। पशु और बालक में आत्म-चेतना न होने के कारण यह कहते हुए कभी नहीं सुना जाता है कि इस कुत्ते या बालक का व्यक्तित्व अच्छा है। जब व्यक्ति यह जान जाता है कि वह क्या है, समाज में उसकी क्या स्थिति है, दूसरे उसके बारे में क्या सोचते हैं-तभी उसमें व्यक्तित्व का होना स्वीकार किया जाता है।
- 2- **सामाजिकता (Sociability)** - व्यक्तित्व की दूसरी विशेषता है-सामाजिकता। समाज से पृथक मानव और उसके व्यक्तित्व की कल्पना नहीं की जा सकती है। मानव में आत्म-चेतना का विकास तभी होता है, जब वह समाज के अन्य व्यक्तियों के सम्पर्क में आकर क्रिया और अन्तःक्रिया करता है। इन्हीं क्रियाओं के फलस्वरूप उसके व्यक्तित्व का विकास होता है। अतः व्यक्तित्व में सामाजिकता की विशेषता होनी अनिवार्य है।
- 3- **सामंजस्य (Adjustability)**- व्यक्तित्व की तीसरी विशेषता है-सामंजस्यता। व्यक्ति को ये केवल बाह्य वातावरण से ही नहीं, वरन् अपने स्वयं के आन्तरिक जीवन से भी सामंजस्य करना पड़ता है। सामंजस्य करने के कारण उसके व्यवहार में परिवर्तन होता है और फलस्वरूप उसके व्यक्तित्व में विभिन्नता दृष्टिगोचर होती है। यही कारण है कि चोर, डाकिये, पत्नी, डाक्टर आदि के व्यवहार और व्यक्तित्व में अन्तर मिलता है। वस्तुतः मानव को अपने व्यक्तित्व को अपनी दशाओं, वातावरण, परिस्थितियों आदि के अनुकूल बनाना पड़ता है।
- 4- **निर्देशित लक्ष्य प्राप्ति (Goal Directedness)** -व्यक्तित्व की चौथी विशेषता है - निर्देशित लक्ष्य की प्राप्ति। मानव के व्यवहार का सदैव एक निश्चित उद्देश्य होता है और वह सदैव किसी न किसी लक्ष्य की प्राप्ति के लिए संचालित किया जाता है। उसके व्यवहार और लक्ष्यों से अवगत होकर हम उसके व्यक्तित्व का सहज ही अनुमान लगा सकते हैं। इसीलिए “व्यक्ति या व्यक्तित्व को समझने के लिए हमें इस बात पर विचार करना हो जाता है कि उसके लक्ष्य क्या हैं और उसे उनका कितना ज्ञान है।”
- 5- **दृढ़ इच्छा शक्ति (Strong will power)**- व्यक्तित्व की पांचवी विशेषता है - दृढ़ इच्छा शक्ति। यही शक्ति व्यक्ति को जीवन की कठिनाइयों से संघर्ष करके अपने व्यक्तित्व को उत्कृष्ट बनाने की क्षमता प्रदान करती है। इस शक्ति की निर्बलता उसके जीवन को अस्त-व्यस्त करके उसके व्यक्तित्व को विघटित कर देती है।
- 6- **शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य (Physical & Mental Health)** - व्यक्तित्व की छठवीं विशेषता है - शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य। मनुष्य मनो-शारीरिक (Psycho-Physical)

प्राणी है। अतः उसके अच्छे व्यक्तित्व के लिए अच्छे शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य का होना एक आवश्यक शर्त है।

- 7- **एकता व एकीकरण (Unity & Integration)** - व्यक्तित्व की सातवीं विशेषता है - एकता व एकीकरण। जिस प्रकार व्यक्ति के शरीर का कोई अवयव अकेला कार्य नहीं करता है, उसी प्रकार व्यक्तित्व का कोई तत्व अकेला कार्य नहीं करता है। ये तत्व है - शारीरिक, मानसिक, नैतिक, सामाजिक, संवेगात्मक आदि। व्यक्तित्व के इन सभी तत्वों में एकता या एकीकरण होता है। “व्यक्तित्व मानव की सब शक्तियों और गुणों का संगठन व एकीकरण है।”
- 8- **विकास की निरंतरता (Developmental Continuity)** - व्यक्तित्व की अंतिम किन्तु महत्वपूर्ण विशेषता है- विकास की निरन्तरता। उसके विकास में कभी स्थिरता नहीं आती है। जैसे-जैसे व्यक्ति के कार्यों, विचारों, अनुभवों, स्थितियों आदि में परिवर्तन होता जाता है, वैसे-वैसे उसके व्यक्तित्व के स्वरूप में भी परिवर्तन होता चला जाता है। विकास की यह निरन्तरता शैशावावस्था से जीवन के अन्त तक चलती रहती है। ऐसा समय कभी नहीं आता है, जब यह कहा जा सके कि व्यक्तित्व का पूर्ण विकास या पूर्ण निर्माण हो गया है। इसीलिए, गैरिसन व अन्य ने लिखा है - “व्यक्तित्व निरन्तर निर्माण की क्रिया में रहता है।”
“Personality is constantly in the process of becoming” –Gerrison & others

1-8- व्यक्तित्व के प्रकार उपागम

प्रकार सिद्धान्त व्यक्तित्व का सबसे पुराना सिद्धान्त है। इस सिद्धान्त के अनुसार व्यक्ति को खास-खास प्रकार (Type) में बांटा जाता है और उसके आधार पर उसके शीलगुणों का वर्णन किया जाता है। मार्गन, किंग, बिस्ज तथा स्कौपलर (Mogan, King, Weisz & Schopler, 1986) के अनुसार व्यक्तित्व के प्रकार से तात्पर्य, “व्यक्तियों के ऐसे वर्ग (class) से होता है जिनके गुण एक दूसरे से मिलते जुलते हैं।” जैसे अन्तर्मुखी (introvert) एक प्रकार है और जिन व्यक्तियों को उसमें रखा जाता है उनमें कुछ सामान्य गुण जैसे लज्जालुपना (shyness), सामाजिक कार्यों में अरुचि, लोगों से कम बोलना या मिलना-जुलना आदि पाये जाते हैं।

यदि व्यक्तित्व के अध्ययन का इतिहास पर ध्यान दिया जाए, तो यह स्पष्ट हो जाएगा कि आज से 2000 वर्ष पहले भी इस सिद्धान्त के द्वारा व्यक्तित्व की व्याख्या की जाती थी। सबसे पहला प्रकार सिद्धान्त (Type theory) हिप्पोक्रेट्स (Hippocrates) ने 400 बी.सी. में प्रतिपादित किया था। इन्होंने शरीर-द्रव्यों के आधार पर व्यक्तित्व के चार प्रकार हैं। इनके अनुसार हमारे शरीर में चार मुख्य द्रव (humors) पाये जाते हैं - पीला पित्त (yellow bile), काला पित्त (black bile), रक्त (blood) तथा कफ या श्लेष्मा (phlegm)। प्रत्येक व्यक्ति में इन चारों द्रवों में कोई एक द्रव अधिक प्रधान होता है। और व्यक्ति का स्वभाव या चित्तप्रकृति (temperament) इसी की प्रधानता से निर्धारित होता है। जिस व्यक्ति में पीले पित्त की प्रधानता होती है, उस व्यक्ति की चित्तप्रकृति या स्वभाव चिड़चिड़ा (irritable) होता है और व्यक्ति प्रायः बेचैन (restless) दीख पड़ता है। ऐसे व्यक्ति तुनुकमिजाजी (hot-blooded) भी होते हैं। इस तरह के ‘प्रकार’ (Type) को हिप्पोक्रेट्स ने ‘गुस्सैल’ (choleric) कहा है। जब व्यक्ति में काले पित्त की

प्रधानता होती है, तो वह प्रायः उदास तथा मंदित (depressed) नजर आता है। इस तरह के प्रकार को 'विषादी' या 'निराशावादी' (melancholic) कहा गया है। जिस व्यक्ति में अन्य द्रवों की अपेक्षा रक्त (blood) की प्रधानता होती है, वह प्रसन्न (cheerful) तथा खुशमिजाज होता है। इस तरह के व्यक्तित्व के 'प्रकार' को 'उत्साही' या 'आशावादी' (sanguine) कहा गया है। जिस व्यक्ति में कम या श्लेष्मा जैस द्रव की प्रधानता होती है, वह शांत (calm) स्वभाव का होता है तथा उसमें निष्क्रियता (inactiveness) अधिक पायी जाती है। इसमें भावशून्यता के गुण भी पाये जाते हैं। इस तरह के व्यक्तित्व के 'प्रकार' को विरक्त कहा गया है।

यद्यपि हिपोक्रेट्स का यह प्रकार सिद्धान्त अपने समय का एक काफी महत्वपूर्ण सिद्धान्त था, फिर भी आज के मनोवैज्ञानिकों द्वारा इसे पूर्णतः अस्वीकृत (reject) कर दिया गया है। इसका प्रधान कारण यह है कि व्यक्ति के शीलगुणों तथा उसकी चित्तप्रकृति का संबंध शारीरिक द्रवों (bodily fluids) से होने का कोई सीधा एवं वैज्ञानिक प्रमाण नहीं मिलता। इन मनोवैज्ञानिकों का यह भी कहना है कि हिपोक्रेट्स द्वारा बताये गये शारीरिक द्रव सचमुच व्यक्ति में होते हैं या नहीं इसका भी कोई प्रमाण (evidence) नहीं मिलता है।

आधुनिक मनोवैज्ञानिकों ने प्रकार सिद्धान्त को मूलतः दो भागों में बांटकर उसके द्वारा व्यक्तित्व की व्याख्या की है। पहले भाग में व्यक्ति के शारीरिक गुणों (bodily characteristics) एवं उसके चित्तप्रकृति या स्वभाव (temperament) के संबंधों पर बल डाला गया है तथा दूसरे भाग में व्यक्ति के मनोवैज्ञानिक गुणों (psychological characteristics) के आधार पर उसे भिन्न भिन्न प्रकारों (types) में बांटकर अध्ययन करने की कोशिश की गई है। प्रकार सिद्धान्त (type theories) के इन दोनों भागों का वर्णन निम्नांकित है -

1- **शारीरिक गुणों (bodily characteristics) के आधार पर** - शारीरिक गुणों के आधार पर प्रतिपादित प्रकार सिद्धान्त को शरीरगठन सिद्धान्त (constitutional type) कहा गया है। शारीरिक गुणों के आधार पर दो वैज्ञानिकों अर्थात् क्रेशमर (Kretschmer) तथा शेल्डन (Sheldon) द्वारा किया गया व्यक्तित्व का वर्गीकरण काफी महत्वपूर्ण है। क्रेशमर जो एक जर्मन मनोचिकित्सक थे, शारीरिक गुणों के आधार पर व्यक्तित्व के चार प्रकार बताए हैं। प्रत्येक प्रकार से संबंधित कुछ खास-खास शीलगुण भी हैं जिनसे संबंधित स्वभाव या चित्तप्रकृति का पता चलता है। क्रेशमर ने इस सिद्धान्त का प्रतिपादन दो तरह के मानसिक रोग यानि मनोविदालिता एवं उत्साह विषाद से ग्रसित व्यक्तियों के प्रेक्षण के आधार पर किया था। वे चार प्रकार निम्नांकित हैं-

(i) **पिकनिक प्रकार (Pyknic type)** - ऐसे व्यक्ति का कद छोटा होता है तथा शरीर भारी एवं गोलाकार होता है। ऐसे लोगों की गर्दन छोटी एवं मोटी होती है। इस तरह के व्यक्ति के स्वभाव की कुछ खास-खास विशेषता होती है जैसे - ऐसे व्यक्ति सामाजिक (social) होते हैं, खाने पीने तथा सोने में काफी मजा लेते हैं तथा खुशमिजाज होते हैं। इस तरह के स्वभाव या चित्तप्रकृति (temperament) को क्रेशमर ने साइक्लाआइड (cycloid) की संज्ञा दी है। ऐसे

व्यक्तियों में मानसिक रोग उत्पन्न होने पर उत्साह-विषाद (manic depression) के लक्षण विकसित होने की संभावना अधिक होती है।

(ii) एस्थेनिक प्रकार (Asthenic type) - इस तरह के व्यक्ति का कद लम्बा होता है, परन्तु वे दुबले-पतले शरीर के होते हैं। ऐसे व्यक्तियों के शरीर की मांसपेशियाँ विकसित नहीं होती हैं और शरीर का वजन उम्र के अनुसार होने वाले सामान्य वजन से कम होता है। ऐसे लोगों का स्वभाव कुछ चिड़चिड़ा होता है, सामाजिक उत्तरदायित्व से इनमें दूर रहने की प्रवृत्ति अधिक देखी जाती है, ऐसे व्यक्ति में दिवास्वप्न अधिक होता है तथा काल्पनिक दुनिया में भ्रमण करने की आदत इनमें अधिक तीव्र होती है। मानसिक रोग होने पर इनमें मनोविदालिता (schizophrenia) होने की संभावना तीव्र होती है। इस तरह की चित्तप्रकृति या स्वभाव को क्रेशमर ने 'सिजोआइड' (schizoid) की संज्ञा दी है।

(iii) एथलेटिक प्रकार (Athletic type) - इस प्रकार के व्यक्ति के शरीर की मांसपेशियाँ काफी विकसित एवं गठी होती हैं तथा शारीरिक कद न तो अधिक लम्बा और न तो अधिक छोटा ही होता है। इनका पूरा शरीर सुडोल एवं हर तरह से संतुलित दिखाई देता है। ऐसे व्यक्ति के स्वभाव में न तो अधिक चंचलापन और न अधिक मंदन (depression) ही होता है। ऐसे व्यक्ति बदलती हुई परिस्थिति के साथ आसानी से समायोजन (adjustment) कर लेते हैं। अतः, इन्हें सामाजिक प्रतिष्ठा (social prestige) काफी मिलती है।

(iv) डाइस्प्लास्टिक प्रकार (Dysplastic type) - इस श्रेणी में उन व्यक्तियों को रखा जाता है जिनमें ऊपर के तीन प्रकारों में किसी एक प्रकार का स्पष्ट गुण नहीं मिलता है बल्कि इन तीनों प्रकारों का गुण मिला-जुला होता है।

परन्तु बाद में क्रेशमर के इस वर्गीकरण को कुछ मनोवैज्ञानिकों ने जैसे शैल्डन ने अपने अध्ययन के आधार पर बहुत वैज्ञानिक नहीं पाया और इसमें विधि (methodology) से संबंधित कई दोष पाए। इन्होंने यह भी कहा कि क्रेशमर का यह वर्गीकरण मानसिक रोग से ग्रसित व्यक्तियों की व्याख्या करने में भले ही समर्थ हो, परन्तु सामान्य व्यक्तियों की व्याख्या करने में असमर्थ है। फलस्वरूप उन्होंने एक दूसरा सिद्धान्त बनाया जिसे सोमैटोटाइप (Somatotype) कहा जाता है।

शैल्डन ने 1940 में शरीरगठन (physique) के ही आधार पर एक दूसरा सिद्धान्त बनाया जिसे सोमैटोटाइप सिद्धान्त कहा गया। इन्होंने शारीरिक गठन के आधार पर व्यक्तित्व का वर्गीकरण करने के लिए 4000 कालेज छात्रों की नग्न तस्वीर (naked pictures) का विश्लेषण कर यह बताया है कि व्यक्तित्व को मूलतः तीन प्रकार में बाँटा जा सकता है और प्रत्येक प्रकार के कुछ खास शीलगुण (traits) होते हैं जिनसे उसका स्वभाव या चित्तप्रकृति का पता चलता है। प्रत्येक प्रकार तथा उससे संबंधित शीलगुणों के बीच का सहसंबंध 0.78 से अधिक था जो अपने आपमें इस बात का सबूत है कि प्रत्येक शारीरिक प्रकार तथा उससे संबंधित गुण आपस में काफी मजबूत हैं। शैल्डन द्वारा बताये वे तीन प्रकार तथा उससे संबंधित चित्तप्रकृति संबंधी गुण निम्नांकित हैं-

(i) एण्ड्रोमोर्फी (Endromorphy) - इस प्रकार के व्यक्ति मोटे एवं नाटे होते हैं और इनका शरीर गोलाकार दीखता है। स्पष्ट है कि शैल्डन का यह 'प्रकार' क्रेशमर के 'पिकनिक प्रकार' से

मिलता-जुलता है। शोल्डन ने यह बताया कि इस तरह के शारीरिक गठनवाले व्यक्ति आरामपसंद, खुशमिजाज, सामाजिक तथा खाने-पीने की चीजों में अधिक अभिरूचि दिखाने वाले होते हैं। ऐसे स्वभाव को शोल्डन ने 'विसरोटोनिया' (Viscerotonia) कहा है।

(ii) **मेसोमोर्फ़ी (Mesomorphy)** - इस प्रकार के व्यक्ति के शरीर की हड्डियाँ एवं मांसपेशियाँ काफी विकसित होती हैं तथा शारीरिक गठन काफी सुडौल होता है। ऐसे व्यक्ति के स्वभाव को सोमैटोटोनिया (Somatotonia) कहा गया है जिसमें जोखिम तथा बहादुरी का कार्य करने की तीव्र प्रवृत्ति, दृढ़कथन, आक्रामकता आदि के गुण पाये जाते हैं। ऐसे लोग अन्य लोगों को आदेश देने में अधिक आनन्द उठाते हैं। ऊपर के विवरण से स्पष्ट है कि मेसोमोर्फ़ी बहुत कुछ क्लेशमर का एथेलेटिक प्रकार से मिलता-जुलता है।

(iii) **एक्टोमोर्फ़ी (Ectomorphy)**- इस प्रकार के व्यक्ति का कद लम्बा होता है, परन्तु ऐसे व्यक्ति दुबले पतले होते हैं। इनके शरीर की मांसपेशियाँ अविकसित होती हैं और इनका पूरा गठन एकहरा होता है। इस प्रकार के व्यक्ति की चित्तप्रकृति को सेरीब्रोटिनिया कहा जाता है। ऐसे व्यक्ति को अकेला रहना तथा लोगों से कम मिलना-जुलना अधिक पसन्द आता है। ऐसे लोग संकोचशील और लज्जालू भी होते हैं। इनमें नींद संबंधी शिकायत भी पाई जाती है।

शोल्डन ने यद्यपि शारीरिक गठन को तीन प्रकारों में बांटा है, फिर भी इसे उन्होंने एक सतत् प्रक्रिया माना है। इसका मतलब यह हुआ कि इन तीनों तरह के शारीरिक गठन एवं उससे संबंधित शीलगुण आपस में बिल्कुल ही अलग-अलग नहीं होते। फलतः उन्होंने प्रत्येक शारीरिक गठन का मापन 1 से 7 तक की श्रेणियों में बाँटकर किया। दूसरे शब्दों में 4000 व्यक्तियों में प्रत्येक व्यक्ति के शारीरिक गठन का तीनों श्रेणियों में (1 से 7 तक में) श्रेणीकरण किया। यहां 1 श्रेणी से तात्पर्य 'सबसे कम- तथा 7 श्रेणी से तात्पर्य 'सबसे अधिक' से है। जैसे जो व्यक्ति नाटा कद का है, परन्तु काफी मोटा तथा गोलाकार गठन का है, उसे एण्डोमोर्फ़ी पर 7 तथा अन्य दोनों श्रेणियों जैसे मेसोमोर्फ़ी तथा एक्टोमोर्फ़ी पर 1-1 का श्रेणी दिया जाएगा। अतः इस तरह के व्यक्ति को शोल्डन ने 7-1-1 कहा है। उसी तरह संभव है कि कोई व्यक्ति को एक्टोमोर्फ़ी में 7 दिया जाए। स्वभावतः तब ऐसे व्यक्ति को मेसोमोर्फ़ी तथा एण्डोमोर्फ़ी में 1-1 दिया जाएगा। अतः इस तरह के व्यक्ति को 1-1-7 कहा जाएगा। शोल्डन ने 7-1-1 श्रेणी प्राप्त करने वाले व्यक्ति को प्रबल एण्डोमोर्फ़ी, 1-7-1 वाले व्यक्ति को प्रबल एक्टोमोर्फ़ी कहा है। शोल्डन ने बताया कि सबसे संतुलित व्यक्तित्व वाले व्यक्ति उन्हें कहा जाता है जिन्हें तीनों प्रकारों में बीच की श्रेणी यानी 4 प्राप्त होती है। अतः, शोल्डन के अनुसार संतुलित व्यक्तित्व वह है जिसका श्रेणीकरण 4-4-4 होता है।

2 **मनोवैज्ञानिक गुणों के आधार पर (on the basis of psychological characteristics) -** कुछ मनोवैज्ञानिकों ने व्यक्तित्व का वर्गीकरण मनोवैज्ञानिक गुणों के आधार पर किया है। इनमें युंग (Jung), आर्जेन्क तथा गिलफोर्ड का नाम अधिक मशहूर है। युंग ने व्यक्तित्व के निम्नांकित दो प्रकार बताए हैं -

- (i) **बहिर्मुखी (Extrovert)** - इस तरह के व्यक्ति की अभिरूचि समाज के कार्यों की और विशेष होती है। यह अन्य लोगों से मिलना-जुलना पसंद करता है तथा प्रायः खुशमिजाज होता है। ऐसे व्यक्ति आशावादी (optimistic) होते हैं तथा अपना संबंध यथार्थता (realism) से अधिक और आदर्शवाद से कम रखते हैं। ऐसे लोगों को खाने-पीने की और भी अभिरूचि अधिक होती है। ऐसे लोग समाज के लिए काफी उपयोगी होते हैं।
- (ii) **अन्तर्मुखी (Introvert)** - ऐसे व्यक्ति में बहिर्मुखी के विपरीत गुण पाये जाते हैं। इस तरह के व्यक्ति बहुत लोगों से मिलना-जुलना पसंद नहीं करते और उनकी दोस्ती कुछ ही लोगों तक सीमित होती है। इनमें आत्मकेन्द्रिता का गुण अधिक पाया जाता है। इन व्यक्तियों को अकेलापन अधिक पसंद होता है तथा ऐसे लोग रूढ़िवादी (conservative) होते हैं तथा पुराने रीति-रिवाजों एवं नियमों का आदर करते हैं।

आधुनिक मनोवैज्ञानिकों द्वारा युंग के इन दो प्रकारों की आलोचना की गई है और इन लोगों ने कहा कि सभी लोग इन दोनों में किसी एक श्रेणी में आए ही, यह जरूरी नहीं है। कुछ लोगों में इन दोनों श्रेणियों के गुण पाए जाते हैं। फलस्वरूप, एक परिस्थिति में वे बहिर्मुखी के रूप में व्यवहार करते हैं। ऐसे व्यक्तियों को आधुनिक मनोवैज्ञानिकों ने उभयमुखी (ambivert) की संज्ञा दी है।

आइजेन्क (Eysenck, 1947) ने भी मनोवैज्ञानिक गुणों (psychological characteristics) के आधार पर व्यक्तित्व के तीन प्रकार बताए हैं। इन्होंने युंग के अन्तर्मुखी-बहिर्मुखी सिद्धान्त की सत्यता की जांच करने के लिए 10000 सामान्य (normal) एवं तंत्रिका रोगियों (neurotics) पर अध्ययन किया और विशेष सांख्यिकीय विश्लेषण (statistical analysis) कर यह बताया कि व्यक्तित्व के निम्नांकित तीन प्रकार होते हैं जो द्विध्रुवीय हैं -

- (i) **अन्तर्मुखता-बहिर्मुखता** - आइजेन्क ने युंग की अन्तर्मुखता तथा बहिर्मुखता के सिद्धान्त को तो स्वीकार किया, परन्तु युंग के समान उन्होंने इसे व्यक्तित्व का दो अलग-अलग प्रकार नहीं माना। उनका कहना था कि चूँकि ये दोनों प्रकार एक-दूसरे के विपरीत हैं, अतः इन्हें एक साथ मिलाकर रखा जा सकता है तथा एक ही मापनी बनाकर अध्ययन किया जा सकता है। चूँकि ऐसा नहीं होता है कि ये दोनों तरह के गुण एक व्यक्ति में अधिक या कम हों, अतः इसे आइजेन्क ने व्यक्ति का एक ही प्रकार या बिम्ब माना है जो द्विध्रुवीय है। जैसे किसी व्यक्ति में सामाजिकता अधिक है तथा वह लोगों से मिलना-जुलना अधिक पसंद करता है, तो यह कहा जाता है कि व्यक्ति इस बिम्ब की बहिर्मुखता पक्ष में ऊँचा है। दूसरी तरफ, यदि व्यक्ति अकेले रहना अधिक पसंद करता है, लज्जालु तथा संकोचशील भी है तो ऐसा कहा जाता है कि ऐसा व्यक्ति की अन्तर्मुखता पक्ष में अधिक ऊँचा है।
- (ii) **स्नायुविकृति/स्थिरता (Neuroticism/stability)** - आइजेन्क के अनुसार व्यक्तित्व का यह दूसरा प्रमुख प्रकार है। इस तरह के व्यक्ति में सांवेगिक नियंत्रण कम होता है तथा उनकी इच्छाशक्ति कमजोर होती है। इनके विचारों एवं क्रियाओं में मंदता पाई जाती है इनमें अन्य व्यक्तियों के सुझाव को चुपचाप स्वीकार कर लेने की प्रवृत्ति अधिक होती है तथा इनमें

सामाजिकता का अभाव पाया जाता है। ऐसे व्यक्तियों द्वारा प्रायः अपनी इच्छाओं का दमन किया जाता है। स्नायुविकृति के दूसरे छोर पर स्थिरता होती है जिसकी और बढ़ने पर उक्त व्यवहारों या लक्षणों की मात्रा घटती जाती है और व्यक्ति में स्थिरता की मात्रा बढ़ती है।

- (iii) **मनोविकृति/सुपर ईगो की क्रियाएँ (Psychoticism/super ego function) -** आइजेन्क ने व्यक्तित्व के इस प्रकार को बाद में किए गए शोध के आधार पर जोड़ा है। आइजेन्क ने इस प्रकार की व्याख्या करते हुए कहा कि व्यक्तित्व का यह प्रकार मानसिक रोग की एक विशेष श्रेणी जिसे मनोविक्षिप्त रोग से पीड़ित व्यक्ति में मनोविकृति के गुण अधिक होंगे। आइजेन्क के अनुसार मनोविकृति वाले व्यक्तित्व के प्रकार में क्षीण एकाग्रता क्षीण स्मृति तथा क्रूरता का गुण अधिक होता है। इसके अलावा ऐसे व्यक्ति में असंवेदनशीलता, दूसरों के प्रति न के बराबर खयाल रखना, किसी प्रकार के खतरा के प्रति असतर्कता, सर्जनात्मकता की कमी आदि गुण पाये जाते हैं। मनोविकृति के दूसरे छोर पर सुपर ईगो की क्रियाएँ होती हैं। जैसे-जैसे इस छोर की ओर हम बढ़ते हैं, उक्त लक्षणों या व्यवहारों की मात्रा घटती जाती है तथा व्यक्ति में आदर्शत्व तथा नैतिकता की मात्रा बढ़ती जाती है।

इस तरह हम देखते हैं कि आइजेन्क के तीनों 'प्रकार' द्विधुर्वीय हैं जिसका मतलब यह कदापि नहीं है कि अधिकतर व्यक्ति को दो छोरों में किसी एक छोर पर रखा जा सकता है। सच्चाई यह है कि प्रत्येक 'प्रकार' या बिम्ब के बीच में ही अधिकतर व्यक्तियों को रखा जाता है।

1.8.1 प्रकार उपागम के दोष

उक्त गुणों के बावजूद इस सिद्धान्त की आलोचना की गई है। इसमें निम्नांकित दोष हैं -

- (i) प्रकार सिद्धान्त में इस बात की पूर्वकल्पना की गई है कि सभी व्यक्ति किसी न किसी 'प्रकार' श्रेणी में निश्चित रूप से आते हैं। परन्तु, सच्चाई यह है कि एक ही व्यक्ति में व्यक्तित्व के कई एक प्रकारों का गुण मिलता है जिसके कारण उन्हें किसी एक प्रकार में रखना संभव नहीं है। उदाहरणस्वरूप, अधिकतर व्यक्तियों में अन्तर्मुखी तथा बहिर्मुखी दोनों के गुण पाये जाते हैं। अतः उन्हें इन दोनों प्रकारों में किसी एक प्रकार में रखकर अध्ययन करना सर्वथा भूल होगी।
- (ii) प्रकार सिद्धान्त के अनुसार जब किसी व्यक्ति को एक विशेष प्रकार में रखा जाता है, तो वह पूर्वकल्पना भी साथ ही साथ कर ली जाती है कि उसमें उस प्रकार से संबंधित सभी गुण होंगे। परन्तु सच्चाई ऐसी नहीं होती। जैसे यदि किसी व्यक्ति को अन्तर्मुखी की श्रेणी में रखा जाता है तो यह पूर्वकल्पना की जाती है कि उसमें अन्य गुणों के अलावा, सांवेगिक संवेदनशीलता भी होगी तथा ऐसा व्यक्ति एकान्तप्रिय होगा। परन्तु, दोनों गुण एक अन्तर्मुखी व्यक्ति में हो भी सकता है या नहीं भी हो सकता है। एक सांवेगिक रूप से संवेदनशील व्यक्ति अकेले भी रहना पसंद कर सकता है तथा अन्य लोगों के समूह में भी रहना पसंद कर सकता है। अतः प्रकार सिद्धान्त की यह पूर्वकल्पना भी सही नहीं है।

- (iii) प्रकार सिद्धान्त द्वारा व्यक्तित्व की व्याख्या तो होती है, परन्तु व्यक्तित्व विकास की व्याख्या नहीं होती है। इस सिद्धान्त में उन कारकों का उल्लेख नहीं है जिनसे व्यक्तित्व का विकास प्रभावित होता है तथा इस सिद्धान्त से विकास की अवस्थाओं का भी पता नहीं चलता।
- (iv) कुछ मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि प्रकार सिद्धान्त में, विशेषकर शारीरिक गठनों के आधार पर किए गए वर्गीकरण में सामाजिक तथा सांस्कृतिक कारक के महत्त्व को बिल्कुल ही गौण रखा गया है। शोल्डन का यह दावा कि व्यक्ति के शारीरिक संगठन तथा उसके शीलगुणों में एक निश्चित संबंध होता है, जो व्यापक होता है तथा सभी परिस्थितियों में समान रहता है, उचित नहीं है। विटेकर के अनुसार इस तरह का संबंधसचमुच में सामाजिक एवं सांस्कृतिक कारकों द्वारा प्रभावित होता है।
- (v) शोल्डन ने अपने प्रकार सिद्धान्त में शारीरिक गठन तथा स्वभाव से संबंधित शीलगुणों के बीच उच्च सहसंबंध यानी 0.78 से अधिक सहसंबंध पाया है। कुछ आलोचकों का मत है कि यह सहसंबंध वास्तविक नहीं है। चूंकि शोल्डन स्वयं ही शारीरिक गठन तथा स्वभाव या चित्तप्रकृति से संबंधित गुणों का रेटिंग किए थे, अतः सहसंबंध को तो अधिक होना ही था। हॉल तथा लिण्डजे ने ठीक ही कहा है, “सहसंबंध की मात्रा से अन्वेषणकर्ता की पूर्वधारणा की शक्ति का पता चलता है न कि शारीरिक गठन एवं चित्तप्रकृति के बीच वास्तविक संबंधका।

इन आलोचनाओं के बावजूद प्रकार सिद्धान्त की मान्यता आज भी बनी हुई है जिसका प्रमाण हमें इस बात से मिल जाता है कि इन विभिन्न प्रकारों में मनोवैज्ञानिकों द्वारा विशेष रूप से अध्ययन किया जा रहा है।

1-9- व्यक्तित्व के गुण उपागम (Trait Approach)

व्यक्तित्व के शीलगुण सिद्धान्त के अनुसार व्यक्तित्व की संरचना भिन्न भिन्न प्रकार के अनेक शीलगुणों से मिलकर बनी होती है। शीलगुण से तात्पर्य व्यक्ति के व्यवहार का वर्णन करने वाली उन संज्ञाओं से है जो व्यवहार के संगत एवं अपेक्षाकृत स्थायी रूप को अभिव्यक्त करती है। जैसे ईमानदारी, कर्तव्यनिष्ठता, समय की पाबन्दी, सहयोग, परोपकार, सत्य बोलना आदि शीलगुण हैं। स्पष्ट है कि शीलगुण परस्पर एक दूसरे से भिन्न होते हैं। शीलगुण सिद्धान्त के अनुसार व्यक्तित्व को प्रकार के रूप में नियंत्रित नहीं किया जा सकता है वरन् भिन्न भिन्न प्रकार के अनेक शीलगुणों द्वारा निर्धारित माना जाता है। ये शीलगुण भिन्न भिन्न मात्रा में व्यक्ति में विद्यमान होते हैं एवं इनके आधार पर व्यक्ति के व्यवहार की व्याख्या की जा सकती है। वस्तुतः शीलगुण उपागम के अन्तर्गत शीलगुण को व्यक्तित्व की मौलिक इकाई माना जाता है जो परस्पर स्वतंत्र है तथा जिनके आधार पर व्यक्तियों में भेद किये जा सकते हैं। आलपोर्ट तथा कैटल नामक दो मनोवैज्ञानिकों के व्यक्तित्व शीलगुणों के संबंध में महत्त्वपूर्ण कार्य है। इन दोनों विचारों एवं कार्यों की चर्चा आगे की जा रही है।

1.9.1 आलपोर्ट का शीलगुण सिद्धान्त

जी.डब्ल्यू. आलपोर्ट का व्यक्तित्व के शीलगुण सिद्धान्त के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान है। उन्होंने शीलगुणों को दो भागों में सामान्य शीलगुण तथा व्यक्तिगत शीलगुण में विभक्त किया। सामान्य शीलगुण से तात्पर्य उन शीलगुणों से है जो किसी समाज /संस्कृति के अधिकांश व्यक्तियों में पाये जाते हैं। इसके विपरीत व्यक्तिगत शीलगुण वे शीलगुण हैं जो बहुत कम व्यक्तियों में पाये जाते हैं। व्यक्तिगत शीलगुणों का अध्ययन करना बहुत कठिन होता है जबकि सामान्य शीलगुणों को सहसम्बन्धात्मक विधियों से सरलता से ज्ञात किया जा सकता है। परन्तु आलपोर्ट ने सामान्य शीलगुणों की अपेक्षा व्यक्तिगत शीलगुणों के अध्ययन पर अधिक बल दिया। उसने व्यक्तिगत शीलगुणों की तीन प्रवृत्तियों - प्रमुख प्रवृत्ति, केन्द्रीय प्रवृत्ति तथा गौण प्रवृत्ति बताई है। प्रमुख प्रवृत्ति वाले शीलगुण से तात्पर्य व्यक्तित्व के उन प्रमुख व प्रबल शीलगुणों से है जो छिपाये नहीं जा सकते हैं एवं जो व्यक्ति के प्रत्येक व्यवहार से परिलक्षित होते हैं। जैसे सत्य व अहिंसा में अटूट विश्वास निःसन्देह महात्मा गांधी के व्यक्तित्व की प्रमुख प्रवृत्ति थी जबकि अधिनायकवाद हिटलर तथा नैपोलियन के व्यक्तित्व की प्रमुख प्रवृत्ति थी। केन्द्रीय प्रवृत्ति वाले शीलगुणों से तात्पर्य उन शीलगुणों से है जो व्यक्ति में अधिक सक्रिय रहते हैं एवं व्यक्ति के अधिकांश व्यवहारों में कमोवेश परिलक्षित होते हैं। प्रत्येक व्यक्ति में प्रायः ऐसे शीलगुण होते हैं। वास्तव में ये शीलगुण ही उसके व्यक्तित्व की रचना करते हैं। आत्मविश्वास, सामाजिकता, उत्साह, व्यवहार, कुशलता आदि किसी व्यक्ति के केन्द्रीय प्रवृत्ति वाले शीलगुण हो सकते हैं। गौण प्रवृत्ति वाले शीलगुणों से अभिप्रायः उन शीलगुणों से है जो अपेक्षाकृत कम महत्वपूर्ण तथा कम संगत होते हैं। ये शीलगुण व्यक्ति के समान प्रकार के व्यवहार में परिलक्षित हो जाते हैं तथा कभी परिलक्षित नहीं भी होते हैं। इनकी सहायता से व्यक्तित्व की व्याख्या करना प्रायः संभव नहीं हो पाता है। यहां पर स्पष्ट करना उचित ही होगा कि शीलगुण किसी व्यक्ति के लिए केन्द्रीय प्रवृत्ति वाला हो सकता है तथा दूसरे व्यक्ति के लिए गौण प्रवृत्ति वाला हो सकता है। जैसे बहिर्मुखी व्यक्तित्व के लिए सामाजिकता एक केन्द्रीय प्रवृत्ति वाला शीलगुण है जबकि अन्तर्मुखी व्यक्तित्व के लिए सामाजिकता गौण प्रवृत्ति वाला शीलगुण हो सकता है।

आलपोर्ट के अनुसार व्यक्तित्व असंबंधित शीलगुणों का झुंड मात्र नहीं है वरन् इसमें शीलगुणों के समन्वय तथा संगतता का भाव निहित रहता है। इसे उसने अपनापन कहा। प्रोप्रियम एक लैटिन शब्द से बना है। जिसका अर्थ अपना है। आलपोर्ट के लिए अपनापन से तात्पर्य व्यक्तित्व के उन सभी पक्षों से है जो एकीकरण व संगतता के साथ व्यक्ति के अनोखे अपनेपन को दर्शाता है। उसने शैशवावस्था से किशोरावस्था तक फैली सात अवस्थाओं में प्रोप्रियम के विकास की बात कही है। प्रथम तीन अवस्थाएँ अर्थात् शारीरिक स्व पहचान तथा स्वमान का विकास प्रथम तीन वर्षों में होता है। इसमें वाद की दी अवस्थाएं अर्थात् स्व विस्तार तथा स्व प्रतिमा का विकास 4 से 6 वर्ष की आयु में होता है। तार्किक अनुकूलन का विकास 6 से 12 वर्ष की आयु के बीच होता है जबकि उपयुक्त प्रयास का विकास किशोरावस्था में होता है। किशोरावस्था में जाकर प्रोप्रियम का विकास पूर्ण हो जाता है तथा इसमें ये सातों पक्ष समाहित रहते हैं।

आलपोर्ट के अनुसार परिपक्व वयस्क में कार्यात्मक स्वायत्तता होती है अर्थात् वह गत अनुभूतियों से प्रभावित न होकर स्वतंत्र रूप से कार्य करता है। जैसे यदि धन कमाने के लिए गरीब व्यक्ति कठोर श्रम

करता है तथा धनी व्यक्ति बन जाने पर भी वह आदतवश कठोर श्रम करना पहले लक्ष्य प्राप्ति (धनार्जन) का एक साधन था जो जब एक लक्ष्य बन गया है। वस्तुतः वह अब निर्धनता की अनुभूति से स्वतंत्र होकर कठोर श्रम कर रहा है। कार्यात्मक स्वायत्तता का प्रत्यय व्यक्ति के व्यवहार के पीछे अभिप्रेरण को समझने में महत्वपूर्ण सहायता करता है। आलपोर्ट के अनुसार व्यक्तित्व जन्मजात न होकर परिस्थितियों से प्रभावित होकर विकसित होता है। सकारात्मक परिस्थितियों में ही स्वस्थ व्यक्तित्व का विकास हो पाता है जबकि विषम परिस्थितियों में पले बालकों के व्यक्तित्व में नकारात्मक शीलगुण अधिक प्रभावी हो जाते हैं।

1.9.2 कैटल का शीलगुण सिद्धान्त

व्यक्तित्व के एक अन्य शीलगुण सिद्धान्त का प्रतिपादन कैटल ने किया। उसने लगभग 4500 शीलगुण शब्दों की सूची में से समानार्थक तथा दुर्लभ विशेषताओं को अलग करके पहले 171 वर्णनात्मक पदों का चयन किया एवं फिर इन 171 पदों के बीच संबंधों का अध्ययन करके इन्हें शीलगुणों के 35 वर्गों में अवकलित कर दिया। तत्पश्चात् कैटल ने कारक विश्लेषण नाम की सांख्यिकीय प्रविधि का उपयोग करके व्यक्तित्व को अभिव्यक्त करने वाले 12 मूलभूत कारकों को ज्ञात किया तथा इन्हें व्यक्तित्व शीलगुण के नाम से संबोधित किया। कैटल के द्वारा किये गये इन बारह प्राथमिक शीलगुणों को सारणी में प्रस्तुत किया गया है। स्पष्ट है कि कैटल के द्वारा बताये कुछ शीलगुण - धनात्मक चरित्र, व्यवहार कुशलता, संवेगात्मक स्थिरता, दृढ़ता, संवेदनशीलता, बुद्धि, सामाजिकता, सौम्यता, आत्मविश्वास इत्यादि हैं।

कैटल ने व्यक्तित्व की व्याख्या करते हुए कहा कि किसी व्यक्ति का व्यक्तित्व वह विशेषता है जिसके आधार पर यह अनुमान लगाया जा सके कि किसी दी गयी परिस्थिति में वह व्यक्ति किस प्रकार का व्यवहार करेगा। उसके अनुसार व्यक्तित्व विशेषक मानसिक संरचनाएं हैं तथा इन्हें व्यक्ति की व्यवहार प्रक्रिया की निरन्तरता तथा नियमितता के द्वारा जाना जा सकता है। कैटल का विश्वास था कि कुछ सामान्य शीलगुण होते हैं जो सभी व्यक्तियों में कुछ न कुछ मात्रा में पाये जाते हैं तथा कुछ विशिष्ट शीलगुण होते हैं, जो कुछ विशेष व्यक्तियों में उपस्थित होते हैं। कैटल ने शीलगुणों को दो प्रकार (1) सतही शीलगुण तथा (2) स्रोत शीलगुण का बताया है। (1) सतही शीलगुण व्यक्ति के द्वारा अभिव्यक्त किये जा रहे व्यवहार से परिलक्षित होते हैं तथा व्यक्ति के व्यवहार को प्रत्यक्षतः प्रभावित करते हैं। प्रसन्नता, परोपकारिता, सत्यनिष्ठा सतही शीलगुणों के कुछ उदाहरण हैं। इसके विपरीत (2) स्रोत शीलगुण व्यक्ति के व्यवहार के पीछे छिपे रहते हैं तथा अभिव्यक्त को प्रत्यक्ष रूप से नियंत्रित व निर्धारित करते हैं। स्पष्टतः

सारणी
व्यक्तित्व के प्राथमिक शीलगुण
(Primary Traits of personality)

I.	Cyclothymia Outgoing Good-natured Adaptable	Vs.	Schizothymia Withdrawn Surly Inflexible
II	Intelligence Intelligent Conscientious Thoughtful	Vs.	Mental defect Stupid Slipshod Unreflective
III.	Emotionally mature Realistic Stable Patient	Vs.	Demoralised emotionality Subjective Uncontrolled Exeitable
IV.	Dominance Boastful Egotistic Tough	Vs.	Submissiveness Modest Self-effacing Sensitive
V.	Surgency Cheerful Optimistic Sociable	Vs.	Melancholic desurgency Unhappy Pressimistic Aloof
VI.	Sensitive, imaginative Idealistic Intuitive	Vs.	Rigid, lough, poised Cynical Logical

	Friendly		Hardhearted
VII.	Trained, Socialised Thoughtful Sophisticated Aesthetic	Vs.	Boorish Narrow Simple Coarse
VIII.	Positive intergration Independent Presevering Practical	Vs.	Immature, dependent Dependent Slipshod Unrealistic
IX.	Charitable, adventurous Kindly Cooperative Frank	Vs.	Obstructive, withdrawn Cynical Obstructive Secretive
X.	Neurasthenia Languid Quitting Incoherent	Vs.	Vigorous character Alert Painstaking Strong-willed
XI.	Hypersensitive, Infantile Infantile Restless Impatient	Vs.	Frustration tolerance Adjusting Calm Phlegmatic
XII.	Sergent eyelothymia Enthusiastic Friendly Trustful	Vs.	Paranoia Frustrated Hostile Suspicious

स्रोत शीलगुणों का महत्व सतही शीलगुण से अधिक होता है। स्रोत शीलगुण का एक उदाहरण मित्रता है। मित्रता शीलगुण व्यक्ति में सामाजिकता, निःस्वार्थता व हास-परिहास जैसे सतही शीलगुण आ सकते हैं। जैसा कि बताया जा चुका है, इन शीलगुणों की जानकारी के लिए कैटल ने कारक विशेषण नामक सांख्यिकीय प्रविधि का उपयोग किया था। कैटल के अनुसार विभिन्न शीलगुण के परस्पर आन्तरिक संबंध अत्यंत जटिल होते हैं तथा उनकी परस्पर अन्तर्क्रिया ही व्यक्तित्व को निर्धारित करती है। व्यक्ति के तात्कालिक उद्देश्यों से संबंधित शीलगुण उसके मुख्य तथा अंतिम उद्देश्यों से संबंधित शीलगुण के अधीन रह कर कार्य करते हैं।

कैटल के द्वारा बनाये गये प्रसिद्ध व्यक्तित्व मापन उपकरण 16 पी एफ प्रश्नावली में व्यक्तित्व के सोलह द्विध्रुवीय कारकों को सम्मिलित किया गया है। व्यक्तित्व के इन सोलह कारकों को पाठकों के अवलोनार्थ सारणी में प्रस्तुत किया गया है।

सारणी

कैटल के द्वारा सोलह पी.एफ. प्रश्नावली में प्रयुक्त व्यक्तित्व कारक (Personality Factors used by Cattell in his 16 PF questionnaire)

क्र.स.	कारक	कारकों के दो विपरीत ध्रुव	
1	एA	उत्साही (Outgoing)	एकांकी (Reserved)
2	बीB	अधिक बुद्धिमान (More Intelligent)	कम बुद्धिमान (Less Intelligent)
3	सीC	स्थिर (Stable)	संवेगात्मक (Emotional)
4	ईE	दृढ़ (Assertive)	नम्र (Humble)
5	एफF	हंसमुख (Happy-go-lucky)	सौम्य (Sober)
6	जी G	आध्यात्मिक (Conscientious)	संसारिक (Expedient)
7	एचH	सामाजिक (Venturesome)	संकोची (Shy)
8	आईI	संवेदनशील (Tender Minded)	निष्ठुर (tough-minded)
9	एलL	शंकालु (Suspicious)	विश्वस्त (Trusting)
10	एमM	कल्पनावादी (Imaginative)	यथार्थवादी (Practical)
11	एनN	व्यवहारकुशल (Shrewd)	सामान्य (Forthright)
12	ओO	चिन्तित (Apprehensive)	आत्मविश्वासी (Placid)

13	क्यू 1Q1	आधुनिक (Experimenting)	रूढ़िवादी (Conservative)
14	क्यू 2Q2	स्व-आधारित (Self-sufficient)	समूह नियंत्रित (Group-tied)
15	क्यू 3Q3	नियंत्रित (Controlled)	अन्तर्द्वन्दी (Casual)
16	क्यू 4Q4	तनावयुक्त (Tense)	तनावमुक्त (Relaxed)

1.9.3 आइजेंक का शीलगुण उपागम

जर्मनी से आकर ब्रिटेन में बसे एच.जे. आइजेंक नामक एक अन्य मनोवैज्ञानिक ने व्यक्तित्व को प्रकार - शीलगुण प्रत्यय (Type-Traits Concept) के रूप में प्रस्तुत किया। आइजेंक के अनुसार व्यवहार संगठन के निम्न चार स्तर होते हैं :

- (i) विशिष्ट अनुक्रियाएं (Specific Responses)
- (ii) आदतजन्य अनुक्रियाएं (Habitual Responses)
- (iii) शीलगुण (Traits)
- (iv) प्रकार (Type)

विशिष्ट अनुक्रियाएं वस्तुतः अलग अलग क्रियाओं के रूप में होती हैं। जैसे पलक झपकाना, आँखे झुंकाना विशिष्ट अनुक्रियाओं के उदाहरण हैं। आदतजन्य अनुक्रियाएं व्यक्ति की आदतों के फलस्वरूप होती हैं। व्यक्ति समान परिस्थितियों में समान आदतजन्य अनुक्रियाएं करता है। जैसे शीघ्रता से मित्र बनाना या न बनाना अथवा, अजनबियों से सहज (Shyness) ढंग से बातचीत न कर पाना आदतजन्य अनुक्रियाएं हैं। कुछ आदतजन्य अनुक्रियाओं के एकीकृत होने पर शील गुण बनते हैं। जैसे शीघ्रता से मित्र न बनाने तथा दूसरों से सहजता से बातचीत करने में कठिनाई महसूस करने की आदतें संकोच शीलगुण की सूचक हैं। अनेक शीलगुणों के एकीकृत रूप को आइजेंक ने प्रकार कहा है। जैसे आग्रह (Persistence) दृढ़ता (Rigidity), आत्मनिष्ठ (Subjectivity) झेंप (Shyness) तथा चिड़चिड़ापन (irritability) आदि शीलगुणों से मिलकर व्यक्तित्व का अन्तर्मुखी (Introversion) प्रकार बनता है। वस्तुतः इस चतुर्थ एवं अन्तिम स्तर पर व्यक्तित्व का एक स्पष्ट प्रकार परिलक्षित होता है। अतः व्यक्तित्व प्रकार को परस्पर सम्बन्धित शीलगुणों का समूह कहा जा सकता है। दूसरे शब्दों में समान प्रकृति के शीलगुण मिलकर व्यक्तित्व के प्रकार को इंगित करते हैं। उपरोक्त वर्णित व्यक्तित्व को अन्तर्मुखी प्रकार को चित्र में स्पष्ट किया गया है। चित्र से स्पष्ट है कि किसी व्यक्ति को अन्तर्मुखी तब ही कहा जा सकता है जब उसके शीलगुण स्तर तीन के समान हों, उसका आदतजन्य व्यवहार स्तर दो के समान हो तथा उसकी विशिष्ट अनुक्रिया स्तर एक के अनुरूप हों। स्पष्ट है कि आइजेंक के अनुसार व्यवहार को एक ऐसे पदानुक्रम के रूप में समझा जा सकता है जिसके निम्नवत स्तर पर विशिष्ट अनुक्रियाएं हैं तथा उच्चतम स्तर पर व्यक्तित्व का प्रकार स्थित होता है। आइजेंक ने व्यक्तित्व की तीन निम्न मूलभूत विमाओं (Basic Dimensions) को प्रस्तुत किया है।

- (i) मुखता (Versionism i.e. Introversion - Extroversion)
- (ii) स्नायुविकता (Neuroticism i.e. Emotional Instability- Emotional Stability)
- (iii) मनोविकारता (Psychoticism)

1.9.4 बिग फाइव (Big Five) मॉडल

सम्प्रति शीलगुणों के क्षेत्र में पाँच मूल आयामों की विश्व स्तर पर चर्चा है। मैक्के एवं कोस्टा ने मूल शीलगुणों की संख्या कारक विश्लेषण के आधार पर पाँच बतायी है। इसे 'बिग फाइव' मॉडल भी कहा जाता है। (i) बहिर्मुखता (Extraversion) - इससे व्यक्ति की सामाजिक उन्मुखता का पता चलता है। (ii) सहमतिजन्यता (Agreeableness) - इससे व्यक्ति की उदारता, विश्वास एवं स्वभाव का पता चलता है। (iii) कर्तव्यनिष्ठा (Conscientiousness)- इसके द्वारा आत्म-अनुशासन, कर्तव्यपालन आदि के बारे में जानकारी प्राप्त होती है। (iv) स्नायुविकृति (Neuroticism) - इससे चिन्ता, संवेगात्मक स्थिति एवं स्वभाव के बारे में जानकारी प्राप्त होती है। (v) अनुभवों के प्रति खुलापन (Openness to experience)- अर्थात् व्यक्ति कितना रचनात्मक, मौलिक विचार, जिज्ञासा एवं कल्पनाशक्ति वाला है। इन आयामों पर उच्च एवं निम्न प्राप्तांकों का आशय अलग अलग है।

	Low Scorers	High Scorers
1 Extroversion	Loner Quiet Passive Reserved	Joiner Talkative Active Affectionate
2 Agreeableness	Suspicious Critical Ruthless Irritable	Trusting Lenient Soft-hearted Good-natured
3 Conscientiousness	Negligent Lazy Disorganized Late	Conscientious Hard-working Well-organized Punctual
4 Neuroticism	Calm Even-tempered Comfortable Unemotional	Worried Temperamental Self-conscious Emotional
5 Openness to experience	Down-to-earth Uncreative Conventional Uncurious	Imaginative Creative Original Curious

1.9.5 शीलगुण उपागम के दोष

यद्यपि शीलगुण सिद्धान्त 'प्रकार सिद्धान्त' से अधिक वैज्ञानिक एवं पूर्ण लगता है, फिर भी मनोवैज्ञानिकों ने इसकी भी कुछ आलोचनाएं की हैं, जो निम्नांकित हैं :-

- (i) शीलगुण सिद्धान्त (trait theory) में कारक विश्लेषण (factor analysis) की प्रविधि द्वारा यह निश्चित करने की कोशिश की गई है कि व्यक्तित्व के कितने प्रमुख शीलगुण हैं। शीलगुण सिद्धान्तवादी (trait theorists) ऐसे शीलगुणों की कोई एक निश्चित संख्या निर्धारित करने में

अबतक असमर्थ रहे हैं। कैटेल के अनुसार इस तरह का शीलगुण 16 है जबकि आलपोर्ट इतनी कम संख्या से संतुष्ट नहीं है। नौरमैन (Norman, 1963) ने यह बताया कि कुछ ऐसे ही शीलगुण सिद्धान्तवादी हैं जो, प्रमुख शीलगुणों की संख्या मात्र पाँच ही मानते हैं। इस तरह की असहमति से व्यक्ति की व्याख्या सही सही ढंग से नहीं की जा सकती है।

- (ii) शीलगुण सिद्धान्तवादियों द्वारा बताए गए प्रमुख शीलगुण की संख्या के बारे में असहमति तो है ही, साथ ही साथ ऐसे शीलगुण एक दूसरे से पूर्णतः स्पष्ट, भिन्न एवं स्वतंत्र नहीं हैं। दूसरे शब्दों में, कुछ प्रमुख शीलगुण से इस तरह से जुड़े हुए हैं तथा संबंधित हैं कि लगता है एक ही बात को दो ढंग से कहा जा रहा है जिससे व्यक्ति के मन में संभ्रान्ति (confusion) अधिक होती है। जैसे अन्तर्मुखता-बहिर्मुखता (introversion-extroversion) एक ऐसा शीलगुण है जो अस्थिरता-स्थिरता (instability-stability) के शीलगुण से ऐसा मिलता है कि इसमें स्पष्टता कम तथा संभ्रान्ति अधिक पैदा होती है। अन्तर्मुखता का गुण तथा अस्थिरता का गुण करीब-करीब एक ही समान हैं। ठीक उसी प्रकार बहिर्मुखता के गुण अस्थिरता के गुण से काफी मिलता-जुलता है। इस तरह शीलगुण सिद्धान्त में संभ्रान्ति अधिक तथा स्पष्टता (clarity) कम है।
- (iii) शीलगुण सिद्धान्त में व्यक्तित्व की व्याख्या अलग अलग शीलगुणों के रूप में की जाती है। आलोचकों का मत है कि इस तरह के विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण से व्यक्तित्व की एक सम्पूर्ण व्याख्या (whole explanation) नहीं की जा सकती और तब व्यक्तित्व के बारे में कोई उचित सामान्यीकरण (generalization) या नियम बनाने की बात सिर्फ इस सिद्धान्त के आधार पर सही सही नहीं की जा सकती।
- (iv) शीलगुण सिद्धान्त में परिस्थिति कारकों (situational factors) के महत्त्व को स्वीकार नहीं किया गया है। इस सिद्धान्त के अनुसार यदि किसी व्यक्ति में 'प्रभुत्व' (dominance) का शीलगुण है, तो इसका मतलब यह हुआ कि वह हर परिस्थिति में वह 'प्रभुत्व' दिखाएगा और दूसरों पर आधिपत्य रखने की कोशिश करेगा। परन्तु, ऐसा होता नहीं है। एक छात्र अपने साथियों के बीच काफी प्रभुत्व दिखा लेता है, परन्तु अपने माता-पिता या शिक्षक के सामने वह विनम्रता से पेश आता है। स्पष्ट है कि शीलगुण सिद्धान्त से हमें यहां इस छात्र के व्यवहार को समझने में मदद नहीं मिल पाती है।

इन आलोचनाओं के बावजूद शीलगुण सिद्धान्त (trait theory) व्यक्तित्व का एक मुख्य सिद्धान्त है तथा 'प्रकार सिद्धान्त' (type theory) से श्रेष्ठ (superior) माना माना गया है।

1.10 सारांश

यद्यपि व्यक्तित्व का परम्परागत अर्थ बाह्य पहनावे से है, परन्तु आधुनिक समय में इसका अर्थ विस्तृत रूप में लिया हुआ है। विस्तृत अर्थों में व्यक्तित्व से तात्पर्य व्यक्ति के समस्त शारीरिक, मानसिक तथा सामाजिक गुणों के उस गत्यात्मक संगठन से है जो उसका वातावरण से सामंजस्य बनाता है व्यक्तित्व की प्रकृति को स्पष्ट करने के लिए।

मन विगहण्ट तथा आलपोर्ट ने अनुसंधान किए हैं इसी आधार पर व्यक्तित्व उपागमों की बात कही गई है जिसमें प्रकार उपागम तथा शीलगुण उपागम प्रमुख हैं प्रकार उपागमों में सर्वप्रथम हिपोक्रेट्स ने चार

प्रकार बताये इसके पश्चात शारीरिक गुणों के आधार पर क्रेचमर एवं शेल्डन ने चार चार प्रकार बताये लेकिन जुंग के द्वारा मनोवैज्ञानिक गुणों के आधार पर बताये गए प्रकार अन्तमुखी एवं बहिर्मुखी ज्यादा प्रसिद्ध हुए। प्रकार उपागम में भी कई दोष रहे इसके पश्चात शील गुण उपागम के अन्तर्गत आलपोर्ट एवं कैटल ने व्यक्तित्व के शील गुण बताये।

1.11 शब्दावली

- 1 Personality : लैटिन भाषा के Persona से बना है।
- 2 व्यक्तित्व : व्यक्तित्व जीवन के व्यवहार की एक समग्र विशेषता है।
- 3 शीलगुण - शीलगुण से तात्पर्य व्यक्ति के व्यवहार का वर्णन करने वाली उन संज्ञाओं से है जो व्यवहार के संगत एवं अपेक्षाकृत स्थायी रूप को अभिव्यक्त करती है।

1.12 स्वमूल्यांकन प्रश्न

अतिलघुरात्मक प्रश्न

- 1- व्यक्तित्व किस अंग्रेजी शब्द का पर्याय है।
- 2- Personality किस शब्द से बना है।
- 3- व्यक्तित्व की परिभाषाओं का विश्लेषण कर किसे मनोवैज्ञानिक ने व्यक्तित्व की व्यापक परिभाषा दी।
- 4- क्रेचमर ने व्यक्तित्व के कितने प्रकार बताए।
- 5- आलपोर्ट ने शीलगुणों की कितनी प्रवृत्तियां बताईं।

लघुरात्मक प्रश्न

- 1- निम्नलिखित मनोवैज्ञानिकों द्वारा दी गई व्यक्तित्व की परिभाषा लिखिए।
अ गिलफर्ड ब वुडवर्थ स डेशील द विगतयाहण्ट य आलपोर्ट
- 2- शेल्डन के शरीर की रचना सिद्धान्त का संक्षेप में वर्णन कीजिए।
- 3- अन्तमुखी एवं बहिर्मुखी व्यक्तित्व के गुणों का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

निबंधात्मक प्रश्न

- 1 आलपोर्ट के शीलगुण सिद्धान्त को विस्तार से व्याख्या कीजिए।
- 2 कैटल के शील गुण सिद्धान्त की विस्तार से व्याख्या कीजिए।

1.13 संदर्भ ग्रंथ सूची

- Allport, H.E.; Social Psychology Boston : Hoftun, Mfflin, 1924
- Allport, G.W. : Personality; Psychological Interpretation, New York, Henary Hall, 1937
- Cattell, R.B.; Personality and motivation, New York, Harcourt, 1957
- एल. आर. शुक्ला : बाला मनोविज्ञान
- डॉ. एस.एस. माथुर : शिक्षा मनोविज्ञान
- डॉ. एस.पी. गुप्ता : शिक्षा मनोविज्ञान, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद
- डॉ. आर.एन. सिंह : आधुनिक मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा -2
- डॉ. अरूण कुमार सिंह : आधुनिक मनोविज्ञान, भारती भवन, पटना
- डॉ. पी.डी. पाठक : शिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा - 2

इकाई 2

“व्यक्तित्व की अवधारणा एवं व्यक्तित्व विकास,
व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाले कारक”

Concept of Personality and Personality Development, Factors influencing Personality

इकाई की रूपरेखा

- 2.1 प्रस्तावना
- 2.2 उद्देश्य
- 2.3 व्यक्तित्व की अवधारणा
 - 2.3.1 व्यक्तित्व की भारतीय अवधारणा
 - 2.3.2 व्यक्तित्व की पाश्चात्य अवधारणा
- 2.4 व्यक्तित्व विकास का अर्थ
- 2.5 व्यक्तित्व विकास की अवस्थाएँ
- 2.6 व्यक्तित्व विकास को प्रभावित करने वाले कारक
- 2.7 सारांश
- 2.8 शब्दावली
- 2.9 स्वमूल्यांकन हेतु प्रश्न
- 2.10 संदर्भग्रंथ

2.1 प्रस्तावना

स्माज में ‘व्यक्तित्व’ एक अति प्रचलित शब्द है। यह ऐसा शब्द है जिसके स्वरूप के बारे में अनेकानेक दृष्टिकोण उपलब्ध हैं। विद्वानों ने उसे अपनी-अपनी दृष्टि से पारिभाषित भी किया है। इस सम्प्रत्यय का अर्थ काफी व्यापक है। परन्तु इसके रूप के बारे में विद्वानों का विचार प्रायः संकीर्ण रहा है। इसलिए व्यक्तित्व बड़ा आकर्षक या खराब है। इससे वास्तव में व्यक्तित्व का सही चित्रण नहीं हो पाता है क्योंकि एक आकर्षक व्यक्ति का व्यक्तित्व खराब और एक अनाकर्षक व्यक्ति का व्यक्तित्व अच्छा भी हो सकता

है। इसमें बाह्य एवं आन्तरिक दोनों ही प्रकार की विशेषताएँ पाई जाती हैं। इनमें समुचित समन्वय को व्यक्तित्व कहा जा सकता है। अतः व्यक्तित्व की विभिन्न अवधारणाओं, व्यक्तित्व विकास की अवस्थाओं और व्यक्तित्व विकास को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन करने की महती आवश्यकता है।

2.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप -

- व्यक्तित्व की भारतीय एवं पाश्चात्य अवधारणा को समझ सकेंगे।
- व्यक्तित्व विकास का अर्थ समझ पायेंगे।
- व्यक्तित्व विकास की अवस्थाओं को समझ सकेंगे।
- व्यक्तित्व विकास को प्रभावित करने वाले कारकों को समझ सकेंगे।

2.3 व्यक्तित्व की अवधारणा (Concept of Personality)

व्यक्तित्व (Personality) को लेकर विद्वानों में अनेक मतभेद रहे हैं। 'व्यक्तित्व- शब्द लैटिन भाषा है परसोना से बना है, जिसका अर्थ है मुखौटा। नाटकों में चेहरे पर पात्र एक मुखौटा पहनते थे जो नाटक के पात्र की चारित्रिक विशेषताओं के दर्शन कराता था। नाटकों में वेशभूषा भी पात्रानुकूल होती थी। इससे पात्रों के चारित्रिक वैशिष्ट्य का पता चलता है।

व्यक्तित्व के विषय में भारत तथा यूरोप एवं अमेरिका में पृथक् अवधारणायें प्रचलित हैं। इन अवधारणाओं के आधार पर व्यक्तित्व का विश्लेषण किया जाता है।

2.3.1 व्यक्तित्व की भारतीय अवधारणा (Eastern concept of Personality) -

(1) दार्शनिक दृष्टिकोण (Philosophical Outlook) - दर्शनशास्त्र की अवधारणा है कि आत्मज्ञान, आत्मानुभूति वाला व्यक्ति ही व्यक्तित्व है, अन्य सभी साधारण जन हैं। आत्मज्ञान की अधिकता ही व्यक्तित्व को आकर्षक बनाती है। ऐसा व्यक्ति ही पूर्णता का आदर्श है। आत्मज्ञान से पूरित है।

दार्शनिक दृष्टिकोण वैदिक युग से प्रचलित है। पाप-पुण्य, शरीर, मस्तिष्क तथा आत्मा से संबंधित तत्त्वों का समंजन ही व्यक्तित्व का निर्माण करता है। एक वेद मंत्र में कहा गया है - "हे आत्मजन, मेरे सारे अंग-वाणी, नेत्र, श्रोत्र आदि सभी कर्मेन्द्रियाँ और ज्ञानेन्द्रियाँ, प्राण समूह, शारीरिक और मानसिक शक्ति तथा ओज सब पुष्टि एवं वृद्धि को प्राप्त हों।"

सांख्य दर्शन आध्यात्मिक, आधिभौतिक तथा आदि दैविक के भेद से दुःख तीन प्रकार के है। शारीरिक दुःख का कारण वात, पित्त, कफ की विषमता के कारण रोग एवं दुःख देने वाले विषयों की प्राप्ति है। मानस दुःख का साधन काम, क्रोध, मोह, विषाद आदि है।

न्याय दर्शन धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, आन्विक्षी, वार्ता तथा दण्ड नीति व्यक्तित्व का निर्माण करते हैं। वैशेषिक दर्शन द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य और पंचम तत्त्व पर बल देते हैं। वैशेषिक सिद्धान्त प्रतिनियत

अवस्था से ही सुखी, दुखी, उच्च वंशीय, नीच वंशीय, विद्वान तथा मूर्ख होते हैं। मीमांसा दर्शन के अनुसार-आत्मज्ञानपूर्वक वैदिक कर्मों के अनुष्ठान से धर्माधर्म के विनाश के लिये देह, इन्द्रिय आदि का आत्यन्तिक निराकरण ही मोक्ष है। शंकराचार्य ने शिक्षा निरुक्त, छन्द, ज्योतिष और व्याकरण की शिक्षा से युक्त व्यक्ति ही सर्वोत्तम व्यक्तित्व है।

आयुर्वेद में वात, पित्त तथा काम प्रधान व्यक्तित्व कहे गये हैं, इन तीनों गुणों का असन्तुलन व्यक्तित्व विकार करता है तथा सन्तुलन व्यक्तित्व का निर्माण करता है।

तैत्तिरीय उपनिषद् में स्नातकों को उत्तम व्यक्तित्व का निर्माण करने के लिए समावर्तन के समय जो उपदेश दिये जाते थे, सत्य बोलो, धर्म का आचरण करो, स्वध्याय का त्याग न करो। सत्य, अर्थ, कल्याणकारी कार्य, देव, पितृ कर्मों का त्याग न करो। आचार्य, देव तथा पिता की अर्चना करो।

(2) समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण (Sociological Outlook) - दार्शनिक दृष्टिकोण ने व्यक्तिवादी, व्यक्तित्व संबंधी अवधारणाओं को जन्म दिया है। व्यक्ति समाज का अंग है और उस पर समाज के अनेक दबाव तथा प्रभाव पड़ते हैं। इन दबाव तथा प्रभावों से व्यक्तित्व का निर्माण होता है। समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण के अनुसार व्यक्ति की समाज में भूमिका (Role) तथा स्थिति (Status) का निर्वाह होता है। भारत में निम्न वर्ग के प्रतिभाशाली व्यक्ति भी वर्ण, आश्रम तथा जातीय व्यवस्था के दबावों से पीड़ित रहते हैं। भले ही वे अपने निजी गुणों के कारण कितना भी ऊँचा स्थान प्राप्त कर लें।

प्राचीन मनोविज्ञान की भूमिका (Role of old psychology) - आज के औपचारिक मनोविज्ञान का इतिहास एक सदी पुराना है जबकि मानव विकास के इतिहास से इसका पुराना संबंध है। प्राचीन अवधारणा का आधार धर्म है। एशिया में प्रचलित धर्म भले ही अपने समर्थकों के विशेष व्यक्तित्व की पहचान न करा पाये किन्तु उन धर्मों के प्रवर्तक प्रचारकों-योगी, सन्यासी, धर्मगुरु, मठाधीश तथा महन्त एवं पुजारी जैसे व्यावसायिकों के व्यक्तित्व का निर्माण विशिष्ट शैली में हुआ है। यह वास्तव में व्यावहारिक मनोविज्ञान पर आधारित है।

अभिधम्मा : व्यक्तित्व सिद्धान्त (Abhidhamma : Personality theory) - अभिधम्मा व्यक्तित्व सिद्धान्त ईसा से 500 वर्ष पूर्व गौतम बुद्ध के विचारों को प्रतिबिम्ब है। भिक्षु नयनपोनिका ने कहा है - “बौद्ध धर्म में मस्तिष्क वह आरम्भिक बिन्दु है, वह केन्द्रीय स्थिति है जहाँ साधक मुक्ति एवं पवित्रता की ओर बढ़ता है। इसमें स्वस्थ व्यक्तित्व के लिये साधना के विभिन्न चरण अपनाये जाते हैं।”

अधिधम्म सिद्धान्त में व्यक्ति का सम्पूर्ण विश्लेषण किया जाता है। एक कथा है - एक अपूर्व सुन्दरी पति से झगड़कर जा रही थी, एक बौद्ध साधक ने उसे देखा। उसके मन में एक विचार आया कि कंकाल ने वस्त्र पहन रखे हैं। कुछ क्षण उपरान्त उस स्त्री का पति उस और गुजरा। बोला - “महात्मन! इधर आपने किसी स्त्री को तो नहीं देखा।” साधक का उत्तर था-”इस मार्ग से कोई स्त्री गुजरी है या पुरुष, मैंने ध्यान नहीं दिया है। अस्थियों का एक बोरा अवश्य इधर से गुजरा है।”

चूँकि इस कथा में साधक शरीर के 32 अंगों पर ध्यान केन्द्रित कर रहा था, इसलिए उसने स्त्री के सौंदर्य आदि पर ध्यान नहीं दिया।

अधिगम में व्यक्तित्व की अवधारणा अट्ट (Atta) या आत्म (Self) पर आधारित है। आत्म, शरीर के अंगों, विचार, संवेदना, इच्छा, स्मृति तथा संस्कार आदि का योग है। यह भाव (Bhav) द्वारा चेतना की निरन्तरता से जुड़ा है।

आत्मा (Soul) - प्राचीन अवधारणाओं में आत्मा का सिद्धान्त हिन्दू युग में विकसित हुआ। आत्मा, मन का चेतन भाव है और हमारे व्यवहार का नियन्त्रक है, मूल है। यह कल्पना तथा आदर्श पर आधारित है। आत्मा का सिद्धान्त, कर्म पर आधारित है। सत, रज, तम गुणों पर व्यक्तित्व का वर्गीकरण किया जाता है।

2.3.2 व्यक्तित्व की पाश्चात्य अवधारणा (Western concepts of Personality) - व्यक्तित्व की पाश्चात्य अवधारणाओं का आधार शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, संवेगात्मक स्थिरता आदि गुण है। इन गुणों पर वंशक्रम तथा वातावरण का प्रभाव पड़ता है। प्रणाली विहित ग्रन्थियों, सामान्य स्वास्थ्य, स्नायुमण्डल आदि व्यक्तित्व को प्रभावित करते हैं। वातावरण सम्बन्धी तथ्यों में परिवार, पड़ोस, बालक समूह, विद्यालय, पुस्तकें, जीवन लक्ष्य, मनोरंजन के साधन, आर्थिक स्थिति, सांस्कृतिक वातावरण, जलवायु तथा शिक्षा आदि व्यक्तित्व पर प्रभाव डालते हैं।

इसीलिए पाश्चात्य मनोवैज्ञानिकों ने व्यक्तित्व की अवधारणा का विकास इन सिद्धान्तों पर किया है :

- 1 मनोविज्ञान
- 2 मानवतावाद
- 3 व्यवहारवाद
4. विकासवाद
- 5 क्षेत्रीय मनोविज्ञान
- 6 प्रकारवाद
- 7 गुणवाद

कुल मिलाकर भारतीय और पाश्चात्य व्यक्तित्व अवधारणाएँ, मनुष्य के आन्तरिक तथा बाह्य स्वरूप के आधार पर सम्पूर्ण व्यक्ति का विश्लेषण करके उसका निर्धारण करते हैं। भारतीय सिद्धान्त का आधार अध्यात्म है, वह ऊपरी आवरण को सम आन्तरिक विकास पर अधिक बल देते हैं। प्रतीचीवादी मनोविज्ञानिकों ने भौतिक आधारों पर व्यक्तित्व की अवधारणाओं का विकास किया है।

व्यक्तित्व की भारतीय तथा पाश्चात्य की अवधारणायें मुख्य रूप से अन्तः तथा बाह्य वैयक्तिक आवरण पर बल देती हैं। प्राचीन तथा भारतीय अवधारणा के अनुसार अच्छा व्यक्तित्व वह है जिसमें सदगुण होते हैं। ये सदगुण एक और उसका अपना विकास करते हैं तो दूसरी और समाज तथा समुदाय का विकास तथा कल्याण के प्रति प्रतिबद्ध होते हैं। राम, कृष्ण, महावीर, गौतम बुद्ध, शंकराचार्य आदि व्यक्तित्व लोकोपकारी रहे हैं। अभाव पैदा कर उसके यथार्थ का अनुभव कर सामान्य जन का कल्याण करने का संकल्प लिया है। सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय के दर्शन को जीवन में उतारने वाला व्यक्तित्व ही प्राची प्रधान होता है। आज भी अध्यात्मिक के क्षेत्र में विज्ञान तथा समुदाय के क्षेत्र में निस्वार्थ भाव से सेवा में लगे व्यक्तियों की कमी नहीं है।

पश्चिमी विचार ने व्यक्तित्व को भी प्रयोजन से जोड़ा है। उसको सूक्ष्म गुणों में स्वतंत्र रूप से देखा है। एक शिक्षक जो बहुत अच्छा पढ़ता है, उसका शैक्षिक व्यक्तित्व बहुत अच्छा है, हो सकता है उसका निजी व्यक्तित्व अधिकांशमें दुर्गुणों से युक्त हो।

हमें केवल इतना ही कहना है कि व्यक्तित्व को पृथक-पृथक परिवेश में नहीं देखा जाता अपितु उसे समग्र रूप में देखा जाता है। फिर समाज के प्रभाव को भी अनदेखा नहीं किया जा सकता है।

2.4 व्यक्तित्व विकास का अर्थ (Meaning of personality development)

मनोविज्ञान के क्षेत्र में व्यक्तित्व शब्द सामान्य व्यवहार के वैज्ञानिक अध्ययन के रूप में किया जाता है। व्यक्तित्व के तत्त्वों से आशय है, व्यक्ति के व्यवहार को निर्धारित करने तथा उसे स्थायी रूप देने में जो तत्त्व काम आते हैं, उन सभी का योग तथा परिणाम, व्यक्ति की समग्र छवि के विषय में एक धारणा प्रस्तुत करता है। यही धारणा व्यक्तित्व कहलाती है। व्यक्ति अच्छा है या बुरा, उत्तम व्यवहार वाला है या सामान्य, प्रभावशाली है या निष्प्रभावी, ये सारे तत्त्व व्यक्ति के अमूर्त रूप को प्रस्तुत करते हैं। एक व्यक्ति, दूसरे व्यक्ति के विषय में धारणा बनाता है। खास बात यह है कि व्यक्ति स्वयं के व्यक्तित्व के विषय में कभी धारणा नहीं बनाता। जब भी बनाने का प्रयास करता है, वह बँट जाता है, खण्डित हो जाता है।

ड्रेवर के शब्दों में , “व्यक्तित्व शब्द का प्रयोग व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, नैतिक और सामाजिक गुणों के सुसंगठित और गत्यात्मक संगठन के लिए किया जाता है जिसे वह अन्य व्यक्तियों के साथ अपने सामाजिक जीवन में आदान-प्रदान के दौरान व्यक्त करता है।

“Personality is a term used for the integrated and dynamic organization of the physical, mental, moral and social qualities of the individual as the manifests itself to other people, as the give and take of social life.”

2.5 व्यक्तित्व विकास की अवस्थाएँ

व्यक्तित्व का विकास एक सतत् प्रक्रिया है। इसका बीजारोपण गर्भाधान के साथ ही होता है और जीवनपर्यन्त यह प्रक्रिया चलती रहती है। इस प्रक्रिया को विकास की अवस्थाओं के आधार पर स्पष्ट किया जा सकता है।

- 1 **गर्भकालीन अवस्था में व्यक्तित्व (Prenatal Stage and Personality)** - चूँकि व्यक्तित्व के स्वरूप पर आनुवंशिक कारकों का भी प्रभाव पड़ता है अतः गर्भकालीन परिस्थितियाँ जन्मोपरान्त प्राप्त होने वाली व्यक्तित्व संरचना की नींव के रूप में मानी जाती है। गर्भकालीन अवस्था की अवधि 280 दिनों तक चलती है। इसे क्रमशः अण्डाणु अवस्था (Stage of ovum) भ्रूणावस्था (Embryonic Stage) एवं गर्भाशयी अवस्था (Fetal Stage) कहते हैं। गर्भकालीन अवस्था पुरुष जननांग (Testes) से निकलने वाले शुक्राणु एवं स्त्रियों के जननांग (Ovary) से निकलने वाले अण्डाणु (Ovum) के मेल के साथ प्रारम्भ होती

है। इसी प्रक्रिया से शिशु में आनुवंशिक विशेषता आती है, उसका यौन निर्धारित होता है तथा परिवार में उसकी क्रमिक स्थिति भी तय होती है।

कुछ लोगो ने यह अध्ययन करने का प्रयास किया है कि गर्भकालीन परिस्थितियों का बच्चों के व्यवहार तथा समायोजन पर कैसा प्रभाव पड़ता है। बच्चों के सम्यक शारीरिक विकास पर माँ की शारीरिक दशाओं का स्पष्ट प्रभाव पड़ता है। ऐसे भी प्रमाण मिले हैं कि गर्भकालीन दशा में माँ की संवेगात्मक दशाओं का प्रभाव जन्मोपरान्त बच्चे पर परिलक्षित होने लगता है (Sontag, 1966,1969)। माँ की आयु का भी बच्चों के व्यक्तित्व पर प्रभाव पड़ता है। जिन महिलाओं की उम्र बहुत कम या अधिक होती है उने उत्पन्न बच्चों में विभिन्न प्रकार की शारीरिक, मानसिक एवं व्यावहारिक विकृतियों के उत्पन्न होने की सम्भावना रहती है, जैसे - बौनापन (Cretanism), मंगोलियन विशेषताएँ (Mongolism), हृदय विकार (Heart malformations) एवं जलकपालपन (Hydrocephalous) इत्यादि। उपर्युक्त कारक विभिन्न प्रकार की शारीरिक एवं मानसिक विकृतियाँ पैदा करते हैं। (Matagu, 1970” Pasamanick and Knoblock,1966)। यह भी पाया गया कि गर्भावस्था में कुपोषण के कारण मानसिक विकास प्रभावित होता है ऐसी महिलाएँ जो गर्भकाल में धूम्रपान करती हैं उनके बच्चों की ऊँचाई अपेक्षाकृत कम पाई जाती है (Goldstein,1971)। गर्भावस्था में प्रतिकूल मनोवैज्ञानिक कारकों का भी व्यक्तित्व के विकास पर घाटक प्रभाव पड़ता है। ऐसी माताएँ जो गर्भकाल में चिन्ता (Anxiety), प्रतिबल (Stress), एवं तनाव (Tension) आदि से प्रभावित रहती हैं उनके बच्चे प्रारम्भ के 3-4 वर्षों तक प्रायः बीमार पड़ते रहते हैं। इससे व्यक्तित्व के समुचित विकास में बाधा पड़ती है (Sontage] 166,1969)। इससे स्पष्ट होता है कि गर्भकालीन दशाएँ भी व्यक्तित्व के विकास में महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं एवं व्यक्तित्व का विकास गर्भकाल से ही प्रारम्भ हो जाता है।

- 2 **शैशवावस्था एवं व्यक्तित्व विकास (Infancy and personality)** - यह अवधि बहुत लघु परन्तु बहुत महत्वपूर्ण होती है वास्तविक अर्थों में व्यक्तित्व का विकास इसी अवस्था से प्रारम्भ होता है। जन्म के समय ही शिशुओं में वैयक्तिक भिन्नताएँ दिखाई पड़ने लगती हैं, जैसे - रोने में अन्तर, बनावट में अन्तर आदि। यहीं से शिशु समायोजन सीखना प्रारम्भ करता है (Straton,1982)। इस अवस्था से ही जन्मोपरान्त होने वाली पेशीय विकास की प्रक्रिया प्रारम्भ होती है। यदि आनुवंशिक विशेषताओं को विकसित होने का अवसर मिलता है, तो बच्चों का समुचित विकास होता है अन्यथा अनेक प्रकार की समस्याएँ पैदा हो सकती हैं (Thoms et. al. 1966)। यारो (Yarrow, 1963) का निष्कर्ष है कि यदि जन्मोपरान्त बच्चे माँ से अलग कर दिये जाते हैं, तो उनमें समायोजन की क्षमता अपेक्षाकृत कम विकसित हो पाती है।

इस प्रकार स्पष्ट हो रहा है कि व्यावहारिक अर्थों में व्यक्तित्व का विकास शैशवावस्था से ही प्रारम्भ हो जाता है। मिलर (1950) ने कहा कि शैशवावस्था मौलिक समायोजन का समय है

और इससे व्यक्ति के भविष्य के बारे में उसी प्रकार झलक मिलती है जिस प्रकार पुस्तक के स्वरूप के बारे में उसकी प्रस्तावना से झलक मिलती है (Bell et.al. 1971)

- 3 **बचपन एवं व्यक्तित्व विकास (Boyhood and personality)** - यह अवस्था जन्मोपरान्त द्वितीय सप्ताह से द्वितीय वर्ष तक मानी जाती है। इसमें बच्चों में अनेक प्रकार के शारीरिक एवं व्यावहारिक परिवर्तन होते हैं जो उनके समायोजन को प्रभावित करते हैं। इस अवस्था में 'आत्म; या 'स्व' (Self) का बोध होने लगता है तथा संज्ञानात्मक योग्यताएँ (जैसे - प्रत्यक्षीकरण एवं स्मृति आदि) का भी प्रदर्शन होने लगता है (Mackenzic etc. 1984; Bushnel et.al. 198)। वस्तुओं पर अधिकार जमाना, हँसना, खेलना, नाराज होने एवं निर्भरता में कमी आदि का प्रदर्शन बच्चों में होने लगता है। व्यक्तित्व के विकास के दृष्टिकोण से यह क्रान्तिक समय (Critical period) होता है क्योंकि इस समय जो नींव पड़ती है उसी पर प्रौढ़ व्यक्तित्व का निर्माण होता है। हरलॉक (1975), बाल्वी (Bowlby, 1956) एवं यारो (1963) ने निष्कर्ष दिया है कि इस अवधि में व्यक्तित्व सम्बन्धी परिवर्तनों का स्पष्ट आभास मिलता है।

बचपन में व्यक्तित्व के विकास पर माता के व्यवहार का सर्वाधिक प्रभाव पड़ता है। चूँकि इस अवधि से ही बच्चों में निर्भरता में कमी आने लगती है, अतः इस समय उन पर दबाव या अनावश्यक देखभाल का अच्छा प्रभाव नहीं पड़ता है (Stone and church, 1973)। इस उम्र में बच्चों के यौन (Sex) के अनुसार उनके प्रति व्यवहार भी लोगों द्वारा होने लगता है एवं वेशभूषा में अन्तर आने लगता है। इसका भी उनके ऊपर प्रभाव पड़ता है और आगे इसी प्रकार के और स्पष्ट छाप उन पर छोड़ता रहता है (Allport, 1961)। इस अवस्था में जो विशेषताएँ दिखाई पड़ती हैं ये लम्बे समय तक बनी रहती हैं (Bayley, 1970; Mischel, 1969)। परन्तु उन विशेषताओं में भी परिवर्तन अवश्य होता रहता है जो सामाजिक दृष्टिकोण से उचित नहीं होती हैं। समय के साथ व्यक्तित्व प्रणाली में परिवर्तन होता रहता है किन्तु उसका मूल स्वरूप स्थाई रहता है। इस प्रकार स्पष्ट हो रहा है कि व्यक्तित्व के विकास में प्रारम्भिक अनुभवों का विशेष महत्व है।

- 4 **बाल्यावस्था एवं व्यक्तित्व विकास (Childhood and personality)** - यह अवस्था 2 वर्ष से लगभग 12 वर्ष तक मानी जाती है। इसमें बालक में व्यापक परिवर्तन होते हैं। इसमें वे घर की चाहर दीवारी से बाहर जाना शुरू कर देते हैं। उन पर परिवार के अतिरिक्त स्कूल तथा मित्र मण्डली का भी प्रभाव पड़ने लगता है। इनका तीव्र गति से शारीरिक, सामाजिक एवं मानसिक विकास होता है। इसके परिणामस्वरूप उनका व्यक्तित्व प्रतिमान भी परिमार्जन होता रहता है और सामाजिक अन्तरक्रिया (Interaction) बढ़ जाने से व्यक्तित्व प्रणाली में सामाजिक गुणों की संख्या बढ़ जाती है। उनमें जिज्ञासा, अन्वेषण एवं भाषा विकास भी परिलक्षित होने लगता है। इस अवस्था में बच्चों में नकारात्मक प्रवृत्ति भी दिखाई पड़ने लगती है। इसी अवधि में कौशलों का अर्जन, संवेगों में स्थिरता तथा लैंगिक अन्तर भी दिखाई पड़ने लगता है। इस प्रकार स्पष्ट है कि बाल्यावस्था क्रान्तिकारी परिवर्तनों की अवस्था है। (Insetberg and Burke, 1973)

इस अवस्था में होने वाले व्यक्तित्व विकास पर माता-पिता, सम्बन्धियों एवं मित्रों आदि का सर्वाधिक प्रभाव पड़ता है। इसी समय बच्चों में स्व या आत्म की अवधारणा (Self concept) स्पष्ट रूप में दिखाई पड़ने लगता है। इसीलिए कहा गया है कि आत्मा की अवधारणा परिवार से उत्पन्न होती है। वे कौन है? उनके माता-पिता कौन है? वह वस्तु मेरी है इत्यादि जैसी बातें उनमें दिखाई पड़ने लगती है। (Glasner, 1961)। इस समय के व्यक्तित्व सम्बन्धी विकास पर उन्हें मिलने वाला प्रशिक्षण, माता-पिता की आकांक्षा, बच्चे की परिवार में स्थिति तथा असुरक्षा की भावना का विशेष प्रभाव पड़ता है। इनकी वैयक्तिकता (Individuality) की स्पष्ट झलक इसी समय से मिलने लगती है। कुछ बच्चे शान्त, कुछ वाचाल, कुछ नेतृत्व में रूचि लेने वाले तो कुछ चुपचाप रहने वाले होती है। यही उनकी वैयक्तिकता है। इन पर सामाजिक अनुभवों, आर्थिक स्तर, शारीरिक बनावट, स्वास्थ्य, बुद्धि एवं आत्मविश्वास की भावना आदि का भी प्रभाव पड़ता है।

5 **पूर्व किशोरावस्था एवं व्यक्तित्व विकास (Preadolescence o Puberty and personality)**- इसकी अवधि 10-12 वर्ष से 13-14 वर्ष तक मानी गई है। इस अवस्था में व्यक्तित्व सम्बन्धी विकासात्मक परिवर्तनों की संख्या तथा सीमा अपेक्षाकृत कम होती है क्योंकि इस अवधि पर किशोरावस्था की स्पष्ट छाप रहती है। फिर भी बालक तथा बालिकाओं में लैंगिक शक्तियों का विकास होने के साथ साथ उनके सामाजिक क्षेत्र में भी वृद्धि होती है। उन्हें नवीन प्रकार के समायोजन सीखने पड़ते हैं तथा चपलता, अस्थिरता एवं जिज्ञासा की प्रवृत्ति बढ़ने लगती है और उनमें नकारात्मक दृष्टिकोण का भी प्रदर्शन होता है (Maefarlance et.al.1954)

6. **किशोरावस्था एवं व्यक्तित्व विकास (Adolescence and Personality Development)** - यह अवधि 13-14 वर्ष से 18 वर्ष तक होती है। इसमें व्यक्ति में अनेक प्रकार के परिवर्तन प्रदर्शित होते हैं। जैसे - इस अवधि में व्यक्ति सामाजिक, संवेगात्मक, मानसिक एवं अन्य प्रकार के व्यवहार परिपक्वता अग्रसर होती है। उनमें अपने माता-पिता तथा सम्बन्धियों के प्रति यह धारणा विकसित होने लगती है कि वे उन्हें समझने की कोशिश नहीं कर रहे हैं और उन पर अनावश्यक दबाव डाल रहे हैं। वे अपनी भावनाओं, इच्छाओं, संवेगों को अधिक महत्त्व देने लगते हैं। जीवन के प्रति उनका दृष्टिकोण अवास्तविक (Unrealistic) होने लगता है। उन्हें समायोजन के नवीन आयाम सीखने पड़ते हैं तथा उनमें नवीन मूल्यों (Values) का भी विकास होता है।

किशोरावस्था में व्यक्ति अच्छी एवं गन्दी आदतों के प्रति सजग हो जाता है और अपना मूल्यांकन अपने मित्रों के साथ करने लगता है। वह सामाजिक अनुमोदन प्राप्त करने का प्रयास करता है। बाल्यावस्था में विकसित व्यक्तित्व प्रतिमानों का स्थिरीकरण होने लगता है और व्यक्ति अवांछित आदतों को त्यागने तथा वांछित आदतों को अंगीकार करने लगता है (Allport, 1963; Blos, 1971; Kagan and Mass, 1962)। यदि व्यक्ति नवीन पर्यावरण में जाता है (जैसे - स्कूल या कॉलेज जाना या नयी जगह पर जाना) तो पर्यावरणी परिवर्तनों का

उसके व्यक्तित्व विकास पर प्रभाव पड़ता है। ऐसे बालक जो स्कूल या कॉलेज जाने लगते हैं उनमें उन बालकों की अपेक्षा संवेगात्मक परिवर्तता, सामाजिकता तथा साहिष्णुता के गुण अधिक विकसित होने लगते हैं जो घर पर ही रह जाते हैं (Schmidt, 1970; Waterman and Waterman, 1971)। इस अवस्था में बालक उन लोगों के साथ अधिक सम्पर्क रखना चाहता है जो उसके आत्म अवधारण के अनुकूल व्यवहार करते हैं। इस अवस्था में होने वाले विभिन्न प्रकार के शारीरिक एवं मनोवैज्ञानिक परिवर्तनों का व्यक्तित्व के प्रतिमानों पर व्यापक प्रभाव पड़ता है। इसे अवस्था में व्यक्तित्व प्रतिमानों पर पारिवारिक सम्बन्धों, मित्रों एवं किशारों की आकांक्षाओं का भी प्रभाव पड़ता है।

इस प्रकार स्पष्ट हो रहा है कि किशोरावस्था में व्यक्तित्व-प्रतिमानों में परिवर्तन तथा स्थिरीकरण व्यापक पैमाने पर होता है। हरलॉक (1975) के अनुसार, उन किशारों तथा किशोरियों के व्यक्तित्व प्रतिमान अपेक्षाकृत अधिक उपयुक्त तथा समुचित होते हैं। जो 1. लक्ष्य, निर्धारित करने में वस्तुनिष्ठ दृष्टिकोण प्रयुक्त करते हैं, 2. जो अपनी शक्ति तथा कमजोरियों का सही मूल्यांकन करते हैं, 3. जिनके 'स्व' (Self) में स्थायित्व होता है तथा 4. जो अपनी उपलब्धियों में सन्तुष्ट होते हैं और अपनी कमियों में सुधार का प्रयास करते हैं। इससे स्पष्ट है कि किशारों की स्वयं अपने प्रति जो धारणा होती है उसका उसके समायोजन पर अत्यधिक प्रभाव पड़ता है।

7. **प्रौढ़ावस्था एवं व्यक्तित्व प्रतिमान (Adulthood and Personality Patterns) -** प्रौढ़ावस्था का प्रसार 18 वर्ष से 40 वर्ष तक माना गया है। व्यक्तित्व के जो प्रतिमान किशोरावस्था तक विकसित हो चुके रहते हैं उनके विकास की अन्य अवस्थाओं में प्रायः स्थिरीकरण होता है और कुछ नवीन शीलगुण भी विकसित होते हैं यथा - प्रौढ़ावस्था में व्यक्ति नवीन सामाजिक प्रत्याशाओं के अनुरूप कार्य करना सीखता है, उसके ऊपर परिवार सम्भालने की भी जिम्मेदारी आ जाती है और जीवन तनावयुक्त हो जाता है। वह स्वतंत्र रूप से सोचना प्रारम्भ करता है। इससे उसमें सर्जनात्मकता की शक्ति बढ़ती है।
8. **मध्यावस्था में व्यक्तित्व प्रतिमान (Personality Patterns in middle age) -** इसका प्रसार 40 वर्ष से 60 वर्ष माना गया है। इस अवस्था में व्यक्ति की योग्यताओं में हास प्रारम्भ हो जाता है। उसकी मानसिक एकाग्रता (Mental alertness), मानसिक स्थिरण (Mental fixation) एवं सक्रियता में कमी आने लगती है। इन कारणों से समायोजन में भी कठिनाई अनुभव की जाती है। जीवन में स्थिरता, एकरूपता तथा परिवर्तनों के अभाव के कारण व्यक्ति में चिन्ता, बोरियत एवं उदासी बढ़ने लगती है। इसका समायोजन पर बाधक प्रभाव पड़ता है। इस प्रकार स्पष्ट है कि इस अवस्था में व्यक्तित्व प्रणाली में समन्वय की कमी आने लगती है और 50 वर्ष के बाद उपर्युक्त लक्षण पूर्णतया स्पष्ट होने लगते हैं।
9. **वृद्धावस्था में व्यक्तित्व प्रतिमान (Personality Patterns in old age) -** इसका प्रारम्भ 60 वर्ष से माना जाता है और जीवन के शेष समय तक यही अवस्था रहती है। इसमें ह्रास की गति बहुत तीव्र हो जाती है और व्यक्ति में शारीरिक एवं मानसिक दुर्बलता आने लगती है। स्मरण शक्ति कमजोर पड़ने से समायोजन की समस्या स्थाई रूप कर लेती है (Tenny, 1984)

व्यक्ति में रूढ़िवादिता बढ़ जाती है और उसमें हीनता की भावना भी उत्पन्न हो सकती है। नयी पीढ़ी के साथ उसका सम्बन्ध सन्तोषजनक नहीं रह जाता है और एकाकीपन ही उसका सहारा रह जाता है। इस प्रकार स्पष्ट हो रहा है कि व्यक्तित्व प्रतिमानों में ह्यास तथा समन्वय का अभाव व्यक्ति को असहायावस्था में पहुँचा देते हैं। इन समीक्षाओं से यह भी स्पष्ट हो रहा है कि प्रौढ़ावस्था तथा उसके बाद की अवस्थाओं में व्यक्तित्व में कोई विशेष नवीन प्रतिमान नहीं उत्पन्न होते हैं बल्कि प्रतिमानों में धीरे धीरे ह्यास ही होता है। अतः व्यक्तित्व के विकास के दृष्टिकोण से किशोरावस्था तक की ही अवस्थाएं विशेष महत्व रखती हैं।

2.6 व्यक्तित्व विकास को प्रभावित करने वाले कारक

व्यक्तित्व पर अनेकानेक कारकों का प्रभाव पड़ता है। इनका वर्णन वर्गवार किया जा सकता है, जैसे - आनुवंशिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक कारक।

2.6.1 व्यक्तित्व विकास के आनुवंशिक निर्धारक (Hereditary Determinants of personality) - व्यक्तित्व के विकास पर निम्नांकित आनुवंशिक कारकों का प्रभाव अपेक्षाकृत अधिक पड़ता है। इन्हें वैयक्तिक कारक भी कहा जाता है।

- 1- शारीरिक गठन (Physique) - शैल्डन (1940) के अनुसार, शारीरिक संरचना व्यक्तित्व को प्रभावित करती है। मोटे, माँसल या दुर्बल लोगों के व्यक्तित्व में अन्तर उनकी शारीरिक संरचना के कारण प्रदर्शित होता है। अधिक मोटा या दुर्बल होना बच्चे कुरूपता में लेते हैं। इसका उनके ऊपर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। (Lerner etc. 1975, Lester, 1974)। कभी कभी अन्य बच्चे या प्रौढ़ भी बच्चों का उनकी संरचना के आधार पर नामकरण कर देते हैं। यदि नाम प्रतिकूल भावना व्यक्त करते हैं (जैसे - मल्लू, झबरा, गदहा) तो इससे उनमें हीनता भाव के विकसित होने की आशंका पैदा हो जाती है।
- 2- बुद्धि (Intelligence) - व्यक्तित्व के विकास में बुद्धि का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है, क्योंकि बुद्धि समायोजन, उपलब्धि तथा सर्जनशीलता जैसे सभी उपयोगी व्यवहारों को निर्धारित करती है। प्रखर बालकों में श्रेष्ठता जबकि मन्द बालकों में हीनता विकसित हो सकती है। इसका उसके व्यक्तित्व पर घातक प्रभाव पड़ता है। प्रखर बुद्धि के बालकों के प्रति माता-पिता, मित्रों एवं शिक्षकों की धारणा अनुकूल हो जाती है। इससे उनमें आत्म विश्वास बढ़ता है (Hilgard etc., 1975)। बालकों में बौद्धिक स्तर का मापन करके उनकी मानसिक योग्यता के अनुसार प्रशिक्षण की व्यवस्था की जाये, तो कम बुद्धि के बालकों के व्यक्तित्व के विकास को भी काफी सीमा तक सन्तोषजनक बनाया जा सकता है। मानसिक मन्दता से प्रभावित बच्चे प्रायः बौने होते हैं। उनमें मंगोलियन (Mangolion), लघुशीर्षता (Microcephaly) एवं जलशीर्षता (Hydrocephaly) की भी विशेषताएं पाई जाती हैं। इनका व्यक्तित्व पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। वैसे, चूँकि मन्द बच्चे स्वयं के बारे में कम सोच पाते हैं। अतः योग्यता की कमी से उत्पन्न प्रतिकूल धारणाओं की वे अनुभूति नहीं कर पाते (Gottlieb, 1975)।

- 3- आकर्षकता (Attractiveness) - बालक का सुन्दर या कुरूप दिखना भी आनुवंशिक प्रतिफल है। इसका उनके व्यक्तित्व तथा उनके प्रति लोगों की धारणा पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। (Clifford and Walster, 1973, 1973 Kleck et.al. 1974)। ऐसा भी देखा जाता है कि माता-पिता की भाँति शिक्षक भी आकर्षक बच्चों को अच्छा मान बैठते हैं और उन्हें उच्च प्राप्ति प्रदान करते हैं। इसका उनके आत्म विश्वास पर अनुकूल प्रभाव पड़ता है। इसके विपरीत अनाकर्षक बच्चे लोगों के अपनत्व तथा स्नेह की कमी के कारण स्वयं में प्रत्यक्षित करने लगते हैं। इससे उनमें हीनता बढ़ती है और आत्म विश्वास कम होने लगता है।
- 4- शारीरिक दशाएँ (Physical Conditions) - व्यक्तित्व के विकास पर शारीरिक दशाओं का भी प्रभाव पड़ता है। इस दृष्टि से सामान्य स्वास्थ्य एवं शारीरिक दोष महत्वपूर्ण हैं। प्रायः स्वस्थ एवं दोषविहीन बालकों के प्रति परिवार वालों का दृष्टिकोण अनुकूल और अस्वस्थ तथा दोषयुक्त बच्चों के प्रति अनानुकूल हो जाता है। मैट्टसन (Mattson, 1972) ने लिखा है कि इससे अस्वस्थ तथा दोषयुक्त बच्चों में हीनता का भाव विकसित हो जाता है। खराब स्वास्थ्य के कई दुष्परिणाम सामने आते हैं - 1. थकान जल्दी आती है इससे बच्चे स्वभाव से चिड़चिड़े हो जाते हैं। अतः उनके प्रति प्रतिकूल प्रतिक्रियाएँ की जाती हैं। 2. कुपोषण के कारण शारीरिक ऊर्जा कम हो जाती है। उनमें संकोच, झुँझलाहट, ग्लानि तथा असामाजिक व्यवहार में वृद्धि होने लगती है। 3. चिरकालिक रोग (यथा एकजीमा, मधुमेह आदि) हो जाने से संवेगात्मक अस्थिरता बढ़ती है, प्रबल नकारात्मक संवेग उत्पन्न होते हैं और परिवार पर आश्रितता बढ़ती है। 4. अन्तःस्रावी ग्रन्थियों, विशेषकर थायरॉयड के अधिक स्राव से घबराहट, उत्तेजना, अशान्ति तथा अतिसक्रियता और इससे कम स्राव से सुस्ती, ग्लानि तथा निष्क्रियता की समस्या पैदा होती है।
- जहाँ तक शारीरिक दोषों का प्रश्न है, वे दो रूपों में व्यक्तित्व को प्रभावित करते हैं। प्रथम - वे किस प्रकार की क्रियाओं में भाग ले पाते हैं और द्वितीय - लोगों की उनके प्रति धारणा कैसी है। किसी बालक में दोष तथा समानता जितनी अधिक होगी, उनमें हीनता भाव उतना ही अधिक व्याप्त हो जाएगा (Rapier et.al. 1972)।
- 5- यौन की भूमिका (Role of Sex) - व्यक्तित्व के विकास तथा संगठन पर लैंगिक भिन्नता का भी महत्व प्राप्त किया गया है। लैंगिक भिन्नता के कारण समाज में बालक बालिकाओं की भूमिका अलग अलग निर्धारित होती है। भूमिकाओं में अन्तर और जैविक-संरचना में अन्तर के कारण उनके व्यवहार में भी अन्तर होता है जो व्यक्तित्व के विकास तथा संरचना को प्रभावित करता है। माक्रस (1976) के अनुसार, अनेक अध्ययनों से यह प्रमाणित हुआ है कि लैंगिक भिन्नता के कारण व्यक्तित्व की संरचना में अन्तर प्राप्त होता है। उदाहरणार्थ, पुरुषों की तुलना में महिलाओं में क्षेत्र आश्रितता की विशेषता अधिक पायी जाती है और क्षेत्र अनाश्रितता की विशेषता कम पाई जाती है। कुछ अन्य विद्वानों का निष्कर्ष है कि लड़कों की तुलना में लड़कियाँ मदान्धता एवं असुरक्षा की भावना अधिक प्रदर्शित करती हैं।
- 6- जन्मक्रम (Birth order)- व्यक्तित्व के विकास तथा संरचना पर बालकों के जन्मक्रम का प्रभाव पड़ता है। हरलाक (1975) के अनुसार, प्रथम सन्तान में परिपक्वता शीघ्र आती है,

पारिवारिक समायोजन अच्छा होता है परन्तु उसमें असुरक्षा (Insecurity)की भावना अधिक होती है और, उत्तदायित्व की भावना कम होती है परन्तु सामाजिक समायोजन अच्छा होता है (माक्रस, 1976)। प्रथम सन्तानों में बौद्धिक क्षमता अधिक होती है परन्तु उसके साथीगण उसे कम पसन्द कर सकते हैं क्योंकि प्रथम सन्तानों का सामाजिक समायोजन कम होता है। फ्रायड, एडलर तथा रैंक ने भी जन्मक्रम को महत्त्वपूर्ण माना है। कुछ अन्य लोगों का भी निष्कर्ष है कि बाद में जन्में बच्चों का व्यवहार अधिक स्वभाविक होता है।

- 7- अन्तःस्रावी ग्रन्थियों का प्रभाव (Effects of Endocrine Glands) - व्यक्तित्व तथा व्यवहार के विकास पर अन्तःस्रावी ग्रन्थियों का भी प्रभाव पड़ता है। ये ग्रन्थियाँ नलिकाविहीन होती हैं और अपने रसद्रवों को रक्त में प्रवाहित करती हैं। किसी भी ग्रन्थि से यदि असन्तुलित (आवश्यकता से कम या अधिक) स्राव होता है, तो उसका विकास पर अवरोधक प्रभाव पड़ता है। विभिन्न अन्तःस्रावी ग्रन्थियों के प्रमुख रसद्रवों तथा उनके प्रभावों को निम्न तालिका में प्रदर्शित किया गया है।

तालिका : अन्तःस्रावी ग्रन्थियों के रसद्रव तथा उनके प्रभाव

ग्रन्थियों के नाम	प्रमुख रसद्रव	विकास व्यवहार पर प्रभाव
अग्न्याशयी (Pancreas)	Insulin	कम स्राव की दशा में मधुमेह की बीमारी, चिड़चिड़ापन एवं कमजोरी
अबटू (Thyroid)	Thyroxin	कमी होने पर बौनापन, मानसिक दुर्बलता एवं अधिक स्राव की दशा में लम्बाई में अत्यधिक वृद्धि, अस्थिरता, चिड़चिड़ापन बढ़ता है।
उप अबटू (parathyroid)	Paratharmone	स्राव कम होने पर शरीर में ऐंठन, हड्डियों में कमजोरी बढ़ती है।
अधिवृक्क (Adrenal)	Adrenalin	कमी होने पर रक्त संचार मंद पड़ता है, थकान एवं चिड़चिड़ापन बढ़ता है।
	Pituirine	रक्त स्राव कम होने पर पेशियों तथा हृदय गति में शिथिलता बढ़ती है। अन्य ग्रन्थियों के नियंत्रण में कमी आती है। यह Master gland है।
	Androgens and Estrogens	कमी होने पर यौन अंगों का विकास तथा गौण लैंगिक लक्षणों का विकास अवरूद्ध होता है।

2.6.2 व्यक्तित्व के सामाजिक निर्धारक (Social Determinants of Personality) - व्यक्तित्व के विकास में सामाजिक या पर्यावरणीय कारकों की भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इस दृष्टि से निम्नांकित कारक महत्वपूर्ण है -

- 1- **प्रारम्भिक सामाजिक अनुभव (Early Social Experiences) - व्यक्तित्व के विकास में प्रारम्भिक सामाजिक अनुभवों का विशेष महत्व है। प्रारम्भिक अनुभवों को जीवन की आधारशिला के रूप में स्वीकार किया जाता है। जीवन के प्रारम्भिक वर्षों में बालकों को जैसा अनुभव होता है और वे जिन परिस्थितियों में रहते हैं, उनका उन बालकों पर विशेष प्रभाव पड़ता है। उदाहरण के लिए, परिवार में कोई लड़की है और उसे उसका बड़ा भाई प्रायः तंग करता हो। ऐसा प्रायः होता भी है। इसके कारण वह लड़की अपने भाई के प्रति आक्रामक व्यवहार कर सकती है और उससे घृणा भी कर सकती है। इस अनुभव का उपयोग वह उन लोगों पर भी कर सकती है जो उसके भाई जैसा व्यवहार करते हैं। इस प्रकार स्पष्ट है कि जीवन में प्रारम्भिक अनुभवों का अन्तर्करण होता रहता है। इसके विपरीत यदि प्रारम्भिक अनुभव सुखद रहें हैं, तो उसका बालकों के व्यक्तित्व के विकास पर अच्छा प्रभाव पड़ेगा। बालकों का सामाजिक क्षेत्र बढ़ने से उनको यह ज्ञान होता रहता है कि क्या उचित है और क्या अनुचित है।**
- 2- **सामाजिक वंचन (Social Deprivations) - व्यक्तित्व के विकास में सामाजिक अन्तर्क्रिया (Social Interaction) का विशेष महत्व है। जिस प्रकार की परिस्थितियों के साथ अन्तर्क्रिया होगी, उसी प्रकार का व्यक्तित्व भी विकसित होगा। यदि बालक को सामाजिक अन्तर्क्रिया या सामाजिक अधिगम से वंचित कर दिया जाये, तो उसमें किसी भी शीलगुण का विकास नहीं हो पायेगा। म्यूशेन आदि ने भी यही विचार व्यक्त किया है कि सामाजिक वंचन का व्यक्तित्व के विकास पर बड़ा ही घातक प्रभाव पड़ता है। भौगोलिक एकाकीपन (Geographical isolation) एवं पारिवारिक नियंत्रणों के कारण भी बालकों को कभी कभी सामाजिक अनुभवों का लाभ नहीं मिल पाता है। बच्चों को इन घातक परिस्थितियों से बचाना चाहिए। क्योंकि ऐसा न करने से बालकों को अन्तर्वर्तिक सम्बन्ध (Interpersonal relationships) स्थापित करने में कठिनाई होती है।**
- 3- **सामाजिक स्वीकृति (Social Acceptance)- व्यक्तित्व के विकास पर सामाजिक स्वीकृति का भी गहरा प्रभाव पड़ता है। बच्चे अपने से बड़ों तथा साथियों की स्वीकृति एवं अनुमोदन प्राप्त करने की प्रबल इच्छा रखते हैं। इनकी यह इच्छा उन्हें अच्छे गुणों का विकास करने के लिए प्रेरित करती है। स्कूल में प्रवेश लेने के उपरान्त वे अपने साथियों की भावनाओं को अधिक महत्व देने लगते हैं और उन्हें अच्छे लगने वाले व्यवहारों को अर्जित करने लगते हैं। कभी कभी इस मुद्दे पर माता-पिता की असहमति हो सकती है, फिर भी वे अपने साथियों की इच्छाओं को अधिक महत्व देना चाहते हैं। वे सुखद गुणों का विकास करके लोकप्रिय बनना चाहते हैं। इससे स्पष्ट है कि सामाजिक स्वीकृति से बालकों में अच्छे गुणों का विकास होता है। परन्तु जिन्हें सामाजिक स्वीकृति नहीं मिल पाती है या तिरस्कृत होते हैं उनमें हीनता घर कर जाती है। ऐसे बालक जिन्हें नाममात्र की सामाजिक स्वीकृति मिल पाती है। उनमें तनाव देखा जाता है और वे अन्य बालकों पर अपना प्रभाव जमाने का पूरा प्रयास करते हैं। वे समाज से**

विमुख होने लगते हैं और अन्तर्मुखता के लक्षण बढ़ते हैं। इससे स्पष्ट है व्यक्तित्व एवं सामाजिक समायोजन पर सामाजिक स्वीकृति का विशेष प्रभाव पड़ता है।

- 4- **प्रास्थिति प्रतीक (Status Symbol)**- बालक के स्व तथा उसके व्यक्तित्व पर प्रास्थिति से सम्बन्धित प्रतीकों का भी प्रभाव पड़ता है। समाज में मान्यता प्राप्त या महत्व दर्शाने वाले प्रतीकों से बालकों को अवगत होना चाहिए। ऐसा देखा जाता है कि अपने समूह में जो बच्चे अच्छे वस्त्र धारण किये रहते हैं उनके प्रति अनुकूल या धनात्मक धारणा शीघ्रता से बन जाती है। इस प्रतीक (वस्त्र) से बालक के परिवार की सामाजिक-आर्थिक स्थिति का अनुमान लगता है। बिकमैन के अनुसार परिस्थिति के विभिन्न प्रतीकों में वस्त्र का स्तर बच्चों में सबसे अधिक महत्वपूर्ण माना जाता है क्योंकि इससे समूह में बालकों को स्वयं की स्थिति की भी झलक मिलती है। जो बच्चों को वस्त्र तथा अन्य सामग्रियाँ सरलता से प्राप्त होती रहती हैं उनमें स्व का समुचित विकास होता है। सुविधाओं से वंचित बालकों में प्रतिक्रियात्मक प्रवृत्तियाँ विकसित होने लगती हैं। इनका उनके स्व पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।
- 5- **परिवार का प्रभाव (Influence of Family)** - व्यक्तित्व के विकास पर परिवार का व्यापक एवं गहरा प्रभाव पड़ता है। बालकों के व्यवहार, आचार तथा विचार को परिवार अपनी मान्यताओं के अनुरूप संवारता है। इसके अतिरिक्त छोटे बच्चे परिवार के वरिष्ठ सदस्यों के साथ तादात्म्यकरण एवं अनुकरण करके अपना अलग अस्तित्व बनाने का प्रयास करते हैं। परिवार में रहकर बच्चे विभिन्न प्रकार के अनुभव एवं प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं। जो उनके व्यक्तित्व के प्रतिमानों को निर्धारित करने में प्रमुख भूमिका निभाते हैं। अनेक अध्ययनों से यह प्रमाणित हो चुका है कि यदि माता-पिता के सम्पर्क तथा प्रभावों में बच्चे नहीं हैं तो उनमें आत्मनियंत्रण का अभाव हो जाता है। स्लैटर ने भी इस बात पर बल दिया है कि बालक का अपने माता-पिता के साथ जो सम्बन्ध होता है उसका व्यक्तित्व के प्रतिमान पर स्पष्ट प्रभाव पड़ता है।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट हो रहा है कि व्यक्तित्व के विकास में परिवार की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। व्यक्तित्व के विकास के प्रसंग में परिवार के महत्व को स्पष्ट करते हुए हरलाक ने कहा है कि “व्यक्तित्व के निर्धारकों में परिवार का प्रथम स्थान है। इसकी तुलना में विद्यालय का द्वितीय स्थान है।”

“Of all the conditions that influence personality development relationship between the individual and the members of his family unquestionably rank first. By contrast with home, the school is indeed secondary.”

परिवार का प्रभाव क्यों (Family's Influences why)-कुछ अध्ययनों से यह पता लगाने का प्रयास किया गया है कि व्यक्तित्व प्रतिमानों पर परिवार का प्रभाव क्यों पड़ता है। इस प्रसंग में अनेक कारणों का उल्लेख किया जा सकता है। परन्तु यहां पर चार कारणों को ही प्रस्तुत किया जा रहा है।

- 1- चूँकि बालकों का परिवार में समय अधिक व्यतीत होता है। अतः परिवार का प्रभाव व्यक्तित्व के विकास पर अधिक पड़ता है।
- 2- अन्य संस्थाओं या समूहों की तुलना में बालकों पर परिवार का नियंत्रण अधिक रहता है।
- 3- पारिवारिक सम्बन्धों का प्रभाव लम्बी अवधि तक पड़ता है।

4- परिवार के साथ होने वाले प्रारम्भिक अनुभवों का व्यक्तित्व के विकास में विशेष स्थान है।

“जिस प्रकार जीव का शुभारम्भ माता के गर्भाशय में होता है उसी प्रकार व्यक्तित्व का विकास पारिवारिक सम्बन्धों के गर्भाशय से ही प्रारम्भ होता है।” (Glasner, 1962)

पारिवारिक अनुभव जीवन की आधारशिला के रूप में (Family Experiences as Foundation stone of life) - चूँकि बच्चों के सामाजिक सम्बन्धों की शुरुआत परिवार से ही होती है। अतः पारिवारिक विशेषताएँ बच्चों के व्यक्तित्व पर अमिट प्रभाव छोड़ती हैं। उचित-अनुचित, नैतिक-अनैतिक आदि मान्यताओं की प्रारम्भिक शिक्षा परिवार से ही मिलती है। इसके अतिरिक्त परिवार के सदस्यों की विशेषताओं का बच्चों द्वारा अनुकरण किया जाता है। पारिवारिक परिवेश, परिवार का आकार, बच्चों की क्रमिक स्थिति तथा पारिवारिक भूमिकाएँ आदि बच्चों के व्यक्तित्व के सँवारने का कार्य करती हैं। यथा, विघटित परिवार के बच्चे प्रायः अवांछित व्यवहारों में लिप्त पाये जाते हैं। प्रथम सन्तानों से प्रत्याशाएँ अधिक की जाती हैं, उनमें व्यावहारिक परिपक्वता शीघ्र आती है। परन्तु समायोजन ठीक नहीं होता है। यह पाया गया है कि बड़े परिवारों में बच्चों की देखरेख सन्तोषजनक रूप में हो पाती है। अतः व्यावहारिक समायोजन की समस्या अधिक दिखाई पड़ती है।

हरलाक (1978,84) ने व्यक्तित्व पर पड़ने वाले पारिवारिक परिवेश के प्रभाव को निम्नवत रेखांकित किया है -

- 1- परिवेश आलोचनात्मक होने पर निन्दात्मक प्रवृत्ति पैदा होती है।
 - 2- शत्रुता का परिवेश होने पर झगड़ालू स्वभाव बढ़ता है।
 - 3- भय का परिवेश आशंका को जन्म देता है।
 - 4- अनावश्यक दया से हीनता आती है।
 - 5- सहिष्णु परिवेश धैर्य बढ़ाता है।
 - 6- ईर्ष्यात्मक परिवेश अपराध बोध की भावना बढ़ाता है।
 - 7- निन्दा किये जाने से व्यक्ति लज्जालु हो जाता है।
 - 8- पारिवारिक प्रोत्साहन से आत्मविश्वास बढ़ता है।
 - 9- प्रशंसा प्राप्त होने पर स्वस्थ व्यक्तित्व विकसित होता है।
 - 10- पारिवारिक स्वीकृति प्राप्त होने पर स्नेह विकसित होता है।
 - 11- पारिवारिक मान्यता मिलते रहने से लक्ष्य चयन सरल हो जाता है।
 - 12- ईमानदारी का परिवेश सत्य के प्रति निष्ठा विकसित करता है।
 - 13- सुरक्षा का परिवेश होने पर स्वयं में तथा अन्य लोगों में भी उसकी आस्था बढ़ती है।
 - 14- पारिवारिक अनुमोदन से स्वयं के प्रति अच्छी धारणा बनती है।
- 6- समूह का प्रभाव (Influence of group) - व्यक्तित्व के विकास पर समूहों का विशेष रूप में पड़ता है। सामाजिक व्यवस्था में समूहों का विशेष स्थान होता है। प्रत्येक बालक या व्यक्ति एक या एक से अधिक समूहों का सदस्य होता है। सामाजिक समूहों से तात्पर्य मनुष्यों के ऐसे निश्चित संग्रह से है जिसमें व्यक्ति परस्पर अन्तर-सम्बन्धी कार्य करते हैं, तथा जो अपने द्वारा या दूसरे द्वारा परस्पर अन्तर्क्रिया की इकाई के रूप में मान्य होते हैं। इस प्रकार कह सकते हैं कि समूह में

व्यक्तियों का होन आवश्यक है और इनमें आपस में अन्तर्क्रिया भी होनी चाहिए। इससे स्पष्ट हो रहा है कि समूह के सदस्यों का व्यवहार एक दूसरे से प्रभावित होता रहता है एवं वे एक निश्चित विचारधारा को मानते हैं। प्रत्येक समूह की एक निश्चित विचारधारा होती है और उसका सदस्यों के व्यवहार पर स्पष्ट प्रभाव पड़ता है। समूह प्राथमिक एवं गौण प्रकार के होते हैं। परिवार एक प्राथमिक समूह है। स्कूल या अन्य संगठन गौण समूह है। इन दोनों का ही व्यक्तित्व के विकास पर प्रभाव पड़ता है।

7- विद्यालय का प्रभाव (Influence of the school) - सामाजिक व्यवस्था में विद्यालयों का महत्वपूर्ण स्थान होता है। जिन विद्यालयों के बच्चे प्रारम्भिक शिक्षा पाते हैं, उनके आदर्शों तथा क्रियाकलापों का बालकों के व्यवहार तथा व्यक्तित्व पर गहरा प्रभाव पड़ता है। विद्यालय में पठन-पाठन की व्यवस्था, सामान्य वातावरण, मनोरंजन के साधन एवं शिक्षकों की क्षमता तथा व्यक्तित्व के गुणों का प्रत्यक्ष संचरण बालकों में होता है।

विद्यालय औपचारिक शिक्षा के केन्द्र है। इसके अतिरिक्त विद्यालयों में बालकों को सामाजिक अधिगम का दीर्घकालिक अवसर भी प्राप्त होता है। बालकों में उचित-अनुचित, नैतिक-अनैतिक एवं अन्य सामाजिक गुणों के विकास का अवसर विद्यालयों में काफी अधिक मिलता है। सोलोमन ने इस प्रसंग में लिखा है कि “बालक के व्यक्तित्व के विकास पर परिवार के बाद सबसे अधिक प्रभाव शिक्षकों का ही पड़ता है।

“Next the parents, teachers have influence on the development of a child’s personality than any other groups of people. The teacher-child relationship has its nearest impact on the child’s early school years.”

विद्यालय जीवन से सम्बन्धित निम्नांकित पक्षों का बालकों के स्व तथा उसके व्यक्तित्व पर विशेष प्रभाव पड़ता है -

- i. कक्षा का संवेगात्मक परिवेश (Emotional climate of class room) - बालकों में सहयोग, प्रसन्नता, कार्य के प्रति अभिप्रेरणा एवं नियमों के प्रति अनुरूपता विकसित करने के लिए विद्यालय का परिवेश स्वस्थ एवं तनावरहित होना चाहिए अन्यथा बालकों में नकारात्मक प्रवृत्तियाँ विकसित हो सकती हैं। यहाँ शिक्षकों का उत्तरदायित्व बढ़ जाता है। उनका आचरण, दृष्टिकोण, अनुशासन के नियम, बालकों के प्रति स्नेह तथा कार्य में रुचि आदि बालकों के व्यक्तित्व पर गहरा प्रभाव डालते हैं।
- ii. शिक्षक (Teachers) - शिक्षक कार्य तथा बालकों में रुचि जितनी अधिक लेंगे, बालकों में अनुकूल गुणों का विकास भी उतना ही अधिक होगा।
- iii. अनुशासन (Discipline) विद्यालय में अनुशासन हेतु प्रयोग में लायी जाने वाली अनुशासनात्मक विधियाँ भी बालकों के स्व तथा व्यक्तित्व को प्रभावित करती हैं। यथा - निरंकुश अनुशासन से उनमें तनाव, प्रतिरोध एवं विरोधी व्यवहार विकसित होता है जबकि स्वच्छन्द अनुशासन की विधि से उनमें उत्तरदायित्व की भावना का अभाव, आत्मकेन्द्रिता तथा अधिकारियों के प्रति सम्मान की कमी की भावना बढ़ती है। परन्तु लोकतान्त्रिक अनुशासन की

विधि प्रयोग में लेने से उनमें आत्मसार्थकता, प्रसन्नता, सहयोग, विश्वसनीयता तथा ईमानदारी के गुण विकसित होते हैं।

- iv. सांस्कृतिक मूल्यों का प्रसार - विद्यालयों द्वारा सांस्कृतिक मूल्यों के बालकों में प्रसार होता है। सामाजिक स्वीकृति प्राप्त करने हेतु ऐसा करना आवश्यक भी है। इस कार्य में परिवार की अपेक्षा विद्यालयों की भूमिका अधिक महत्वपूर्ण होती है।
- v. पक्षपात - शिक्षकों को पक्षपात से बचना चाहिए। क्योंकि जो बालक उनके प्रियपात्र बन जाते हैं उनमें अहंकार तथा जो ऐसा नहीं बन पाते उनके प्रतिक्रियात्मक एवं विरोधी प्रवृत्तियाँ बढ़ने लगती हैं। इससे परिवेश दूषित होता है।
- vi. शैक्षिक उपलब्धि - विद्यालय में होने वाली शैक्षिक उपलब्धियाँ भी उनके स्व तथा व्यक्तित्व को प्रभावित करती हैं। सफल बालकों में प्रसन्नता एवं गर्व तो असफल बालकों में निराशा, द्वन्द्व एवं हीनता विकसित होने लगती है। असफल बालकों पर अलग से ध्यान दिया जाना चाहिए। इसी प्रकार उच्च कक्षा में प्रोन्नति से सफलता तथा प्रोन्नति न होने से असफलता का बोध होता है।
- vii. सामाजिक उपलब्धि - पठन पाठन के अतिरिक्त अन्य क्रिया-कलाप जैसे - खेलकूद में उपलब्धि, सामाजिक स्वीकृति एवं नेतृत्व में सफलता आदि भी बालकों के स्व तथा व्यक्तित्व को प्रभावित करती हैं। विद्यालय इन कार्यों को जितना अधिक महत्व देगा, उसी के अनुसार बालकों का स्व भी इनसे प्रभावित होगा।

इस प्रकार स्पष्ट हो रहा है कि बालकों के स्व तथा व्यक्तित्व पर विद्यालयों का व्यापक तथा गहरा प्रभाव पड़ता है। योग्य तथा सुसमायोजित शिक्षक बालकों में अच्छे गुणों का विकास करते हैं। परन्तु अक्षम तथा कुसमायोजित शिक्षकों के होने पर बालकों में अवांछित व्यवहारों के विकास की संभावना बढ़ती है।

8- संवेग (Emotions)- ऐसा निष्कर्ष है कि यदि किसी बालक में प्रायः प्रबल और अनुचित संवेगात्मक प्रदर्शन होता है, तो लोग उसे अस्थिर और अपरिपक्व मानने लगते हैं। प्रायः यौवनारम्भ से पहले बच्चों में संवेगात्मक तीव्रता, अस्थिरता, घबराहट, नाखून काटना एवं तनाव आदि की आवृत्ति बढ़ जाती है। लड़कियों के साथ ऐसा प्रायः होता है। यदि वे अपने संवेगों पर उचित नियंत्रण स्थापित कर लें, तो उनके बारे में अनुकूल धारणा बनती है अन्यथा प्रतिकूल धारणा तो बनती ही है। इससे उनका आत्म प्रभावित होगा। संवेगात्मक विघ्नों के कारण समायोजन भी बाधित होता है। इससे स्पष्ट है कि संवेग व्यक्तित्व को अप्रत्यक्ष और प्रत्यक्ष दोनों ही रूप में प्रभावित करता है।

9- नाम (Names) - माता पिता द्वारा बच्चों का जो नाम रखा जाता है वह पुकारने बाल मन में सुखकर, तटस्थ या विकर्षणात्मक भाव उत्पन्न कर सकता है। सुखकर भाव उत्पन्न करने वाले नामों से बच्चों के बारे में अनुकूल धारणा बनने की सम्भावना रहती है। इससे उनका स्व प्रभावित होगा। बच्चे अपने नाम की सार्थकता तीसरे वर्ष के आसपास, जब वे अन्य बच्चों के साथ खेलना प्रारम्भ करते हैं, जान पाते हैं। नामों का प्रभाव साथियों के साथ सम्बन्ध स्थापना को प्रभावित कर सकता है। मुख्य नाम के अतिरिक्त उपनामों से भी उत्पन्न भाव बच्चों के स्व के

प्रति बनने वाली धारणा को प्रभावित करते हैं। नाम ऐसा होना चाहिए जो लोगों के मन में सुखद भाव तथा साहचर्य उत्पन्न कर सके। प्रायः खराब या असुखद नामों के उच्चारण के समय लोग बच्चों पर हँस पड़ते हैं। इससे उनमें स्वयं के प्रति प्रतिकूल भावना बन सकती है।

10- सफलता तथा असफलता - बच्चे स्वयं को अपने जीवन में सफल मानते हैं या असफल, इसका उनके आत्म पर प्रभाव पड़ेगा तथा उनका व्यक्तिगत और सामाजिक समायोजन प्रभावित होगा। सफलता की दशा में आत्म (Self) के बारे में अनुकूल धारणा बनती है जबकि असफलता के कारण जैसे व्यवहार उत्पन्न हो सकते हैं जो समायोजन को विघ्नित कर देते हैं। सफलता का मूल्यांकन बालक की अपनी दृष्टि से कैसा है, इसी पर उसकी स्वयं की प्रति धारणा निर्भर करेगी। ऐसी सफलता जिसे लोग महत्व दे रहे हैं, परन्तु बालक स्वयं उसे अपनी आकांक्षा से कम मान रहा है, उसका उसके स्व पर बहुत अच्छा प्रभाव नहीं पड़ेगा। सफलता एवं असफलता की दशा में प्रायः निम्नांकित प्रतिक्रियाएं प्रदर्शित होती हैं

व्यक्तित्व पर सफलता के प्रभाव -

- 1- बालक गर्व एवं सन्तुष्टि अनुभव करता है।
- 2- यदि सफलता सहजता से बार-बार प्राप्त होती है, तो घमण्डी एवं अहंकारी हो जाते हैं, और प्रेरणा में कमी आ जाती है।
- 3- उपलब्धियों के साथ सन्तुष्टि तथा भविष्य के लिए प्रेरणा।
- 4- नवीन चुनौतियों का सामना करने हेतु तत्परता तथा डींग मारना।
- 5- अनाश्रितता एवं आत्मविश्वास की भावना में वृद्धि।
- 6- प्रसन्नता में वृद्धि।

व्यक्तित्व पर असफलता के प्रभाव -

- 1- आकांक्षा स्तर का गिरना तथा अपनी क्षमता के बारे में अनिश्चितता।
- 2- असफलता की पुनरावृत्ति से अनुपयुक्तता एवं हीनता की भावना और असफलता ग्रन्थि का प्रादुर्भाव।
- 3- स्व-चेतना तथा व्याकुलता में वृद्धि।
- 4- दूसरों से सहायता की इच्छा में वृद्धि और भविष्य की चुनौतियों से विमुखता।
- 5- अभिप्रेरणा में कमी तथा दूसरों पर असफलता के लिए दोषारोपण।
- 6- क्रोध का प्रदर्शन, तोड़फोड़ करना, उदास एवं अप्रसन्न रहना।

इस प्रसंग में यह उल्लेखनीय है कि बालकों को प्रारम्भिक वर्षों में असफलता से यथासम्भव बचाना चाहिए। यदि असफलता मिलती ही है, तो उसके तुरन्त बाद सफलता की अनुभूति के लिए व्यवस्था की जानी चाहिए। इसे अतिरिक्त गम्भीर असफलता से अवश्य ही बचाया जाये और यदि ऐसा न हो सके, तो उन्हें हतोत्साह से बचाने के लिए समझाना चाहिए। अन्यथा वे कुण्ठा, ग्लानि एवं हीनता से प्रभावित हो जायेंगे और समायोजन बाधित हो जायेगा।

2.6.3 व्यक्तित्व पर संस्कृतिका प्रभाव (Effects of Culture on Personality)-

व्यक्तित्व पर संस्कृति का प्रभाव (Effects of Culture on Personality) - व्यक्तित्व के विभिन्न निर्धारकों में संस्कृति की बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका होती है। प्रत्येक समाज की अपनी अपनी सांस्कृतिक मान्यताएं, विश्वास, मानक तथा रीति-रिवाज होते हैं। इनकी व्यक्तित्व पर अमिट छाप पड़ती है। संस्कृतिके प्रभावों की निम्नवत् समीक्षा की जा सकती है :

- 1- सामाजिक मानक एवं व्यक्तित्व (Social Norms and Personality) - प्रत्येक समाज में व्यक्ति के सामाजिक व्यवहार को नियंत्रित तथा निर्देशित करने वाले कुछ मानक प्रचलित होते हैं। प्रत्येक सभ्य व्यक्ति से ऐसे प्रचलित मानकों के अनुसार ही व्यवहार की प्रत्याशा की जाती है। इनका उल्लंघन करने पर व्यक्ति को सामाजिक परिहास, निन्दा या दण्ड का भागी बनना पड़ता है। मानकों का आशय व्यवहार सम्बन्धी सामाजिक नियमों से है। ये व्यवहार का नियमन करते हैं।
- 2- सामाजिक भूमिकाएँ एवं व्यक्तित्व (Social Roles and Personality) - प्रत्येक समाज में व्यक्ति की भूमिकाएँ भी लगभग निश्चित होती हैं। उसे अपनी भूमिका के अनुसार व्यवहार या कार्य करना पड़ता है। ऐसा न करने पर उसे सामाजिक अवमानना का पात्र बनना पड़ सकता है। व्यक्ति जिस तरह की भूमिका का निर्वाह करता है या उससे जिस तरह की भूमिका निर्वाह की प्रत्याशा की जाती है, उससे उस भूमिका से संबंधित विशेषताओं के विकास की प्रत्याशा की जाती है। व्यक्ति द्वारा निर्वाह की जाने वाली भूमिकाओं का उसके आचार-विचार, व्यवहार तथा व्यक्तित्व पर भी प्रभाव पड़ता है। यथा किसी धार्मिक संगठन के नेता में अन्य धर्मों के प्रति उतना समादर नहीं होगा जितना कि किसी लोकतांत्रिक नेता में होगा।
- 3- पालन पोषण की विधियाँ तथा व्यक्तित्व (Child Rearing method and personality) - व्यक्ति के व्यक्तित्व पर उसके पालन-पोषण में प्रयुक्त विधि का भी प्रभाव पड़ता है। बच्चों को कठोर अनुशासन में रखने तथा स्नेह का अभाव होने से उनमें समायोजन के गुणों का समुचित विकास नहीं हो पाता है। इसी प्रकार अधिक रूढ़िवादी तथा धर्मभिरू परिवार के बच्चों में अन्धविश्वास, चिन्ता, भय एवं असुरक्षा की भावना जैसी कुप्रवृत्तियाँ भी विकसित हो जाती हैं। इन बातों का व्यक्तित्व विकास पर घातक प्रभाव पड़ता है। कुछ अध्ययनों से यह भी निष्कर्ष प्राप्त हुआ है कि प्रगतिशील परिवारों के बच्चों में उपलब्धि की आवश्यकता (Need of achievement) अधिक पायी जाती है। वे परिश्रमी तथा लक्ष्य-अभिविन्यासी (Goal oriented) होते हैं। एक अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ है कि रूसी परिवारों के बच्चों में सम्बन्ध की आवश्यकता (Need of affiliation) अधिक पायी जाती है। अनेक अध्ययनों से यह भी निष्कर्ष प्राप्त हुआ है कि यदि बच्चों का अपने माता-पिता से सम्पर्क कम रहता है, तो उनमें आत्म-नियंत्रण की कमी आ जाती है। इन निष्कर्षों से यह स्पष्ट हो रहा है कि बचपन में पालन-पोषण की विधियाँ तथा पारिवारिक परिवेश ही व्यक्तित्व के शीलगुणों की आधारशिला रखते हैं। इसलिए कहा जाता है कि जिस प्रकार जीव का शुभारम्भ माता के गर्भाशय से होता है

उसी प्रकार व्यक्तित्व का विकास पारिवारिक सम्बन्धों के गर्भाशय (Worm of family relationships) से ही प्रारम्भ होता है।

- 4- स्वावलम्बन बनाम पराश्रितता (Independence Vs Dependence) - व्यक्ति के सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवेश का उसमें विकसित होने वाले स्वावलम्बन एवं परनिर्भरता की भावना पर प्रभाव पड़ता है। उदाहरणार्थ, विघटित परिवारों में पले बच्चों में असुरक्षा की भावना अधिक पायी जाती है। इससे उनमें पराश्रितता एवं हीनता की ग्रन्थि विकसित होने की संभावना बढ़ जाती है। इसी प्रकार कठोर अनुशासन में पले बच्चों में स्वावलम्बन की प्रवृत्ति कम विकसित होती है और वे सामान्य कार्यों के लिए निर्देश या सुझाव की आवश्यकता अनुभव करते हैं।
- 5- धार्मिक पृष्ठभूमि तथा व्यक्तित्व (Cultural Background and Personality)- कुछ अध्ययनकर्ताओं का निष्कर्ष है कि बालक में या व्यक्ति का धार्मिक परिवेश उसमें विशेषताओं के निर्धारण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। सिंह (1992) के अनुसार मुस्लिम किशोर, हिन्दू किशोरों की तुलना में कम बहिर्मुखी होते हैं जबकि मुस्लिम छात्रों में मनोविकृति (Psychoticism) मनस्ताप (Neuroticism) एवं मिथ्यावादिता की प्रवृत्तियाँ हिन्दू किशोरों की तुलना में अधिक या साम्प्रदायिक संस्थाओं एवं गैर साम्प्रदायिक संस्थाओं में पढ़ने वाले बच्चों एवं छात्रों के व्यक्तित्व में असमानता होती है। ऐसी संस्थाओं के छात्रों में रूढ़िवादिता, पूर्वाग्रह एवं असुरक्षा की भावना अधिक पाई जाती है। इन निष्कर्षों से व्यक्तित्व पर धार्मिक पृष्ठभूमि का प्रभाव स्पष्ट हो रहा है।

2.7 सारांश

भारतीय दृष्टिकोण में व्यक्तित्व को आत्म ज्ञान, पाप-पुण्य, शरीर आत्मा से संबंधित तत्वों, न्याय दर्शन, आयुर्वेद, समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से समझने का प्रयास किया गया है। जबकि पाश्चात्य दृष्टिकोण वंशक्रम तथा वातावरण के प्रभाव को व्यक्तित्व के विकास में मानता है वह मानवतावाद व्यवहारवाद विकासवाद, प्रकारवाद, गुणवाद से व्यक्तित्व को समझने का प्रयास करता है। जन्म से लेकर मृत्युपर्यन्त विकास के विभिन्न पड़ावों से मिलने वाले वातावरण का व्यक्तित्व के विकास पर प्रभाव पड़ता है अतः गर्भकालीन अवस्था से वृद्धावस्था तक व्यक्तित्व विकास को 9 अवस्थाओं में समझने का प्रयास किया गया है। इसी तरह व्यक्तित्व को शारीरिक गान, वृद्धि, यौन, जन्मक्रम, अन्तःस्रात्री ग्रंथियां तथा कई सामाजिक और पारिवारिक कारक प्रभाव डालते हैं।

1 प्राची - भारतीय अवधारणा

2 प्रतीची - पाश्चात्य अवधारणा

3 व्यक्तित्व शब्द लैटिन भाषा के 'परोसना' से बना जिका अर्थ है मुखौटा।

2.9 स्वमूल्यांकन प्रश्न

अतिलघुरात्मक प्रश्न

- 1- पदसोना का क्या अर्थ लिया गया है?
- 2- व्यक्तित्व की प्रमुख प्राची अवधारणा क्या है?
- 3- व्यक्तित्व की प्रमुख प्रतीची अवधारणा क्या है?
- 4- अग्नाशयी ग्रंथी से कौनसा प्रमुख स्राव निकलता है?
- 5- वह कौनसी ग्रंथी है जिसकी कमी होने पर रक्त संचार मंद पड़ता है?

लघुरात्मक प्रश्न

- 1 पाश्चात्य मनोवैज्ञानिकों ने व्यक्तित्व की अवधारणा का विकास किन सिद्धान्तों पर किया नाम दीजिए।
- 2 अभिधम्मा व्यक्तित्व सिद्धान्त क्या है? संक्षेप में समझाइयें?

निबंधात्मक प्रश्न

- 1 व्यक्तित्व विकास की विभिन्न अवस्थाओं का वर्णन कीजिए।
- 2 व्यक्तित्व विकास को प्रभावित करने वाले विभिन्न कारकों का वर्णन कीजिए।
- 3 विभिन्न अन्तः स्रावी ग्रंथियों का व्यक्तित्व के विकास पर क्या प्रभाव पड़ता है। वर्णन कीजिए।

2.9 संदर्भ ग्रंथ सूची

- Allport, H.E.; Social Psychology Boston : Hoftun, Mfflin, 1924
- Allport, G.W. : Personality; Psychological Interpretation, New York, Henary Hall, 1937
- Cattell, R.B.; Personality and motivation, New York, Harcourt, 1957
- एल. आर. शुल्का : बला मनोविज्ञान
- डॉ. एस.एस. माथुर : शिक्षा मनोविज्ञान

- डॉ. एस.पी. गुप्ता : शिक्षा मनोविज्ञान, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद
- डॉ. आर.एन. सिंह : आधुनिक मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा -2
- डॉ. अरूण कुमार सिंह : आधुनिक मनोविज्ञान, भारती भवन, पटना
- डॉ. पी.डी. पाठक : शिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा

2.9 संदर्भ ग्रंथ सूची

- Allport, H.E.; Social Psychology Boston : Hoftun, Mfflin, 1924
- Allport, G.W. : Personality; Psychological Interpretation, New York, Henary Hall, 1937
- Cattell, R.B.; Personality and motivation, New York, Harcourt, 1957
- एल. आर. शुल्का : बला मनोविज्ञान
- डॉ. एस.एस. माथुर : शिक्षा मनोविज्ञान
- डॉ. एस.पी. गुप्ता : शिक्षा मनोविज्ञान, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद
- डॉ. आर.एन. सिंह : आधुनिक मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा -2
- डॉ. अरूण कुमार सिंह : आधुनिक मनोविज्ञान, भारती भवन, पटना
- डॉ. पी.डी. पाठक : शिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा

इकाई 3

व्यक्तित्व का आँकलन, व्यक्तित्व के परीक्षण, व्यक्तित्व के प्रमुख मुद्दे

Assessment of personality, tests of personality, key issues in personality testing

इकाई की रूपरेखा

- 3.1 प्रस्तावना
 - 3.2 उद्देश्य
 - 3.3 व्यक्तित्व मापन का अर्थ
 - 3.4 व्यक्तित्व को मापने की विधियाँ
 - 3.5 व्यक्तित्व परीक्षण के प्रमुख मुद्दे
 - 3.6 सारांश
 - 3.7 शब्दावली
 - 3.8 स्वमूल्यांकन प्रश्न
 - 3.9 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची
-

3.1 प्रस्तावना

विगत अध्याय में व्यक्तित्व के अर्थ एवं व्यक्तित्व के विभिन्न सिद्धान्तों की चर्चा की जा चुकी है। व्यक्तित्व के प्रकार एवं व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाले कारकों की चर्चा की जा चुकी है। निःसन्देह मनोविज्ञान में व्यक्तित्व को एक अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रत्यय स्वीकार किया जाता है। शिक्षा के क्षेत्र में भी व्यक्तित्व का अत्यन्त महत्व है। सीखने वाले एवं सिखाने वाले दोनों ही पक्षों का व्यक्तित्व शिक्षा प्रक्रिया में सार्थक भूमिका अदा करता है। यही कारण है कि अब प्रशासकों, अध्यापकों एवं छात्रों के व्यक्तित्व को समझने एवं मापने पर जोर दिया जाने लगा है। प्रस्तुत अध्याय में व्यक्तित्व मापन के सम्बन्ध में चर्चा की गई है।

3.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप :

- व्यक्तित्व मापन का अर्थ समझ सकेंगे
 - व्यक्तित्व को मापने की विभिन्न विधियों को जान पायेंगे एवं उनका उपयोग कर सकेंगे।
 - व्यक्तित्व परीक्षण के प्रमुख मुद्दों की जानकारी प्राप्त हो सकेगी
-

3.3 व्यक्तित्व मापन का अर्थ (Measurement of Personality) -

व्यक्तित्व की माप से तात्पर्य व्यक्तित्व के शीलगुणों के बारे में पता लगाकर यह निश्चित करना होता है कि कहाँ तक वे संगठित (organised) है या विसंगठित (disorganised) है। किसी भी व्यक्ति के भिन्न भिन्न शीलगुण जब आपस में संगठित होते हैं, तो इससे व्यक्ति का व्यवहार सामान्य होता है। परन्तु, यदि उसके शीलगुण विसंगठित होते हैं तो व्यक्ति का व्यवहार असामान्य (abnormal) हो जाता है। व्यक्तित्व मापन (personality measurement) के सैद्धान्तिक (theoretical) तथा व्यावहारिक (practical) उद्देश्य हैं। मनोवैज्ञानिकों के अनुसार व्यक्तित्व मापन से व्यक्तित्व के विकास तथा उसके स्वरूप (nature) से संबंधित बहुत से ज्ञान प्राप्त होते हैं जिससे इस क्षेत्र में शोध करने तथा नए नए सिद्धान्तों का प्रतिपादन करने में मदद मिलती है। इस सैद्धान्तिक उद्देश्य (theoretical purpose) के अलावा व्यक्तित्व मापन के कुछ व्यावहारिक उद्देश्य भी हैं। जैसे व्यक्तित्व मापन से यह पता चलता है कि व्यक्तित्व के कौन कौन शीलगुण की शक्ति (strength) कितनी है और किस शीलगुण की कमी से व्यक्ति को अभियोजन (adjustment) करने दिक्कत हो रही है। अतः व्यक्तित्व मापन करके व्यक्तियों का जिन्हें समायोजन में व्यक्तिगत कठिनाई (personal difficulties) है, उन कठिनाइयों को दूर करने में मदद की जाती है। व्यक्तित्व मापन का दूसरा प्रमुख अनुप्रयोग नेता का चयन तथा उत्तरदायी (responsible) पदों के लिए सही व्यक्तियों का चयन करने में है।

3.4 व्यक्तित्व को मापने की विधियाँ-

व्यक्तित्व को मापने की विविध विधियाँ

व्यक्तित्व की विशेषताओं को मापने की तीन विधियाँ हैं। वे इस प्रकार हैं-(1) व्यक्तिगत विधि (2) वस्तुनिष्ठ (3) प्रक्षेपी प्रविधि।

1. व्यक्तिगत विधि :-

इस प्रकार की विधि में हम व्यक्ति सम्बन्धी सूचना या तो व्यक्ति से ही स्वयं लेते हैं या उसके मित्रों या सम्बन्धियों से भी प्राप्त करते हैं इसको क्रियान्वित करने के चार ढंग हैं :

(v) जीवन-कथा या उसका स्वयं का इतिहास।

(ब) व्यक्तिगत इतिहास।

(स) साक्षात्कार विधि।

(द) अभिज्ञापक प्रश्नावली ।

(v) जीवन-कथा या उसका स्वयं का इतिहास :-

इस विधि के अनुसार जिस व्यक्ति के व्यक्तित्व का अध्ययन करना होता है, मनोवैज्ञानिक कुछ मोटी बातों के आधार पर व्यक्तित्व को कुछ शीर्षक में बाँट देता है और फिर उस व्यक्ति से अपना व्यक्तित्व-इतिहास लिखने को कहता है। इसी सूची के आधार पर वह व्यक्ति के व्यक्तित्व के बारे में कुछ निश्चित निष्कर्ष निकालता है।

इस विधि में यह कठिनाई है कि भूलने के कारण व्यक्ति अपनी कुछ मुख्य घटनाओं को भूल जाता है और उनको सविस्तार एवं सही-सही लिख नहीं पाता। इस विधि के द्वारा कुछ अचेतनावस्था में पड़ी हुई इच्छा या आवश्यकताओं का भी हम अनुमान नहीं लगा सकते हैं। इसके अतिरिक्त व्यक्ति के व्यवहार या रूझान आदि का भी सत्य रूप में कोई अनुमान नहीं लगाया जा सकता। इस विधि को हम अन्य विधियों का पूरक कह सकते हैं। यह अकेली विधि व्यक्तित्व के बारे में हमें कोई निश्चित या सत्य तथ्य नहीं दे सकती।

(ब) व्यक्तिगत इतिहास :-

इस विधि के अन्दर हम बाल्य वातावरण के उन तत्वों तथा वंशानुगत तत्वों का अध्ययन करते हैं जो व्यक्ति के जीवन पर प्रभाव डालते हैं। व्यक्ति की मानसिक रचना को हम उसके परिवार के इतिहास, रीति-रिवाज, धारणाएँ, जन्म लेने का क्रम आदि का सहारा लेकर समझने का प्रयत्न करते हैं।

इस विधि को प्रायः मानसिक चिकित्सक अपनाते हैं। मुख्य रूप में साधारणतया जन्म से सम्बन्धित, जन्म से पूर्व की परिस्थितियों, माता-पिता का बालक के प्रति व्यवहार, व्यक्ति की बीमारी की घटनाओं का इतिहास आदि का सहारा मानसिक चिकित्सा के लिए देते हैं।

(स) साक्षात्कार विधि :-

जिन मुख्य बातों को हम व्यक्ति के इतिहास से पता नहीं लगा पाते उनका इस विधि के द्वारा साक्षात्कार करने वाला एक योग्य व्यक्ति है तो साक्षात्कार के साथ-साथ वह अनिवार्य सूचनाओं को लिख देता है। यह व्यक्ति के अन्दर पहले अपने प्रति विश्वास उत्पन्न करता है और उसे प्राप्त करने का प्रयत्न करता है। यह व्यक्ति की समस्याओं को समझने में सहयोग प्रकट करता है, साथ ही साथ उसके उत्तरदायित्व को भी समझने का प्रयत्न करता है। इस प्रकार जितनी भी सूचनाएँ वह प्राप्त करता है, वे व्यक्ति की व्यक्तित्व-सम्बन्धी विशेषताओं को समझने तथा निर्णय करने में सहायक होती हैं।

साक्षात्कार करने में साक्षात्कार करने वाले को कभी भी निर्णय नहीं देना चाहिए। उसे व्यक्ति सम्बन्धी अपनी पूर्व-धारणा के आधार पर कोई विचार नहीं बनाना चाहिए, क्योंकि इन विचारों से कभी-कभी बहुत भारी त्रुटि हो जाती है। अपना निर्णय देने से पहले उस व्यक्ति को पूर्ण अवसर देना चाहिए, जिससे वह अपने इतिहास को पुनः दोहरा सके। यों तो साक्षात्कार बड़ी ही अच्छी विधि है, किन्तु यह बहुत ही व्ययपूर्ण है। साथ ही इसमें सबसे बड़ी कमी यह है कि यह व्यक्तिगत विधि है, इसलिए हम इस पर अधिक विश्वास नहीं कर सकते।

(द) अभिज्ञापक प्रश्नावली :-

इस विधि को हम प्रश्नों की एक प्रश्नावली बनाते हैं और व्यक्ति से स्वयं इसे भरने का अनुरोध करते हैं। यह प्रश्नावली विभिन्न प्रकार की होती है। यह प्रश्नावली उनको दे देते हैं जिनके व्यक्तित्व का अध्ययन करना है।

प्रश्न-प्रश्नावली में साधारणतया प्रश्नों एक सूची होती है, जिसका व्यक्ति को लिखित या हाँ या 'न' में उत्तर देना होता है। यह प्रश्न इस प्रकार तैयार किये जाते हैं कि उनसे इच्छित जानकारी प्राप्त हो जाती है। व्यक्ति की आरम्भ की परीक्षाओं में वुडवर्थ की 'साइकोन्यूटिव

इन्वेन्टरी' है। इसमें 115 प्रश्न व्यक्तियों के जीवन से सम्बन्धित उन विभिन्न अनुभवों के हैं जिन्हें व्यक्ति जब वह दूसरे के साथ होता है, प्रत्युत्तरस्वरूप करता है। साथ ही साथ उसके अनुभव भी उसमें सम्मिलित रहते हैं। विभिन्न व्यक्तित्व-प्रश्नावली में दिए हुए प्रश्न निम्न प्रकार के होते हैं :

1. क्या आप अपने परिवार के सदस्यों से झगड़ा करते हैं? (हाँ, नहीं)
2. क्या आप अक्सर रात को जागते हैं? (हाँ, नहीं)
3. क्या आप चिन्ता करते हैं? (अक्सर, कभी-कभी, कदाचित्)
या दूसरे प्रकार के प्रश्न होते हैं: जैसे-
4. क्या आप अपने वैवाहिक सम्बन्ध से सतुष्ट हैं? (पूर्णरूप से, थोड़े रूप में, बिलकुल नहीं)
विषयी से उस एकांशको चिन्ह लगाने के लिए कहा जाता है जो करीब-करीब ठीक हो।
प्रश्नावली बहुत-से व्यक्तित्व गुणों: जैसे - दुःख, प्रभुत्व, सामाजिकता, अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी आदि मालूम करने या उनकी परीक्षा करने के लिए बनायी जाती है। इन परीक्षाओं द्वारा व्यक्ति की रूचि की सीमा भी मालूम हो सकती है, यह प्रश्नावली में इस प्रकार के विभिन्न प्रश्नों को सम्मिलित कर दिया जाय जो व्यक्ति की रूचि या अरूचि के सम्बन्ध में हों। इस प्रकार व्यवसाय आदि के चुनने या उसके बारे में रूचि जानने में भी यह प्रश्नावली सहायक होती है। यह प्रश्नावली विधि के अनुसार हम व्यक्ति के धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक या मौलिक विचारों आदि का भी पता लगाने में सफल हो सकते हैं।

यह ढंग बड़ा ही उपयोगी है और दुःख आदि जानने वाली प्रश्नावली आदि में पर्याप्त मात्रा में विश्वसनीयता है, किन्तु इसकी वैधता कम होती है। उच्च विश्वसनीयता से हमारा तात्पर्य है कि किसी दूसरी परीक्षा में भी वे ही या उसी प्रकार के उत्तर प्राप्त हों। ऐसी कुछ विशेष प्रकार की प्रश्नावलियों में पाया जाता है, परन्तु इस प्रश्नावली विधि द्वारा सदैव व्यक्ति से सत्य उत्तर प्राप्त नहीं किये जा सके। अक्सर व्यक्ति सत्यता को छिपा लेते हैं या झूठ उत्तर दे देते हैं: अतः उनकी वैधता निम्न होती है।

वैधता और विश्वसनीयता से हमारा क्या तात्पर्य है?

विश्वसनीयता और वैधता के बारे में थोड़ा-सा वर्णन हम पहले कर चुके हैं। ज्ञान-वर्धन हेतु शेष तथ्य निम्न भाँति है :

- 1- मापने का यन्त्र तभी वैध कहा जाता है, जबकि प्राप्त सूचनाएँ सत्य हों।
- 2- मापने का यन्त्र विश्वसनीय तभी हो सकता है, यदि प्राप्त सूचनाएँ उसी प्रकार की किसी दूसरी परीक्षा से भी प्राप्त हों या उसी प्रकार की हों।

इसका तात्पर्य यह है कि प्रश्नावली आदि के समान किसी विधि की मान्यता तभी हो सकती है जबकि वह उन सभी गुणों की सत्य सूचना दे जिसके लिए उसको तैयार किया है: उदाहरण के लिए, यदि प्रश्न संख्या-पत्र का उद्देश्य यह मापन करना है कि व्यक्ति आत्म-केन्द्रित, चिन्तित या उत्सुक है तो यदि यह इसको सत्य रूप में मापता है, अर्थात् व्यक्ति के अन्दर, उतनी ही मात्रा में चिन्ता है जितनी कि प्रश्नावली द्वारा पता चलती है, तो हम कह सकते हैं कि यह प्रश्नावली

मानवीय है। एक विश्वसनीय यन्त्र से तात्पर्य यह है कि एक अवसर पर प्रश्नावली में दिए गए उत्तर एक दूसरी दी गई प्रश्नावली या उस प्रकार की प्रश्नावली में दूसरी अवसर पर दिये गये उत्तर भी समान हों। उदाहरण के लिए यदि एक व्यक्ति कहता है कि वह अक्सर चिन्तित रहता है और उसी प्रकार के प्रश्नों में उसी प्रकार के उत्तर दूसरे अवसर पर भी देता है तो इस प्रकार का यन्त्र विश्वसनीय कहा जायेगा।

व्यक्तिगत विधि के दोष

व्यक्तिगत विधि में बहुत-से दोष हैं इनमें से मुख्य इस प्रकार है :

- (i) वे विषयीगत होती हैं - अर्थात् उस व्यक्ति पर निर्भर होती हैं, जिसके व्यक्तित्व का अध्ययन किया जा रहा है, और वह व्यक्ति कुछ तथ्यों को छिपा सकता है।
- (ii) वे अविश्वसनीय होती हैं-अर्थात् व्यक्ति सामान्य रूप से समान उत्तरों को नहीं देते। वे एक-एक बात को कहते हैं, और दूसरे, क्षण पर दूसरी बात कहते हैं।
- (iii) उनमें वैधता कम होती है - अर्थात् जो भी सूचना हम व्यक्ति की सहायता से प्राप्त करते हैं वह हमेशा सत्य नहीं होती। वे सत्य बात को छिपा लेते हैं और उत्तर में उस उत्तर को देते हैं जिसमें सामाजिक रूप से मान्य होता है। उदाहरण के लिए, बहुत थोड़े लोग इस बात को स्वीकार करेंगे कि उसमें समानलिंग भावना जीवन में किसी भी अवसर पर थी।
- (iv) ये चेतन मस्तिष्क की बातें बताती हैं-ये विधियाँ व्यक्ति के अचेतन मस्तिष्क के बारे में कोई भी बात नहीं बतातीं, जबकि व्यक्ति के मस्तिष्क का 9/10 भाग अचेतन है और व्यक्ति पर वृहत् प्रभाव डालता है।

वस्तुनिष्ठ विधियाँ:-

वस्तुनिष्ठ विधियाँ व्यक्ति के बाह्य व्यवहार पर आश्रित होती हैं। ये व्यक्ति के स्वयं वर्णन पर मुख्य रूप से आधारित नहीं होती हैं, वैज्ञानिक होती हैं और इनमें वस्तुनिष्ठता होती है। वस्तुनिष्ठ विधियाँ में (प) नियन्त्रित निरीक्षण, (ii) व्यक्तिगत गुणों का मूल्य निर्धारण या अन्य के द्वारा, अनुमानांकन मापदण्ड द्वारा व्यक्ति के व्यवहारों का निराकरण या व्यवहार के लिए अन्य पूर्व-कारणों की स्मृति, (iii) शारीरिक परिवर्तन, जो व्यक्तित्व की ओर संकेत करते हैं, और (पअ) मौखिक व्यवहार द्वारा व्यक्तित्व अध्ययन आते हैं। ये सब विधियाँ पूर्णरूप से वस्तुनिष्ठ नहीं होती जैसे- निर्धारण मापनी को कभी-कभी हमें व्यक्तिगत विधियों में भी सम्मिलित कर लेते हैं, किन्तु उचित सावधानी बरतने से उनमें वस्तुनिष्ठता भी आ जाती है। अतः इस विवाद के आधार पर यहाँ हम उन्हें वस्तुनिष्ठ परीक्षणों में सम्मिलित करते हैं।

अब हमें इन परीक्षाओं पर क्रमानुसार विचार करना चाहिए :

(i) नियन्त्रित निरीक्षण

इस विधि का सफल प्रयोग मनोवैज्ञानिक प्रयोगशाला में हो सकता है। इस विधि में प्रयोगशाला की नियन्त्रित परिस्थितियों के मध्य एक कुशल मनोवैज्ञानिक व्यक्ति के व्यवहारों का अध्ययन करता है।

इस विधि को भी पूर्णरूप से विश्वसनीय नहीं कह सकते, क्योंकि बहुत-सी कठिनाइयाँ हैं जो विश्वसनीयता पर प्रभाव डालती हैं। उनमें से कुछ इस प्रकार हैं - (i) निरीक्षण के समय की लम्बाई, (ii) निरीक्षण की संख्या, (iii) उस सीमा का ज्ञान जिस तक परीक्षक व्यक्तित्व के उस गुण का स्पष्ट ज्ञान प्राप्त कर सके,

(पअ) परिस्थिति में बाह्य तत्व बीच में बाधा डालते हैं, (ट) यह सत्य है कि निरीक्षण एक परिस्थिति में एक विशेष गुण की कार्यशीलता को स्पष्ट करता है।

(ii) निर्धारण मापनी :-

वास्तविक रूप से यह व्यक्तित्व मापन का वस्तुनिष्ठ ढंग नहीं है। निर्धारण-मापनी वह विधि है जो व्यक्तित्व के गुणों का अनुमान लगाने के लिए है, जो साधारण मापन से अधिक सही परिणाम प्रस्तुत करती है।

लगभग सभी व्यक्तित्व की विशेषताएँ निर्धारण-मापनी द्वारा पता लगाई जा सकती हैं, किन्तु इनमें गुणों को प्रदर्शित करने की एक सीमा भी हो सकती है, जिसके इस मापनी की विश्वसनीयता में अन्तर न पड़ सके।

सबसे अधिक साधारण रूप से मापना हों, नही के उत्तरों के रूप में होता है जैसे-ये प्रश्न है-क्या आप उसे कंजूस समझते हैं? क्या वह अपने मित्रों को प्यार करता है?’’

इस मापनी पर प्राप्तांकों को हम प्रतिशत में प्रकट कर सकते हैं। सबसे अधिक प्रसन्नता वाले व्यक्ति 100 प्रतिशत प्रसन्न कहे जाते हैं। साधारण व्यक्ति 50 प्रतिशत, निम्न 0 प्रतिशत। अधिकतर जिस मापनी को हम व्यक्तित्व के गुणों को मालूम करने के लिए प्रयोग करते हैं, उसमें 5 से 10 तक खण्ड होते हैं। इसका तात्पर्य है कि यह मापनी एक विशेष गुण को 5 खण्डों में 0 से 5 या 9 दशाओं का वर्णन करते हैं। 1 और 4 निम्न या उच्च, 2 उसके लिए जो औसत से कम और 3 जो औसत से ऊपर है।

इस प्रकार की निर्धारण-मापनी का एक उदाहरण नीचे दिया गया है :

उत्तम	औसत से अधिक	औसत	औसत से कम	बहुत कम	अपने मूल्यकरण को इस इस वर्ग में रखिए।
(बहुत ईमानदार)	(ईमानदार)	(समय पर ईमानदार)	(बेईमान)	(बिलकुल बेईमान)	

दूसरे प्रकार का मापन जो अधिक उपयोगी होता है और सुविधाजनक भी है, वह रेखाचित्र द्वारा प्रदर्शित मापन होता है। परीक्षण रेखा द्वारा बिन्दु या निशान उस जगह के रिक्त स्थान लगा देता है जो मापन में उस गुण के लिए छोड़ा जाता है। कभी-कभी रेखा को हम विभिन्न इकाइयों में बाँट देते हैं और मूल्य का निर्धारण वर्णन के अनुसार करते हैं और तब उसी के अनुसार रेखा में निशान लगाते हैं, एक उदाहरण दिया जा रहा है जो कार्य करने वाले कर्ता की कार्य-शक्ति के सम्बन्ध में है।

मन्द रूचि रहित औसत रूचिपूर्ण परिश्रमी

औसत व्यक्ति, किसी भी गुण में रेखा के मध्य पर होता है। कभी-कभी मापनी निर्धारक अपनी उदारता की त्रुटि के कारण या परिचायक सम्बन्ध के कारण औसत में ही व्यक्तियों को रखने पसन्द करते हैं। कभी-कभी एक मापन निर्धारक दूसरे से अधिक उदार होता है तब और भी अधिक समस्या हो जाती है। किन्तु इस त्रुटि को दूर करने के लिए हम सांख्यिकी के नियमों का प्रयोग कर सकते हैं।

दूसरे त्रुटि को हम परिवेश प्रभाव कहते हैं। यदि कोई व्यक्ति अपनी तीव्र बुद्धि के कारण एक गुण प्रदर्शित करने में निर्धारण-मापन को प्रभावित कर लेता है तो वह उसे बिना सोचे ही दूसरे गुण में सबसे उच्च

स्थान देने का प्रयत्न करेगा। यदि उसने एक समय में अनुचित कृपा प्राप्त की है तो उस प्रभाव को दूर करना निर्धारण-मापन के लिए कठिन हो जाता है, जबकि वह दूसरे गुणों को निर्धारण कर रहा हो।

इस प्रकार के मापदण्ड के प्रयोग से लाभ यह है कि हम व्यक्ति के गुणों के माध्यमिक को अधिक अच्छी प्रकार प्रदर्शित कर सकते हैं जितना कि शब्दों द्वारा नहीं हो सकता है। साथ साथ दो या दो से अधिक मापन-निर्धारकों के नियमों का हम औसत भी निकाल सकते हैं। कोई विशेष निर्धारक ईश्यातु भी हो सकता है, या एकपक्षीय हो सकता है, किन्तु विभिन्न निर्धारकों की ईश्याएँ विभिन्न दशाओं में हो सकती हैं और यह एक-दूसरे को नष्ट कर देती है और इस प्रकार केवल उचित रूप निष्पक्ष और ईश्या-रहित औसत निर्धारक माप हमें मिल जाता है।

इन विधियों की वैधता हम सरलता से पता नहीं लगा सकते। निरीक्षक का पक्षपात, ईश्या अन्तिम निष्कर्ष में अनुचित प्रभाव डालती है। निरीक्षण अपने ही व्यक्तित्व के आधार पर दूसरे व्यक्तित्व को देखने का प्रयत्न करता है। यदि हम विभिन्न निरीक्षकों के मत को एक साथ संगठित है, जो वास्तव में एक-दूसरे से स्वतन्त्र हों, तो हमें हमारे निष्कर्षों में अधिक वैधता प्राप्त हो सकती है।

निर्धारकों की विश्वसनीयता को भी हम विभिन्न निरीक्षकों के स्वतन्त्र कार्य को देखकर निर्धारित कर सकते हैं। विश्वसनीयता को प्राप्त करने के लिए हमें निर्धारक-मापदण्ड को बड़ी सावधानी से तैयार करना चाहिए। साथ ही साथ निर्धारकों तथा निर्णायकों को पूर्ण शिक्षित तथा उसके के ज्ञान आदि में पूर्ण कुशल होना चाहिए।

(iii) शारीरिक परिवर्तन : व्यक्तित्व के संकेतक के रूप में

व्यक्तित्व की कुछ विशेषताओं को हम अप्रत्यक्ष रूप से व्यक्ति के व्यवहार को देखकर अध्ययन कर सकते हैं। व्यक्तित्व का अध्ययन करने के लिए मुख्य तत्त्व 'संवेग' है। संवेग को प्रदर्शित करने से मुख्य शारीरिक संकेत-हृदय की गति और रचना, रक्त-परिमाण, रक्त-भार श्वसन के परिवर्तन, से विद्युत अनुक्रिया और व्यक्तिगत परिवर्तन आदि हैं। इन शारीरिक परिवर्तनों की माप के द्वारा हम सीमा के अन्दर झूठे या धोखे की माप एक व्यक्ति के अन्दर करने में सफल होते हैं।

मौखिक व्यवहार व्यक्तित्व अध्ययन

व्यक्तित्व की विशेषताओं का लिखित या मौखिक प्रत्युत्तरों के द्वारा अध्ययन करने में यह समझा जाता है कि यह व्यक्तित्व के मुख्य गुणों का संकेतक है। बहुत-सी व्यक्तित्व परीक्षाएँ मौखिक व्यवहारों का प्रयोग करती हैं। इनमें से मुख्य साहचर्य परीक्षा, प्रक्षेपी प्रविधि, प्रश्न-उत्तर परीक्षा अभिवृद्धि मापनी तथा ज्ञान की परीक्षाएँ और सामाजिक तथा नैतिक मूल्यों की परीक्षाएँ हैं।

साहचर्य परीक्षाएँ विभिन्न प्रकार की होती हैं। स्वतन्त्र साहचर्य परीक्षाएँ वे हैं, जिनमें परीक्ष्य लगातार बोलता रहता है उस समय तक, जय आगे बोलने में असमर्थ हो जाता है। इसका प्रयोग विश्लेषक किसी भावना का पता लगाने के लिए करते हैं।

दूसरे प्रकार की साहचर्य परीक्षा में हम विषयी को एक उतेजक शब्द देते हैं और इसके प्रत्युत्तर में विषयी के मस्तिष्क में जो भी आता है, वह बोलता है। इन परीक्षाओं को हम विषयी की वेगात्मक कठिनाइयों का पता लगाने के लिए प्रयोग करते हैं। इन साहचर्य परीक्षाओं को हम संवेगात्मक ग्रन्थियों के रूप में प्रयोग करते हैं। यह हमें अपराध, मानसिक अवस्था, रूचि आदि के बारे में भी बताती है।

प्रक्षेपी विधि :-

तीसरे प्रकार की विधि, जिसे हम व्यक्तित्व को मापने के लिए उपयोग करते हैं, प्रक्षेपी प्रविधि है। व्यक्तित्व का वस्तुनिष्ठ परीक्षाओं की सबसे बड़ी कमी यह है कि यह व्यक्ति के अचेतन का अध्ययन नहीं करती। प्रत्येक व्यक्ति में प्रेरणाएँ, इच्छाएँ, रुचि, संवेग, विश्वास आदि होते हैं जो वास्तव में दूसरों को दिखाई नहीं देते, किन्तु वह उस व्यक्ति के ही अंग होते हैं। व्यक्ति स्वयं भी इनके बारे में चेतन नहीं होता। इस प्रकार बिना इन अचेतन प्रेरणाओं, को विचार में रखते हुए हम व्यक्तित्व को पूर्णरूप से व्यक्त नहीं कर सकते, अन्यथा हमें व्यक्तित्व का एकांगी चरित्र

प्रक्षेपण विधि (Projection Method)

प्रोजेक्ट का अर्थ है - प्रक्षेपण करना या फेंकना। सिनेमा हाल के किसी भाग में बैठा हुआ व्यक्ति प्रोजेक्टर की सहायता से फिल्म के चित्रों को पर्दे पर 'प्रोजेक्ट' करता है या फेंकता है। वहाँ बैठे हुए दर्शकगण उन चित्रों को विभिन्न दृष्टिकोणों से देखते हैं। उदाहरणार्थ अभिनेत्री के नृत्य के समय कलाकार उसके शरीर की गतियों को, नवयुवक उसके सौन्दर्य को, तरूण बालिका उसके श्रृंगार को और सामान्य मनुष्य उसकी विभिन्न मुद्राओं को विशेष रूप से देखता है। इसका अभिप्राय यह है कि सब लोग एक व्यक्ति या वस्तु को समान रूप से न देखकर अपने व्यक्तित्व के गुणों या मानसिक अवस्थाओं के अनुसार देखते हैं। मानव स्वभाव की इस विशिष्टता से लाभ उठाकर मनोवैज्ञानिकों ने व्यक्तित्व मापन के लिए प्रक्षेपण विधि का निर्माण किया। इस विधि का अर्थ थार्प व शमलर ने लिखा है - " प्रक्षेपण विधि, उद्दीपकों के प्रति व्यक्ति की प्रतिक्रियाओं के आधार पर उसके व्यक्तित्व के स्वरूप का वर्णन करने का साधन है।"

प्रक्षेपण विधि में व्यक्ति को एक चित्र दिखाया जाता है और उसके आधार पर उससे किसी कहानी की रचना करने के लिए कहा जाता है। व्यक्ति उसकी रचना अपने स्वयं के विचारों, संवेगों, अनुभवों और आकांक्षाओं के अनुसार करता है। परीक्षक उसकी कहानी से उसकी मानसिक दशा और व्यक्तित्व के गुणों के सम्बन्ध में अपने निष्कर्ष निकालता है। इस प्रकार, इस विधि का प्रयोग करके वह व्यक्ति के कुछ विशिष्ट गुणों का नहीं, वरन् उसके सम्पूर्ण व्यक्तित्व का ज्ञान प्राप्त करता है। यही कारण है कि व्यक्तित्व मापन की इस नवीनतम विधि का सबसे अधिक प्रचलन है और मनोविश्लेषक इसका प्रयोग विभिन्न परेशानियों में उलझे हुए लोगों की मानसिक चिकित्सा करने के लिए करते हैं।

प्रक्षेपण विधि के आधार पर अनेक व्यक्तित्व परीक्षणों का निर्माण किया गया है, जिनमें निम्नांकित दो सबसे अधिक प्रचलित हैं -

(i) रोर्शा का स्याही धब्बा परीक्षण Rorschach Ink Blot Test

(ii) प्रासंगिक अन्तर्बोध परीक्षण - Thematic Apperception Test (TAT)

(i) रोर्शा का स्याही धब्बा परीक्षण (Rorschach Ink Blot Test)

(v) परीक्षण सामग्री - रोर्शा का स्याही धब्बा परीक्षण सबसे अधिक प्रयोग किया जाने वाला व्यक्तित्व परीक्षण है। इसका निर्माण स्वित्जरलैंड के विख्यात मनोरोग चिकित्सक हरमन रोर्शा ने 1921 में किया था। इस परीक्षण में स्याही धब्बों के 10 कार्डों का प्रयोग किया जाता है। (इस प्रकार के एक धब्बे का चित्र आपके अवलोकन के लिए नीचे दिया गया है) इन कार्डों में से 5 बिल्कुल काले हैं, 2 काले और लाल हैं और तीन अनेक रंगों के हैं।



चित्र

(ब) परीक्षण विधि - जिस मनुष्य के व्यक्तित्व का परीक्षण किया जाता है, उसे ये कार्ड निश्चित समय के अन्तर के बाद एक-एक करके दिखाये जाते हैं। फिर उससे पूछा जाता है कि उसे प्रत्येक कार्ड के धब्बों में क्या दिखाई दे रहा है। परीक्षार्थी, धब्बे में जो भी आकृतियां देखता है, उनको बताता है और परीक्षक उसके उत्तरों को सविस्तार लिखता है। एक बार दिखाये जाने के बाद कार्डों का परीक्षार्थी को दुबारा दिखाया जाता है। इस प्रकार उससे पूछा जाता है कि धब्बों में बताई गई आकृतियों को उसने कार्डों में किन स्थानों पर देखा था।

(स) विश्लेषण - परीक्षक, परीक्षार्थी के उत्तरों का विश्लेषण अग्रांकित चार बातों के आधार पर करता है -

(i) स्थान (Location) - इसमें यह देखा जाता है कि परीक्षार्थी की प्रतिक्रिया पूरे धब्बे के प्रति थी, या उसके किसी एक भाग के प्रति।

(ii) निर्धारक गुण (Determining Quality) - इसमें यह देखा जाता है कि परीक्षार्थी की प्रतिक्रिया धब्बे की बनावट के कारण थी या उसके रंग के कारण या उसमें देखी जाने वाली किसी आकृति की गति के कारण।

(iii) विषय (Content) - इसमें देखा जाता है कि परीक्षार्थी ने धब्बों में किसकी आकृतियां देखी - व्यक्तियों की, पशुओं की, वस्तुओं की, प्राकृतिक दृश्यों की, नक्शों की या अन्य किसी की।

(iv) समय व प्रतिक्रियायें (Time & Responses) - इसमें यह देखा जाता है कि परीक्षार्थी ने प्रत्येक धब्बे के प्रति कितने समय तक प्रतिक्रिया की, कितनी प्रतिक्रियाएं की और किस प्रकार की की।

(द) निष्कर्ष - अपने विश्लेषण के आधार पर परीक्षक निम्नलिखित प्रकार के निष्कर्ष निकालता है -

(i) यदि परीक्षार्थी ने सम्पूर्ण धब्बों के प्रति प्रतिक्रियायें की हैं तो वह व्यावहारिक मनुष्य न होकर सैद्धान्तिक मनुष्य है।

(ii) यदि परीक्षार्थी ने धब्बों के भागों के प्रति प्रतिक्रियायें की हैं, तो वह छोटी-छोटी और व्यर्थ की बातों की ओर ध्यान देने वाला मनुष्य है।

(iii) यदि परीक्षार्थी ने धब्बों में व्यक्तियों, पशुओं आदि की गति (चलते हुए) देखी है, तो वह अन्तर्मुखी मनुष्य है।

(iv) यदि परीक्षार्थी ने रंगों के प्रति प्रतिक्रियायें की हैं, तो उसमें संवेगों का बाहुल्य है। परीक्षक उक्त प्रतिक्रियाओं के आधार पर परीक्षार्थी के व्यक्तित्व के गुणों को निर्धारित करता है।

(य) उपयोगिता -इस परीक्षण द्वारा व्यक्ति की बुद्धि, सामाजिकता, अनुकूलन, अभिव्यक्तियों, संवेगात्मक सन्तुलन, व्यक्तिगत विभिन्नता आदि का पर्याप्त ज्ञान हो जाता है। अतः उसे सरलतापूर्वक व्यक्तिगत निर्देशन दिया जा सकता है। क्रो एवं क्रो (Crow & Crow. P.203) के अनुसार - “धब्बों की व्याख्या करके परीक्षार्थी अपने व्यक्तित्व का सम्पूर्ण चित्र प्रस्तुत कर देता है।”

(ii) प्रासंगिक अन्तर्बोध परीक्षण -Thematic Apperception Test (TAT)

(व) **परीक्षण प्रणाली** - इस परीक्षण का निर्माण मॉर्गन एवं मूरें ने 1925 में किया था। इस परीक्षण में 30 चित्रों का प्रयोग किया जाता है। ये सभी चित्र पुरुषों या स्त्रियों के हैं। इनमें से 10 चित्र पुरुषों के लिए, 10 स्त्रियों के लिए और 10 दोनों के लिए हैं। परीक्षण के समय लिंग के अनुसार साधारणतः 10 चित्रों का प्रयोग किया जाता है।

(ब) **परीक्षण विधि** - परीक्षक, परीक्षार्थी को एक चित्र दिखाकर पूछता है - ‘चित्र में अंकित व्यक्ति या व्यक्तियों के विचार और भावनायें क्या हैं? इन प्रश्नोंको पूछने के बाद परीक्षक, परीक्षार्थी को एक एक करके 10 कार्ड दिखाता है। वह परीक्षार्थी से प्रश्नों को ध्यान में रखकर प्रत्येक कार्ड के चित्र के सम्बन्ध में कोई कहानी बनाने को कहता है। परीक्षार्थी कहानी सुनाता है।

(स) **विश्लेषण** - परीक्षार्थी साधारणतः अपने को चित्र का कोई पात्र मान लेता है। उसके बाद वह कहानी कहकर अपने विचारों, भावनाओं, समस्याओं आदि को व्यक्त करता है। यह कहानी स्वयं उसके जीवन की कहानी होती है। परीक्षक कहानी का विश्लेषण करके उसके व्यक्तित्व की विशेषताओं का पता लगाता है।

(द) **उपयोगिता** - इस परीक्षण द्वारा व्यक्ति की रुचियों, अभिरूचियों, प्रवृत्तियों, इच्छाओं, आवश्यकताओं सामाजिक और व्यक्तिगत सम्बन्धों आदि की जानकारी प्राप्त हो जाती है। इस जानकारी के आधार पर उसे व्यक्तिगत निर्देशन देने का कार्य सरल हो जाता है।

अन्य विधियाँ व परीक्षण (Other Methods & Tests) -

- 1- निरीक्षण विधि (observational method)- इस विधि में परीक्षणकर्ता विभिन्न परिस्थितियों में व्यक्ति के व्यवहार का अध्ययन करता है।
- 2- आत्मकथा विधि(Autobiographical Method)- इस विधि में परीक्षार्थी से उसके जीवन से सम्बन्धित किसी विषय पर निबन्ध लिखने के लिए कहा जाता है।
- 3- स्वतंत्र सम्पर्क विधि (Free contact Method)- इस विधि में परीक्षार्थी से अति घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित करके, उसके विषय में विभिन्न प्रकार की सूचनायें प्राप्त करता है।
- 4- मनोविश्लेषण विधि (Psycho-Analytic Method) -इस विधि में परीक्षार्थी के अचेतन मन की इच्छाओं का ज्ञान प्राप्त किया जाता है।
- 5- समाजमिति विधि (Sociometric Method) - इस विधि का प्रयोग, व्यक्ति के सामाजिक गुणों का मापन करने के लिए किया जाता है।

- 6- शारीरिक परीक्षण विधि (Physical test method) - इस विधि में विभिन्न यंत्रों से व्यक्ति की विभिन्न क्रियाओं का मापन किया जाता है। ये यंत्र हृदय, मस्तिष्क, श्वास, माँसपेशियों आदि की क्रियाओं का मापन करते हैं।
- 7- बालकों का अन्तर्बोध परीक्षण (Children's Apperception Test, (CAT)- यह परीक्षण TATके समान होता है। अन्तर केवल इतना है कि TATवयस्कों के लिए है, यह बालकों के लिए है।
- 8- चित्र कहानी परीक्षण (Picture Story Test) - इस परीक्षण में 20 चित्रों की सहायता से किशोर बालकों और बालिकाओं के व्यक्तित्व का अध्ययन किया जाता है।
- 9- मौखिक प्रक्षेपण परीक्षण (Verbal Projective Test) - इस परीक्षण में कहानी कहना, कहानी पूरी करना और इस प्रकार की अन्य मौखिक क्रियाओं द्वारा परीक्षण किया जाता है।

3.5 व्यक्तित्व परीक्षण के प्रमुख मुद्दे

व्यक्तित्व को मापना और निर्धारण करना, एक बहुत ही प्राचीन समस्या है। शताब्दियों में मनुष्य ने अपने तथा दूसरों के व्यक्तित्व और चरित्र की माप करने की विधियों का पता लगाने की चेष्टा की। उन्होंने ऐसी विधि या साधन को चुना जो आज तक हमारी प्रत्येक संस्कृति में कुछ महत्व रखते हैं। यह साधन कपालविद्या आकृति विद्या आलेखीय विद्या आदि हैं। इन्हीं के द्वारा चरित्र के पढ़ने का प्रयास या चरित्र के बारे में बताने का प्रयत्न किया जाता है। मनोवैज्ञानिक इन सिद्धान्तों तथा ज्योतिषशास्त्र में विश्वास नहीं रखते। व्यक्तित्व के निर्धारण तथा व्यक्तित्व के गुणों को प्रकट करने के लिए मनोवैज्ञानिक नवीन ढंग का प्रतिपादन कर रहे हैं। इनमें से कुछ पर, जी मुख्य है, हम यहां विचार करेंगे।

व्यक्तित्व के मापों में वैज्ञानिक रूप में बहुत सी बाधाएँ हैं। एक व्यक्तित्व के गुण को यह इन ढंग को नहीं अपना सकते क्योंकि 1 इनमें मापन आरंभ करने के लिए कोई भी शून्य अंक नहीं है। 2 मापन इकाइयों में कोई समानता नहीं होती, 3 मापन के संबंधमें जो मुख्य शब्द प्रयोग किये जाते हैं उनके संबंधमें कोई एक सा मत नहीं है। 4 इन्हें नापने के लिए उपयुक्त साधन तथा यंत्र उपलब्ध नहीं हैं।

किसी वस्तु के मूल्यांकन से तात्पर्य है - उस वस्तु संबंधी किसी प्रकार का वर्णन। जब हम मापते हैं तो वर्णन का सहारा लेते हैं, किन्तु यह वर्णन तुलनात्मक और साधारण अंक संबंधी होते हैं अर्थात् यह माप सदैव अंशों में होती है जो कम या अधिक हो सकती है। वास्तविक रूप में हम यह माप पूरे का एक अंक होती है, यह पूरी माप नहीं हो सकती। जब हम किसी वस्तु को मापते हैं तो एक ही एक गुण या एक से अधिक गुण उस वस्तु को मापते हैं। जैसे लम्बाई, चौड़ाई, उंचाई, भार, चिकलापन या कठोरता आदि, किन्तु विशेष बात यह है कि कभी भी हम उस वस्तु के सब गुण एक समान मापन द्वारा नहीं माप सकते। यह बात जब भौतिक वस्तुओं के लिए सत्य है तो व्यक्तित्व के संबंधमें जो वस्तु नहीं है, हम विश्वास के साथ कह सकते हैं कि कोई भी एक मापन हमें पूर्णरूप से इसका चित्र नहीं दे सकता।

व्यक्तित्व मापन की दिशा में गत अनेक वर्षों से निरन्तर कार्य किया जा रहा है, जिसके फलस्वरूप कुछ अत्युत्तम मापन-विधियों और परीक्षण का निर्माण किया गया है। छात्रों, सैनिकों और असैनिक कर्मचारियों के व्यक्तित्व का मापन करने के लिए इनका प्रयोग अति सफलता से किया जा रहा है। इसका अभिप्राय यह नहीं है कि इन विधियों और परीक्षणों में वैद्यता और विश्वसनीयता का अभाव नहीं है। इस

अभाव का मुख्य कारण यह है कि मानव-व्यक्तित्व इतना जटिल है कि उसका ठीक-ठीक माप कर लेना कोई सरल कार्य नहीं है। वरनन ने ठीक ही लिखा है “मानव व्यक्तित्व के परीक्षण या मापन में इतनी अधिक कठिनाइयाँ हैं कि सर्वोच्च मनोवैज्ञानिक कुशलता का प्रयोग करके भी शीघ्र सफलता प्राप्त किये जाने की आशा नहीं की जा सकती है।”

व्यक्तित्व मूल्यांकन की इन विधियों का प्रयोग करने में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। सही मापन हेतु मापी जाने वाली वस्तु की प्रकृति, उपकरणों की प्रकृति तथा व्यक्ति की प्रकृति का ध्यान रखना पड़ता है। इन तीनों प्रकृति के आधार पर मापन उपकरण के सही इस्तेमाल से व्यक्तित्व का मापन सही ढंग से किया जा सकता है।

3.6 सारांश

व्यक्तित्व मापने के लिए मनोवैज्ञानिकों ने अनेक प्रकार की विधियों का वर्णन किया है जिसमें व्यक्तित्व आविष्कारिका (personality inventories) तथा प्रक्षेपण परीक्षण (projective tests) प्रमुख हैं। व्यक्तित्व आविष्कारिका MMPI में, बेल समायोजन आविष्कारिका (Bell Adjustment Inventory), कैटेल 16 व्यक्तित्व कारक आविष्कारिका (Cattell 16 PF Inventory) आदि प्रमुख हैं। प्रक्षेपण विधि (projective method) के रूप में रेशाखि (Rorschach Test) TAT परीक्षण शब्द साहचर्य परीक्षण (Word Association, Test) तथा वाक्यपूर्ति परीक्षण (Sentence Completion Test) आदि प्रमुख हैं।

व्यक्तित्व मापन में प्रेक्षण विधियों (observational methods) जैसे रेटिंग मापनी (rating scale) तथा साक्षात्कार विधि (interview method) का भी प्रयोग किया जाता है।

3.7 स्वमूल्यांकन प्रश्न

अतिलघुतरात्मक प्रश्न

- 1- व्यक्तित्व मापन का क्या अर्थ है?
- 2- व्यक्तित्व मापन की व्यक्तिगत विधियों के नाम लिखिये।
- 3- व्यक्तित्व मापन की वस्तुनिष्ठ विधियों के नाम लिखिये।
- 4- व्यक्तित्व मापन की प्रेक्षणीय विधियों के नाम लिखिये।
- 5- स्याही धब्बा परीक्षण के प्रवर्तक कौन हैं।
- 6- प्रासंगिक अन्तरबोध परीक्षण के प्रवर्तक कौन हैं।

लघुतरात्मक प्रश्न

- 1- जीवन इतिहास विधि किसे कहते हैं? संक्षेप में स्पष्ट कीजिये।
- 2- किसी परीक्षण की वैधता और विश्वसनीयता से क्या तात्पर्य है।
- 3- हरमर्न रोशा परीक्षण का संक्षेप में वर्णन कीजिये।
- 4- समाजमिति विधि का संक्षेप में वर्णन कीजिये।

निबंधात्मक प्रश्न

- 1- TAT परीक्षण की कार्यविधि की सज्जदाहरण व्याख्या कीजिये।
- 2- CAT परीक्षण की कार्यविधि की सज्जदाहरण व्याख्या कीजिये।

- 3- चित्र कहानी परीक्षण की कार्यविधि की सउदाहरण व्याख्या कीजिये।
 - 4- व्यक्तित्व परीक्षण के प्रमुख मुद्दों पर प्रकाश डालिये।
-

3.7 संदर्भ ग्रंथ सूची

- Allport, H.E.; Social Psychology Boston : Hoftun, Mfflin, 1924
- Allport, G.W. : Personality; Psychological Interpretation, New York, Henary Hall, 1937
- Cattell, R.B.; Personality and motivation, New York, Harcourt, 1957
- एल. आर. शुल्का : बला मनोविज्ञान
- डॉ. एस.एस. माथुर : शिक्षा मनोविज्ञान
- डॉ. एस.पी. गुप्ता : शिक्षा मनोविज्ञान, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद
- डॉ. आर.एन. सिंह : आधुनिक मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा -2
- डॉ. अरूण कुमार सिंह : आधुनिक मनोविज्ञान, भारती भवन, पटना
- डॉ. पी.डी. पाठक : शिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा - 2

इकाई - 4

व्यक्तित्व के मनोगत्यात्मक सिद्धान्त

Psychodynamic theories of personality

(फ्रायड, इरिकसन, हार्नी, सुल्लीवान)

(Freud, Erikson, Horney and Sullyvan)

इकाई की रूपरेखा

- 4.1 प्रस्तावना
- 4.2 उद्देश्य
- 4.3 व्यक्तित्व का संप्रत्यय
- 4.4 फ्रायड का व्यक्तित्व सिद्धान्त
 - 4.4.1 व्यक्तित्व की संरचना
 - 4.4.1.1 संरचनात्मक मॉडल
 - 4.4.1.2 गत्यात्मक मॉडल
 - 4.4.2 मूलप्रवृत्ति के प्रकार
 - 4.4.3 अहं रक्षात्मक युक्तियां
 - 4.4.4 मनोलैंगिक विकास अवस्थाएं
 - 4.4.5 फ्रायड के सिद्धान्त का मूल्यांकन
 - 4.4.6 अभ्यास प्रश्न
- 4.5 इरिक इरिकसन: व्यक्तित्व का मनोसामाजिक सिद्धान्त
 - 4.5.1 मनोसामाजिक विकास की अवस्थाएं
 - 4.5.2 अभ्यास प्रश्न
- 4.6 केरेन हार्नी का व्यक्तित्व सिद्धान्त
 - 4.6.1 मूल चिन्ता का संप्रत्यय
 - 4.6.2 न्यूरोटिक/स्नायुविकृत आवश्यकताएं
 - 4.6.3 व्यक्तित्व के प्रकार
 - 4.6.4 अभ्यास प्रश्न
- 4.7 सुल्लीवान का व्यक्तित्व सिद्धान्त
 - 4.7.1 गत्यात्मकता
 - 4.7.2 मानवीकरण

4.7.3 विकासात्मक अवस्थाएं

4.7.4 अभ्यास प्रश्न

4.8 सारांश

4.9 शब्दावली

4.10 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

4.11 संदर्भ ग्रन्थ सूची

4.12 निबंधात्मक प्रश्न

4.1 प्रस्तावना

व्यक्तित्व के स्वरूप की व्याख्या करने के लिए विभिन्न उपागमों के तहत कई सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया गया है। इन सैद्धान्तिक उपागमों में इस इकाई में मनोविश्लेषणात्मक या मनोगत्यात्मक सिद्धान्तों का अध्ययन करेंगे। मनोविश्लेषणात्मक उपागम का प्रतिपादन सिगमण्ड फ्रायड द्वारा किया गया था। इस उपागम में व्यक्तित्व की व्याख्या अचेतन मन की इच्छाओं, यौन एवं आक्रामकता के जैविक आधारों आरम्भिक बाल्यावस्था के मानसिक संघर्षों के आधार पर की गई है। साथ ही इरिकसन, फ्रोम एवं हार्नी ने व्यक्ति में जैविक कारकों के साथ साथ सामाजिक कारकों की भूमिका पर भी जोर दिया।

4.2 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप

- व्यक्तित्व के शाब्दिक अर्थ को समझ सकेंगे
- व्यक्तित्व की मनोगत्यात्मक विचारधारा को समझ सकेंगे
- सिगमण्ड फ्रायड के व्यक्तित्व सिद्धान्त को समझ सकेंगे
- एरिक इरिकसन के व्यक्तित्व सिद्धान्त को समझ सकेंगे
- फ्रेडरिक हार्नी के व्यक्तित्व सिद्धान्त को समझ सकेंगे
- सुल्लीवान के व्यक्तित्व सिद्धान्त को समझ सकेंगे

4.3 व्यक्तित्व का संप्रत्यय

व्यक्तित्व के अध्ययन में मनोवैज्ञानिकों की अत्यधिक रुचि के परिणामस्वरूप विभिन्न मनोवैज्ञानिकों ने व्यक्तित्व को अपने अपने दृष्टिकोण से समझने का प्रयास किया। इसी के फलस्वरूप व्यक्तित्व की अनेक परिभाषाएं दी गईं। व्यक्तित्व का अंग्रेजी अनुवाद 'पर्सनालिटी' है जो लेटिन शब्द परसोना से बना है जिसका अर्थ होता है नकाब या मास्का। शाब्दिक अर्थ के आधार पर तो व्यक्तित्व को बाहरी रूप में व्यक्ति कैसा दिखता है के आधार पर समझा गया। लेकिन व्यक्तित्व यह व्यक्तित्व का एक छोटा सा अंश मात्र है। अधिक महत्वपूर्ण तो उसके आन्तरिक गुण हैं जो व्यक्ति को एक स्थायी विशेषता प्रदान करते हैं। व्यक्तित्व की कुछ परिभाषाएं निम्न हैं -

व्यक्तित्व व्यक्ति के भीतर उन मनोशारीरिक तंत्रों का गतिशील या गत्यात्मक संगठन है जो वातावरण में उसके अपूर्व समायोजन को निर्धारित करता है।

आईजेन्क के अनुसार व्यक्तित्व व्यक्ति के चरित्र, चित्तप्रकृति, ज्ञानशक्ति तथा शरीर गठन का करीब करीब एक स्थायी एवं टिकाऊ संगठन है जो वातावरण में उसके अपूर्व समायोजन का निर्धारण करता है।

बेरोन के अनुसार व्यक्तित्व किसी व्यक्ति के अनूठे तथा सापेक्ष रूप से स्थिर व्यवहार, चिन्तन एवं संवेगों के पैटर्न के रूप में परिभाषित किया गया है।

4.4 फ्रायड का व्यक्तित्व सिद्धान्त

4.4.1 व्यक्तित्व की संरचना

फ्रायड ने व्यक्तित्व की संरचना को समझने के लिये दो मॉडल का निर्माण किया है। पहला - संरचनात्मक मॉडल एवं दूसरा - गत्यात्मक या संरचनात्मक मॉडल

4.4.1.1 संरचनात्मक मॉडल - फ्रायड ने इसे तीन स्तरों में बांटा है।

चेतन - यह मन का वह भाग है जिसमें वर्तमान से सम्बन्धित सभी अनुभूतियां, संवेदना, तात्कालिक अनुभव आदि होते हैं। किसी क्षण विशेष में व्यक्ति के मन में आ रही अनुभूतियों का सम्बन्ध उसके चेतन से होता है।

अर्द्धचेतन - इसमें ऐसी इच्छाएं, विचार, भाव होते हैं जो वर्तमान चेतन में नहीं होते हैं परन्तु प्रयास करने पर वे हमारे चेतन मन में आ जाते हैं। अर्द्धचेतन को अचेतन भी कहा जाता है।

अचेतन - अचेतन अर्थात् चेतना से परे। अचेतन में रहने वाले विचार एवं इच्छाओं का स्वरूप मुख्यतः कामुक, असामाजिक, अनैतिक होता है। जिन इच्छाओं एवं विचारों की पूर्ति व्यक्ति नहीं कर पाता है, उन्हें चेतन से हटाकर अचेतन में दबा दिया जाता है। इसे दमन कहते हैं। फ्रायड के अनुसार अचेतन चेतन एवं अर्द्धचेतन की तुलना में अधिक बड़े आकार का होता है।

4.4.1.2 गत्यात्मक मॉडल

इस मॉडल के अनुसार व्यक्तित्व के तीन भाग हैं।

इदम् - इदम् व्यक्तित्व का वह भाग है जो आनन्द सिद्धान्त पर आधारित है। इसमें वे प्रवृत्तियां होती हैं जो असंगठित, कामुक, आक्रामकतापूर्ण तथा नियम को नहीं मानने वाली होती हैं। यह मुख्यतः आनन्द देने वाली प्रेरणाओं की संतुष्टि करता है। इदम् उचित-अनुचित, विवेक-अविवेक, समय, स्थान आदि पर ध्यान नहीं देता। इदम् पूर्णतः अचेतन ही होता है।

अहम् - सामाजिक नियमों एवं नैतिक मूल्यों के कारण इदम् की इच्छाओं की पूर्ति संभव नहीं हो पाती। यह वास्तविकता सिद्धान्त द्वारा नियन्त्रित होता है। अर्थात् इन सामाजिक नियमों को ध्यान में रखते हुए परिस्थितियों के अनुसार क्या किया जाना चाहिये। अहं व्यक्तित्व का कार्यपालक माना जाता है। यह अंशतः चेतन अंशतः अचेतन होता है।

पराहं - यह आदर्शवादी या नैतिकता सिद्धान्त पर आधारित है। जो व्यक्ति को यह बताता है कि कौनसा कार्य अनैतिक है एवं नहीं किया जाना चाहिये। यह इदम् की प्रवृत्तियों पर रोक लगाता है तथा अहं को वास्तविक लक्ष्यों से नैतिक लक्ष्यों की ओर ले जाता है।

व्यक्तित्व में इंद, अहं, पराहं तीनों होते हैं, लेकिन व्यक्तियों में इसकी मात्रा में अन्तर होता है। उदाहरण के लिये इंद व्यक्ति को सिगरेट पीने की प्रवृत्त करती है। क्योंकि इससे मिलने वाला आनन्द इसके लिये महत्वपूर्ण है। अहं वास्तविक परिस्थितियों को ध्यान में रखकर निर्णय लेगी अर्थात् किस स्थान पर किसके सामने सिगरेट पी जाए। पराहं नैतिक मूल्यों अर्थात् क्या गलत है क्या सही है इस आधार पर निर्णय लेगी।

4.4.2 मूलप्रवृत्ति के प्रकार

मूलप्रवृत्ति वे जन्मजात शारीरिक उत्तेजना है जिसके द्वारा व्यक्ति के सभी तरह के व्यवहार निर्धारित किये जाते हैं। फ्रायड ने मूलप्रवृत्तियों के दो प्रकार बताए -

जीवन मूलप्रवृत्ति - इन्हें इरोस भी कहा जाता है। यह रचनात्मक कार्यों से सम्बन्धित है।

मृत्यु मूलप्रवृत्ति - इन्हें थेनेटोज कहा जाता है। यह ध्वंसात्मक कार्यों या आक्रामककारी व्यवहार से सम्बन्धित है।

फ्रायड ने अपने सिद्धान्त में यौन मूलप्रवृत्ति को जीवन मूलप्रवृत्ति से अलग करते हुए इस पर बल डाला है। यौन मूलप्रवृत्ति के उर्जा बल को लिबिडो कहा जाता है।

4.4.3 अहं रक्षात्मक युक्तियां

फ्रायड के अनुसार चिन्ता एक भावात्मक एवं दुखद अवस्था होती है जिसमें दूर करने के लिये व्यक्ति रक्षात्मक युक्तियां अपनाता है। ये रक्षात्मक युक्तियां निम्न प्रकार की होती हैं। अचेतन स्तर पर ही कार्य करती हैं। प्रमुख रक्षात्मक युक्तियां निम्न हैं -

दमन - दमन के द्वारा चिन्ता, तनाव, मानसिक संघर्ष उत्पन्न करने वाली असामाजिक एवं अनैतिक इच्छाओं को चेतना से हटाकर व्यक्ति अचेतन में कर देता है। इसे चयनात्मक विस्मरण भी कहा जाता है।

यौक्तिकीकरण - इसमें व्यक्ति अपने अयुक्तिसंगत विचारों व्यवहारों को एक युक्तिसंगत एवं तर्कसंगत व्यवहार के रूप में परिणत कर स्वयं एवं दूसरों को संतुष्ट कर अपना मानसिक संघर्ष दूर करने की कोशिश करता है। कोई व्यक्ति अपनी आर्थिक तंगी से उत्पन्न चिन्ता को दूर करने के लिये यदि यह सोचता है कि अपने घर की सूखी रोटी भी दूसरों के घर के हलवे से अधिक स्वादिष्ट होती है तो यह यौक्तिकीकरण का उदाहरण होगा।

प्रतिक्रिया निर्माण - यह रक्षात्मक युक्ति प्रसिद्ध कहावत मुख में राम बगल में छुरी व सौ सौ चूहे खाकर बिल्ली हज को चली से मेल खाती है। इसमें व्यक्ति अपने अहं को किसी कष्टकर या किसी अप्रिय इच्छा तथा प्रेरणा से ठीक विपरीत इच्छा विकसित कर बचाता है। उदाहरण के लिये भ्रष्ट नेता द्वारा भ्रष्टाचार के विरोध में भाषण देना तथा प्रेम में असफल हो जाने पर अपनी प्रेमिका या प्रेमी से घृणा करना इसके उदाहरण हैं।

प्रतिगमन - प्रतिगमन का शाब्दिक अर्थ पीछे की ओर जाना होता है। इसमें तनाव या चिन्ता से बचने हेतु व्यक्ति में बाल्यावस्था के व्यवहारों की ओर पलटने की प्रवृत्ति होती है।

प्रक्षेपण - अन्य व्यक्तियों या वातावरण के प्रति अपनी अमान्य प्रस्तुतियों, मनोवृत्तियों एवं व्यवहारों को अचेतन रूप से आरोपित करने की प्रक्रिया को प्रक्षेपण कहा जाता है। परीक्षा में फेल हो जाने पर छात्र

इसका दोष शिक्षक द्वारा कुछ न पढ़ाये जाने को या माता पिता द्वारा घरेलू कार्यों में व्यस्त रखे जाने को देता है तो यह प्रक्षेपण का उदाहरण होगा।

विस्थापन - इसमें व्यक्ति अपने संवेग या प्रेरणा को किसी वस्तु विशेष या व्यक्ति से अचेतन रूप से हटाकर दूसरे व्यक्ति या वस्तु से सम्बन्धित कर लेता है। जैसे व्यक्ति ऑफिस में किसी कारण से गुस्सा होकर घर लौटने पर पत्नी या बच्चों पर गुस्सा दिखलाना।

4.4.4 मनोलैंगिक विकास अवस्थाएं

फ्रायड के अनुसार जन्म के समय बच्चों में लैंगिक उर्जा मौजूद होती है जो निम्न 5 मनोलैंगिक अवस्थाओं से होकर विकसित होती है।

मुखावस्था: यह मनोलैंगिक विकास की पहली अवस्था है जो जन्म से लेकर 1 वर्ष की उम्र तक होती है। इस अवस्था में मुह कामुकता क्षेत्र के रूप में होता है। फलस्वरूप बच्चा मुंह द्वारा की जाने वाली सभी क्रियाओं जैसे चूसना, निगलना, जबड़ा से कोई चीज दबाना आदि द्वारा सुख प्राप्त करता है।

गुदावस्था: यह अवस्था 1 से 3 वर्ष तक रहती है। इस अवस्था में कामुकता क्षेत्र मुंह से हटकर शरीर के गुदा क्षेत्र में आ जाता है। फलस्वरूप बच्चे मल मूत्र त्यागने से सम्बन्धित क्रियाओं से आनन्द उठाते हैं।

फेलिक अवस्था: यह अवस्था 4 से 5 वर्ष तक रहती है। इस अवस्था में कामुकता क्षेत्र जननेन्द्रिय होते हैं। फ्रायड का कहना था कि इस अवस्था में प्रत्येक लड़के में मातृ मनो ग्रन्थि या इडीपस काॅम्प्लेक्स तथा प्रत्येक लड़की में पितृ मनो ग्रन्थि या इलेक्ट्रा काॅम्प्लेक्स विकसित होती है। इडीपस काॅम्प्लेक्स में लड़का अचेतन रूप से माता की ओर आकर्षित होता है एवं लैंगिक प्रेम की इच्छा रखता है। साथ ही वह पिता से घृणा करता है। लड़का यह सोचता है कि पिता उसके लिंग को ही कटवा देंगे। इसे बंधियाकरण चिन्ता कहा जाता है। इसके ठीक विपरीत पितृ मनोग्रन्थि में लड़की अपने पिता की ओर लैंगिक रूप से आकर्षित होती है एवं माता से घृणा करती है।

अव्यक्तावस्था लेटेन्सी अवस्था: यह अवस्था 6 से 7 वर्ष की आयु से प्रारंभ होकर 12 वर्ष तक रहती है। इस अवस्था में बच्चों में कोई नया कामुकता क्षेत्र विकसित नहीं होता तथा लैंगिक इच्छाएं भी सुषुप्त हो जाती हैं। इस अवस्था में लैंगिक क्रियाएं कुछ अलैंगिक क्रियाओं के रूप में जैसे चित्रकारी, खेल-कूद आदि के रूप में व्यक्त होती हैं।

जननेन्द्रियावस्था: यह मनोलैंगिक विकास की अन्तिम अवस्था है जो 13 वर्ष की आयु से प्रारंभ होकर निरन्तर चलती रहती है। इस अवस्था में किशोरावस्था या प्रौढ़ावस्था दोनों ही सम्मिलित होते हैं। किशोरावस्था के वर्षों में व्यक्तियों में अपने ही लिंग के व्यक्तियों के साथ रहने, बातचीत करने की प्रवृत्ति अधिक होती है। परन्तु धीरे धीरे वयस्कावस्था में प्रवेश करने पर व्यक्ति में विपरीत लिंग से सम्बन्ध स्थापित कर एक संतोषजनक जीवन की ओर अग्रसर होता है।

4.4.5 फ्रायड के सिद्धान्त का मूल्यांकन

फ्रायड का यह सिद्धान्त काफी विस्तृत है। यह समझ योग्य भाषा में व्यक्तित्व की व्याख्या करता है। फ्रायड का सिद्धान्त व्यक्तित्व के अग्रणी सिद्धान्तों के रूप में जाना जाता है जिसके विचारों से प्रेरित, असहमत होकर अनेक मनोवैज्ञानिकों ने अपने अपने व्यक्तित्व सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया। फ्रायड के कुछ संप्रत्यय ऐसे हैं जिनकी आनुभाविक जांच नहीं की जा सकती अर्थात् जिनके अस्तित्व को न

साबित किया जा सकता है, नही खंडित किया जा सकता है। यह सिद्धान्त फ्रायड के व्यक्तिगत अनुभवों या उसके उपचार गृह में आये मानसिक रोगियों पर किये गये प्रेक्षण पर आधारित है। इसीलिये यह भी कहा जाता है कि सीमित अनुभूतियों के आधार पर सामान्य व्यक्ति के व्यक्तित्व के सिद्धान्त का प्रतिपादन करना युक्तिसंगत नहीं है। इस सिद्धान्त में लैंगिक ऊर्जा पर अत्यधिक बल दिया गया है जो आधुनिक मनोवैज्ञानिकों को मान्य नहीं है। फ्रायड के कुछ संप्रत्यय जरूरत से ज्यादा काल्पनिक है। लुंडिन के अनुसार यह कहना कि एक अपरिपक्व बालक अपने अचेतन में अपने माता या पिता से यौन संबंध चाहता है, बिल्कुल ही बेतुकी बात लगती है। इन आलोचनाओं के बाद भी यह सिद्धान्त आधुनिक व्यक्तित्व मनोवैज्ञानिकों के लिये प्रेरणा का स्रोत रहा है।

4.4.6 अभ्यास प्रश्न

1. फ्रायड के अनुसार व्यक्तित्व का कौनसा भाग सुखवादी है ?
2. फ्रायड ने व्यक्तित्व विकास की कितनी अवस्थाएं सुझाई ?
3. किस रक्षा युक्ति का शाब्दिक अर्थ पीछे की और जाना होता है ?

4.5 इरिक इरिक्सन: व्यक्तित्व का मनोसामाजिक सिद्धान्त

इरिक इरिक्सन ने फ्रायड द्वारा प्रस्ताविक जीवन की विकासात्मक अवस्थाओं को स्वीकार करते हुए इसे पूरे जीवनकाल तक विस्तृत किया। एक तरफ जहां फ्रायड ने लैंगिक कारकों, जैविक कारकों पर अत्यधिक बल दिया, वहीं इरिक्सन ने सामाजिक एवं ऐतिहासिक कारकों का भी व्यक्तित्व पर प्रभाव का अध्ययन किया। इसीलिये इस सिद्धान्त को व्यक्तित्व का मनोसामाजिक सिद्धान्त भी कहा जाता है।

इरिक्सन के अनुसार मानव के व्यक्तित्व का विकास कई पूर्वनिश्चित अवस्थाओं से गुजर कर हो ता है, ये अवस्थाएं सार्वभौमिक होती है। जिस प्रक्रिया द्वारा ये अवस्थाएं विकसित होती है, वह एक विशेष नियम द्वारा संचालित होती है, जिसे पञ्चजात नियम या एपिजेनेटिक नियम कहा जाता है। इरिक्सन ने मनोसामाजिक विकास की 8 अवस्थाएं बताई। पञ्चजात नियम के अनुसार प्रत्येक अवस्था के होने का एक आदर्श समय होता है। ये अवस्थाएं एक निश्चित क्रम में आती है। इन अवस्थाओं में व्यक्तित्व का विकास जैविक एवं सामाजिक कारकों की अन्तक्रिया से होता है।

4.5.1 मनोसामाजिक विकास की अवस्थाएं

इरिक्सन द्वारा प्रतिपादित मनोसामाजिक विकास की आठ अवस्थाएं एवं उनमें होने वाले विकासों का वर्णन निम्न है -

प्रथम अवस्था - शैशवावस्था: विश्वास बनाम अविश्वास - यह अवस्था जन्म से लेकर 1 वर्ष तक होती है। यह फ्रायड के मनोलैंगिक विकास की मुखावस्था के समान है। इस अवस्था में बच्चे में विश्वास की भावना का विकास होता है। यदि बच्चों को उत्तम मातृक देखभाल मिले तो उसमें विश्वास या आस्था की भावना विकसित होती है जिससे एक स्वस्थ व्यक्तित्व का निर्माण का प्रारम्भ होता है। यदि माताएं किसी कारण से अपने बच्चों की उचित सार संभाल नहीं कर पाए तो बच्चों में अविश्वास उत्पन्न होता है, उनमें आशंकाएं, संदेह जैसी भावनाएं विकसित हो जाती है। इससे अगली अवस्थाओं में एक अस्वस्थ व्यक्तित्व का जन्म होता है। हालांकि इरिक्सन के अनुसार बच्चों में विश्वास एवं अविश्वास की भावना

दोनों का होना आवश्यक है। क्योंकि वातावरण के साथ प्रभावकारी समायोजन के लिये विश्वास न करना सीखना भी उतना ही जरूरी है जितना कि विश्वास करना सीखना। यदि बच्चा विश्वास बनाम अविश्वास के इस संघर्ष का समाधान कर लेता है तो इसे एक ऐसी मनोसामाजिक शक्ति विकसित होती है, जिसे आशा की संज्ञा दी जाती है। आशा से तात्पर्य एक ऐसी मनोसामाजिक शक्ति है जिसके द्वारा शिशु अपने सांस्कृतिक वातावरण तथा अपने अस्तित्व को अर्थपूर्ण ढंग से समझने लगता है।

द्वितीय अवस्था: स्वतंत्रता बनाम लज्जाशीलता - यह अवस्था 2 वर्ष से लगभग 3 वर्ष की आयु तक होती है। यह फ्रायड के द्वारा दी गई गुदा अवस्था के समान है। इस अवस्था में स्वतंत्रता एवं आत्म नियंत्रण जैसे गुणों का विकास होता है। इसका अभिप्राय यह नहीं है कि बच्चे को काम करने के लिये अप्रतिबंधित स्वतंत्रता दी जाए इसका अर्थ यह है कि माता पिता अपना नियंत्रण रखते हुए बच्चे को स्वयं कार्यों को करने दे। यदि माता-पिता बच्चे को छोटा समझ कर कार्य नहीं करने देते या ऐसी कोई अपेक्षा रखते हैं जो बच्चे की क्षमता से बाहर है तो बच्चों में लज्जाशीलता की भावना विकसित होती है। जब बच्चा स्वतंत्रता बनाम लज्जाशीलता को एक अनुकूल अनुपात में सीख लेता है तो उसमें 'इच्छा शक्ति' या विल पावर का विकास होता है। इच्छा शक्ति में बच्चा स्वतंत्रता के साथ कार्य करने के अलावा स्वयं पर नियंत्रण करना भी सीख लेता है।

तृतीय अवस्था: खेल अवस्था - पहल शक्ति बनाम दोषिता: यह अवस्था लगभग 4 साल की आयु तक होती है एवं फ्रायड द्वारा दी गई फेलिक अवस्था के समान है। इस अवस्था में बच्चों में भाषा एवं पेशीय कौशलों का विकास हो जाता है। वे घर के बाहर निकलकर खेलकूद एवं अन्य सामाजिक गतिविधियों में भाग लेना पसंद करते हैं। उन्हें दूसरों के कार्य करने से आनन्द मिलता है। इस प्रकार इनमें किसी कार्य को करने हेतु पहल करने की योग्यता का विकास होता है। लेकिन यदि माता-पिता इन बच्चों को यह सब करने से रोकते हैं या उन्हें दण्ड दिया जाता है तो उनमें दोषिता की भावना विकसित हो जाती है। ऐसे बच्चे स्वयं को खुलकर व्यक्त नहीं कर पाते। यह बच्चा पहल बनाम दोषिता के इस संघर्ष का समाधान कर लेता है तो उसमें 'उद्देश्य' का विकास होता है। इसका अभिप्राय किसी लक्ष्य का निर्धारण करने की क्षमता एवं विश्वास के साथ बिना किसी भय के उसे प्राप्त करने की क्षमता विकसित होना है।

चतुर्थ अवस्था - स्कूल अवस्था: परिश्रम बनाम हीनता - यह अवस्था 6 साल की आयु से 11-12 साल की आयु तक होती है। यह फ्रायड की लेटेन्सी अवस्था के समान है। जब बच्चे स्कूल में अपनी संस्कृति के प्रारंभिक कौशलों को सीखते हैं तो उनमें परिश्रम का भाव विकसित होता है। इसके लिये स्कूल में शिक्षकों से, परिवार, पास पड़ोस के सदस्यों से प्रोत्साहन मिलता है। लेकिन यदि किसी कारण से बच्चा अपने कौशलों को अर्जित करने में असफल हो जाता है तो बच्चों में हीनता या असामर्थ्यता की भावना विकसित हो जाती है। लेकिन यदि बच्चा इस परिश्रम बनाम हीनता के संघर्ष का समाधान कर लेता है, तो उसमें 'सामर्थ्यता' विकसित हो जाती है। सामर्थ्यता से तात्पर्य किसी कार्य को करने की शारीरिक एवं मानसिक, बौद्धिक क्षमताओं से होता है।

पंचम अवस्था - किशोरावस्था: अहं पहचान बनाम भूमिका भ्रान्ति - यह अवस्था 12 साल से 19-20 साल की उम्र तक होती है। इस अवस्था में किशोरों में स्वयं की योग्यताओं की सही पहचान होने पर उनमें अहं पहचान या इगो आइडेन्टिटी विकसित हो जाती है। यदि स्वयं की सही पहचान नहीं हो तो उनमें

उनकी भूमिका को लेकर भ्रान्ति विकसित हो जाती है अर्थात् वे स्वयं की योग्यताओं की पहचान ना कर सकने के कारण पहचान संक्रान्ति या आइडेन्टिटी क्राइसिस से परेशान रहते हैं। ऐसे किशोर अपनी जीविका का निर्वहन ठीक तरीके से नहीं कर पाते, अपनी शिक्षा को जारी रखने में स्वयं को असमर्थ पाते हैं। कुछ किशोर इस अवस्था में इस तरह के भ्रान्ति की स्थिति को बने रहने देना चाहते हैं, जिससे उन्हें किसी कार्य के लिये वचनबद्ध नहीं होना पड़े, या कुछ समय के लिये वचस्व वचनबद्धता स्थगित हो जाए। इसे इरिक्सन ने मनोसामाजिक विलंबन कहा है। जब किशोर अहं पहचान बनाम भूमिका भ्रान्ति के इस संघर्ष का समाधान कर लेते हैं तो उनमें 'कत्रव्यनिष्ठता' का विकास होता है। इसका अभिप्राय किशोरों में समाज की विचारधाराओं, मानकों आदि के आधार पर व्यवहार करने की क्षमता से होता है।

छठी अवस्था -तरुण वयस्कावस्था: घनिष्ठता बनाम विलगन - यह अवस्था 20 वर्ष की आयु से 30 वर्ष तक रहती है। इस अवस्था में व्यक्ति पारिवारिक जीवन में प्रवेश करता है। किसी न किसी व्यवसाय, नौकरी द्वारा अपना जीविकोपार्जन प्रारंभ करता है। यह समय है जब व्यक्ति सामाजिक एवं लैंगिक घनिष्ठता बनाता है। व्यक्ति अपने परिवार, मित्र, सहकर्मियों, रिश्तेदारों से सामाजिक रूप से घनिष्ठता प्राप्त करता है। अपनी जीवनसाथी के साथ घनिष्ठ लैंगिक सम्बन्धों को बनाता है। इस घनिष्ठता के परिणामस्वरूप एक स्वस्थ व्यक्तित्व का विकास होता है। लेकिन यदि किन्हीं कारणों से व्यक्ति सामाजिक एवं लैंगिक घनिष्ठता प्राप्त नहीं कर पाता एवं अपने आप में ही खोया रहता है तो उसमें विलगन या आइसोलेशन का भाव विकसित होता है। ऐसे व्यक्ति के सामाजिक संबंध सतही होते हैं, अपने कार्य के प्रति नीरस होते हैं। विलगन अधिक होने पर गैर-सामाजिक व्यवहार या मनोविकारी व्यवहार भी दर्शाते हैं। जब व्यक्ति घनिष्ठता बनाम विलगन के इस संघर्ष का समाधान कर लेता है तो उसमें 'स्नेह' की उत्पत्ति होती है। इसका अभिप्राय संबंधों को कायम रखने में पारस्परिकसमर्पण की क्षमता से है।

सातवी अवस्था - जननात्मकता बनाम जड़ता - यह अवस्था 30 से 45 वर्ष तक चलती है। इस अवस्था में व्यक्ति अगली पीढ़ी के लोगों के लिये सोचना प्रारंभ करता है। इन व्यक्तियों के कल्याण के लिये सोचता है, चिन्ता करता है। लेकिन कुछ व्यक्ति इस अवस्था में अपने आप में ही मस्त हो जाते हैं, उनके लिये स्वयं की आवश्यकताएं, सुख सुविधाएं सर्वोपरि होती हैं। यह जड़ता की स्थिति है। जननात्मकता बनाम जड़ता के इस संघर्ष का समाधान होने पर व्यक्ति में 'देखभाल' की उत्पत्ति होती है। इसका अभिप्राय दूसरों के कल्याण की चिन्ता से है।

आठवीं अवस्था - परिपक्वता: अहं संपूर्णता बनाम निराशा - यह मनोसामाजिक विकास की अंतिम अवस्था है। यह 65 वर्ष से अधिक की आयु से मृत्यु तक रहती है। इस अवस्था में व्यक्ति का ध्यान भविष्य से हटकर अपने बीते दिनों पर, जीवन की सफलताओं, असफलताओं की और अधिक होता है। इनके मूल्यांकन के धनात्मक होने पर उसमें अहं संपूर्णता एवं अपूरित इच्छाओं, आवश्यकताओं के होने पर उसमें निराशा उत्पन्न होती है। इस अवस्था की प्रमुख मनोसामाजिक शक्ति 'परिपक्वता' है। इस अवस्था में व्यक्ति में सही अर्थ में परिपक्वता आती है, उसे बुद्धिमता का व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त होता है।

इस प्रकार इन आठ अवस्थाओं के अध्ययन के पश्चात यह कहा जा सकता है कि इरिक्सन ने प्रत्येक अवस्था में संभाविक कमजोरियों एवं सामग्र्य दोनों का वर्णन किया है। व्यक्ति के जन्म से लेकर मृत्यु तक की मनोसामाजिक घटनाओं के विकास की व्याख्या इस सिद्धान्त की बहुत बड़ी खूबी है। हालांकि कुछ

आलोचक यह कहते हैं कि इरिक्सन ने फ्रायड के सिद्धान्त को सरल बनाने के अलावा कुछ नहीं किया है। इरिक्सन ने अपने व्यक्तित्व सिद्धान्त में इदम एवं अचेतन को हटाकर सारा ध्यान अहं एवं चेतन मन पर ही दिया है। इन आलोचनाओं के बाद भी यह सिद्धान्त शोध के दृष्टिकोण से बहुत उपयोगी है। इस सिद्धान्त में मनोसामाजिक मूलप्रवृत्ति दोनों कारकों पर बल दिया गया है।

4.5.2 अभ्यास प्रश्न

1. इरिक्सन द्वारा सुझाई गई कौनसी अवस्था में कर्तव्यनिष्ठता का विकास होता है ?
2. इरिक्सन की विकास अवस्थाएं किस नियम पर आधारित हैं?

4.6 केरेन हार्नी का व्यक्तित्व सिद्धान्त

हार्नी के व्यक्तित्व सिद्धान्त में फ्रायड के सिद्धान्तों में संशोधन कर उसे उन्नत बनाने की कोशिश की है। हार्नी फ्रायड की इस बात से सहमत थी कि वयस्क व्यक्तित्व के निर्धारण में बाल्यावस्था के आरंभिक वर्षों का अधिक महत्व होता है। परन्तु हार्नी का मत है कि बाल्यावस्था के सामाजिक कारकों न कि जैविक कारकों द्वारा व्यक्तित्व का विकास होता है। व्यक्तित्व का विकास सामाजिक संबंधों द्वारा प्रभावित होता है।

4.6.1 मूल चिन्ता का संप्रत्यय

हार्नी के अनुसार बाल्यावस्था की दो प्रमुख आवश्यकताएं होती हैं:

संतुष्टि आवश्यकता: इसमें भोजन, पानी, लैंगिक क्रियाएं, नींद आदि आवश्यकताएं शामिल होती हैं।

सुरक्षा आवश्यकता: इन आवश्यकताओं में डर से स्वतन्त्रता, स्वयं की सुरक्षा आदि शामिल होती हैं।

इन दोनों आवश्यकताओं में से हार्नी ने सुरक्षा की आवश्यकता को व्यक्तित्व विकास के लिये महत्वपूर्ण बताया। बच्चे को माता-पिता से स्नेह मिलना, बच्चे को समझा जाना आदि से उसमें सुरक्षा की भावना विकसित होती है। इसके अभाव में उसमें विद्वेष उत्पन्न होता है। जब बच्चा डर के कारण इस विद्वेष का दमन कर देता है तो उसमें चिन्ता उत्पन्न होती है जिसे मूल चिन्ता या बेसिक एंग्जाइटी कहा जाता है। मूल चिन्ता से तात्पर्य बच्चों में निसहायता तथा अकेलेपन की भावना से है।

4.6.2 न्यूरोटिक/स्नायुविकृत आवश्यकताएं

जब व्यक्ति जीवन की समस्याओं का समाधान नहीं कर पाता, कई बार असफलताओं का सामना करता है तो उसमें कुछ विशेष आवश्यकताएं उत्पन्न हो जाती हैं, जिन्हें हार्नी ने न्यूरोटिक या स्नायुविकृत आवश्यकताएं कहा। इन आवश्यकताओं के कारण व्यक्ति स्वयं को मूल चिन्ता से बचने का प्रयास करता है। इनमें स्नेह प्राप्त करना, लोगों का अनुमोदन करना, उनकी हाँ में हाँ मिलाना, स्वयं के सम्मान की आवश्यकता, व्यक्तिगत प्रशंसा की इच्छा, लोगों का शोषण करने की प्रवृत्ति रखना, स्वतन्त्रता की इच्छा रखना, अनाक्रमण आदि शामिल हैं। इन सभी न्यूरोटिक आवश्यकताओं के परिणामस्वरूप व्यक्ति में एक विशेष प्रकार के व्यवहार करने की प्रवृत्ति बन जाती है जिसे न्यूरोटिक प्रवृत्ति कहा जाता है। यह निम्न प्रवृत्ति तीन प्रकार से व्यक्त होती है।

व्यक्तियों की और जाने की प्रवृत्ति: इस प्रकार की प्रवृत्ति में व्यक्ति अन्य व्यक्तियों के करीब जाकर, उनकी और जाकर अपनी आवश्यकताओं को व्यक्त करता है। इसमें दूसरों का स्नेह, स्वीकृति, अनुमोदन, एक मजबूत जीवन साथी प्राप्त करने की प्रवृत्ति शामिल होती है।

व्यक्तियों के विरुद्ध जाने की प्रवृत्ति: इस प्रकार की प्रवृत्ति में व्यक्ति अन्य व्यक्तियों के विरुद्ध जाता है। इसमें दूसरों के प्रति आक्रामकता दिखाना, उन्हें नियन्त्रण में रखना, उनके प्रति विद्वेष दिखाना, उनका शोषण करना, सत्ता प्राप्त करना आदि शामिल है।

व्यक्तियों से दूर हटने की प्रवृत्ति: इस प्रकार की प्रवृत्ति में व्यक्ति अन्य व्यक्तियों, परिस्थिति से, समस्याओं से स्वयं को बिल्कुल अलग कर लेता है। वह अलग थलग रहने का प्रयास करता है। वह कार्यों से बच निकलने का प्रयास करता है।

4.6.3 व्यक्तित्व के प्रकार

इन तीनों प्रकार की प्रवृत्तियों से तीन अलग अलग प्रकार के व्यक्तित्व का निर्माण होता है जो निम्न है।

फरियादी प्रकार: यह व्यक्तियों की और जाने के परिणामस्वरूप उत्पन्न होती है। ऐसे व्यक्ति दूसरों पर अत्यधिक निर्भर करते हैं। इनका व्यवहार मैत्रीपूर्ण होता है।

आक्रामक प्रकार: यह व्यक्तियों अन्य व्यक्तियों के विरुद्ध जाने से बनता है। ऐसे व्यक्ति आक्रामक, शक्की तथा अत्यधिक गुस्से वाले होते हैं। ऐसे व्यक्ति दूसरों पर आधिपत्य दिखाने, उन्हें नियन्त्रित करने का प्रयास करते हैं।

विलगित प्रकार: यह व्यक्तियों से दूर हटने के परिणामस्वरूप बनता है। ऐसे व्यक्ति असामाजिक होते हैं, एकान्त में रहना पसन्द करते हैं। अन्य लोगों से दूरी बनाए रखते हैं।

हार्नी ने अपनी सिद्धान्त में मूल चिन्ता को कम करने की प्रवृत्तियों का उल्लेख करते हुए कहा कि मूल चिन्ता को कम करने के लिये व्यक्ति या तो स्वयं के बारे में एक आदर्शवादी छवि बना लेता है जो कि वास्तविक छवि से बहुत अलग होती है। इसमें व्यक्ति स्वयं के बारे में बड़ा चढ़ा कर सोचता है। इसके परिणामस्वरूप व्यक्ति में घमण्ड का विकास होता है।

हालांकि कुछ मनोवैज्ञानिकों ने हार्नी के सिद्धान्त का शोधपरक मूल्य कम बताया है। इनके संप्रत्ययों पर अधिक शोध नहीं किये गये हैं तथा इनकी लोकप्रियता उतनी नहीं है जितनी कि फ्रायड, एडलर एवं युंग के सिद्धान्तों की है। हार्नी के सिद्धान्त में जैविक मूलप्रवृत्तियों की पूर्णरूपेण उपेक्षा की गई है। आलोचक यह भी कहते हैं कि इस सिद्धान्त में सामाजिक सिद्धान्तों पर जरूरत से ज्यादा बल दिया गया है। व्यक्तित्व विकास में लैंगिकता, आक्रामकता तथा अचेतन की उपेक्षा हार्नी की एक बड़ी भूल कुछ आलोचकों द्वारा मानी गई है। इन आलोचनाओं के बाद भी हार्नी के सिद्धान्त का काफी महत्व है।

इस प्रकार हार्नी के सिद्धान्त से यह स्पष्ट है कि उन्होंने एडलर एवं फ्रोम के समान ही सामाजिक सांस्कृतिक कारकों पर अत्यधिक बल डाला है। हार्नी द्वारा सुझाए गए संप्रत्ययों से व्यक्ति को बेहतर तरीके से समझने में सफलता मिली है।

4.6.4 अभ्यास प्रश्न

1. व्यक्तियों की और जाने वाली प्रवृत्ति होने पर किस प्रकार का व्यक्तित्व होगा।

2. मूल चिंता संप्रत्यय किसने प्रतिपादित किया?

4.7 सुल्लीवान का व्यक्तित्व सिद्धान्त

सुल्लीवान के अनुसार व्यक्ति जन्म से ही वातावरण की विभिन्न वस्तुओं एवं व्यक्तियों के साथ अन्तक्रिया करता है जिसके परिणामस्वरूप उसका व्यक्तित्व विकसित होता है। इसीलिये इस सिद्धान्त को व्यक्तित्व का अन्तवैयक्तिक सिद्धान्त भी कहा जाता है। सुल्लीवान ने सिगमण्ड फ्रायड के बहुत सारे संप्रत्ययों को जैसे लिबिडो, सुपर इगो, इगो, इदं, यौन सिद्धान्त को अस्वीकार कर दिया। लेकिन सुल्लीवान ने फ्रायड के समान ही व्यक्तित्व विकास को विभिन्न अवस्थाओं में होने को स्वीकार किया एवं स्वयं भी विकासात्मक अवस्थाएं सुझाईं।

सुल्लीवान के अनुसार मानव एक ऐसा ऊर्जा तंत्र है जो आवश्यकताओं द्वारा उत्पन्न तनावों को हमेशा कम करने की कोशिश करता है। उन्होंने तनाव को दो भागों में बांटा है - आवश्यकताओं द्वारा उत्पन्न तनाव एवं चिन्ता द्वारा उत्पन्न तनाव।

4.7.1 गत्यात्मकता

सुल्लीवान ने गत्यात्मकता को शीलगुण के तुल्य माना है, जिसका अभिप्राय एक ऐसे संगत पेटर्न से होता है जो व्यक्ति की पूरे जीवन में दिखाई देता है। गत्यात्मकता के दो प्रकार बताए। पहला शरीर के विशेष क्षेत्र से सम्बन्धित गत्यात्मकता जैसे भूख, प्यास आदि। दूसरे तरह की गत्यात्मकता में तीन प्रकार शामिल किये। इनमें वियोजक गत्यात्मकता (व्यवहार का ध्वंसात्मक पेटर्न), अलगावी गत्यात्मकता (कामुकता एवं यौन अंगों से उत्पन्न तनाव) एवं संयोजक गत्यात्मकता (घनिष्ठतापूर्ण व्यवहार) शामिल है।

4.7.2 मानवीकरण

मानवीकरण से अभिप्राय अपने या दुसरे के बारे में मन में बनी एक प्रतिमा या छवि से होता है। यह प्रतिमा आवश्यकता की पूर्ति से या चिंता की अनुभूतियों से बनती है। जब व्यक्ति में संतोषजनक अन्तरवैयक्तिक सम्बन्ध विकसित होते हैं तो धनात्मक छवि बनती है, अन्यथा ऋणात्मक छवि बनती है। सुल्लीवान ने बाल्यावस्था में पांच प्रकार के मानवीकरण प्रतिमाओं के बारे में बताया। उत्तम मां (गुड मदर), बुरी मां (बेड मदर), बुरा-स्वयं (बेड मी), उत्तम स्वयं (गुड मी), स्वयं नहीं (नाॅट मी)। बच्चे की मां के साथ अन्तक्रिया में संतुष्टि होने पर उत्तम मां, असंतुष्टि होने पर बुरी मां का संप्रत्यय विकसित होता है। स्वयं की अन्तक्रियाओं से संतुष्टि होने पर उत्तम स्वयं, असंतुष्टि होने पर बुरा-स्वयं का विकास होता है। यदि बच्चों में काफी तीव्र चिन्ता एवं दर्दपूर्ण अनुभूति होती है तो उनमें 'स्वयं नहीं' का विकास होता है।

4.7.3 विकासात्मक अवस्थाएं

सुल्लीवान ने व्यक्तित्व विकास की सात अवस्थाओं का वर्णन किया है।

शैशवावस्था: जन्म से 24 महीने तक होती है। जन्म के समय शिशु एक पशु के समान होता है, मां से जैसे उसे स्नेह मिलता है, उसका मानवीकरण होता जाता है। यदि पर उत्तम मां एवं बुरी मां के संप्रत्यय विकसित होते हैं।

बाल्यावस्था: यह अवस्था सुस्पष्ट भाषा बोलने से लेकर संगी साथी की आवश्यकता उत्पन्न होने तक होती है। यह अवस्था 2 से 5 वर्ष तक होती है। इसमें बच्चे नाटकीकरण सीखते हैं, अर्थात् परिवार के अन्य सदस्यों की नकल उतारना सीखते हैं।

तरुणावस्था: यह अवस्था 5-6 साल से 8-9 साल तक होती है। इसमें प्रतिस्पर्द्धा, समझौता तथा सहयोग की भावना विकसित होती है। इसी अवस्था में बच्चों में रूढिवादिता, अवज्ञा भी विकसित होती है।

प्राक्किशोरावस्था: यह अवस्था यौवनावस्था तक चलती है। बच्चा समान लिंग के व्यक्ति से घनिष्ठ दोस्ती कर लेता है। सुल्लिवान ने इस घनिष्ठ सम्बन्ध को 'चम' कहा। बिना सखा के इस अवस्था में अलगाव एवं एकान्तवासी होने का भाव विकसित होता है।

आरंभिक किशोरावस्था: यह अवस्था यौवनारंभ से विपरीत लिंग के प्रति प्यार करने की भावना विकसित होने तक होती है। जननांगी अभिरूचि विकसित होती है।

उत्तर किशोरावस्था: यह वयस्कावस्था में स्थायी प्रेम सम्बन्ध होने तक चलती है। इस अवस्था के अन्त में आत्म सम्मान विकसित होता है।

परिपक्वता: सुल्लिवान ने कहा कि सच्चे अर्थ में परिपक्वता विकसित होने की कोई स्पष्ट अवस्था या उम्र नहीं होती। परिपक्व व्यक्ति वह है जो अपनी सीमाओं की पहचान कर सके, अपनी रूचियों को समझ सके।

सुल्लिवान के सिद्धान्त को कुछ मनोवैज्ञानिकों ने काल्पनिक बताया, नैदानिक प्रेक्षणों पर आधारित बताया। फिर भी सुल्लिवान के इस सिद्धान्त का अपना महत्व है।

4.7.4 अभ्यास प्रश्न

1. सुल्लिवान के व्यक्तित्व विकास की पहली अवस्था कौनसी है ?
2. सुल्लिवान के सिद्धान्त को क्या नाम दिया गया है ?
3. सुल्लिवान के अनुसार किसके विकसित होने की स्पष्ट उम्र या अवस्था नहीं होती ?

4.8 सारांश

इस इकाई में पढ़े गए मनोगत्यात्मक या मनोविश्लेषणात्मक सिद्धान्तों में फ्रायड ने अचेतन मन की दमित इच्छाओं, स्वप्न विश्लेषण आदि के आधार पर व्यक्तित्व का वर्णन किया है। वहीं फ्रायड के कुछ संप्रत्ययों को इरिक्सन, हार्नी, सुल्लिवान ने अपने सिद्धान्त में उपयोग किया, वहीं कुछ संप्रत्ययों को नकार दिया। उन्होंने अपने सिद्धान्तों में मनोसामाजिक कारकों, सांस्कृतिक प्रभावों का वर्णन किया। फिर भी फ्रायड का सिद्धान्त ने व्यक्तित्व के अन्य सिद्धान्तों के लिये धरातल के रूप में कार्य किया।

4.9 शब्दावली

- मनोविश्लेषणवाद - मनोविज्ञान की वह विचारधारा जो अचेतन मन के अध्ययन पर ध्यान केन्द्रित करती है।
- इदम - व्यक्तित्व का वह भाग जो किसी भी तरह सुख प्राप्त करना चाहता है।

- इगो - व्यक्तित्व का वह भाग जो वास्तविक परिस्थितियों को ध्यान में रखकर निर्णय करता है।
- सुपर इगो - व्यक्तित्व का वह भाग जो पूर्णतः नैतिक होता है।
- रक्षा युक्तियां - चिन्ता से मुक्त होने के लिये व्यक्ति द्वारा उपयोग में लिये गए विभिन्न प्रकार के बहाने

4.10 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

अभ्यास प्रश्न 1.4.6

1. इदम्
2. पांच
3. प्रतिगमन

अभ्यास प्रश्न 1.5.2

1. पांचवी अवस्था
2. पञ्चजात नियम

अभ्यास प्रश्न 1.6.4

1. फरियादी व्यक्तित्व
2. केरेन हार्नी ने

अभ्यास प्रश्न 1.7.4

1. शैशावावस्था
2. अत्र्तवैयक्तिक सिद्धान्त
3. परिपक्वता

4.11 संदर्भ ग्रन्थ

- हॉल, केल्विन एस एवं लिंडजे गार्डनर (1970) 'थियोरीज ऑफ पर्सनालिटी' सेकण्ड एडिशन, जॉन विले एण्ड सन्स, न्यूयार्क
- सिंह, अरूण कुमार (2002) उच्चतर सामान्य मनोविज्ञान, मोतीलाल बनारसीदास पब्लिकेशंस
- बेरॉन, रॉबर्ट (2001) साइकोलोजी, प्रेन्टिस हॉल पब्लिकेशंस

4.12 निबन्धात्मक प्रश्न

1. फ्रायड के व्यक्तित्व सिद्धान्त को समझाईये।
2. इदम, अहम एवं परा अहम में अन्तर समझाईये।
3. विभिन्न प्रकार की रक्षा युक्तियों को उदाहरण सहित समझाईये।
4. इरिक्सन की मनोसामाजिक अवस्थाओं का वर्णन करें।
5. सुल्लीवान के व्यक्तित्व सिद्धान्त को समझाईये।
6. हार्नी के व्यक्तित्व सिद्धान्त का वर्णन करें।

इकाई 5

व्यक्तित्व के सामाजिक मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त

Social Psychological theories of personality

अल्फ्रेड एडलर, एरिक फ्रोम, केरेन हार्नी, बेन्दुरा

Alfred Adler, Eric Fromm, Karen Horney Bandura

इकाई की रूपरेखा

- 5.1 प्रस्तावना
- 5.2 उद्देश्य
- 5.3 एडलर का व्यक्तित्व सिद्धान्त
 - 5.3.1 व्यक्तित्व के कारक
 - 5.3.1.1 कल्पित लक्ष्य
 - 5.3.1.2 आंगिक हीनता
 - 5.3.1.3 जन्म क्रम
 - 5.3.1.4 सामाजिक अभिरूचि
 - 5.3.1.5 जीवन शैली
 - 5.3.2 अभ्यास प्रश्न
- 5.4 इरिक फ्रोम का व्यक्तित्व सिद्धान्त
 - 5.4.1 मनोवैज्ञानिक आवश्यकताएं
 - 5.4.2 व्यक्तित्व के प्रकार
 - 5.4.3 अभ्यास प्रश्न
- 5.5 केरेन हार्नी का व्यक्तित्व सिद्धान्त
 - 5.5.1 मूल चिन्ता का संप्रत्यय
 - 5.5.2 मूल चिन्ता से बचने के उपाय
 - 5.5.3 न्यूरोटिक/स्नायुविकृत आवश्यकताएं
 - 5.5.4 व्यक्तित्व के प्रकार
 - 5.5.5 रक्षा युक्तियां
 - 5.5.6 अभ्यास प्रश्न
- 5.6 बेन्दुरा का व्यक्तित्व सिद्धान्त
 - 5.6.1 मॉडलिंग: प्रेक्षण द्वारा सीखना

5.6.2 सामाजिक अधिगम को प्रभावित करने वाले कारक

5.6.3 प्रेक्षणात्मक अधिगम की प्रक्रिया

5.6.4 अभ्यास प्रश्न

5.7 सारांश

5.8 शब्दावली

5.9 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

5.10 संदर्भ ग्रन्थ सूची

5.11 निबंधात्मक प्रश्न

5.1 प्रस्तावना

विभिन्न मनोवैज्ञानिकों ने व्यक्तित्व को परिभाषित करने, समझाने में विभिन्न विचारधाराओं का उपयोग किया है। फ्रायड की विचारधारा जहां अचेतन को मुख्य निर्धारक मानती थी, वहीं कुछ मनोवैज्ञानिक ऐसे भी थे जो प्रारम्भ में फ्रायड के साथ थे, किन्तु धीरे धीरे कुछ बिन्दुओं पर उनकी विचारधारा में भिन्नता आई। इसके परिणामस्वरूप उन्होंने फ्रायड के विचारधारा से अलग अपने एक व्यक्तित्व सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। इनमें अल्फ्रेड एडलर, कार्ल युंग, एरिक फ्रोम आदि प्रमुख थे। फ्रायड से कुछ समानताएं एवं कुछ अलग विचार रखने वाले इन मनोवैज्ञानिकों को मनोवैज्ञान में नवफ्रायडवाद या नवविश्लेषणवाद के नाम से जाना जाता है।

इस इकाई में इनमें से एडलर, फ्रोम तथा हार्नी के व्यक्तित्व सिद्धान्त का वर्णन किया जाएगा। इसी इकाई में व्यक्तित्व के एक अन्य सिद्धान्त बेन्दुरा का सामाजिक संज्ञानात्मक सिद्धान्त का भी वर्णन किया जाएगा। यह सिद्धान्त नवफ्रायडवाद से अलग है और मुख्यतः व्यक्तित्व की व्यवहारवादी विचारधारा पर आधारित है जिसमें अधिगम के सिद्धान्तों को काफी महत्व दिया गया है।

5.2 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप

- व्यक्तित्व की सामाजिक विचारधारा को समझ सकेंगे
- फ्रायड से सामाजिक मनोवैज्ञानिक विचारधारा की भिन्नता को समझ सकेंगे
- अल्फ्रेड एडलर के व्यक्तित्व सिद्धान्त को विस्तारपूर्वक समझ सकेंगे
- एरिक फ्रोम के व्यक्तित्व सिद्धान्त को विस्तारपूर्वक समझ सकेंगे
- केरेन हार्नी के व्यक्तित्व सिद्धान्त को विस्तारपूर्वक समझ सकेंगे
- बेन्दुरा के सामाजिक-संज्ञानात्मक सिद्धान्त को विस्तारपूर्वक समझ सकेंगे

- व्यक्तित्व की मनोवैज्ञानिक सामाजिक विचारधाराओं में यह कहा गया है कि व्यक्तित्व पर सामाजिक कारकों का अत्यधिक गहरा प्रभाव पड़ता है। कुछ व्यक्तित्व सिद्धान्त (एडलर, फ्रोम, हार्नी) जो इस श्रेणी में आते हैं, का वर्णन निम्न है।

5.3 एडलर का व्यक्तित्व सिद्धान्त

एडलर द्वारा प्रतिपादित व्यक्तित्व सिद्धान्त को वैयक्तिक मनोविज्ञान का सिद्धान्त कहा जाता है। एडलर ने फ्रायड के विचारों से भिन्नता रखते हुए व्यक्ति को मुख्य रूप से सामाजिक प्राणी माना, न कि जैविक। एडलर के अनुसार व्यक्तित्व का निर्धारण जैविक आवश्यकताओं द्वारा नहीं होता अपितु व्यक्ति के सामाजिक वातावरण में हो रही अन्तःक्रियाओं द्वारा होता है।

एडलर ने चेतन एवं अचेतन को व्यक्तित्व के अलग तत्त्व न मानकर इन्हें एक ही तंत्र के दो भाग माना है। एडलर ने कहा कि मन तथा शरीर, चेतन एवं अचेतन में स्पष्ट अन्तर करना संभव नहीं है। चेतन का तात्पर्य वह चिन्तन या विचार है जिसे व्यक्ति सफलता या श्रेष्ठता के प्रयास में सहायक मानता है, समझता है। अचेतन अन्तिम लक्ष्य का अस्पष्ट हिस्सा है जिसकी समझ व्यक्ति को नहीं होती।

5.3.1 व्यक्तित्व के कारक

एडलर का मत था कि व्यक्ति का व्यवहार व्यक्तिगत अनुभूतियों द्वारा नहीं बल्कि कल्पना या भविष्य की अपेक्षाओं द्वारा प्रेरित होता है। इस तरह से व्यक्तित्व निर्धारण में आत्मनिष्ठ कारकों को अधिक महत्वपूर्ण बताया। एडलर ने व्यक्तित्व की व्याख्या निम्न आत्मनिष्ठ कारकों के आधार पर की है जो निम्न है -

5.3.1.1 कल्पित लक्ष्य

एडलर के अनुसार व्यक्ति के जीवन का सबसे महत्वपूर्ण लक्ष्य एक कल्पित लक्ष्य होता है जिसकी सत्यता की जांच नहीं हो सकती। उनका व्यवहार इसी लक्ष्य द्वारा निर्देशित होता है। यह कल्पित लक्ष्य प्रत्येक व्यक्ति के लिये अनूठे होते हैं। जैसे यदि व्यक्ति यह सोचता है कि ईमानदारी से जीवन व्यतीत करने पर भगवान उसे पुरस्कृत करेगा, एक कल्पित लक्ष्य है।

5.3.1.2 आंगिक हीनता

जिन व्यक्तियों में किसी प्रकार की आंगिक हीनता जैसे दृष्टि, सुनने या बोलने आदि का दोष हो तो वे अन्य क्षेत्रों में श्रेष्ठता स्थापित करने इसी आंगिक हीनता को पूर्ण करने का प्रयास करते हैं। उदाहरण के लिये सूरदास जो नेत्रहीन थे फिर भी उन्होंने स्वयं की श्रेष्ठ कवि के रूप में पहचान बनाई। एडलर के अनुसार यदि कोई बच्चा अपनी हीनता के भाव की क्षतिपूर्ति करने में असफल रहता है तो हीनता मनोग्रन्थि या इन्फिरियरिटी कॉम्प्लेक्स उत्पन्न हो जाता है। बाल्यावस्था में हीनता का भाव आंगिक हीनता के अलावा अधिक लाड़ प्यार अथवा तिरस्कार से भी उत्पन्न होता है।

5.3.1.3 जन्म क्रम

एडलर ने चार प्रकार के जन्म क्रम का व्यक्तित्व विकास पर प्रभाव का अध्ययन किया है। प्रथम जन्म क्रम, द्वितीय जन्म क्रम, तृतीय जन्म क्रम एवं अकेला जन्म। प्रथम जन्म क्रम का अभिप्राय किसी माता-पिता की पहली सन्तान से है, द्वितीय एवं तृतीय जन्म क्रम का मतलब क्रमशः दूसरे एवं तीसरे नंबर की संतान से है। यदि किसी माता-पिता के केवल एक संतान हो तो यह अकेला जन्म क्रम कहलाएगा। प्रथम

जन्म क्रम वाले बच्चे अपने माता पिता का सम्पूर्ण ध्यान एवं स्नेह प्राप्त करते हैं। प्रारम्भ में इसे बांटने वाला कोई नहीं होता। परन्तु दूसरे बच्चे के जन्म होने पर माता-पिता का ध्यान उस बच्चे पर चला जाता है जिससे प्रथम बच्चे का दूसरे भाई या बहन के प्रति घृणा का भाव उत्पन्न हो जाता है। एडलर ने अपने प्रेक्षण में यह भी पाया कि अधिक अपराधी, पथभ्रष्ट प्रथम जन्म क्रम वाले बच्चे ही होते हैं।

द्वितीय जन्म क्रम वाले बच्चे प्रथम की तुलना में बेहतर जीवन व्यतीत करते हैं। इनमें उपलब्धि प्राप्त करने की प्रवृत्ति होती है। सामाजिक रूप से अभिरूचि रखते हैं। जबकि अंतिम जन्म क्रम वाले बच्चों में हीनता की भावना, अपने भाई बहनों से आगे बढ़ने की प्रवृत्ति अधिक होती है। अत्यधिक लाड़ प्यार के कारण आत्म निर्भरता की कमी होती है। माता-पिता की अकेली संतान स्वयं को दूसरों से श्रेष्ठ मानती है। कोई भाई बहन नहीं होने के कारण इनके साथ प्रतियोगिता करने वाला कोई नहीं होता। इसीलिये ये अपने माता-पिता के साथ ही प्रतियोगिता प्रारम्भ कर देते हैं। सामाजिक अभिरूचि जैसे लोगों से मिलने जुलने, बातचीत करने एवं सहयोग की भावना भी कम होती है।

5.3.1.4 सामाजिक अभिरूचि

जिन व्यक्तियों की सामाजिक अभिरूचि जितनी विस्तृत, परिपक्व एवं अधिक होती है, वे मानसिक रूप से अधिक स्वस्थ होते हैं। इसीलिए एडलर ने सामाजिक अभिरूचि को मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य का बेरोमीटर कहा है।

5.3.1.5 जीवन शैली

जीवन शैली व्यक्ति की विशेषताओं, गुणों, आदतों तथा व्यवहार करने की पद्धति है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने जीवन लक्ष्यों को प्राप्त करता है। एडलर ने जीवन शैली को फ्रायड द्वारा प्रतिपादित संप्रत्यय अहं या इगो के तुल्य माना है। एडलर ने अपने सिद्धान्त में चार प्रकार की जीवन शैली का वर्णन किया है।

रूलिंग टाईप

दूसरों पर अधिकार दिखाने वाले व्यक्ति होते हैं। इनका व्यवहार आक्रामक होता है। सामाजिक अभिरूचि की कमी दिखाई देती है। ऐसे व्यक्ति अपने जीवन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिये असामाजिक, अनियन्त्रित तरीके से व्यवहार भी करते हैं।

गेटिंग टाईप

ऐसे व्यक्तियों में भी सामाजिक अभिरूचि की कमी होती है। दूसरों पर अत्यधिक निर्भर रहते हैं। ऐसे व्यक्ति केवल स्वयं पर केन्द्रित रहते हैं। इनमें स्वयं के लिये अधिक से अधिक प्राप्त करने की इच्छा होती है।

अवोइडिंग टाईप

ऐसे व्यक्ति परिस्थितियों का सामना नहीं कर सकते एवं जीवन की समस्याओं का समाधान करने की बजाय वहां से भाग खड़े होते हैं। समस्याओं की संभावित असफलताओं को बढ़ा चढ़ा कर समझते हैं। इसी कारण समस्या समाधान के लिये प्रयास करने की बजाय पीछे हट जाते हैं। इनमें भी सामाजिक अभिरूचि की कमी होती है।

सोशियली युजफुल

ऐसे व्यक्ति सामाजिक रूप से सक्रिय रहते हैं। ऐसे व्यक्ति स्वयं के साथ साथ दूसरों की समस्याओं का समाधान करने में भी उनकी मदद करते हैं। ये मदद करते भी हैं और इन्हें मदद प्राप्त भी होती है। इनकी सामाजिक अभिरूचि विस्तृत, परिपक्व होती है।

एडलर द्वारा प्रतिपादित इन संप्रत्ययों के अध्ययन के पश्चात यह कहा जा सकता है उन्होंने अपने सिद्धान्त में चेतन एवं तार्किक प्रक्रियाओं पर अधिक बल दिया न कि अचेतन पर। यहां पर यह फ्रायड के मनोविश्लेषण सिद्धान्त से भिन्नता रखते थे। एडलर द्वारा जन्म क्रम, जीवन शैली आदि कई संप्रत्ययों के आधार पर व्यक्तित्व को समझने में मदद मिली। इसी कारण एडलर का व्यक्तित्व सिद्धान्त काफी उपयोगी सिद्ध हुआ।

5.3.2 अभ्यास प्रश्न

1. एडलर के अनुसार मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य का बेरोमीटर है।
2. एडलर का कौनसा संप्रत्यय फ्रायड के अहं या इगो के संप्रत्यय के तुल्य माना गया है ?
3. जीवन शैली के आधार पर चार प्रकार के व्यक्तियों के नाम लिखें।

5.4 इरिक फ्रोम का व्यक्तित्व सिद्धान्त

इरिक फ्रोम भी एडलर के समान व्यक्तित्व निर्धारण में जैविक कारकों को अधिक महत्व नहीं देते थे। उन्होंने भी व्यक्तित्व निर्धारण में सामाजिक-सांस्कृतिक कारकों की भूमिका को स्वीकार किया। फ्रोम के अनुसार व्यक्तित्व आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक आदि कारकों द्वारा भी प्रभावित होता है। उन्होंने भी व्यक्तित्व निर्धारण में सिर्फ जैविक कारकों की भूमिका को नकार दिया।

फ्रोम ने मनुष्य को एक सामाजिक पशु का दर्जा दिया एवं बताया कि आधुनिक युग में मनुष्य के विकास के साथ स्वतन्त्रता की भावना अधिक होती गई। पहले जब स्वतन्त्रता की भावना कम थी तो लोगों में आपस में जुड़ाव अधिक था, परन्तु अब अकेलापन, दूसरों से असम्बद्ध होने की प्रवृत्ति बढ़ गई। एक तरफ व्यक्ति स्वतन्त्र होना चाहता, वहीं दूसरी ओर इसके परिणामस्वरूप अकेलापन, विमुखता महसूस होती है। जैसे एक बच्चा यदि अपने माता-पिता के नियन्त्रण से स्वतन्त्र होना चाहता है, वहीं दूसरी ओर माता-पिता के बिना स्वयं को अकेला, लाचार भी महसूस करता है। इस तरह की दुविधा में फ्रोम ने अस्तित्ववादी दुविधा कहा है।

5.4.1 मनोवैज्ञानिक आवश्यकताएं

फ्रोम के अनुसार व्यक्ति में दैहिक आवश्यकताएं जैसे भोजन, पानी यौन आदि के अतिरिक्त कुछ मनोवैज्ञानिक आवश्यकताएं भी होती हैं। ये छह मनोवैज्ञानिक आवश्यकताएं निम्न हैं:-

सम्बद्धता की आवश्यकता: इसका सम्बन्ध दूसरों के साथ उत्तम सम्बन्ध विकसित करने की कोशिश करता है। जब इस आवश्यकता की पूर्ति नहीं हो पाती है तो व्यक्ति में आत्म मोह जिसे नारसिसिज्म भी कहते हैं, उत्पन्न हो जाता है। इसमें व्यक्ति स्वयं को अत्यधिक स्नेह करता है।

श्रेष्ठता की आवश्यकता: इसमें व्यक्ति सृजनात्मक एवं उत्पादक बनने की कोशिश करता है।

गहरापन की आवश्यकता: इसमें अन्य व्यक्तियों के साथ गहरे एवं मजबूत सम्बन्ध स्थापित करना, स्वयं को सक्रिय एवं अर्थपूर्ण रखना आदि शामिल है।

उन्मुखता प्रारूप की आवश्यकता: व्यक्ति दो प्रकार की उन्मुखता रखता है, यौक्तिक (वस्तुनिष्ठ) एवं अयौक्तिक (आत्मनिष्ठ)।

पहचान की आवश्यकता: इसमें व्यक्ति अपनी अलग पहचान बनाए रखने का प्रयास करता है।

उत्तेजन आवश्यकता: इसका सम्बन्ध बाह्य वातावरण को ऐसा बनाए रखना है जिससे कि यह व्यक्ति को सक्रिय बनाए रख सके। बाह्य उद्दीपक व्यक्ति को कार्य करने के लिये प्रेरित करते हैं।

5.4.2 व्यक्तित्व के प्रकार

फ्रोम के अनुसार व्यक्तित्व विभिन्न प्रकार के शीलगुणों का एक मिश्रण है। ये शीलगुण दो प्रकार के होते हैं।

उत्पादक शील गुण: इन शीलगुणों को व्यक्तित्व विकास के लिये उपर्युक्त एवं आदर्श माना जाता है।

अनुत्पादक शीलगुण: इन शीलगुणों को अवांछित माना जाता है अर्थात् जिनकी व्यक्तित्व के स्वस्थ विकास में कोई आवश्यकता नहीं होती। इन गुणों के आधार पर फ्रोम ने व्यक्तित्व को चार प्रकारों में बांटा है जो निम्न हैं-

ग्रहणशील प्रकार (रिसेप्टिव): ये व्यक्ति दूसरों से मदद की उम्मीद रखते हैं, पर जब किसी की मदद करने की बारी आती है तो मुकर जाते हैं।

जमाखोर प्रकार (होर्डिंग) ऐसे लोग स्वार्थी होते हैं। इनकी प्रवृत्ति कुछ न कुछ जमा करने की होती है। ये व्यवस्थित तरीके से कार्य करते हैं।

शोषक प्रकार (एक्सप्लोइटेटिव) ऐसे व्यक्ति आक्रामक प्रवृत्ति के होते हैं। अपने बल एवं छल से वस्तुओं को हांसिल करना चाहते हैं।

बाजारू प्रकार (मार्केटिंग) स्वयं को एक वस्तु या कमोडिटी की तरह समझते हैं। स्वयं से, अपनी सेवाओं से अधिक से अधिक बेचते हुए लाभ कमाना चाहते हैं।

इन प्रकारों के अलावा बाद में दो अन्य व्यक्तित्व के प्रकारों का भी फ्रोम ने वर्णन किया। पहला शवकामुक प्रकार एवं दूसरा जीव कामुक प्रकार। शवकामुक प्रकार के व्यक्ति में बर्बादी, मृत्यु, पतन आदि से विशेष लगाव होता है तथा इन कार्यों से ऐसे लोगों में आनन्द आता है। ऐसे लोग एकान्तप्रिय, लोगों से दूरी रखने वाले और भावशून्य होते हैं। ठीक इसके विपरीत जीव कामुक प्रकार के व्यक्ति जीवन से प्यार करते हैं, ऐसे व्यक्ति सृजन, निर्माण, वृद्धि की ओर उन्मुख होते हैं। ऐसे लोग दूसरों को बल दिखाकर या डरा धमका कर प्रभावित नहीं करते अपितु उन्हें स्नेह से प्रभावित करते हैं। ऐसे लोग स्वयं व अन्य के विकास एवं वृद्धि पर अधिक बल देते हैं।

फ्रोम के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को बाल्यावस्था में इस प्रकार प्रशिक्षित करना चाहिये कि वह समाज की आवश्यकताओं के अनुरूप व्यवहार कर सके। उन्होंने यह भी कहा कि जो समाज व्यक्ति की जरूरतों की पूर्ति नहीं करता, वह बीमार समाज होता है और तुरंत ही उसे प्रतिस्थापित कर देना चाहिये। ऐसा समाज

जिसमें व्यक्ति की आवश्यकता पूर्ण हो, उसमें उत्पादकता बढ़े, ऐसा समाज मानवतावादी सामुदायिक समाज कहा जाता है।

स्पष्ट है कि फ्रोम ने व्यक्तित्व के विकास पर समाज एवं संस्कृति के पड़ने वाले प्रभावों को महत्वपूर्ण माना है। कुछ आलोचकों ने कहा कि इस सिद्धान्त में तथ्यों के समर्थन में कोई ठोस वैज्ञानिक एवं आनुभाविक समर्थन नहीं है। कुछ इस सिद्धान्त में नवीनता की कमी मानते हैं। इसके संप्रत्ययों की वैज्ञानिकता की जांच नहीं हो सकती। कुछ इसे आदर्शवादी अधिक व्यावहारिक कम मानते हैं। इन आलोचनाओं के बाद भी फ्रोम के सिद्धान्तों का विशिष्ट महत्व है।

5.4.3 अभ्यास प्रश्न

1. किस प्रकार के शील गुण व्यक्तित्व विकास के लिये आवश्यक है?
2. किस प्रकार के व्यक्तित्व में स्वयं को एक वस्तु की तरह समझा जाता है ?
3. अनुत्पादक शील गुणों के आधार पर व्यक्तित्व के कितने प्रकार हैं ?

5.5 केरेन हार्नी का व्यक्तित्व सिद्धान्त

हार्नी के व्यक्तित्व सिद्धान्त में फ्रायड के सिद्धान्तों में संशोधन कर उसे उन्नत बनाने की कोशिश की है। हार्नी फ्रायड की इस बात से सहमत थी कि वयस्क व्यक्तित्व के निर्धारण में बाल्यावस्था के आरंभिक वर्षों का अधिक महत्व होता है। परन्तु हार्नी का मत है कि बाल्यावस्था के सामाजिक कारकों न कि जैविक कारकों द्वारा व्यक्तित्व का विकास होता है। व्यक्तित्व का विकास सामाजिक संबंधों द्वारा प्रभावित होता है।

5.5.1 मूल चिन्ता का संप्रत्यय

हार्नी के अनुसार बाल्यावस्था की दो प्रमुख आवश्यकताएं होती हैं:

संतुष्टि आवश्यकता: इसमें भोजन, पानी, लैंगिक क्रियाएं, नींद आदि आवश्यकताएं शामिल होती हैं।

सुरक्षा आवश्यकता: इन आवश्यकताओं में डर से स्वतन्त्रता, स्वयं की सुरक्षा आदि शामिल होती हैं।

इन दोनों आवश्यकताओं में से हार्नी ने सुरक्षा की आवश्यकता को व्यक्तित्व विकास के लिये महत्वपूर्ण बताया। बच्चे को माता-पिता से स्नेह मिलना, बच्चे को समझा जाना आदि से उसमें सुरक्षा की भावना विकसित होती है। इसके अभाव में उसमें विद्वेष उत्पन्न होता है। जब बच्चा डर के कारण इस विद्वेष का दमन कर देता है तो उसमें चिन्ता उत्पन्न होती है जिसे मूल चिन्ता या बेसिक एंग्जाइटी कहा जाता है। मूल चिन्ता से तात्पर्य बच्चों में निसहायता तथा अकेलेपन की भावना से है।

5.5.2 मूल चिन्ता से बचने के उपाय

इस मूल चिन्ता में बच्चा निम्न तरह से बचने का प्रयास करता है:

स्नेह प्राप्त करना -इसमें बच्चे दूसरों से स्नेह की अत्यधिक अपेक्षा रखते हुए उनसे स्नेह प्राप्त करने का प्रयास करते हैं।

आज्ञाकारिता/विनम्रता दिखाना: इसमें बच्चा दूसरों के विचारों को स्वीकार कर लेता है। लोगों के सामने स्वयं को निम्न रखता हुआ विनम्रता दिखाता है। इसी कारण वह अन्य व्यक्तियों के क्रोध से बचने का प्रयास करता है।

दूसरों पर नियंत्रण पाना: इसमें बच्चो अत्यधिक आक्रामक होते हुए दूसरों पर धाक जमाने, उन्हें अपने नियन्त्रण में रखकर अपनी चिन्ता में कमी करने का प्रयास करता है।

विलगन व्यवहार द्वारा: इस प्रकार के व्यवहार में व्यक्ति अन्य व्यक्तियों, परिस्थिति से, समस्याओं से स्वयं को बिल्कुल अलग कर लेता है। वह किसी भी कार्य में भागीदारी नहीं करता हुआ अलग थलग रहने का प्रयास करता है। वह कार्यों से बच निकलने का प्रयास करता है।

5.5.3. न्यूरोटिक/स्नायुविकृत आवश्यकताएं

जब व्यक्ति जीवन की समस्याओं का समाधान नहीं कर पाता, कई बार असफलताओं का सामना करता है तो उसमें कुछ विशेष आवश्यकताएं उत्पन्न हो जाती है, जिन्हें हार्नी ने न्यूरोटिक या स्नायुविकृत आवश्यकताएं कहा। इन आवश्यकताओं के कारण व्यक्ति स्वयं को मूल चिन्ता से बचने का प्रयास करता है। इनमें स्नेह प्राप्त करना, लोगों का अनुमोदन करना, उनकी हां में हां मिलाना, स्वयं के सम्मान की आवश्यकता, व्यक्तिगत प्रशंसा की इच्छा, लोगों का शोषण करने की प्रवृत्ति रखना, स्वतन्त्रता की इच्छा रखना, अनाक्रमण आदि शामिल है। इन सभी न्यूरोटिक आवश्यकताओं के परिणामस्वरूप व्यक्ति में एक विशेष प्रकार के व्यवहार करने की प्रवृत्ति बन जाती है जिसे न्यूरोटिक प्रवृत्ति कहा जाता है। यह निम्न प्रवृत्ति तीन प्रकार से व्यक्त होती है।

व्यक्तियों की और जाने की प्रवृत्ति: इस प्रकार की प्रवृत्ति में व्यक्ति अन्य व्यक्तियों के करीब जाकर, उनकी और जाकर अपनी आवश्यकताओं को व्यक्त करता है। इसमें दूसरों का स्नेह, स्वीकृति, अनुमोदन, एक मजबूत जीवन साथी प्राप्त करने की प्रवृत्ति शामिल होती है।

व्यक्तियों के विरुद्ध जाने की प्रवृत्ति: इस प्रकार की प्रवृत्ति में व्यक्ति अन्य व्यक्तियों के विरुद्ध जाता है। इसमें दूसरों के प्रति आक्रामकता दिखाना, उन्हें नियन्त्रण में रखना, उनके प्रति विद्वेष दिखाना, उनका शोषण करना, सत्ता प्राप्त करना आदि शामिल है।

व्यक्तियों से दूर हटने की प्रवृत्ति: इस प्रकार की प्रवृत्ति में व्यक्ति अन्य व्यक्तियों, परिस्थिति से, समस्याओं से स्वयं को बिल्कुल अलग कर लेता है। वह अलग थलग रहने का प्रयास करता है। वह कार्यों से बच निकलने का प्रयास करता है।

5.5.4 व्यक्तित्व के प्रकार

इन तीनों प्रकार की प्रवृत्तियों से तीन अलग अलग प्रकार के व्यक्तित्व का निर्माण होता है जो निम्न है।

फरियादी प्रकार

यह व्यक्तियों की और जाने के परिणामस्वरूप उत्पन्न होती है। ऐसे व्यक्ति दूसरों पर अत्यधिक निर्भर करते हैं। इनका व्यवहार मैत्रीपूर्ण होता है।

आक्रामक प्रकार

यह व्यक्तियों अन्य व्यक्तियों के विरुद्ध जाने से बनता है। ऐसे व्यक्ति आक्रामक, शक्की तथा अत्यधिक गुस्से वाले होते हैं। ऐसे व्यक्ति दूसरों पर आधिपत्य दिखाने, उन्हें नियन्त्रित करने का प्रयास करते हैं।

विलगित प्रकार

यह व्यक्तियों से दूर हटने के परिणामस्वरूप बनता है। ऐसे व्यक्ति असामाजिक होते हैं, एकान्त में रहना पसन्द करते हैं। अन्य लोगों से दूरी बनाए रखते हैं।

हार्नी ने अपनी सिद्धान्त में मूल चिन्ता को कम करने की प्रवृत्तियों का उल्लेख करते हुए कहा कि मूल चिन्ता को कम करने के लिये व्यक्ति या तो स्वयं के बारे में एक आदर्शवादी छवि बना लेता है जो कि वास्तविक छवि से बहुत अलग होती है। इसमें व्यक्ति स्वयं के बारे में बढ़ा चढ़ा कर सोचता है। इसके परिणामस्वरूप व्यक्ति में घमण्ड का विकास होता है।

5.5.5 रक्षा युक्तियां

मूल चिन्ता को कम करने के लिये हार्नी ने कुछ रक्षा युक्तियां भी बताईं जिनका व्यक्ति उपयोग करता है। यह रक्षा युक्तियां मुख्यतः दो श्रेणियों में होती हैं। पहला युक्तिकीकरण जिसमें व्यक्ति या तो स्वयं की इच्छाओं, असफलताओं हेतु कोई तार्किक कारण बनाता है, उसे स्पष्ट करने हेतु उसकी तर्कपूर्ण व्याख्या करने का प्रयास करता है। दूसरा बाहरीकरण जिसमें व्यक्ति असफलता के लिये बाहरी कारकों को जिम्मेदार मानते हुए स्वयं को बचाने का प्रयास करता है। रक्षा युक्तियों के विभिन्न प्रकारों के बारे में आप पूर्व में पढ़ चुके हैं।

हालांकि कुछ मनोवैज्ञानिकों ने हार्नी के सिद्धान्त का शोधपरक मूल्य कम बताया है। इनके संप्रत्ययों पर अधिक शोध नहीं किये गये हैं तथा इनकी लोकप्रियता उतनी नहीं है जितनी कि फ्रायड, एडलर एवं युंग के सिद्धान्तों की है। हार्नी के सिद्धान्त में जैविक मूलप्रवृत्तियों की पूर्णरूपेण उपेक्षा की गई है। आलोचक यह भी कहते हैं कि इस सिद्धान्त में सामाजिक सिद्धान्तों पर जरूरत से ज्यादा बल दिया गया है। व्यक्तित्व विकास में लैंगिकता, आक्रामकता तथा अचेतन की उपेक्षा हार्नी की एक बड़ी भूल कुछ आलोचकों द्वारा मानी गई है। इन आलोचनाओं के बाद भी हार्नी के सिद्धान्त का काफी महत्व है।

इस प्रकार हार्नी के सिद्धान्त से यह स्पष्ट है कि उन्होंने एडलर एवं फ्रोम के समान ही सामाजिक सांस्कृतिक कारकों पर अत्यधिक बल डाला है। हार्नी द्वारा सुझाए गए संप्रत्ययों से व्यक्ति को बेहतर तरीके से समझने में सफलता मिली है।

5.5.6 अभ्यास प्रश्न

1. हार्नी के अनुसार बाल्यावस्था की दो प्रमुख आवश्यकताएं कौनसी हैं ?
2. व्यक्तियों से दूर जाने वाली प्रवृत्ति होने पर किस प्रकार का व्यक्तित्व होगा।
3. मूल चिन्ता संप्रत्यय किसने प्रतिपादित किया ?

5.6. बेन्दुरा का व्यक्तित्व सिद्धान्त

यह सिद्धान्त व्यक्तित्व के व्यवहारवादी दृष्टिकोण पर आधारित है। जिसमें स्पष्ट रूप से दिखने वाले बाह्य व्यवहारों के आधार पर व्यक्तित्व को समझने का प्रयास किया गया है। यह सिद्धान्त स्किनर, पावलोव आदि के समान विचारधारा का है। परन्तु इस सिद्धान्त में उद्दीपक तथा अनुक्रिया के बीच में आने वाले

आन्तरिक संज्ञानात्मक चरों जैसे आवश्यकता, प्रणोद, इच्छा, संवेग आदि को भी महत्व दिया गया है। इसीलिये इस सिद्धान्त को सामाजिक अधिगम सिद्धान्त के साथ सामाजिक-संज्ञानात्मक सिद्धान्त भी कहा जाता है।

बेन्दुरा का सिद्धान्त यह मानता है कि अधिकतर मानव व्यवहार व्यक्ति अपने जीवनकाल में सीखता है। वे यह भी मानते हैं कि मानव व्यवहार संज्ञानात्मक, व्यवहारात्मक एवं पर्यावरणीय निर्धारकों के बीच अन्योन्य अन्तःक्रिया का परिणाम है। इस तरह की अन्योन्य अन्तःक्रिया को बेन्दुरा ने अन्योन्य निर्धार्यता नाम दिया। इस संप्रत्यय के अनुसार मानव क्रिया में तीन कारकों का प्रभाव हमेशा पड़ता है। ये तीन कारक हैं - बाह्य वातावरण, संज्ञानात्मक एवं आन्तरिक घटनाएं व्यवहार

आत्म तंत्र

अन्योन्य निर्धार्यता के संप्रत्यय से स्पष्ट है कि प्रत्येक चीज परस्पर ढंग से अन्तःक्रियात्मक होती है। इन सभी का केन्द्र बिन्दु आत्म तंत्र होता है। बेन्दुरा ने यह बताया कि आत्म तंत्र कोई मानसिक एजेंट नहीं है जिससे व्यवहारों का नियंत्रण होता है। बल्कि यह प्रत्यक्षण, मूल्यांकन एवं व्यवहारों के संचालन के लिये रास्ता प्रशस्त करता है। आत्म तंत्र से व्यक्तित्व में संगतता एवं एकात्मकता उत्पन्न होती है। आत्म तंत्र का सम्बन्ध चिन्तन तथा प्रत्यक्षण से विशेष रूप से होता है। आत्म तंत्र का एक महत्वपूर्ण कार्य आत्म नियमन है। आत्म नियमन से तात्पर्य चिन्तन द्वारा अपने वातावरण में जोड़ तोड़ करने तथा अपने कार्यों के परिणामों को स्पष्ट करने की क्षमता से होता है।

5.6.1 माँडलिंग: प्रेक्षण द्वारा सीखना

बेन्दुरा के अनुसार व्यक्ति दूसरों व्यक्तियों के व्यवहारों का प्रेक्षण करके तथा उसे दोहरा कर वैसे ही व्यवहार करना सीख लेता है। इसे ही माँडलिंग कहते हैं एवं जिस व्यक्ति के व्यवहार को देखकर कोई व्यवहार सीखा जा रहा है, उसे माँडल कहते हैं। इसके लिये बेन्दुरा ने रास तथा राँस के साथ मिलकर एक प्रयोग किया। इसमें स्कूल के बच्चों के दो समूह बनाये गए। एक समूह के बच्चों को एक वीडियो दिखाया गया, जिसमें बच्चों को तीन से चार फीट की एक गुडिया जिसे बॉब डॉल कहा गया, को उछालते हुए, मारते हुए एवं उसके प्रति आक्रामक व्यवहार करते हुए दिखाया गया। दूसरे समूह के बच्चों को ऐसी वीडियो दिखाया गया जिसमें किसी प्रकार का आक्रामक व्यवहार या हिंसा नहीं थी। जब दोनों समूह के बच्चों को ऐसी ही गुडिया के साथ अकेला छोड़ दिया गया, तो जिस समूह को आक्रामकता वाला वीडियो दिखाया गया था, उस समूह के बच्चों ने भी उस गुडिया के साथ आक्रामक व्यवहार जैसे उछालना, मारना पीटना आदि ही दर्शाए जबकि दूसरे समूह के बच्चों में ऐसा आक्रामक व्यवहार प्रथम समूह की तुलना में काफी कम था। इस प्रकार यह सिद्ध हुआ कि जिस प्रकार के व्यवहार का हम प्रेक्षण करते हैं, वैसे ही व्यवहार हम प्रदर्शित करते हैं। इसे बेन्दुरा ने प्रेक्षणात्मक अधिगम या आब्जर्वेशनल लर्निंग कहा जाता है। इसे सामाजिक अधिगम भी कहा जाता है।

1.6.2 सामाजिक अधिगम को प्रभावित करने वाले कारक:

बेन्दुरा द्वारा किये गये प्रयोगों के आधार पर सामाजिक अधिगम को प्रभावित करने वाले निम्न कारकों की पहचान हुई।

मॉडल की विशेषताएं - मॉडल (जिसके व्यवहार को देखा जा रहा है) तथा प्रयोज्य (जो व्यक्ति व्यवहार को घटित होते देख रहा है) में समानता जितनी अधिक होगी, अधिगम उतना ही अधिक होगा। यदि मॉडल एवं प्रयोज्य दोनों की उम्र, लिंग आदि समान है तो प्रेक्षणात्मक अधिगम अधिक होगा। इसी प्रकार यदि मॉडल का स्तर एवं प्रतिष्ठा अधिक है तो भी अधिगम अधिक होगा। विज्ञापनों में अक्सर किसी अभिनेता, खिलाड़ी को प्रचार के लिये लिया जाता है क्योंकि ऐसे व्यक्तियों को मॉडल के रूप में मानकर अन्य व्यक्ति उसी तरह का व्यवहार करने के लिये प्रेरित होते हैं। इसी प्रकार जिस प्रकार के व्यवहार का अधिगम होना है, यदि वह सरल हुआ तो अधिगम अधिक होगा। यदि व्यवहार जटिल है तो उसका प्रेक्षणात्मक अधिगम कम होगा।

प्रेक्षक की विशेषताएं - प्रेक्षक या प्रयोज्य की भी कुछ विशेषताएं होती हैं जिससे मॉडलिंग प्रभावित होती है। जिस प्रेक्षक या दर्शक में आत्म विश्वास एवं आत्म सम्मान की कमी होती है, वे मॉडल का अनुसरण अधिक करते हैं। इसी तरह से जिन व्यक्तियों को बीते दिनों में किसी व्यवहार का प्रेक्षण करने के लिये पुरस्कार दिया गया होता है, वे मॉडल के व्यवहारों का अनुकरण उन व्यक्तियों की तुलना में तेजी से करते हैं, जिन्हें पुरस्कार नहीं दिया गया हो।

व्यवहार का परिणाम - बेन्दुरा के अनुसार व्यक्ति निश्चित रूप से एक प्रतिष्ठित मॉडल के व्यवहारों का अनुकरण करता है, परन्तु यदि इस व्यवहार के लिये उसे कोई पुरस्कार या सकारात्मक परिणाम नहीं मिलता है तो मॉडल के प्रतिष्ठित होने पर भी मॉडलिंग पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

इस प्रकार ऐसे कई कारक हैं जो यह निर्धारित करते हैं कि प्रेक्षणात्मक अधिगम किस हद तक बढ़ेगा या घटेगा। कारकों के पश्चात अगले भाग में प्रेक्षणात्मक अधिगम की प्रक्रिया को समझेंगे।

5.6.3 प्रेक्षणात्मक अधिगम की प्रक्रिया

यह प्रक्रिया चार अन्तर्सम्बन्धित प्रक्रियाओं द्वारा नियन्त्रित होता है -

अ. अवधान

ब. धारण

स. पुनरुत्पादन

द. प्रेरणा

अवधान

मॉडलिंग के लिये सबसे पहला एवं आवश्यक पद है कि प्रयोज्य मॉडल के व्यवहारों पर ठीक से ध्यान दे। मॉडल को सिर्फ देख लेने से ही वह अधिगम को सीख नहीं सकेगा। इसके लिये मॉडल के संकेतों, व्यवहारों को बारीकी से देखना, संगत व्यवहारों को चयन करना आवश्यक है। इसके लिये मॉडल के व्यक्तिगत गुणों की एक महत्वपूर्ण भूमिका होती है जिससे कि वह प्रयोज्यों का ध्यान अपनी ओर खींच सके।

धारण

यह प्रेक्षणात्मक अधिगम का दूसरा पद है। इस अधिगम के लिये यह आवश्यक है कि मॉडल के सभी सार्थक व्यवहारों को याद रखा जाए। इसे धारण कहते हैं। बेन्दुरा का मत है कि व्यक्ति जब मॉडल को

ध्यान से देखता है तो उसके महत्वपूर्ण पहलूओं के आधार पर एक प्रतिमा मन में बना लेता है जो मॉडल से सम्बन्धित व्यवहार को याद रखने, धारण करने में मदद करता है। प्रतिमा के अलावा कई बार व्यक्ति शाब्दिक कोडिंग द्वारा भी मॉडल के बारे में याद रखता है।

पुनरूत्पादन

धारण के द्वारा जिस व्यवहार को याद रखा गया है, उसे वास्तविक व्यवहार में बदलना आवश्यक है। यदि सीखा जाने वाला व्यवहार अधिक जटिल हो तो यह कार्य अधिक मुश्किल होता है। मॉडल के व्यवहार का सांकेतिक चित्रण करने, उसे शब्दों में याद रखने, उसका मन ही मन पूर्वाभ्यास करना ही पर्याप्त नहीं है, उसे वास्तविक व्यवहार में बदलना अत्यन्त आवश्यक है। जैसे कार चलाना सीखने के लिये कार कैसे चलाई जाती है केवल इसकी जानकारी से कार नहीं सीखी जा सकती। इसके लिये कार चलाने के लिये वास्तविक व्यवहार का अभ्यास कर सीखना होगा।

प्रेरणा

यह प्रेक्षणात्मक अधिगम का चौथा पद है। चाहे व्यक्ति मॉडल के व्यवहार को कितना ही ध्यानपूर्वक देख ले, उसे याद रखे, उस व्यवहार को करने की क्षमता कितनी ही अधिक हो, वह व्यवहार तब तक प्रदर्शित नहीं होगा, यदि व्यक्ति स्वयं उस व्यवहार को करने हेतु प्रेरित न हो, उसे उस व्यवहार के प्रदर्शन के लिये प्रोत्साहन (इन्सेंटिव) या पुर्नबलन न मिले। प्रोत्साहन या पुर्नबलन उस व्यवहार को प्रदर्शित करने पर प्रयोज्य को होने वाला लाभ है। यह पुर्नबलन दो प्रकार का होता है। पहला विकेरियस या स्थानापन्न पुर्नबलन, इसमें व्यक्ति घटित व्यवहार को देखकर ही उसे करने के लिये प्रोत्साहित होता है। दूसरा आत्म पुर्नबलन जिसमें व्यक्ति को किसी कार्य को करने से आत्म संतुष्टि एवं गर्व महसूस होता है।

इस प्रकार निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि बेन्दुरा का सामाजिक अधिगम या सामाजिक संज्ञानात्मक सीखना एक वस्तुनिष्ठ सिद्धान्त है जो प्रयोगशाला विधि के लिये काफी उपर्युक्त है। लेकिन कुछ आलोचक यह कहते हैं कि इस सिद्धान्त में स्पष्ट व्यवहार पर ही बल डाला गया है। व्यक्तित्व के अन्य महत्वपूर्ण पहलूओं जैसे चेतन, अचेतन बलों की उपेक्षा की गई है। कुछ व्यवहारवादी जैसे स्किनर भी कहते हैं कि जिन संज्ञानात्मक चरों की व्यक्तित्व में भूमिका की बात की गई है वह उतनी वस्तुनिष्ठ नहीं है, जितना कि बाहरी रूप से दिखने वाले स्पष्ट व्यवहार में होती है। कुछ आलोचक यह भी मानते हैं बेन्दुरा ने यह स्पष्ट नहीं किया है कि संज्ञानात्मक चरों द्वारा किस प्रकार व्यवहार प्रभावित होता है।

इन आलोचकों के बावजूद भी बेन्दुरा का सिद्धान्त व्यक्तित्व के अध्ययन के लिये नये द्वार खोलता है जिसे मनोवैज्ञानिक एक महत्वपूर्ण योगदान मानते हैं।

5.6.4 अभ्यास प्रश्न

1. सामाजिक अधिगम का संप्रत्यय किसने दिया ?
2. प्रेक्षणात्मक अधिगम का सबसे पहला पद कौनसा है ?
3. सामाजिक अधिगम को प्रभावित करने वाले दो कारकों को बताइये।

5.7 सारांश

अल्फ्रेड एडलर, एरिक फ्रोम एवं केरेन हार्नी ने व्यक्ति में जैविक कारकों के स्थान पर व्यक्ति पर पड़ने वाले सामाजिक प्रभावों को भी अपने सिद्धान्तों में शामिल किया। एडलर ने व्यक्तिगत मनोविज्ञान के नाम से मनोविज्ञान में अलग विचारधारा स्थापित की। बेन्दुरा का सामाजिक संज्ञानात्मक सिद्धान्त मुख्यतः व्यक्तित्व की व्यवहारवादी विचारधारा पर आधारित है जिसमें अधिगम के सिद्धान्तों को काफी महत्व दिया गया है। व्यवहारवादी विचारधारा व्यक्तित्व के बाहरी पक्षों अर्थात् बाहर से स्पष्ट रूप से देखे जा सकने वाले व्यवहार पर ही ध्यान केन्द्रित करती है। इस विचारधारा में आन्तरिक पक्षों अचेतन आदि के महत्व को नकार दिया गया है।

5.8 शब्दावली

- जन्म क्रम - संतान का जन्म में क्रम यानी पहले नंबर पर हुई संतान दूसरी संतान, तीसरी संतान या अकेली संतान।
 - रक्षा युक्तियां - चिन्ता से मुक्त होने के लिये व्यक्ति द्वारा उपयोग में लिये गए विभिन्न प्रकार के बहाने
 - प्रेक्षणात्मक अधिगम - अन्य व्यक्तियों के व्यवहारों को देखकर सीखा गया व्यवहार
-

5.9 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

अभ्यास प्रश्न 1.3.2

1. सामाजिक अभिरूचि
2. जीवन शैली
3. रूलिंग, गेटिंग, अवोइडिंग, सोशियली युजफुज

अभ्यास प्रश्न 1.4.3

1. उत्पादक शीलगुण
2. मार्केटिंग/बाजारू प्रकार
3. चार प्रकार

अभ्यास प्रश्न 1.5.6

1. संतुष्टि एवं सुरक्षा की आवश्यकता
2. विलगित प्रकार
3. केरेन हार्नी ने

अभ्यास प्रश्न 5.6.4

1. अल्बर्ट बेन्दुरा ने
 2. अवधान/ध्यान
 3. मॉडल की विशेषताएं, प्रेक्षक की विशेषताएं
-

5.10 संदर्भ ग्रन्थ

- हॉल, केल्विन एस एवं लिंडजे गार्डनर (1970) 'थियोरिज ऑफ पर्सनालिटी' सेकण्ड एडिशन, जॉन विले एण्ड सन्स, न्यूयार्क

- सिंह, अरूण कुमार (2002) उच्चतर सामान्य मनोविज्ञान, मोतीलाल बनारसीदास पब्लिकेशंस
- बेरॉन , रॉबर्ट (2001) साइकोलोजी, मेकग्रा हिल पब्लिकेशन्स

51.11 निबन्धात्मक प्रश्न

1. एडलर के व्यक्तित्व सिद्धान्त को समझाईये।
2. जन्म क्रम का व्यक्तित्व से क्या सम्बन्ध है। समझाईये।
3. एरिक फ्रोम द्वारा बताये गये व्यक्तित्व के विभिन्न प्रकारों को समझाईये।
4. बेन्डुरा के सामाजिक अधिगम के संप्रत्यय को समझाईये। इस हेतु किये गये प्रयोग का वर्णन कीजिए।
5. सामाजिक अधिगम की प्रक्रिया का वर्णन करें।
6. हार्नी के व्यक्तित्व सिद्धान्त का वर्णन करें।

इकाई 6

व्यक्तित्व के अधिगम सिद्धान्त (पावलोव एवं स्किनर), मानवतावादी एवं आत्म सिद्धान्त (मैसलो, रोजर्स)

Learning theories of personality (Pavlov and Skinner), Humanistic and self theory (Maslow, Rogers)

इकाई की रूपरेखा

- 6.1 प्रस्तावना
- 6.2 उद्देश्य
- 6.3 पावलोव का क्लासिकी अनुबन्धन सिद्धान्त
 - 6.3.1 अनुबन्धन का प्रयोग
 - 6.3.2 अनुबन्धन के प्रकार
 - 6.3.3 अनुबन्धन के अन्य संप्रत्यय
 - 6.3.4 अभ्यास प्रश्न
- 6.4 स्किनर का क्रियाप्रसूत अनुबन्धन सिद्धान्त
 - 6.4.1 क्रियाप्रसूत एवं प्रतिवादी व्यवहार
 - 6.4.2 पुनर्बलन अनुसूची
 - 6.4.3 शेपिंग प्रक्रिया
 - 6.4.4 व्यवहारों का आत्म नियन्त्रण
 - 6.4.5 क्रियाप्रसूत अनुबन्धन के अनुप्रयोग
 - 6.4.6 अभ्यास प्रश्न
- 6.5 मैसलोका आवश्यकता पदानुक्रम सिद्धान्त
 - 6.5.1 पदानुक्रम मॉडल
 - 6.5.2 अन्य आवश्यकताएं
 - 6.5.3 आत्म सिद्ध व्यक्ति की विशेषताएं

- 6.5.4 अभ्यास प्रश्न
- 6.6 रोजर्स का व्यक्तित्व सिद्धान्त
 - 6.6.1 मुख्य संप्रत्यय
 - 6.6.1.1 प्राणी
 - 6.6.1.2 आत्मन
 - 6.6.1.3 आत्म संप्रत्यय
 - 6.6.1.4 आदर्श आत्मन
 - 6.6.2 व्यक्तित्व की आवश्यकताएं
 - 6.6.3 पूर्णरूपेण सफल व्यक्ति/फुली फंक्शनिंग परसन
 - 6.6.4 अभ्यास प्रश्न
- 6.7 सारांश
- 6.8 शब्दावली
- 6.9 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
- 6.10 संदर्भ ग्रन्थ सूची
- 6.11 निबंधात्मक प्रश्न

6.1 प्रस्तावना

पावलोव व स्किनर के सिद्धान्त मनोविज्ञान के व्यवहारवादी विचारधारा को सामने रखते हैं। इनके अनुसार मानव मूलतः बाह्य एवं वस्तुनिष्ठ कारकों से प्रभावित होता है इन कारकों के अभाव में मानव व्यवहार को सही रूप में समझना संभव नहीं है। व्यवहारवादी व्यक्तित्व को स्पष्ट दिखाने वाले ओवर्ट बीहेवियर के आधार पर ही समझने का प्रयास करते हैं। जबकि कार्ल रोजर्स एवं अब्राहम मैस्लो जैसे मानवतावादी विचारधारा के समर्थक यह मानते हैं कि व्यक्ति की आन्तरिक अनुभूतियां उसके व्यवहार पर सबसे महत्वपूर्ण प्रभाव डालती हैं और ओवर्ट या प्रेक्षणीय व्यवहार को इन आन्तरिक अनुभूतियों के समझना कठिन है। इन लोगों का मत है कि मानव व्यवहार विकास एवं आत्म सिद्धि जैसी आवश्यकताओं से प्रभावित होता है। मानव व्यवहार का कारण व्यक्ति के भीतर होता है। वह अपने भविष्य का निर्माता स्वयं होता है। वह प्रत्येक व्यवहार अपनी भीतरी प्रेरणाओं से करता है।

6.2 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप

- व्यक्तित्व की व्यवहारवादी विचारधारा को समझ सकेंगे
- पावलोव के क्लासिकी अनुबन्धन के विभिन्न संप्रत्ययों को समझ सकेंगे
- स्किनर के क्रियाप्रसूत अनुबन्धन के विभिन्न संप्रत्ययों को समझ सकेंगे

- व्यक्तित्व के मानवतावादी उपागम को समझ सकेंगे
- अब्राहम मैस्लोके आवश्यकता पदानुक्रम सिद्धान्त को समझ सकेंगे
- कार्ल रोजर्स के व्यक्तित्व सिद्धान्त को समझ सकेंगे

6.3 पावलोव का क्लासिकी अनुबन्धन सिद्धान्त

6.3.1 अनुबन्धन का प्रयोग

पावलोव के सिद्धान्त का आधार अनुबन्धन है। लेफ्रेन्कोइस के अनुसार अनुबन्धन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा उद्दीपक एवं अनुक्रिया के बीच एक साहचर्य स्थापित होता है। इस सिद्धान्त को क्लासिकी अनुबन्धन या प्रतिवादी अनुबन्धन या टाइप-एस सिद्धान्त कहा जाता है।

पावलोव के अनुसार जब किसी स्वाभाविक उद्दीपक को व्यक्ति के सामने प्रस्तुत किया जाता है तो व्यक्ति उसके प्रति स्वाभाविक अनुक्रिया करता है। जैसे भूखे व्यक्ति के भोजन देखने पर लार स्रवण होना। यदि इस स्वाभाविक उद्दीपक के साथ किसी उदासीन उद्दीपक को कुछ प्रयासों में साथ साथ प्रस्तुत किया जाए तो व्यक्ति सिर्फ उदासीन उद्दीपक के प्रति भी स्वाभाविक अनुक्रिया करना सीख जाएगा। पावलोव ने अपने प्रयोग में एक कुत्ते को भोजन प्रस्तुत किया। भोजन स्वाभाविक उद्दीपक था, जिसकी स्वाभाविक अनुक्रिया लार स्रवण के रूप में हुई। फिर कुछ समय के लिये भोजन प्रस्तुत करते समय घण्टी की आवाज भी की गई। इसके पश्चात सिर्फ घण्टी की आवाज किये जाने पर ही लार का स्रवण हो गया। इसका अभिप्राय यह है कि भोजन एवं घण्टी के साथ दिये जाने पर दोनों में साहचर्य स्थापित हो गया, जिससे कि उदासीन उद्दीपक के प्रति ही स्वाभाविक अनुक्रिया हो गई। क्लासिकी अनुबन्धन में उद्दीपक एवं अनुक्रियाएं निम्न प्रकार की होती हैं -

1. स्वाभाविक उद्दीपक (यू.सी.एस.) - भोजन
2. स्वाभाविक अनुक्रिया (यू.सी.आर.) - लार का स्रवण
3. उदासीन या अनुबन्धित उद्दीपक (सी.एस.) - घण्टी
4. अनुबन्धित अनुक्रिया (सी.आर.) - लार का स्रवण

क्लासिकी अनुबन्धन को निम्न तरह से समझा जा सकता है -

भोजन - लार

भोजन व घण्टी - लार

घण्टी - लार

6.3.2 अनुबन्धन के प्रकार

जब स्वाभाविक एवं अनुबन्धित उद्दीपक को साथ साथ प्रस्तुत किया जाता है तो इस प्रस्तुतिकरण के आधार पर अनुबन्धन चार प्रकार का हो सकता है जो निम्न है -

समक्षणिक/साइमल्टेनियस अनुबन्धन: दोनों उद्दीपक भोजन व घण्टी साथ साथ प्रस्तुत किये जाते हैं।

विलम्बित/डिलेड: इसमें घण्टी पहले बजा दी जाती है एवं तब तक बजती रहती है जब तक भोजन न दिया जाए।

ट्रेस: घण्टी को पहले बजाया जाता है, इसके बन्द होने पर भोजन प्रस्तुत किया जाता है।
श्रृंगामी/अनुबन्धन: इसमें भोजन पहले दे दिया जाता है, घण्टी बाद में बजाई जाती है।

6.3.3 अनुबन्धन के अन्य संप्रत्यय

उद्दीपक सामान्यीकरण: इसमें प्राणी वास्तविक अनुबन्धित उद्दीपक जैसे घण्टी के प्रति जो अनुक्रिया करता है, वैसी ही अनुक्रिया घण्टी के समान कोई अन्य आवाज बजाने पर भी कर देता है। अर्थात् प्राणी ने उद्दीपक का सामान्यीकरण कर दिया है।

विलोपन: यदि प्राणी को अनुबन्धन स्थापित होने पर, यानी जब कुत्ता सिर्फ घण्टी की आवाज के प्रति ही लार की अनुक्रिया प्रारंभ कर दे, इसके बाद कुछ समय के लिये सिर्फ घण्टी की आवाज सुनाई जाए और भोजन इसके साथ प्रस्तुत न किया जाए तो कुत्ते द्वारा सीखा गया व्यवहार पुनः बन्द हो जाता है अर्थात् विलोपित हो जाता है। इसे विलोपन कहा जाता है।

स्वतः पुर्नलाभ: यदि सीखी गई अनुक्रिया का विलोपन हो गया हो, इसके कुछ समय बाद पुनः प्रयोग किया जाए तो कुत्ता पुनः सिर्फ घण्टी की आवाज पर ही लार का स्रवण करता है अर्थात् अनुबन्धित व्यवहार दर्शाता है। अर्थात् अनुबन्धन के विलोपन होने के कुछ समय बाद कुत्ता पुनः अपने आप ही अनुबन्धित व्यवहार दर्शाता है। इसे स्वतः पुर्नलाभ कहते हैं।

पावलोव के सिद्धान्त में यह बताया गया कि सीखने के लिये पुनर्बलन का होना अनिवार्य है। व्यक्तित्व का विकास भी तभी होता है जब व्यक्ति को समय समय पर पुनर्बलन मिलता है। साथ ही किसी नकारात्मक घटना के साथ साहचर्य हो जाने पर यह व्यक्तित्व को भी प्रभावित करता है। इस प्रकार पावलोव का सिद्धान्त मनोविज्ञान के क्षेत्र में, अधिगम के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण सिद्धान्त साबित हुआ है जिसका अनुप्रयोग हम दैनिक जीवन में कई रूपों में देखते हैं।

6.3.4 अभ्यास प्रश्न

1. पावलोव के प्रयोग में उदासीन उद्दीपक कौनसा है ?
2. घण्टी के बन्द होने पर भोजन दिया जाना प्रकार का अनुबन्धन है?

6.4 स्किनर का क्रियाप्रसूत अनुबन्धन सिद्धान्त

बी.एफ. स्किनर एक व्यवहारवादी थे जिन्होंने व्यवहार की व्याख्या प्रयोगशालाओं में किए गए अध्ययनों के आधार पर की। स्किनर के शब्दों में व्यक्तित्व उद्दीपकों के प्रति सीखी गई अनुक्रियाओं का एक संग्रहण तथा स्पष्ट बाहरी व्यवहारों या आदत तंत्रों का एक समुच्चय है। इसमें स्किनर ने उन्हीं व्यवहारों को शामिल किया जिन्हें वस्तुनिष्ठ रूप से प्रेक्षण किया जा सके।

स्किनर ने अन्य कुछ सिद्धान्तों जैसे मनोविश्लेषक सिद्धान्त, संज्ञानात्मक सिद्धान्त एवं मानवतावादी सिद्धान्तों को विरोध किया। क्योंकि इन सभी सिद्धान्तों में व्यक्तित्व की व्याख्या आन्तरिक कारकों के आधार पर की गई। जबकि स्किनर ने व्यक्तित्व की व्याख्या करने में आन्तरिक प्रक्रियाओं जैसे प्रणोद, अभिप्रेरक, अचेतन को अस्वीकार कर दिया क्योंकि इनका तो प्रेक्षण ही नहीं किया जा सकता जबकि व्यवहारवादी विचारधारा तो उसी व्यवहार को मानती जो स्पष्ट रूप से परिलक्षित हो, दिखता हो। स्किनर

ने मानव जीव को एक एम्प्टी आर्गेनिज्म या रिक्त जीव नाम दिया। स्किनर ने अपने अध्ययन व्यक्तियों पर न करके चूहों एवं कबूतरों पर किये थे।

6.4.1 क्रियाप्रसूत एवं प्रतिवादी व्यवहार

स्किनर ने व्यवहार के दो प्रकार बताए - क्रियाप्रसूत एवं प्रतिवादी व्यवहार।

क्रियाप्रसूत व्यवहार से तात्पर्य ऐसे व्यवहार से होता है जो वातावरण के किसी ज्ञात उद्दीपक से उत्पन्न नहीं होता। ऐसे व्यवहारों को व्यक्ति अपनी इच्छा से करता है। इसके लिये किसी उद्दीपक की आवश्यकता नहीं होती। जैसे स्किनर के प्रयोग में चूहों को एक लीवर दबाने की अनुक्रिया सिखाई गई। चूंकि चूहा लीवर अपनी इच्छा से दबाता है, इसीलिये इसे क्रियाप्रसूत व्यवहार कहा जाता है। यदि इस तरह के व्यवहार को करने के बाद व्यक्ति को पुरस्कार दिया जाए तो यह व्यवहार दर्शाने की प्रवृत्ति बढ़ जाएगी। लेकिन यदि यह व्यवहार दर्शाने पर दण्ड दिया जाए तो यह व्यवहार कम हो जाएगा। इस क्रियाप्रसूत व्यवहार की कण्डीशनिंग या अनुबन्धन को आपरेंट कण्डीशनिंग कहा जाता है। जन्म के बाद व्यक्ति कई प्रकार के व्यवहार करता है उनमें से जिन व्यवहारों के लिये पुरस्कार मिलता है, प्रोत्साहन मिलता है, वे व्यवहार व्यक्ति दोहराता है, एवं व्यवहारों को दोहराने पर आदत का निर्माण होता है एवं आदतों के समूह या समूच्चय से व्यक्ति के व्यक्तित्व का निर्माण होता है।

प्रतिवादी व्यवहार - प्रतिवादी व्यवहार व्यक्ति अपनी इच्छा से नहीं करता है, यह अनैच्छिक एवं स्वतः होता है। जैसे अधिक रोशनी देखने पर आंखों की पुतली का सिकुड़ना, भोजन देखने पर मुंह में लार स्रवण होना, अत्यधिक ठण्ड होने पर कांपना आदि।

6.4.2 पुनर्बलन अनुसूची

इसका अभिप्राय क्रियाप्रसूत व्यवहार को किस पेटर्न में प्रोत्साहन या पुरस्कार दिया जाएगा इससे है। प्रारम्भिक अवस्था में स्किनर ने प्रत्येक अपेक्षित व्यवहार को प्रोत्साहन दिया इससे सतत पुनर्बलन अनुसूची कहते हैं।

यदि प्रत्येक अपेक्षित व्यवहार दर्शाने पर पुरस्कार न दिया जाकर किसी विशेष पेटर्न के आधार पर कुछ ही व्यवहारों को पुरस्कार दिया जाए तो इसे आंशिक पुनर्बलन अनुसूची या आंतरायिक पुनर्बलन अनुसूची कहते हैं। इसके चार प्रकार होते हैं।

निश्चित अनुपात एवं परिवर्त्य अनुपात अनुसूची - निश्चित अनुपात अनुसूची में प्राणी को एक पूर्वनिर्धारित संख्या में अनुक्रिया करने पर पुरस्कार या पुनर्बलन दिया जाता है। जैसे प्रत्येक पांच अनुक्रिया के बाद या प्रत्येक दस अनुक्रिया के बाद। लेकिन कितनी अनुक्रिया के बाद पुनर्बलन देना है यह संख्या निश्चित रहती है। यदि यह संख्या बदलती रहे जैसे कभी तीन अनुक्रिया के बाद पुनर्बलन दिया, फिर 5 या 7 अनुक्रिया के बाद, फिर 10 अनुक्रिया के बाद आदि। इस प्रकार की अनुसूची को परिवर्त्य अनुपात अनुसूची कहते हैं। इसमें पुनर्बलन देने के लिये अनुक्रियाओं की कोई पूर्व निर्धारित संख्या नहीं होती।

निश्चित अन्तराल एवं परिवर्त्य अन्तराल अनुसूची - निश्चित अन्तराल अनुसूची में प्राणी को एक निश्चित पूर्वनिर्धारित समय अन्तराल के बाद पुनर्बलन दिया जाता है जैसे प्रत्येक पांच मिनट या दस मिनट के बाद। जबकि परिवर्त्य अन्तराल अनुसूची में यह समय निश्चित नहीं होकर बदला जाता है। जैसे उदाहरण

के लिये पहले पांच मिनट के बाद, फिर तीन मिनट के बाद, फिर 6 मिनट के बाद अनुक्रियाओं को पुरस्कृत किया जाता है।

6.4.3 शेपिंग की प्रक्रिया

शेपिंग एक ऐसी प्रविधि है जिसमें वांछित व्यवहार तक पहुंचने तक में उस दिशा में शामिल छोटी छोटी अनुक्रियाओं को भी पुरस्कृत किया जाता है जिससे धीरे धीरे व्यक्ति उस वांछित व्यवहार तक पहुंच सके। जैसे स्किनर ने चूहे को लीवर दबाना सिखाने के लिये उसके लीवर के आसपास जाने, लीवर को छूने आदि पर ही पुरस्कार के रूप में भोजन दे दिया। इस प्रकार चूहा लीवर के आसपास रहने, उसे छूने, दबाने की और अग्रसर हुआ। अन्ततः चूहा लीवर को पर्याप्त दम से दबाना सीख गया जो कि वांछित अनुक्रिया थी। इसे क्रमिक सन्निकटन भी कहते हैं। अर्थात् इसमें धीरे धीरे व्यवहारों को शेप किया जाता है, इसीलिये इसे शेपिंग कहा जाता है। इसमें व्यवहारों की श्रृंखला या चेन बनाई जाती है अर्थात् इसमें चेनिंग या श्रृंखलाकरण भी शामिल है।

6.4.4 व्यवहारों का आत्म नियंत्रण

प्राणी अपने व्यवहार में परिवर्तन के लिये आत्म नियंत्रण की प्रविधियों का उपयोग करता है जिसके द्वारा प्राणी उन चरों पर नियंत्रण रखता है, जिससे उसका व्यवहार प्रभावित होता है। ऐसी कुछ प्रविधियां निम्न है -

संतुष्टि प्रविधि: इस प्रविधि में यदि व्यक्ति स्वयं को किसी बुरी आदत से छुटकारा दिलाना चाहता है तो उस आदत को तब तक दोहराता रहता है जब तक उसे पूर्णतः संतुष्टि हो जाए या दूसरों शब्दों में वह इस आदत से उब न जाए। जैसे लगातार सिगरेट या शराब पीते रहने से उसमें सिगरेट या शराब से घृणा और विरुचि हो जाएगी।

असुखद उद्दीपकों का उपयोग: इसके लिये व्यक्ति वातावरण को कुछ ऐसा बनाता है कि उसे जिस आदत में परिवर्तन करना है, वह उसे दोहरा नहीं सके। जैसे कोई व्यक्ति अपनी सिगरेट की आदत छोड़ने के लिये दोस्तों, रिश्तेदारों के समूह के सामने घोषणा कर दे कि वह कभी सिगरेट नहीं पीएगा तो उसे सिगरेट पीने पर दोस्तों, रिश्तेदारों की आलोचना का शिकार होना पड़ेगा। इस कारण वह सिगरेट नहीं पीएगा।

6.4.5 क्रियाप्रसूत अनुबंधन के उपयोग

स्किनर के अनुसार वातावरण में परिवर्तन द्वारा व्यक्ति के असामान्य व्यवहार के स्थान पर सामान्य व्यवहार सिखाया जा सकता है। इस प्रक्रिया को व्यवहार परिमार्जन या बीहेवियर मोडिफिकेशन कहा जाता है। इनमें निम्न तकनीकें शामिल हैं -

विभेदी पुनर्बलन

इस प्रविधि में धनात्मक या अपेक्षित या समायोजित व्यवहार को तो पुरस्कार दिया जाता है एवं ऋणात्मक या अनपेक्षित या वह व्यवहार जिसका परिमार्जन करना है, बदलना है उसके दर्शाए जाने पर कोई पुरस्कार या पुनर्बलन नहीं दिया जाता है। इस प्रक्रिया को विभेदी पुनर्बलन कहते हैं।

टोकन इकोनामी

इस प्रविधि में व्यक्ति के अपेक्षित या समायोजित व्यवहार दर्शाए जाने पर उसे कुछ संकेत या टोकन दिये जाते हैं। बाद में व्यक्ति इन टोकन के बदले कुछ धनात्मक पुनर्बलन प्राप्त करता है। इसके विपरीत असमायोजित, अवांछित व्यवहार दर्शाए जाने पर कोई टोकन प्राप्त नहीं होते। इस प्रकार व्यक्ति टोकन प्राप्त करने के लिये अपेक्षित व्यवहार दर्शाता है। जैसे बच्चे को दो घण्टे पढ़ने के बाद टेलीविजन पर उसकी पसंद का कार्यक्रम देखने हेतु टोकन दिया जाए तो ये टोकन इकोनामी का उदाहरण है।

इस प्रकार स्किनर के सिद्धान्त के वास्तविक परिस्थितियों में कई अनुप्रयोग किये जाते हैं। इसीलिये स्किनर का सिद्धान्त एक उपयोगी सिद्धान्त साबित हुआ है। हालांकि कुछ आलोचकों ने स्किनर के कुछ संप्रत्ययों की आलोचना की है जैसे प्राणी को एक रिक्त जीव कहना जबकि प्राणी अपनी कई आन्तरिक इच्छाओं, प्रेरणाओं, संवेगों द्वारा नियन्त्रित होता है।

6.4.6 अभ्यास प्रश्न

1. प्रत्येक पांचवी अनुक्रिया को पुनर्बलन देना किस प्रकार की पुनर्बलन अनुसूची का उदाहरण है ?
2. प्रतिवादी व्यवहार की प्रकृति किस प्रकार की होती है - ऐच्छिक या अनैच्छिक

6.5 मैस्लो का आवश्यकता पदानुक्रम सिद्धान्त

अब्राहम मैस्लो मनोविज्ञान की मानवतावादी विचारधारा के आध्यात्मिक जनक माने गए हैं। इस विचारधारा में मनोविश्लेषणवाद एवं व्यवहारवाद दोनों ही विचारधाराओं की आलोचना की गई है।

6.5.1 पदानुक्रम मॉडल

मैस्लो के व्यक्तित्व सिद्धान्त का सबसे महत्वपूर्ण पहलू उनका अभिप्रेरण सिद्धान्त है। मैस्लोमानते थे कि अधिकांश मानव व्यवहार किसी न किसी लक्ष्य पर पहुंचने की दृष्टि से निर्देशित होते हैं। उन्होंने मानव अभिप्रेरणों को जन्मजात बताया एवं कहा कि इन्हें प्राथमिकता या शक्ति के आधार पर एक क्रम में व्यवस्थित किया जा सकता है।

शारीरिक या दैहिक आवश्यकता

सुरक्षा की आवश्यकता

सम्बद्धता एवं स्नेह की आवश्यकता

सम्मान की आवश्यकता

आत्म सिद्धि की आवश्यकता

इस क्रम के आधार पर यह स्पष्ट है कि व्यक्ति सबसे पहले शारीरिक या दैहिक आवश्यकता पूर्ण करता है एवं आत्मसिद्धि की आवश्यकता को सबसे अन्त में।

इनमें से प्रथम दो आवश्यकताओं को निचले स्तर की आवश्यकता कहा जाता है एवं अन्तिम तीन को उच्च स्तरीय आवश्यकता कहा जाता है। इस मॉडल की प्रमुख बात ये है कि मॉडल के किसी भी स्तर की आवश्यकता को उत्पन्न होने के लिये आवश्यक है कि उससे नीचे वाले स्तर की आवश्यकता की संतुष्टि पूर्णतः नहीं तो अंशतः अवश्य हो जाये।

दैहिक या शारीरिक आवश्यकता: इसमें भोजन, पानी, नींद, यौन आदि आवश्यकताएं शामिल हैं। जब व्यक्ति इन जैविक आवश्यकताओं की संतुष्टि नहीं कर पाता है तो वह अन्य उच्च स्तरीय आवश्यकताओं की संतुष्टि की बात तो सोचता ही नहीं है। जैसे यदि व्यक्ति भूख प्यास से तड़प रहा हो तो वह सुरक्षा, आत्म सम्मान के बारे में नहीं सोचता है।

सुरक्षा की आवश्यकता: इसमें शारीरिक सुरक्षा, स्थिरता, निर्भरता, बचाव, डर चिन्ता आदि से मुक्ति आदि शामिल हैं। नियम कानून बनाये रखना, विशेष क्रम बनाए रखना भी इसी में शामिल है।

संबद्धता एवं स्नेह की आवश्यकता: जब व्यक्ति की जैविक आवश्यकता एवं सुरक्षा आवश्यकता की पूर्ति बहुत हद तक हो जाती है तो उसमें सम्बद्धता एवं स्नेह की आवश्यकता उत्पन्न होती है। सम्बद्धता का तात्पर्य अपने परिवार तथा समाज में एक प्रतिष्ठित स्थान पाने की इच्छा से तथा किसी समूह की सदस्यता प्राप्त करने, अन्य व्यक्तियों से अच्छे सम्बन्ध बनाए रखने की इच्छा से होता है। स्नेह की आवश्यकता का तात्पर्य दूसरों से स्नेह प्राप्त करने और उन्हें स्नेह देने से होता है।

सम्मान की आवश्यकता: इसमें मैस्लोने दो प्रकार की आवश्यकताओं को सम्मिलित किया है। पहली आत्म सम्मान की आवश्यकता एवं दूसरी अन्य व्यक्तियों से सम्मान प्राप्त करने की आवश्यकता। आत्म सम्मान की आवश्यकता में व्यक्तिगत वृद्धि, आत्म विश्वास, उपलब्धि, स्वतन्त्रता प्राप्त करने की इच्छा शामिल है। दूसरों से सम्मान पाने की इच्छा में अन्य व्यक्तियों से सम्मान के साथ साथ स्वयं की पहचान बनाने, प्रशंसा प्राप्त करने, लोगों का ध्यान खींचने एवं उनसे स्वीकृति प्राप्त करना आदि शामिल होता है।

आत्म सिद्धि की आवश्यकता: जब पदानुक्रम में नीचे की चारों आवश्यकताओं की पूर्ति हो जाती है तो आत्म सिद्धि की आवश्यकता की ओर व्यक्ति प्रयास करता है। आत्म सिद्धि एक ऐसी अवस्था है जिसमें व्यक्ति स्वयं की योग्यताओं, क्षमताओं से पूर्णतः परिचित होता है एवं उसके अनुरूप स्वयं को विकसित करना चाहता है। अर्थात् अपनी क्षमताओं के अनुसार स्व विकास करना ही आत्म सिद्धि है। आत्म सिद्धि की आवश्यकता पांचों आवश्यकताओं में से सबसे कम प्रबल है। इसीलिये यह अन्य आवश्यकताओं से दब जाती है।

6.5.2 अन्य आवश्यकताएं

पदानुक्रम मॉडल की इन पांच आवश्यकताओं के अतिरिक्त भी मैस्लोने कुछ आवश्यकताएं बताई जो निम्न हैं -

संज्ञानात्मक आवश्यकता: यह आवश्यकताएं सूचनात्मक होती हैं जैसे कि जानने की आवश्यकता तथा समझने की आवश्यकता। संज्ञानात्मक आवश्यकता का महत्व इसलिये भी है कि इन आवश्यकताओं के बाधित होने से पदानुक्रम मॉडल की पांचों आवश्यकताओं की संतुष्टि नहीं हो पाती। जैसे जैविक आवश्यकताओं में भोजन की आवश्यकता की संतुष्टि के लिये यह आवश्यक है कि व्यक्ति यह जाने की भोजन कहां मिल सकता है ?

स्नायुविकृत आवश्यकताएं/न्यूरोटिक आवश्यकताएं: जब व्यक्ति की मूल आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं हो पाती तो व्यक्ति में विकृति, निष्क्रियता आदि बनी रहती है। इन्हें स्नायुविकृत आवश्यकताएं कहा जाता है। जैसे यदि व्यक्ति की सम्बद्धता एवं स्नेह की आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं हो तो व्यक्ति आक्रामक व्यवहार प्रदर्शित करता है, यह न्यूरोटिक आवश्यकता का ही उदाहरण है।

न्यूनता अभिप्रेरक: इन्हें डी-आवश्यकताएं भी कहा जाता है क्योंकि इसमें शरीर में किसी चीज की कमी/डेफिशिएंसी/डेफिसिट हो जाती है। यह आवश्यकताएं पदानुक्रम मॉडल की निम्न स्तरीय आवश्यकताओं यानी पहली दो आवश्यकताएं शारीरिक या दैहिक आवश्यकताएं एवं सुरक्षा की आवश्यकताओं के समान है।

वर्धन अभिप्रेरक: इन्हें बी-आवश्यकताएं भी कहा जाता है। यहां बी का अर्थ बींग होता है क्योंकि इसमें व्यक्ति कुछ बनना चाहता है, स्वयं का विकास करना चाहता है। यह एक उच्च स्तरीय आवश्यकता है। इन्हें मेटा आवश्यकताएं या सत्व अभिप्रेरक भी कहा जाता है। बी अभिप्रेरक की उत्पत्ति व्यक्ति में तब होती है जब डी-आवश्यकताओं की पूर्ति हो जाए। इस तरह की आवश्यकताएं आत्म सिद्धि व्यक्तियों को प्रेरित करती है। मैस्लोने 18 प्रकार की मेटा आवश्यकताएं बताईं जो इस प्रकार हैं - सच्चाई, अच्छाई, अनोखापन, पूर्णता, अनिवार्यता, संपूर्णता, न्याय, क्रम, सरलता, विस्तृतता, प्रयासशीलता, विनोदशीलता, आत्म पर्याप्तता एवं अर्थपूर्णता। मैस्लोने यह भी बताया कि इन सभी मेटा आवश्यकताओं का कोई पदानुक्रम नहीं होता और इन्हें एक दूसरे से प्रतिस्थापित किया जा सकता है।

6.5.3 आत्म सिद्धि व्यक्ति की विशेषताएं

मैस्लो के सिद्धान्त की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि यह सिद्धान्त मानसिक रूप से स्वस्थ व्यक्तियों पर किये गये अध्ययनों पर आधारित है। मैस्लोने आत्म सिद्धि व्यक्तियों का अध्ययन करके उनकी निम्न विशेषताएं बताईं हैं।

ऐसे लोग समस्या केन्द्रित होते हैं न कि आत्म केन्द्रित। ऐसे लोगों में सरलता, स्वाभाविकता तथा सहजता के गुण होते हैं। ये स्वतंत्रता एवं स्वायत्तता को पसंद करते हैं। इनमें अनासक्ति या डिटेचमेंट का भाव होता है, ये गोपनीयता को पसंद करते हैं। घटनाओं को देखने का नवीनतम दृष्टिकोण होता है। इन लोगों में कुछ विशेष अलौकिक शक्ति एवं अनुभूतियां होती हैं जिनसे व्यक्ति स्वयं को काफी साहसी, आश्वस्त एवं निर्णायक समझता है। ऐसे अनुभवों को मैस्लोने शीर्ष अनुभव या पीक एक्सपीरियंस नाम दिया। इनमें सामाजिक अभिरूचि की प्रधानता होती है। ऐसे लोगों अनेक लोगों के साथ सतही सम्बन्ध बनाए रखने के स्थान पर कुछ लोगों के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध बनाए रखते हैं। साधन एवं साध्य में स्पष्ट अन्तर करते हैं। सृजनशील होते हैं, संस्कृति के प्रति अनुरूपता नहीं दिखाते हैं अर्थात् सामाजिक मानकों को हुबहु नहीं मानते हैं। इनका प्रत्यक्ष वास्तविक होता है अर्थात् पूर्वाग्रही नहीं होते हवाई किले नहीं बनाते।

निष्कर्षतः मैस्लोके सिद्धान्त के बारे में कहा जा सकता है कि उन्होंने प्रथम बार व्यक्ति के व्यवहारों को आशावादी एवं मानवतावादी दृष्टिकोण से समझते हुए वर्णन किया। हालांकि कुछ आलोचकों ने यह भी कहा है कि एक समय में एक स्तर की आवश्यकता व्यक्ति में क्रियाशील न होकर एक से अधिक स्तरों की आवश्यकताएं भी साथ साथ क्रियाशील हो सकती हैं। अर्थात् व्यक्ति दो पदानुक्रम में अलग अलग स्तर की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये भी एक ही समय पर प्रयास कर सकता है। इन आलोचना के बाद भी यह एक अत्यन्त उपयोगी सिद्धान्त साबित हुआ है। सुल्ज के अनुसार इस सिद्धान्त की उपयोगिता मनोचिकित्सा, शिक्षा, चिकित्सा तथा संगठन एवं प्रबन्धन में काफी अधिक है।

6.5.4 अभ्यास प्रश्न

1. मैस्लोद्वारा सुझाई गई निम्न स्तरीय आवश्यकताएं कौनसी हैं ?

2. संज्ञानात्मक आवश्यकताएं कौनसी होती है ?
3. मैस्लोके मॉडल में शीर्षस्थ आवश्यकता कौनसी है ?

6.6 रोजर्स का व्यक्तित्व सिद्धान्त

कार्ल रोजर्स मनोविज्ञान के मानवतावादी विचारधारा से सम्बन्ध रखते हैं। अब्राहम मास्लो के साथ साथ रोजर्स ने भी इस विचारधारा को बलवती करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। रोजर्स द्वारा प्रतिपादित व्यक्तित्व सिद्धान्त को आत्म सिद्धान्त या व्यक्ति-केन्द्रित सिद्धान्त कहा जाता है। रोजर्स का सिद्धान्त उनके द्वारा प्रतिपादित क्लायंट केन्द्रित मनोचिकित्सा पर आधारित है।

6.6.1 मुख्य संप्रत्यय

रोजर्स के सिद्धान्त में व्यक्तित्व के निम्न दो पहलुओं पर विशेष बल डाला गया है।

6.6.1.1 प्राणी

रोजर्स के अनुसार प्राणी एक दैहिक जीव है जो शारीरिक एवं मनोवैज्ञानिक दोनों ही तरह से कार्य करता है। इसमें प्रासंगिक क्षेत्र एवं आत्मन् दोनों सम्मिलित होते हैं। रोजर्स के अनुसार सभी तरह की चेतन एवं अचेतन अनुभूतियों के योग से जिस क्षेत्र का निर्माण होता है, उसे प्रासंगिक क्षेत्र कहते हैं। मानव व्यवहार इसी के कारण होता है। प्रासंगिक क्षेत्र के बारे में स्वयं व्यक्ति ही सही सही जानता है।

6.6.1.2 आत्मन

रोजर्स के सिद्धान्त का सबसे महत्वपूर्ण संप्रत्यय है। अनुभव के आधार पर धीरे धीरे प्रासंगिक क्षेत्र का एक भाग विशिष्ट हो जाता है। इसे रोजर्स ने आत्मन की संज्ञा दी है। इसका विकास शैशवावस्था में होता है। आत्मन के रोजर्स ने दो उपतंत्र बताए।

6.6.1.3 आत्म संप्रत्यय

इससे तात्पर्य व्यक्ति के उन सभी पहलुओं एवं अनुभूतियों से होता है जिससे व्यक्ति अवगत होता है। हालांकि यह प्रत्यक्षण हमेशा सही नहीं होता। जो अनुभूतियां व्यक्ति के आत्म संप्रत्यय के साथ असंगत होती हैं, उसे व्यक्ति स्वीकार नहीं करता है। और यदि स्वीकार करता भी है तो विकृत रूप में।

6.6.1.4 आदर्श आत्मन

इसका अभिप्राय स्वयं के बारे में विकसित ऐसी छवि से होता है जिसे व्यक्ति आदर्श मानता है। अर्थात् आदर्श आत्मन में प्रायः वे गुण होते हैं जो धनात्मक होते हैं। रोजर्स के अनुसार एक सामान्य व्यक्तित्व में आदर्श आत्मन एवं प्रत्यक्षीकृत आत्मन में अन्तर नहीं होता। परन्तु जब इन दोनों में अन्तर हो जाता है तो अस्वस्थ व्यक्तित्व का विकास होता है।

6.6.2 व्यक्तित्व की आवश्यकताएं

रोजर्स का मत है कि व्यक्तित्व की दो मुख्य आवश्यकताएं होती हैं जिनसे उनका व्यवहार लक्ष्य की ओर निर्देशित होता है।

अनुरक्षण आवश्यकता

इस आवश्यकता के माध्यम से व्यक्ति स्वयं को ठीक ढंग से अनुरक्षण या मेन्टेन करता है। जैसे भोजन, पानी, हवा, सुरक्षा की आवश्यकता।

संवृद्धि आवश्यकता

व्यक्ति में स्वयं को विकसित करने तथा पहले से और भी अधिक उन्नत बनाने की प्रेरणा होती है। इसे संवृद्धि आवश्यकता कहा जाता है। यदि व्यक्ति उन चीजों को सीखता है जिससे तुरन्त पुरस्कार नहीं मिलता तो ये संवृद्धि आवश्यकता का उदाहरण है।

रोजर्स ने वस्तुवादी प्रकृति के व्यक्तियों को समझाते हुए कहा कि इसमें प्राणी स्वयं में सभी तरह की क्षमताओं को विकसित करने का प्रयास करता है। इस प्रकार के व्यक्तियों में दो तरह की आवश्यकताएं प्रमुख होती हैं।

स्वीकारात्मक सम्मान

इससे तात्पर्य दूसरों द्वारा स्वीकार किये जाने, दूसरों का स्नेह पाने एवं उनके द्वारा पसंद किये जाने की इच्छा से होता है। दूसरों से सम्मान मिलने पर संतुष्टि एवं सम्मान नहीं मिलने पर असंतुष्टि होती है। रोजर्स के अनुसार स्वीकारात्मक सम्मान दो प्रकार का होता है - शर्तपूर्ण एवं शर्तहीन। शर्तपूर्ण सम्मान में दूसरों का स्नेह प्राप्त करने के लिये किसी निश्चित मानदण्डों के अनुसार व्यवहार करना होता है। बच्चों को इस प्रकार शर्त रखकर सम्मान देना उनके मानसिक स्वास्थ्य के लिये हानिकारक होता है और ऐसे बच्चे फुली फंक्शनिंग या पूर्णरूपेण सफल व्यक्ति बनने से रह जाते हैं। शर्तहीन सम्मान में दूसरों का स्नेह, प्यार एवं मान सम्मान बिना किसी शर्त के मिलता है। इस तरह के सम्मान में बच्चे फुली फंक्शनिंग व्यक्ति बनने की ओर अग्रसर होते हैं।

आत्म सम्मान

व्यक्ति को स्वयं को सम्मान एवं स्नेह देने की आवश्यकता होती है। जब व्यक्ति को महत्वपूर्ण व्यक्तियों से मान सम्मान

6.6.3 पूर्णरूपेण सफल व्यक्ति/फुली फंक्शनिंग पर्सन

रोजर्स ने पूर्णरूपेण सफल व्यक्ति फुली फंक्शनिंग व्यक्ति के निम्न गुण बताए-

ऐसे व्यक्ति अपनी अनुभूतियों की अभिव्यक्ति स्पष्ट शब्दों में करते हैं। वे इन अनुभूतियों का दमन नहीं करते।

ऐसे व्यक्ति जीवन के प्रत्येक क्षण का अर्थपूर्ण ढंग से करते हैं। इसे रोजर्स ने 'अस्तित्वात्मक रहन सहन' कहा। ऐसे व्यक्ति जीवन के प्रत्येक क्षण में एक नया अनुभव प्राप्त करते हैं।

ऐसे व्यक्तियों में आनुभाविक स्वतंत्रता होती है, कोई भी कार्य करने को स्वतंत्र होते हैं एवं प्रत्येक व्यवहार एवं उसके परिणाम के लिये स्वयं ही जिम्मेदार होते हैं। सामाजिक मानकों द्वारा कम निर्देशित होते हैं।

इनमें सृजनात्मकता का गुण होता है। अपना समय रचनात्मक गतिविधियों में व्यतीत करते हैं।

इस प्रकार रोजर्स के सिद्धान्त में वर्णित विचारों के विवेकपूर्ण एवं स्वीकारात्मक होने के कारण इसे स्वीकार किया गया है।

6.6.4 अभ्यास प्रश्न

1. अनुरक्षण आवश्यकता का एक उदाहरण दें ?
2. कार्ल रोजर्स के सिद्धान्त का क्या नाम है ?

6.7 सारांश

अल्फ्रेड एडलर, एरिक फ्रोम एवं केरेन हार्नी ने व्यक्ति में जैविक कारकों के स्थान पर व्यक्ति पर पड़ने वाले सामाजिक प्रभावों को भी अपने सिद्धान्तों में शामिल किया। एडलर ने व्यक्तिगत मनोविज्ञान के नाम से मनोविज्ञान में अलग विचारधारा स्थापित की। बेन्दुरा का सामाजिक संज्ञानात्मक सिद्धान्त मुख्यतः व्यक्तित्व की व्यवहारवादी विचारधारा पर आधारित है जिसमें अधिगम के सिद्धान्तों को काफी महत्व दिया गया है। व्यवहारवादी विचारधारा व्यक्तित्व के बाहरी पक्षों अर्थात् बाहर से स्पष्ट रूप से देखे जा सकने वाले व्यवहार पर ही ध्यान केन्द्रित करती है। इस विचारधारा में आन्तरिक पक्षों अचेतन आदि के महत्व को नकार दिया गया है।

6.8 शब्दावली

- जन्म क्रम - संतान का जन्म में क्रम यानी पहले नंबर पर हुई संतान दूसरी संतान, तीसरी संतान या अकेली संतान।
- रक्षा युक्तियां - चिन्ता से मुक्त होने के लिये व्यक्ति द्वारा उपयोग में लिये गए विभिन्न प्रकार के बहाने
- प्रेक्षणात्मक अधिगम - अन्य व्यक्तियों के व्यवहारों को देखकर सीखा गया व्यवहार

6.9 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

अभ्यास प्रश्न 1.3.4

1. घण्टी
2. ट्रेस

अभ्यास प्रश्न 1.4.6

1. निश्चित अनुपात अनुसूची
2. अनैच्छिक
3. चार प्रकार

अभ्यास प्रश्न 6.5.4

1. भोजन एवं सुरक्षा की आवश्यकता
2. जानने, समझने, सुचना प्राप्त करने की आवश्यकता
3. आत्म सिद्धि की आवश्यकता

अभ्यास प्रश्न 6.6.4

1. भोजन-पानी की आवश्यकता

2. व्यक्ति केन्द्रित सिद्धान्त

6.10 संदर्भ ग्रन्थ

- हॉल, केल्विन एस एवं लिंडजे गार्डनर (1970) 'थियोरीज ऑफ पर्सनालिटी' सेकण्ड एडिशन, जॉन विले एण्ड सन्स, न्यूयार्क
 - सिंह, अरूण कुमार (2002) उच्चतर सामान्य मनोविज्ञान, मोतीलाल बनारसीदास पब्लिकेशंस
 - बेरॉन , रॉबर्ट (2001) साइकोलोजी, मेकग्रा हिल पब्लिकेशन्स
-

6.11 निबन्धात्मक प्रश्न

1. पावलोव के क्लासिकी अनुबन्धन के प्रयोग को समझाईये।
2. विभिन्न प्रकार की पुनर्बलन अनुसूचियों को समझाईये।
3. क्रियाप्रसूत एवं प्रतिवादी व्यवहार में उदाहरण सहित अन्तर समझाईये।
4. मैस्लो के पदानुक्रम मॉडल का वर्णन करें।
5. आत्म सिद्ध व्यक्ति की विशेषताएं लिखिए।
6. रोजर्स के व्यक्तित्व सिद्धान्त का वर्णन करें।
7. फुली फंक्शनिंग परसन/पूर्णरूपेण सफल व्यक्तियों के क्या गुण होते हैं ?

इकाई 7

मिलर एवं डोलार्ड का व्यक्तित्व सिद्धान्त

Dollard and Miller theory of personality

इकाई की रूपरेखा

- 7.1 प्रस्तावना
- 7.2 उद्देश्य
- 7.3 मिलर एवं डोलार्ड का व्यक्तित्व सिद्धान्त
 - 7.3.1 सीखने के मूल तत्त्व
 - 7.3.1.1 प्रणोद
 - 7.3.1.2 संकेत
 - 7.3.1.3 अनुक्रिया
 - 7.3.1.4 पुनर्बलन
 - 7.3.2 अधिगम के अन्य संप्रत्यय
 - 7.3.3 अनुकरण या इमीटेशन
 - 7.3.4 अर्न्तद्वन्द्व
 - 7.3.4.1 एप्रोच-एप्रोच अर्न्तद्वन्द्व
 - 7.3.4.2 अवोइडेंस-अवोइडेंस अर्न्तद्वन्द्व
 - 7.3.4.3 एप्रोच-अवोइडेंस अर्न्तद्वन्द्व
 - 7.3.4.4 डबल/मल्टीपल एप्रोच एवोइडेंस अर्न्तद्वन्द्व:
 - 7.3.5 मनोविश्लेषक पहलू: व्यक्तित्व की असामान्यता
 - 7.3.6 मिलर एवं डोलार्ड के सिद्धान्त का मूल्यांकन
 - 7.3.7 अभ्यास प्रश्न
- 7.4 सारांश
- 7.5 शब्दावली
- 7.6 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
- 7.7 संदर्भ ग्रन्थ सूची
- 7.8 निबंधात्मक प्रश्न

7.1 प्रस्तावना

मिलर एवं डोलार्ड का सिद्धान्त एक अन्तरशास्त्रीय उपागम है जिसमें एक मनोवैज्ञानिक नील मिलर एवं एक समाजशास्त्री जॉन डोलार्ड के विचारों का संगम है। यह सिद्धान्त अधिगम सिद्धान्तों, मनोविश्लेषणात्मक सिद्धान्तों तथा व्यवहार को समझने में अंतर्दृष्टि तीनों का समावेश किया गया है। इस सिद्धान्त में उद्दीपक एवं अनुक्रिया के मध्य स्थापित सम्बन्ध या साहचर्य पर अधिक बल डाला गया है। इसी कारण इसे उद्दीपक-अनुक्रिया सिद्धान्त भी कहा जाता है।

7.2 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप

- मिलर एवं डोलार्ड के व्यक्तित्व सिद्धान्त को समझ सकेंगे
 - मिलर एवं डोलार्ड द्वारा सुझाए गए सीखने के मूल तत्त्वों को समझ सकेंगे।
 - विभिन्न प्रकार के अन्तर्द्वन्द्वों को समझ सकेंगे।
 - इमीटेशन या अनुकरण के बारे में जान पाएंगे।
-

7.3 मिलर एवं डोलार्ड का व्यक्तित्व सिद्धान्त

7.3.1 सीखने के मूल तत्त्व

मिलर एवं डोलार्ड का मत है कि अधिकतर मानव व्यवहार अर्जित होते हैं अर्थात् व्यक्ति अपने जीवनकाल में सीखता है। सीखने को अधिगम भी कहा जाता है। प्रत्येक अधिगम में निम्न चार मूल तत्त्व शामिल होते हैं - प्रणोद, संकेत, अनुक्रिया, पुनर्बलन।

7.3.1.1 प्रणोद

प्रणोद से तात्पर्य किसी ऐसी शक्तिशाली उद्दीपन से है जो व्यक्ति को कोई क्रिया करने हेतु प्रेरित करता है। उद्दीपक जितना शक्तिशाली होगा, प्रणोद भी उतना ही शक्तिशाली बनेगा। जितना प्रणोद मजबूत होगा, प्राणी में उतना ही सतत व्यवहार की प्रवृत्ति उत्पन्न होगी। कुछ प्रणोद जन्मजात होते हैं जैसे भूख, प्यास आदि। लेकिन कुछ प्रणोद व्यक्ति अपने जीवन काल में सीखता है जैसे धन के महत्व को व्यक्ति अपने जीवनकाल में ही जानता है। जन्म के समय एवं उसके बाद धन के बारे में उसमें समझ विकसित होने तक उसके लिये धन का कोई मूल्य नहीं होता।

7.3.1.2 संकेत

इसका तात्पर्य ऐसे उद्दीपक से होता है जो यह बतलाता है कि कब, कहां तथा कैसे व्यक्ति द्वारा अनुक्रियाएं की जाती हैं। संकेत तीव्र या कमजोर हो सकता है। इसी प्रकार संकेत श्रव्य या चाक्षुष आदि प्रकार का भी हो सकता है। उदाहरण के लिये किसी लड़की को एक पुस्तक ढूँढने हेतु कहा जाए तो उसको शाब्दिक या श्रव्य संकेत मिले जिसके आधार पर उसने किताब ढूँढने की अनुक्रिया की।

7.3.1.3 अनुक्रिया

यह प्रणोद एवं संकेत के परिणामस्वरूप व्यक्ति द्वारा किया गया व्यवहार है। जैसे निर्देश दिये जाने पर लड़की ने किताब को अलग छंट कर उठाया | यह अनुक्रिया का उदाहरण है।

7.3.1.4 पुनर्बलन

यह ऐसी घटना है जो संकेत और अनुक्रिया के मध्य सम्बन्ध को मजबूत करता है जिससे इस अनुक्रिया की पुनरावृत्ति होने की संभावनाएँ बढ़ जाती हैं। मिलर एवं डोलार्ड के अनुसार अधिगम होने के लिये पुनर्बलन का होना आवश्यक है। पुनर्बलन को इस सिद्धान्त में प्रणोद में कमी के आधार पर परिभाषित किया गया। यदि किसी घटना से या किसी वस्तु के दिये जाने से प्राणी के प्रणोद में कमी हो जाती है तो यह पुनर्बलन का कार्य करती है, एवं अनुक्रिया को दोहराये जाने की संभावनाओं को बढ़ाती है।

7.3.2 अधिगम के अन्य संप्रत्यय

मिलर एवं डोलार्ड ने अपने सिद्धान्त में सीखने के कुछ अन्य संप्रत्ययों की भी व्याख्या की है। जब सीखी गई अनुक्रिया के लिये कुछ समय पुनर्बलन या पुरस्कार नहीं दिया जाए, तो सीखा गया व्यवहार या अनुक्रिया को करना बन्द कर दिया जाता है। इसे प्रयोगात्मक विलोपन कहा जाता है। इसके लिये सीखी गई अनुक्रिया या आदत जितनी मजबूत है, विलोपन उतना ही देर से होगा।

इसी प्रकार जब कोई विलोपित अनुक्रिया कुछ समय बाद अचानक बिना किसी पुनर्बलन के पुनः घटित हो जाती है तो इसे स्वतः पुनर्लाभ कहा जाता है। दो उद्दीपक में कुछ समानता होने पर एक उद्दीपक के प्रति किया गया व्यवहार दूसरे उद्दीपक के प्रति भी कर दिया जाता है, इसे सामान्यीकरण कहते हैं। इसी प्रकार दो उद्दीपकों में कुछ समानता होने पर भी व्यक्ति उनके बीच में असमानताओं का प्रत्यक्षीकरण कर उनमें विभेदन कर लेता है। इसे विभेदन कहते हैं।

मिलर एवं डोलार्ड ने अपने सिद्धान्त में संकेत द्वारा उत्पन्न अनुक्रिया का भी उदाहरण दिया है। उन्होंने कहा कि अचानक हमें किसी ग्रासरी स्टोर को देखकर घर पर कुछ सामान खरीद कर ले जाना है, यह याद आ जाता है। इसे संकेत द्वारा उत्पन्न अनुक्रिया कहते हैं।

7.3.3 अनुकरण या इमीटेशन

मिलर एवं डोलार्ड ने अपने सिद्धान्त में अनुकरण या इमीटेशन की व्याख्या भी की। अनुकरण या इमीटेशन किसी दूसरे व्यक्ति के व्यवहार को देखकर उससे उस व्यवहार को सीखना एवं उसे स्वयं प्रदर्शित करना शामिल है।

इसके तीन प्रकार बताए गए -

समान व्यवहार

इसमें दूसरों के समान व्यवहार करने की प्रवृत्ति होती है। जैसे बच्चों में स्कूल में घण्टी के बजने पर कक्षा से बच्चों का बाहर निकलना इसका उदाहरण है।

नकल उतारने वाला व्यवहार

इसमें व्यक्ति किसी व्यक्ति का निरीक्षण करता है, उसके व्यवहार को मन ही मन दोहराता हुआ उसके और अपने व्यवहार में किसी भी प्रकार की भिन्नता को दूर करता हुआ हुबहु करने का प्रयास करता है। यह व्यक्ति किसी उद्देश्य से सचेत रूप से करता है।

समेल आधारित व्यवहार

इस प्रकार में छोटे भाई द्वारा बड़े भाई के व्यवहार को देखकर वैसा व्यवहार दोहराने की प्रवृत्ति शामिल है। अर्थात् दोनों व्यक्तियों में सामाजिक समानता होती है।

7.3.4 अर्न्तद्वन्द्व

मिलर एवं डोलार्ड के अनुसार यदि किसी व्यक्ति किसी एक ही समय में दो एक दूसरे से अलग अलग अनुक्रियाएं एक साथ करना चाहता हो तो उसमें अर्न्तद्वन्द्व या संघर्ष उत्पन्न हो जाता है। इस कारण व्यक्ति चिन्ताग्रस्त हो जाता, दुविधा में पड़ जाता है। मिलर एवं डोलार्ड ने अर्न्तद्वन्द्व के निम्न चार प्रकार बताए।

7.3.4.1 एप्रोच-एप्रोच अर्न्तद्वन्द्व

इस परिस्थिति में व्यक्ति के सामने दो धनात्मक लक्ष्य होते हैं। व्यक्ति दोनों ही धनात्मक लक्ष्यों को एप्रोच करना या प्राप्त करना चाहता है। जैसे यदि किसी व्यक्ति को अपनी बहन की शादी में भी मौजूद रहना हो, साथ ही उसकी परीक्षा भी उसे उसी दिन देनी हो तो यह एप्रोच एप्रोच अर्न्तद्वन्द्व का उदाहरण होगा।

7.3.4.2 अवोइडेंस-अवोइडेंस अर्न्तद्वन्द्व

इस परिस्थिति में व्यक्ति के सामने दो ऋणात्मक लक्ष्य होते हैं एवं व्यक्ति दोनों ही ऋणात्मक लक्ष्यों से बचना चाहता है क्योंकि दोनों ही उसके लिये हानिकारक होते हैं। इस परिस्थिति को इधर कुआं उधर खाई से समझा जा सकता है। उदाहरण के लिये कोई व्यक्ति आफिस जाने से डरता है क्योंकि उसे बाँस की डांट खानी पड़ेगी, लेकिन अगर नहीं गया तो उसके वेतन के पैसे काट लिये जाएंगे। यह अवोइडेंस अर्न्तद्वन्द्व का उदाहरण है।

7.3.4.3 एप्रोच-अवोइडेंस अर्न्तद्वन्द्व

इस प्रकार के अर्न्तद्वन्द्व में व्यक्ति के सामने दो लक्ष्य नहीं होते, बल्कि एक ही लक्ष्य होता है। व्यक्ति इस तरह के लक्ष्य से बचना भी चाहता है, एवं इस लक्ष्य को प्राप्त भी करना चाहता है। इस प्रकार का अर्न्तद्वन्द्व को दूँ करना अत्यन्त कठिन होता है।

7.3.4.4 डबल/मल्टीपल एप्रोच एवोइडेंस अर्न्तद्वन्द्व

ऐसा तब होता है जब कभी व्यक्ति को दो या दो से अधिक धनात्मक व ऋणात्मक लक्ष्यों का एक साथ सामना करना पड़े।

7.3.5 मनोविश्लेषक पहलू: व्यक्तित्व की असामान्यता

इस सिद्धान्त में मिलर एवं डोलार्ड ने कुछ मनोविश्लेषक संप्रत्ययों का भी उपयोग करते हुए वर्णन किया है। इनके अनुसार जो प्रणोद, संकेत या अनुक्रियाएं ऐसी होती हैं, जिनके बारे में व्यक्ति अवगत नहीं हो पाता है, वे अचेतन में चले जाते हैं। इसे दमन कहा जाता है। फ्रायड के समान ही मिलर एवं डोलार्ड भी मानते थे व्यक्ति के अचेतन में लैंगिक एवं आक्रामक अनुक्रिया रहती है। दमन की मात्रा साधारण से लेकर इतनी अधिक हो सकती है कि व्यक्ति की स्मृति चली जाए। अर्थात् व्यक्ति एम्नेसिया या पूर्ण स्मृति लोप से ग्रसित हो जाए। दमन के परिणामस्वरूप व्यक्ति का चिन्तन एवं भावों की शाब्दिक अभिव्यक्ति रूक जाती है, उससे व्यक्ति स्वयं की समस्याओं के बारे में तर्कसंगत रूप से नहीं सोच पाता। इस प्रकार के मिलर एवं डोलार्ड ने मूढ़ व्यवहार या स्टुपिड व्यवहार नाम दिया।

मिलर एवं डोलार्ड के अनुसार व्यक्ति में असामान्य व्यवहार पूर्व में वर्णित विभिन्न प्रकार के अर्न्तद्वन्द्वों, अचेतन में दमित किये गये विचारों एवं पुनर्बलन नहीं मिलने के परिणामस्वरूप विकसित होता है। इस प्रकार के व्यवहार का एक बड़ा कारण बहुत अधिक भय भी माना गया है। भय की स्थिति में व्यक्ति में द्वन्द्व उत्पन्न होता है, व्यक्ति अपने लक्ष्य तक नहीं पहुंच पाता, इससे प्रणोद में कमी नहीं होती। प्रणोद के, इच्छाओं के पूर्ण न होने पर व्यक्ति में तनाव एवं चिड़चिड़ापन बना रहता है। इस परिस्थिति को मिलर एवं डोलार्ड ने दुर्दशा नाम दिया। इस परिस्थिति में व्यक्ति को नींद नहीं आती, उसे विभिन्न प्रकार के फोबिया या डर हो जाते हैं, बैचेनी रहती है, उसमें भावशून्यता आ जाती है। धीरे धीरे व्यक्ति में विवेक एवं अविवेक में अन्तर करने की क्षमता समाप्त हो जाती है जिसे मूढ़ता या स्टूपिडिटी कहा गया।

मिलर एवं डोलार्ड असामान्य व्यवहार को दूर करने के लिये मनोचिकित्सा के महत्व को स्वीकार करते थे। उनके अनुसार मनोचिकित्सा में व्यक्ति को नये तरीके से समायोजन करने की क्षमता को सिखाया जाता है। यदि व्यक्ति समायोजन करना सीख लेता है तो यह असामान्य व्यवहार कम होने लगता है। इसके लिये उन्होंने फ्रायड द्वारा बताई गई विधियों को महत्वपूर्ण बताया।

7.3.6 मिलर एवं डोलार्ड के सिद्धान्त का मूल्यांकन

इस सिद्धान्त के अध्ययन के बाद इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि इस सिद्धान्त के कुछ गुण हैं तो कुछ सीमाएं भी। इसके प्रमुख गुण निम्न हैं-

यह सिद्धान्त व्यवहारवादी नियमों, मनोविश्लेषण तथा सामाजिक विज्ञानों तीनों को समेकित करने वाला सिद्धान्त है। इसके फलस्वरूप व्यक्तित्व की विस्तृत व्याख्या इसमें हुई है। अभी तक जितने व्यक्तित्व के सिद्धान्त पूर्व इकाईयों में पढ़े गए हैं, उनमें किसी ने बाहरी रूप से दिखने वाले स्पष्ट व्यवहार पर बल दिया है, जबकि किसी ने आन्तरिक कारकों, अचेतन, संज्ञानात्मक कारकों या अस्पष्ट व्यवहारों पर ही बल दिया है। जबकि यह सिद्धान्त ऐसा सिद्धान्त है जिसमें स्पष्ट एवं अस्पष्ट दोनों तरह के व्यवहारों पर बल देते हुए व्यक्तित्व का विश्लेषण किया है।

इस सिद्धान्त के संप्रत्ययों को वैज्ञानिक तरीके से परिभाषित किया गया है। इस सिद्धान्त में सामाजिक सांस्कृतिक कारकों का भी व्यक्तित्व पर प्रभाव को स्वीकार किया गया है, ऐसे कारकों की उचित व्याख्या भी की गई है। इस सिद्धान्त में वर्णित अर्न्तद्वन्द्व के प्रकार काफी उपयोगी हैं।

इस सिद्धान्त की कुछ आलोचनाएं भी की गई हैं। ऐसा कहा गया है कि यह एक अत्यन्त सरल सिद्धान्त है जिसमें मानव व्यवहार को छोटी छोटी इकाईयों में बांट कर अध्ययन पर बल डाला गया है। जबकि मनोविज्ञान में पूर्णतावाद या गेस्टाल्टवाद का समर्थन करने वालों को यह मान्य नहीं है। ऐसा माना जाता है कि प्राणी को कार्यात्मक रूप से एक समझा जाना चाहिये, न कि अलग अलग इकाईयों के रूप में। ऐसा नहीं करने पर प्राणी के जटिल व्यवहार को सही समझना, उसके व्यवहार के बारे में पूर्वकथन करना असंभव है। कुछ आलोचकों का कहना है कि इस सिद्धान्त में व्यक्तित्व की व्याख्या करने में भाषा एवं चिन्तन प्रक्रियाओं के महत्व की उपेक्षा की गई है।

इन सब आलोचनाओं के बाद भी मिलर एवं डोलार्ड का सिद्धान्त व्यक्तित्व के अर्न्तशास्त्रीय उपागम के रूप में काफी उपयोगी सिद्ध हुआ है।

7.3.7 अभ्यास प्रश्न

1. मिलर एवं डोलार्ड के व्यक्तित्व सिद्धान्त का नाम क्या है ?
2. दो धनात्मक लक्ष्यों को एक साथ प्राप्त करना किस प्रकार का अर्न्तद्वन्द्व है।
3. दूसरों के व्यवहारों को देखकर वही व्यवहार करना क्या कहलाता है?

7.4 सारांश

इस सिद्धान्त में व्यक्तित्व की व्याख्या अधिगम या सीखने के सिद्धान्तों, मनोविश्लेषणवाद के कुछ संप्रत्ययों जैसे अचेतन, भय, चिन्ता आदि के आधार पर की गई। इस प्रकार यह एक अनोखा सिद्धान्त है जिसमें स्पष्ट या बाह्य रूप से परिलक्षित व्यवहार के साथ आन्तरिक, बाहरी रूप से नहीं दिखने वाले, अस्पष्ट व्यवहार की व्याख्या व्यक्तित्व के संदर्भ में की गई है। व्यक्ति किस प्रकार भिन्न भिन्न प्रकार के अर्न्तद्वन्द्वों का सामना करता है, इसकी व्याख्या भी इस सिद्धान्त में की गई है।

7.5 शब्दावली

- अर्न्तद्वन्द्व - अनिर्णय की मनःस्थिति, जब दो या अधिक लक्ष्य एक साथ प्राप्त करने हो या उनसे बचना हो।
- उद्दीपक - वातावरण का बाहरी परिवर्तन जो प्राणी को प्रभावित करता है।
- अनुक्रिया - उद्दीपक के प्रति प्राणी द्वारा किया गया व्यवहार
- इमीटेशन - नकल उतारना या उन्हें देखकर कोई कार्य सीखना।

7.6 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

अभ्यास प्रश्न 7.3.7

1. व्यक्तित्व का उद्दीपक-अनुक्रिया सिद्धान्त
2. एप्रोच-एप्रोच अर्न्तद्वन्द्व
3. इमीटेशन या अनुकरण।

7.5 संदर्भ ग्रन्थ

- सिंह, अरूण कुमार (2002) उच्चतर सामान्य मनोविज्ञान, मोतीलाल बनारसीदास पब्लिकेशंस
- हॉल, केल्विन एस एवं लिंडजे गार्डनर (1970) 'थियोरिज ऑफ पर्सनालिटी' सेकण्ड एडिशन, जॉन विले एण्ड सन्स, न्यूयार्क
- सिंह, अरूण कुमार (2001) सामान्य मनोविज्ञान, मोतीलाल बनारसीदास पब्लिकेशंस

7.6 निबन्धात्मक प्रश्न

1. अर्न्तद्वन्द्व से आप क्या समझते हैं ? इनके प्रकारों को उदाहरण सहित समझाईये।
2. व्यक्तित्व के उद्दीपक अनुक्रिया सिद्धान्त को समझाईये।
3. मिलर एवं डोलार्ड के सिद्धान्त में मनोविश्लेषक कारकों की क्या भूमिका है ?

4. इमीटेशन क्या है ? इसके प्रकारों को समझाईये ?
5. मिलर एवं डोलार्ड के अनुसार मूढ़ व्यवहार या स्टुपिड व्यवहार को समझाईये।
6. मिलर एवं डोलार्ड के अनुसार सीखने के चार मूलतत्वों को समझाईये।
7. मिलर एवं डोलार्ड के सिद्धान्त की प्रकृति को समझाईये।

इकाई - 8

व्यक्तित्व के शीलगुण एवं प्रकार उपागम, शीलगुण एवं प्रकार उपागम में अंतर

Trait and Type theories of Personality, Difference between trait & type

इकाई की रूपरेखा

- 8.1 प्रस्तावना
- 8.2 उद्देश्य
- 8.3 व्यक्तित्व : संप्रत्यय
 - 8.3.1 परिभाषा
- 8.4 व्यक्तित्व के सैद्धान्तिक उपागम
 - 8.4.1 मनोविश्लेषणात्मक उपागम
 - 8.4.2 नवमनोविश्लेषणात्मक उपागम
 - 8.4.3 शरीरगठनात्मक (प्रकार) उपागम
 - 8.4.4 जीवन - अवधि उपागम
 - 8.4.5 शीलगुण उपागम
 - 8.4.6 विमीय उपागम
 - 8.4.7 सांवृत्तिक या मानवतावादी उपागम
 - 8.4.8 संज्ञानात्मक उपागम
 - 8.4.9 व्यवहारात्मक एवं अधिगम उपागम
 - 8.4.10 सामाजिक संज्ञानात्मक उपागम
- 8.5 प्रकार उपागम
 - 8.5.1 ऐतिहासिक प्रकार उपागम
 - 8.5.2 आधुनिक प्रकार उपागम
 - 8.5.2. (i) शारीरिक गुणों के आधार पर
 - 8.5.2 (ii) मनोवैज्ञानिक गुणों के आधार पर
- 8.6 शीलगुण उपागम
 - 8.6.1 ऐतिहासिक शीलगुण उपागम

- 8.6.2 आधुनिक शीलगुण उपागम
- 8.6.2 (i) ऑलपोर्ट का योगदान
- 8.6.2 (ii) कैटेल का योगदान
- 8.6.2 (iii) कोस्टा एवं मैकक्रे का योगदान
- 8.7 व्यक्तित्व के प्रकार आगम एवं शीलगुण उपागम के अंतर
- 8.8 सारांश
- 8.9 शब्दावली
- 8.10 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
- 8.11 संदर्भग्रंथ
- 8.12 निबंधात्मक प्रश्न

8.1 प्रस्तावना

व्यक्तित्व मनोवैज्ञानिक अध्ययनों का एक प्रमुख विषय रहा है। मनोवैज्ञानिकों ने व्यक्तित्व के अध्ययन में शुरू से ही काफी अभिरूचि दिखलाई है। व्यक्तित्व से तात्पर्य लगभग स्थिर आंतरिक कारकों से होता है। जो व्यक्ति के व्यवहार को एक परिस्थिति से दूसरी परिस्थिति में संगत रखता है तथा अन्य तुल्य परिस्थितियों में उस व्यक्ति के व्यवहार को अन्य व्यक्तियों से भिन्न भी करता है। प्रस्तुत इकाई में आप व्यक्तित्व का अर्थ, परिभाषा, व्यक्तित्व के सैद्धांतिक उपागम, प्रकार उपागम, शीलगुण उपागम एवं इनमें अंतर का विस्तारपूर्वक अध्ययन करेंगे।

8.2 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप -

- व्यक्तित्व का अर्थ बता सकेंगे।
- व्यक्तित्व के सैद्धांतिक उपागम बता सकेंगे।
- व्यक्तित्व के प्रकार उपागम जानेगें।
- व्यक्तित्व के शीलगुण उपागम जानेंगे।
- व्यक्तित्व के प्रकार एवं शीलगुण उपागम में अंतर बता सकेंगे।

8.3 व्यक्तित्व

व्यक्तित्व का अंग्रेजी अनुवाद 'Personality' है जो लैटिन शब्द परसोना (Persona) से बना है तथा जिसका अर्थ नकाब (Mask) होता है जिसे नायक (actor) नाट्य करते समय पहनते हैं। इसके अनुसार व्यक्तित्व का अर्थ बाहरी गुणों से लगाया जाता है। जिस व्यक्ति की बाहरी वेशभूषा जितनी अधिक भडकीली होगी उसका व्यक्तित्व उतना ही अधिक अच्छा समझा जाएगा। परंतु वर्तमान में यह एक

अवैज्ञानिक तथ्य समझा जाता है। एवं व्यक्तित्व की वैज्ञानिक तथ्यों के आधार पर कई नई परिभाषाएं दी गई हैं।

8.3.1. परिभाषाएं (Definitions)

- ऑलपोर्ट (1937) के अनुसार “व्यक्तित्व व्यक्ति के भीतर उन मनोशारीरिक तंत्रों का गतिशील या गत्यात्मक संगठन है जो वातावरण में उसके अपूर्व समायोजन को निर्धारित करते हैं।”
- आइजेन्क (1952) के अनुसार “व्यक्तित्व व्यक्ति के चरित्र, चित्रप्रकृति, ज्ञानशक्ति तथा शरीर गठन का करीब-करीब एक स्थायी एवं टिकाऊ संगठन है जो वातावरण में उसके अपूर्ण समायोजन का निर्धारण करता है।”
- बेरोन (1933) के अनुसार “व्यक्तियों के संवेगों, चिन्तनों तथा व्यवहारों के अनूठे एवं सापेक्ष रूप से स्थित पैटर्न के रूप में व्यक्तित्व को सामान्यतः परिभाषित किया जाता है।”
- गुथरी (1944) के अनुसार, “ व्यक्तित्व की परिभाषा सामाजिक महत्व की उन आदतों तथा आदत संस्थानों के रूप में की जा सकती है जो स्थिर तथा परिवर्तन के अवरोध वाली होती है।”
- मनु (1953) के अनुसार, “ व्यक्तित्व की परिभाषा उस अति विशेषतापूर्ण संगठन के रूप में की जा सकती है। जिसमें व्यक्ति की संरचना, व्यवहार के ढंग, रूचियां, अभिवृत्तियां, क्षमताएं, योजनाएं और अभिक्षमताएं सम्मिलित हैं।”

चाइल्ड (Child, 1968) के अनुसार, “व्यक्तित्व से तात्पर्य कमोवेश स्थायी आंतरिक कारकों से होता है जो व्यक्ति के व्यवहार को एक समय से दूसरे समय में संगत बनाता है तथा तुल्य परिस्थितियों में अन्य लोगों के व्यवहार से अलग करता है।”

वाल्टर मिस्केल (Walter Mischel. 1981) के अनुसार, “प्रायः व्यक्तित्व से तात्पर्य व्यवहार के उस विशिष्ट पैटर्न (जिसमें चिंतन एवं संवेग भी सम्मिलित हैं) से होता है जो प्रत्येक व्यक्ति के जिंदगी की परिस्थितियों साथ होने वाले समायोजन का निर्धारण करता है।”

उपरोक्त परिभाषाओं के विश्लेषण से व्यक्तित्व का अर्थ अधिक स्पष्ट हो जाता है। इसका संयुक्त विश्लेषण निम्न प्रकार है -

- 1- व्यक्तित्व एक मनोशारीरिक तंत्र है अर्थात् एक ऐसा तंत्र है जिसके मानसिक तथा शारीरिक दोनों की पक्ष होते हैं।
- 2- व्यक्तित्व में गत्यात्मक संगठन पाया जाता है। गत्यात्मक संगठन से तात्पर्य यह होता है कि मनोशारीरिक तंत्र के भिन्न-भिन्न तत्व जैसे शीलगुण, आदत, आदि एक दूसरे से इस तरह संबंधित होते हैं कि उन्हें एक दूसरे से पूर्णतः अलग नहीं किया जा सकता है। इस संगठन में परिवर्तन संभव है।
- 3- व्यक्तित्व से व्यवहार में संगतता पायी जाती है। अर्थात् व्यक्ति का व्यवहार एक समय से दूसरे समय में संगत होता है।

- 4- व्यक्तित्व के कारण ही व्यक्ति का वातावरण में अपूर्व समायोजन का निर्धारण होता है। अतः व्यक्तित्व भिन्न भिन्न शीलगुणों का ऐसा गत्यात्मक संगठन होता है जिसके कारण व्यक्ति का व्यवहार तथा विचार किसी भी वातावरण में अपने ढंग का अर्थात् अपूर्व होता है।

1. मनोशारीरिक तंत्र (Psychophysical system)-

व्यक्तित्व एक ऐसा तंत्र (system) है जिसके मानसिक (Psychophysical) तथा शारीरिक (Physical) दोनों ही पक्ष होते हैं; यह तंत्र, ऐसे तत्वों (element) का एक गठन होता है जो आपस में अंतःक्रिया (interaction) करते हैं। इस तंत्र के मुख्य तत्व शीलगुण (trait), संवेग (emotion), आदत (habit), ज्ञानशक्ति (intellect) चित्तप्रकृति (temperament), चरित्र (character), अभिप्रेरक (motive), आदि हैं जो सभी मानसिक गुण हैं परंतु इन सब का आधार शारीरिक (Physical) अर्थात् व्यक्ति के ग्रंथीय प्रक्रियाएं एवं तंत्रिकीय प्रक्रियाएं (natural processes) हैं। इसका स्पष्ट मतलब यह हुआ कि व्यक्तित्व न तो पूर्णतः मानसिक (Psychological) है और न पूर्णतः शारीरिक ही होता है। व्यक्तित्व इन दोनों तरह के पक्षों का मिश्रण है।

2. गत्यात्मक संगठन (Dynamic organisation)-

गत्यात्मक संगठन से तात्पर्य यह होता है कि मनोशारीरिक तंत्र (Psychophysical system) के भिन्न-भिन्न तत्व (element) जैसे शीलगुण (trait), आदत (habit) आदि एक-दूसरे से इस तरह संबंधित होकर संगठित हैं कि उन्हें एक-दूसरे से पूर्णतः अलग नहीं किया जा सकता है। इस संगठन में परिवर्तन (change) संभव है। यही कारण है कि इसे एक गत्यात्मक संगठन (Dynamic organisation) कहा गया है। इस तरह से गत्यात्मक संगठन से स्पष्ट मतलब यह है कि व्यक्तित्व के शीलगुण या अन्य तत्व आपस में इस तरह से संगठित होते हैं कि उनमें परिवर्तन भी होते रहते हैं। उदाहरणस्वरूप कोई व्यक्ति नौकरी पाने के लिए पहले ईमानदार (honesty), उत्तरदायी (responsible) तथा स मयनिष्ठ (punctual) हो सकता है परंतु नौकरी मिलने के कुछ वर्षों बाद उसमें उत्तरदायित्व (responsibility) तथा समयनिष्ठता (punctuality) का शीलगुण ज्यों-का-त्यों हो सकता है परंतु संभव है कि उसमें ईमानदारी का गुण बदलकर बेईमानी का गुण विकसित हो जाय। इस उदाहरण में पहले के तीन गुणों के संगठन (organisation) में नौकरी मिलने के बाद एक परिवर्तन दिखलाया गया है। ऐसा भी संभव है कि इन तीनों शीलगुणों का संगठन नौकरी मिलने के बाद पूर्णतः बदल जाय। (यानी, इसके तीनों शीलगुणों में परिवर्तन हो जाय)। शीलगुणों के संगठन में इस तरह का परिवर्तन गत्यात्मक संगठन (Dynamic organisation) का उदाहरण है। इस तरह से संगठन में विसंगठन (disorganisation) भी सम्मिलित होता है जिसके सहारे असामान्य व्यवहार (abnormal behaviour) की व्याख्या होती है। दूसरे शब्दों में, यदि किसी व्यक्ति के शीलगुणों (trait) के संगठन में इस ढंग का परिवर्तन आ जाता है कि उसका व्यवहार विसंगठित (disorganised) हो जाता है तथा जिसके फलस्वरूप वह असामान्य व्यवहार अधिक करने लग जाता है तो इसे भी एक गत्यात्मक संगठन की ही श्रेणी में रखेंगे।

3. संगतता (Consistency)-

व्यक्तित्व में व्यक्ति का व्यवहार एक समय से दूसरे समय में संगत होता है। संगतता से मतलब यह होता है कि व्यक्ति का व्यवहार दो भिन्न अवसरों पर भी लगभग एक समान होता है। इस कारक में चार्डलड की परिभाषा में प्रत्यक्ष रूप से बल डाला गया है। व्यक्ति के व्यवहार में इसी संगतता के आधार पर उसमें अमुक शीलगुण के होने का अनुमान लगाया जाता है।

4. वातावरण में अपूर्व समायोजन का निर्धारण (Determination of unique ंdjustment to environment)-

प्रत्येक व्यक्ति में मनोशारीरिक गुणों का एक ऐसा गत्यात्मक संगठन (Dynamic organisation) पाया जाता है कि उसका व्यवहार वातावरण में अपने-अपने ढंग से अपूर्व (unique) होता है। वातावरण समान होने पर भी प्रत्येक व्यक्ति का व्यवहार (behaviour), विचार (thought), होने वाला संवेग (emotion) आदि अपूर्व होता है जिसके कारण उस वातावरण के साथ समायोजन (adjust) करने का ढंग भी प्रत्येक व्यक्ति में अलग-अलग होता है। आइजेंक, आलपोर्ट (Allport), चार्डलड (child) तथा मिसकेल (Mischel) ने इस पक्ष पर समान रूप से अपनी-अपनी परिभाषाओं में बल डाला है। यही कारण है कि 1961 में आलपोर्ट (Allport) ने अपनी 1937 की परिभाषा के अंतिम पांच शब्द बदलकर इस प्रकार कर दिए (“unique adjustment to his environment) की जगह पर “characteristic behaviour and thought” को सम्मिलित किया गया। इस परिवर्तन का उद्देश्य यह बतलाना था कि व्यक्ति का व्यवहार मात्र अनुकूली (adaptive) ही नहीं होता है बल्कि कथनीय (expressive) भी होता है। इसका मतलब यह हुआ कि व्यक्ति वातावरण के साथ सिर्फ समायोजन (djustment) या अनुकूलन (adaptation) ही नहीं करता है बल्कि उस वातावरण के साथ इस तरह अंतःक्रिया (interaction) करता है कि उस वातावरण को भी व्यक्ति के साथ अनुकूलन या अभियोजन योग्य होना पड़ता है।

निष्कर्ष तौर पर यह कहा जा सकता है कि व्यक्तित्व में भिन्न-भिन्न शीलगुणों (traits) का एक ऐसा गत्यात्मक संगठन (Dynamic organisation) होता है जिसके कारण व्यक्ति का व्यवहार तथा विचार किसी भी वातावरण में अपने ढंग का अर्थात् अपूर्व (unique) होता है।

8.4 व्यक्तित्व के सैद्धान्तिक उपागम

व्यक्तित्व के स्वरूप की व्याख्या के लिए विभिन्न तरह के उपागमों के तहत कई सिद्धांतों का प्रतिपादन किया गया है। इस तरह के उपागमों को सैद्धान्तिक उपागम कहा गया है। इनका वर्णन निम्नलिखित है :-

8.4.1 मनोविश्लेषणात्मक उपागम - (Psychoanalytic Approach)

व्यक्तित्व का अध्ययन करने का सबसे पहला उपागम मनोविश्लेषणात्मक उपागम है जिसका प्रतिपादन सिगमण्ड फ्रायड (Sigmund Freud) द्वारा किया गया है। इस उपागम में मानव प्रकृति के निराशावादी तथा निश्चयवादी छवि पर बल डाला गया है। इसमें व्यक्तित्व की व्याख्या करने के लिए अचेतन की इच्छाओं, यौन एवं आक्रामकता के जैविक आधारों आरंभिक बाल्यावस्था के मानसिक संघर्षों को महत्वपूर्ण समझा गया है।

8.4.2 नवमनोविश्लेषणात्मक उपागम - (Neopsychoanalytic Approach)

इस उपागम का विकास दो श्रेणी के मनोवैज्ञानिकों द्वारा हुआ है। एक श्रेणी में वैसे मनोवैज्ञानिक हैं जो कभी पहले फ्रायड द्वारा व्यक्तित्व के कुछ विशेष पहलू पर अधिक जोर दिए जाने के कारण वे उनसे अलग हो गए इनमें एडलर तथा युंग मुख्य हैं दूसरी श्रेणी में वे मनोवैज्ञानिक हैं जो कि फ्रायड के विचारों में संशोधन कर नए विचार प्रस्तुत किए।

अतः नव मनोविश्लेषणात्मक उपागम के तहत हम छह मनोवैज्ञानिकों के विचारों को अर्थात् एडलर, युंग, हार्नी, सुल्लीभान, फ्रोम तथा मर्रे (Murray) के सिद्धांतों पर विचार करेंगे। नवमनोविश्लेषणात्मक उपागम मनोविश्लेषणात्मक उपागम से निम्नांकित दो बिंदुओं पर स्पष्ट रूप से भिन्न है-

(i) नव मनोविश्लेषणात्मक उपागम में व्यक्तित्व के सामाजिक कारकों या प्रभावों पर तुलनात्मक रूपसे अधिक बल डाला गया है जबकि मनोविश्लेषणात्मक उपागम में व्यक्तित्व के जैविक कारकों (biological factor) पर अधिक बल डाला गया है। ध्यान रहे कि नवमनोविश्लेषणात्मक उपागम में जैविक कारकों को सिर्फ गौण कारक समझा गया है न कि उसे अस्वीकृत कर दिया गया है।

(ii) नव मनोविश्लेषणात्मक उपागम में मानव प्रकृति के आषावादी छवि (वचजपउपेजपब पउंहम) पर अधिक बल डाला गया है और इसमें यह माना गया है कि व्यक्तित्व पर्यावरणी कारकों का प्रतिफल (product) अधिक होता है जबकि नोविश्लेषणात्मक उपागम में मानव प्रकृति के निराषावादी छवि पर अधिक बल डाला गया है तथा व्यक्तित्व को जन्मजात दैहिक कारकों (physiological factor) का प्रतिफल अधिक माना गया है।

8.4.3 शरीरगठनात्मक उपागम/प्रकार उपागम - (Constitutional Approach / Type Approach)

इस उपागम की विशेषता यह है कि इसमें व्यक्तित्व पैटर्न तथा विकास की व्याख्या शरीर के संगठन एवं उसके आकार प्रकार तथा उससे संबंधित चितप्रकृति के रूप में किया जाता है। इसके तहत शेल्डन तथा क्रेस्मर के सिद्धांतों को रखा जाता है।

8.4.4 जीवन अवधि उपागम - (Life span Approach)

इस उपागम की विशेषता यह है कि इसमें व्यक्तित्व की व्याख्या जन्म से मृत्यु तक व्यक्ति के व्यवहारों में होने वाले परिवर्तनों के आलोक में किया जाता है। इसके तहत इरिक इरिकसन के सिद्धांत को रखा जाता है। अन्य मनोवैज्ञानिकों ने भी व्यक्तित्व विकास में जीवन की कुछ खास-खास अवधियों न कि इरिकसन के समान संपूर्ण अवधि को ही महत्वपूर्ण माना है। जैसे- फ्राड ने जीवन के प्रथम पांच साल को महत्वपूर्ण माना है और उसके बाद फ्रायड के अनुसार व्यक्तित्व का विकास नहीं होता पाया गया है। मर्रे (Murray) का भी विचार फ्रायड के विचार के समान था। आलपोर्ट ने यह माना कि व्यक्तित्व का विकास किषोरावस्था (adolescence) तक चलता रहा है। युंग (Jung) ने यह माना कि व्यक्तित्व का विकास मध्य आयु (middle age) तक चलता रहता है तथा कैटेल ने इरिकसन के ही समान यह माना है कि व्यक्तित्व का विकास पूरे जीवन अवधि (life span) तक चलता रहता है। इसके बावजूद भी कैटेल द्वारा प्रतिपादित व्यक्तित्व के सिद्धांत को जीवन-अवधि उपागम (life span approach) के तहत इसलिए

नहीं रखा जाता है क्योंकि उन्होंने व्यक्तित्व के विकास में शीललगुणों खास कर सतही (surface) एवं स्रोत (source) शीललगुणों को अधिक महत्वपूर्ण माना है।

8.4.5 शीललगुण उपागम - (Trait Approach)

इस उपागम के अंतर्गत व्यक्तित्व की व्याख्या शीललगुणों के आधार पर की जाती है। इसके तहत ऑलपोर्ट, कैटल द्वारा प्रतिपादित व्यक्तित्व के सिद्धांतों को रखा जाता है। व्यक्तित्व के इस उपागम का उपयोग बहुत दिनों से व्यक्तित्व को समझने में इसलिए किया जाता रहा है क्योंकि यह उपागम काफी सरल है तथा सामान्य बोध (common sense) पर आधारित है। जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है, इस उपागम में व्यक्तित्व की व्याख्या व्यक्तित्व शीललगुणों (personality trait) के रूप में की जाती है। इन शीललगुणों के आधार पर इस तथ्य की व्याख्या की जाती है कि व्यक्ति अमुक व्यवहार क्यों करता है तथा उसके व्यवहार में संगति (consistency) के क्या कारण हैं। इस तरह से शीललगुण उपागम में व्यवहार के व्यक्तिगत निर्धारक (personal determinants) पर बल डाला जाता है। इस उपागम की प्रमुख मान्यता यह है कि शीललगुणों के ही कारण व्यक्ति विभिन्न परिस्थितियों में संगत ढंग से (consistently) व्यवहार करता है। परिस्थिति (situation) का प्रभाव व्यक्ति पर बहुत थोड़ा पड़ता है।

8.4.6 विमीय उपागम - (Dimensional Approach)

इस उपागम के तहत व्यक्ति की व्याख्या एक विमान कि प्रकार के रूप में की जाती है। चूंकि यहां व्यक्तित्व की व्याख्या एक विमान पर की जाती है, अतः व्यक्ति को संबंधित विमान पर उच्च या निम्न के रूप में रेट किया जाता है। जैसे बहिर्मुख्यता विमान अन्तर्मुख्यता आदि। इसके तहत आइजेन्क का सिद्धांत, कोस्टा, एवं मैकक्रे (1990) द्वारा प्रतिपादित पांच कारणीय मॉडल (Big Five Factor theory) को रखा जाता है।

8.4.7. सांवृत्तिक या मानवतावादी उपागम - (Humanistic or Phenomenological Approach)

इस उपागम के अंतर्गत व्यक्तित्व के अध्ययन में व्यक्ति के आत्मगत अनुभूतियों पर ध्यान डाला जाता है। दूसरे शब्दों में इस उपागम में यह अध्ययन किया जाता है कि व्यक्ति वातावरण को किस तरह से प्रत्यक्षित करता है। इसी प्रकार व्यवहारवादी उपागम का यह दावा है कि मानव व्यवहार सिर्फ पर्यावरणीय कारकों द्वारा ही प्रभावित होता है। इस उपागम में रोजर्स तथा मैस्लो द्वारा प्रतिपादित सिद्धांतों को रखा जाता है।

8.4.8. संज्ञानात्मक उपागम - (Cognitive Approach)

इस उपागम द्वारा व्यक्तित्व अध्ययन में इस बात पर बल डाला गया है कि व्यक्ति किन तरीकों से अपने पर्यावरण तथा अपने आप को जानता है व उनका किस तरह से प्रत्यक्षण करता है, मूल्यांकन करता है, सीखता है, सोचता है, निर्णय लेता है तथा समस्या का समाधान करता है। यह एक संज्ञानात्मक उपागम है जो मानसिक क्रियाओं पर ध्यान केन्द्रित करता है। इस उपागम में केली तथा कर्ट लेविन द्वारा प्रतिपादित सिद्धांतों को रखा जाता है। इस उपागम के द्वारा व्यक्तित्व के अध्ययन में व्यक्ति के आत्मगत अनुभूतियों (subjective experience) पर ध्यान डाला जाता है। दूसरे शब्दों में, अध्ययनकर्ता इस बात पर ध्यान देता है कि व्यक्ति वातावरण का किस तरह से प्रत्यक्षण करता है।

सचमुख्य में देखा जाय तो व्यक्तित्व अध्ययन का यह सांवृतिक उपागम (phenomenological approach) मनोविश्लेषणात्मक उपागम तथा व्यवहारवादी उपागम दोनों के प्रति एक तरह की प्रतिक्रिया (reaction) है। इस उपागम में मनोविश्लेषणात्मक उपागम के इस दावे को कि मनुष्य का व्यवहार अचेतन अभिप्रेकरकों (unconscious motivation) द्वार नियंत्रित होता है, को अस्वीकृत किया गया। ठीक उसी तरह से व्यवहारवादी उपागम का यह दावा कि मानव व्यवहार सिर्फ पर्यावरणी कारकों द्वारा प्रभावित होता है, को भी सांवृतिक उपागम में अधिक महत्व नहीं दिया गया।

8.4.9 व्यवहारपरक एवं अधिगम उपागम - (Behavioural & Learning Approach)

इस उपागम में व्यक्तित्व को उद्दीपकों के प्रति विशेषी सीखी गई अनुक्रियाओं का एक संग्रहण तथा स्पष्ट व्यवहारों या आदत तंत्रों का सेट माना गया है। अतः इस उपागम में व्यक्तित्व से तात्पर्य सिर्फ उन तथ्यों से होता है जिसे वस्तुनिष्ठ रूप से प्रेक्षण किया जाए तथा जिसमें जोड़ तोड़ किया जाए। इस उपागम के तहत स्कीनर, हल, मिलर, एवं डोलाड द्वारा प्रतिपादित व्यक्तित्व सिद्धांतों को रखा जाता है।

इस उपागम की दो प्रमुख मान्यताएं (assumption) है- पहला तो यह कि बहुत सारे व्यवहार जिनसे मिलकर व्यक्तित्व का निर्माण होता है, सीखे गये (learnt) या अनुबंधित (conditioned) होते हैं। इसका मतलब यह हुआ कि बहुत सारे ऐसे व्यवहार व्यक्ति के बाल्यावस्था में ही उत्पन्न हो जाते हैं जहां से वे ऐसे व्यवहार को सीखना प्रारंभ कर देते हैं। इन दोनों पूर्वकल्पनाओं के आलोक में यह कहा जा सकता है कि इस उपागम में व्यक्तित्व का अध्ययन करने के लिए लोगों के अर्जित या सीखे गए व्यवहारों को समझना जरूरी होता है और लोगों के अर्जित व्यवहार को समझने के लिए उनके अधिगम इतिहास (learning history) या उनके वर्तमान वातावरण या दोनों को ही समझना आवश्यक है।

8.4.10 सामाजिक संज्ञानात्मक उपागम - (Social-Cognitive Approach)

इसमें व्यक्तित्व के अध्ययन के लिए पर्यावरण या परिस्थितिजन्य कारकों के महत्व पर बल डाला जाता है। सामाजिक-संज्ञानात्मक उपागम की प्रमुख मान्यता यह है कि व्यवहार व्यक्तिगत चरों एवं पर्यावरणी चरों के सतत अन्तःक्रिया तथा उनके संज्ञान पर पडने वाले प्रभावों का परिणाम होता है। व्यक्ति और परिस्थिति एक दूसरे को परस्पर ढंग से प्रभावित करते हैं और व्यक्तित्व के व्यवहार तथा शीलगुणों को निर्धारित करते हैं। इस उपागम के तहत अलबर्ट बंडूरा, वाल्टर मिस्केल, मार्टिन सेलिंगमैन द्वारा प्रतिपादित सिद्धांतों की आलोचनात्मक व्याख्या की जाती है।

उपरोक्त व्याख्या से स्पष्ट है कि व्यक्तित्व के स्वरूप को समझने तथा उसका अध्ययन करने के लिए कई तरह के उपागम हैं। प्रत्येक उपागम के तहत विभिन्न तरह के सिद्धांतों का वर्णन भिन्न-भिन्न मनोवैज्ञानिकों द्वारा किया गया है। इन सभी प्रुख उपागमों के अतिरिक्त आजकल एक नया उपागम जिसे सीमित-क्षेत्र उपागम (limited-domain approach) कहा जाता है, का विकास हुआ है जिसमें व्यक्तित्व के मात्र एक या दो पहलुओं पर ही विस्तृत चर्चा की जाती है न कि व्यक्तित्व के संपूर्ण पहलुओं पर। उपलब्धि आवश्यकता सिद्धांत (achievement need theory) इस उपागम का एक अच्छा नमूना है।

अभ्यास प्रश्न - 1

1. व्यक्तित्व (Personality) Persona शब्द से बना है जो कि एक शब्द है।

2. व्यक्तित्व के प्रकार उपागम में तथा
..... के सिद्धांत प्रमुख है।

8.5 व्यक्तित्व के प्रकार उपागम - (Type Theories of Personality)

प्रकार सिद्धांत व्यक्तित्व का सबसे पुराना सिद्धांत है। इसके अनुसार व्यक्तित्व को भिन्न-भिन्न प्रकारों में बांटा जाता है।

मॉर्गन, किंग, विस्ज तथा स्कोपलर (1986) के अनुसार “व्यक्तित्व के प्रकार से तात्पर्य व्यक्तियों के ऐसे वर्ग से होता है जिनके गुण एक दूसरे से मिलते जुलते हैं। जैसे अर्न्तमुखी एक प्रकार है और जिन व्यक्तियों को इनमें रखा जाता है उनमें कुछ सामान्य गुण जैसे संकोच, शीलता, सामाजिक कार्यों में अरुचि, लोगों से कम बोलना आदि गुण पाए जाते हैं।

8.5.1 ऐतिहासिक प्रकार उपागम - (Historical Type Approaches)

आज से 2400 वर्ष पूर्व व्यक्तित्व के प्रकार सिद्धांतों की व्याख्या प्रारंभ हुई। सर्वप्रथम थियोफ्रेटस, जो अरस्तु के शिष्य थे ने व्यक्तित्व के प्रकार बताए जिसमें खुशामदी प्रकार (Flatterer Type) मुख्य था। इसके बाद हिप्पोक्रेटस ने 400 बीसी में एक सिद्धांत शरीर द्रव्यों के आधार पर प्रतिपादित किया उन्होंने व्यक्तित्व के चार प्रकार बताए। इनके अनुसार शरीर में चार प्रकार के द्रव्य पाए जाते हैं - पीला पित्त (Yellow Bile), काला पित्त (Black Bile), रक्त (Blood) तथा कफ या श्लेष्मा (Phlegm) जिस व्यक्ति में जिस द्रव्य की मात्रा अधिक होती है उसकी चित्तप्रकृति उसी तरह की होती है। इसकी व्याख्या निम्नलिखित है -

- 1- जिस व्यक्ति में पीले पित्त की प्रधानता होती है उस व्यक्ति का स्वभाव चिडचिडा होता है। ऐसा व्यक्ति चिडचिडा, बैचन और तुनुकमिजाजी होता है। इस प्रकार को ‘गुस्सैल’ (choleric) कहते हैं।
 - 2- जब व्यक्ति में काले पित्त की प्रधानता होती है जो वह प्रायः उदास, मंदित नजर आता है इस तरह के प्रकार को विषादी या निराशावादी (Melancholic) कहा गया है।
 - 3- जब व्यक्ति के रक्त की प्रधानता होती है तो वह प्रसन्न तथा खुशमिजाज होता है। इस तरह के व्यक्तित्व के प्रकार को ‘उत्साही’ या ‘आशावादी’ (Sanguine) कहा गया है।
 - 4- जिस व्यक्ति में कफ या श्लेष्मा जैसे द्रव्य की प्रधानता होती है वह शांत स्वभाव का होता है उसमें निष्क्रियता अधिक पायी जाती है। इसमें भावशून्य के गुण भी पाये जाते हैं। इसे विरक्त प्रकार कहा जाता है।
1. हिप्पोक्रेटस के बाद रोस्टन (1824) ने सबसे प्रभावकारी व्यक्तित्व के प्रकार बताए। उन्होंने व्यक्तित्व के चार प्रकार बतलाए हैं -
- 1- प्रमस्तिष्कीय प्रकार (Cerebral Type) - ऐसे व्यक्ति दुबले-पतले एवं लम्बे डील डौल के होते हैं।
 - 2- पेशी प्रकार (Muscular Type) - ऐसे व्यक्तियों के शरीर की मांसपेशियां गठी होती हैं तथा पुष्टकाय होते हैं।

3- आत्मसात्करणी प्रकार (Digestive Type) - ऐसे व्यक्ति गोल-मटोल शारीरिक संरचना वाले होते हैं।

4- श्वसनी प्रकार (Respiratory Type) - ऐसे लोगों की शारीरिक कद कोई एक विशेष श्रेणी का न होकर मिला जुला प्रकार होता है।

○ वायोला (1909) ने रोस्टन के उक्त श्रेणी को उन्नत करके उन्हें तीन श्रेणी में रखा है। ये तीन प्रकार हैं -

1- माइक्रोस्पानिक

2- नोरमोसलानिक

3- मैक्रोस्पानिक

अभ्यास प्रश्न - 2

निम्नलिखित कथन सत्य है अथवा असत्य बताइये -

1- प्रकार सिद्धांत में व्यक्तित्व को खास-खास प्रकारों में बांटा जाता है।

2- श्लेष्मा द्रव्य की प्रधानता वाले व्यक्तियों का स्वभाव शांत होता है।

8.5.2 आधुनिक प्रकार उपागम (Modern Type Approaches) -

आधुनिक मनोवैज्ञानिकों द्वारा प्रकार सिद्धांतों को मूलतः दो भागों में बांटकर व्यक्तित्व की व्याख्या की गई है। पहले भाग में व्यक्ति के शारीरिक गुणों एवं उसके चितप्रकृति या स्वभाव के संबंधों पर बल डाला गया है तथा दूसरे भाग में व्यक्ति के मनोवैज्ञानिक गुणों के आधार पर उसे भिन्न-भिन्न प्रकारों में बांटा गया है -

1. क्लेशमर का सिद्धांत - क्लेशमर ने शारीरिक गुणों के आधार पर व्यक्तित्व के चार प्रकार बतलाये हैं। ये प्रकार निम्नांकित हैं -

a) स्थूलकाय प्रकार (Pyknic Type) - ऐसे व्यक्ति का कद छोटा होता है तथा शरीर भारी एवं गोलाकार होता है। ऐसे लोगों की गर्दन छोटी एवं मोटी होती है। इस तरह के व्यक्ति सामाजिक होते हैं, खाने-पीने व सोने में काफी मजा लेते हैं। इन्हें साइक्लोआड की संज्ञा दी जाती है।

b) कृशकाय प्रकार (Asthenic Type) - इस तरह के व्यक्ति का कद लंबा होता है परंतु वे दुबले-पतले शरीर के होते हैं। ऐसे व्यक्तियों के शरीर की मांसपेशियां विकसित नहीं होती हैं और शरीर का वजन उम्र के अनुसार होने वाले सामान्य वजन से कम होता है। ऐसे व्यक्तियों का स्वभाव कुछ चिडचिडा होता है। मानसिक रोग होने पर इन्हें मनोविदालिता होने की संभावना तीव्र होती है। इस तरह की चितप्रकृति को क्लेशमर ने सिजोआड की संज्ञा दी है।

c) पुष्टकाय प्रकार (Athletic Type) - इस प्रकार के व्यक्ति के शरीर की मांसपेशियां काफी विकसित एवं गठी होती हैं। शरीर का कद न तो अधिक लम्बा न ही अधिक मोटा होता है। इनका शरीर सुडौल एवं हर तरह से संतुलित दिखाई देता है। इस तरह के

व्यक्तित्व वाले व्यक्ति बदली हुई परिस्थिति में आसानी से समायोजन कर लेते हैं। इन्हें सामाजिक प्रतिष्ठा काफी मिलती है।

- d) विशालकाय प्रकार (**Dysplastic Type**) - इस श्रेणी में उन व्यक्तियों को रखा जाता है जिनमें उपर के तीन प्रकार में से किसी भी एक प्रकार का स्पष्ट गुण नहीं मिलता है बल्कि इन तीनों प्रकारों का गुण मिला-जुला होता है।

II. शैल्डन का सिद्धांत - शैल्डन ने 1940 में शरीर गठन के ही आधार पर एक दूसरा सिद्धांत बनाया जिसे सोमैटोटाइप सिद्धांत कहा गया। शैल्डन द्वारा बताए गए प्रकार निम्न हैं -

- a) एण्डोमोर्फि (**Endomorphy**) - इस प्रकार के व्यक्ति मोटे एवं नाटे होते हैं और इनका शरीर गोलाकार दिखता है। शैल्डन का यह प्रकार 'क्रेशमर' के स्थूलकाय प्रकार (Pyknic Type) से मिलता जुलता है। शैल्डन के अनुसार इस प्रकार के व्यक्ति आरामपसंद, खुशमिजाज, सामाजिक तथा खाने-पीने की चीजों में अधिक अभिरूचि दिखलाने वाले होते हैं। ऐसे स्वभाग को शैल्डन ने 'विसरोपेनिया' कहा है।
- b) मेसोमोर्फि (**Mesomorphy**) - इस प्रकार के व्यक्ति के शरीर की हड्डियाँ एवं मांसपेशियाँ काफी विकसित होती हैं तथा शरीर गठन काफी सुडौल होता है। ऐसे व्यक्ति के स्वभाव को 'सोमैटोटोनिया' (somatotonia) कहा गया है जिसमें जोखिम तथा बहादुरी का कार्य करने की तीव्र प्रवृत्ति, दृढ़ कथन आक्रामकता आदि का गुण पाया जाता है। मेसोमोर्फि क्रेशमर के पुष्टकाय प्रकार के सम्मान होते हैं।
- c) एक्टोमोर्फि (**Ectomorphy**) - इस प्रकार के व्यक्ति का कद लंबा होता है। परंतु ऐसे व्यक्ति दुबले पतले होते हैं। इनके शरीर की मांसपेशियाँ अविकसित होती हैं और इनका पूरा गठन इकहरा होता है। इस प्रकार के व्यक्ति के चित्तप्रकृति को 'सेरीब्रोटोनिया' (Cerebrotonia) कहा जाता है। ऐसे व्यक्ति को अकेला रहना तथा लोगों से कम मिलन जुलना अधिक पसंद होता है। ऐसे व्यक्ति संकोचशील और लज्जालु भी होते हैं।

शैल्डन ने व्यक्तित्व को एक सतत प्रक्रिया माना है।

इसका मतलब यह हुआ कि इन तीनों तरह के शारीरिक गठन एवं उससे संबंधित शीलगुण आपस में बिलकुल ही अलग-अलग नहीं होते हैं। फलतः उन्होंने प्रत्येक शारीरिक गठन का मापन 1 से 7 तक की श्रेणियों में बांटकर किया। दूसरे शब्दों में, 4,000 व्यक्तियों में से प्रत्येक व्यक्ति के शारीरिक गठन की तीनों प्रकारों में (1 से 7 तक) श्रेणीकरण (ranking) किया। यहां 1 श्रेणी (rank) से तात्पर्य 'सबसे कम' तथा 7 श्रेणी (rank) से तात्पर्य 'सबसे अधिक' से है। जैसे- जो व्यक्ति नाटे कद का है परंतु काफी मोटे तथा गोलाकार गठन का है, उसे एण्डोमोर्फि पर 7 तथा अन्य दोनों श्रेणियों जैसे- मेसोमोर्फि तथा एक्टोमोर्फि पर 1-1 श्रेणी (rank) दी जाएगी। अतः इस तरह के व्यक्ति को शैल्डन ने 7-1-1 कहा है। उसी तरह संभव है किसी व्यक्ति को

एक्टोमार्फी में 7 दिया जाया स्वभावतः तब ऐसे व्यक्ति को मेसोमार्फी तथा एण्डोमार्फी में 1-1 दिया जाएगा। अतः इस तरह के व्यक्ति को 1-7-1 कहा जाएगा। शैल्डन ने 7-1-1 श्रेणी प्राप्त करने वाले व्यक्ति को प्रबल एंडोमार्फ (predominant rndomorph) 1-7-1 वाले व्यक्ति को प्रबल मेसोमार्फ (predominant mesomorph) तथा 1-1-7 वाले व्यक्ति को प्रबल एक्टोमार्फ (predominant ectomorph) कहा है। शैल्डन ने बतलाया कि सबसे संतुलित व्यक्तित्व (balanced personality) वाला व्यक्ति उन्हें कहा जाता है जिन्हें तीन प्रकारों (जलचमे) में बीच की श्रेणी (ranking) यानी 4 प्राप्त होती है। अतः शैल्डन के अनुसार संतुलित व्यक्तित्व (balanced personality) वह है जिसका श्रेणीकरण 4-4-4 होता है।

8.5.2 (ii) मनोवैज्ञानिक गुणों के आधार पर -

कुछ मनोवैज्ञानिकों ने व्यक्तित्व का वर्गीकरण मनोवैज्ञानिक गुणों के आधार पर किया है।

युंग का सिद्धांत -

युंग (Jung 1923) ने अपने मशहूर पुस्तक 'साइकोलॉजिकल टाइम्स' में व्यक्तित्व के दो प्रकार बतलाये हैं -

- a) बर्हिमुखी (Extrovert) - इस तरह के व्यक्ति की अभिरूचि विशेषकर समाज के कार्यों की और होता है। वह अन्य लोगों से मिलना जुलना पसंद करता है तथा प्रायः खुशमिजाज होता है। ऐसे व्यक्ति आशावादी होते हैं तथा अपना संबंध यथार्थता से अधिक और आदर्शवाद से कम रखते हैं। ऐसे लोगों की खाने-पीने की और से अधिक अभिरूचि होती है।
- b) अन्तर्मुखी (Introvert) - ऐसे व्यक्ति में बर्हिमुखी के विपरीत गुण पाए जाते हैं। ऐसे व्यक्ति बहुत लोगों से मिलना जुलना पसंद नहीं करते हैं और उनकी दोस्ती कुछ ही लोगों तक सीमित होती है। इनमें आत्मकेन्द्रिता का गुण अधिक पाया जाता है। ऐसे लोगों को अकेलापन अधिक पसंद होता है ऐसे लोग निराशावादी प्रकृति के होते हैं।
आधुनिक मनोवैज्ञानिकों ने युंग की आलोचना की है। उनके अनुसार अधिकतर लोगों में इन दोनों श्रेणियों के गुण पाए जाते हैं फलस्वरूप एक परिस्थिति में वे बर्हिमुखी के रूप में व्यवहार करता है तथा दूसरी परिस्थिति में वे अन्तर्मुखी के रूप में व्यवहार करते हैं। ऐसे व्यक्तियों को आधुनिक मनोवैज्ञानिकों ने उभयमुखी (ambivert) की संज्ञा दी है।

1. स्प्रेजर (Spranger, 1928) का वर्गीकरण -

स्प्रेजर ने अपनी पुस्तक 'टाइप्स ऑफ मैन' (Types of Men) में व्यक्तित्व के छह आदर्श प्रकार बतलाए हैं और प्रत्येक प्रकार एक विशेष मूल्य उन्मुखता से प्रभावित होता है। ये प्रकार निम्नांकित हैं :-

- a) सैद्धान्तिक प्रकार (**Theoretical Type**) - व्यक्तित्व का यह प्रकार सच्चाई पर अधिक बल डालता है और पूरे संसार को एक युक्तिमूलक ढंग से देखने पर अधिक बल डालता है।
- b) आर्थिक प्रकार (**Economic Type**) - ऐसे व्यक्तित्व प्रकार उन चीजों या व्यवहारों को अधिक महत्व देते हैं जो लाभदायक होने के साथ-साथ धन से संबद्ध होता है।
- c) सौन्दर्यबोधी प्रकार (**Aesthetic Type**) - ऐसे व्यक्तित्व प्रकार वाले व्यक्ति आकार या आकृति तथा सुसंगति या सौन्दर्य को अधिक महत्व देते हैं।
- d) सामाजिक प्रकार (**Social Type**) - ऐसे व्यक्तित्व वाले व्यक्ति अन्य लोगों को स्नेह एवं प्यार देते हैं एवं उन्हें मदद करना चाहते हैं।
- e) राजनैतिक प्रकार (**Political Type**) - ऐसे व्यक्तित्व प्रकार शक्ति को अधिक महत्व देते हैं और वैज्ञानिक अधिकार एवं प्रभाव दिखाने में अधिक विश्वास रखते हैं।
- f) धार्मिक प्रकार (**Religious Type**) - ऐसे व्यक्तित्व प्रकार ब्रह्माण्ड के साथ एकता बनाए रखने पर अधिक बल डालते हैं तथा ब्रह्मांड के साथ अपने संबंध को समझने पर बल डालते हैं।

2. आइजेन्क का वर्गीकरण (Eysenck, 1947) -

आइजेन्क ने भी मनोवैज्ञानिक गुणों के आधार पर व्यक्तित्व के तीन प्रकार बतलाये हैं जो निम्नलिखित हैं :-

- a) अन्तर्मुखता - बहिर्मुखता (Introversion - Extraversion) आइजेन्क ने इस व्यक्तित्व श्रेणी के एक छोर पर अंतर्मुखी शीलगुणों से युक्त व्यक्तियों को रखा गया है। जबकि इसी श्रेणी के दूसरे छोर पर बहिर्मुखी शीलगुणों से युक्त व्यक्तियों को रखा गया है। यह स्पष्टतः एक द्विध्रुवीय विमा है।
- b) स्नायुविकृति- स्थिरता (Neuroticism - Stability) - इस विमा में व्यक्तित्व के पहले स्तर पर होने पर व्यक्ति में सांवेगिक नियंत्रण कम होता है तथा उनकी इच्छा शक्ति कमजोर होती है। इनके विचारों एवं क्रियाओं में मंदता पायी जाती है। दूसरे छोर पर वाले व्यक्तित्व में स्थिरता होती है जिसकी और बढ़ने पर उक्त व्यवहारों या लक्षणों की मात्रा घटती जाती है और व्यक्ति में स्थिरता की मात्रा बढ़ती जाती है।
- c) मनोविकृति - पराअहं की क्रियाएं (Psychoticism - superego functional) - आइजेन्क के अनुसार मनोविकृतता वाले छोर के व्यक्तित्व प्रकार में क्षीण स्मृति, क्षीण एकाग्रता, क्रूरता का गुण अधिक पाया जाता है। इसके अलावा ऐसे व्यक्ति में असंवेदनशीलता दूसरों के प्रति सौहार्दपूर्ण संबंधकी कमी किसी प्रकार के

खतरे के प्रति सतर्कता आदि के गुण भी पाये जाते है। इसी प्रकार दूसरे छोर पर पराअहं की क्रियाएं होती है।

3. जॉन हॉलैंड - (John Holland, 1985)

जॉन हॉलैंड ने व्यक्तियों की अभिरूचि मूल्यों तथा क्षमताओं के आधार पर व्यक्तित्व के छह प्रकार बतलाए है जो इस प्रकार है :-

- a) वास्तविक प्रकार (**Realitic Type**) - इसमें वैसे व्यक्तियों को रखा जाता है जो चीजों एवं उपकरणों को बनाते है संक्रियण करते है तथा संपोषित करते है जैसे - अभियंता।
 - b) खोज-बीन करने वाले प्रकार (**Investigating Type**) - इसमें वैसे लोगों को रखा गया है जो आंकड़ों का प्रयोग कर समस्याओं का समाधान करते है। जैसे - वैज्ञानिक
 - c) कलात्मक प्रकार (**Artistic Type**) - इसमें वैसे लोगों को रखा जाता है जो चीजों को डिजाइन एवं सज्जीकरण करते है। जैसे - कलाकार
 - d) सामाजिक प्रकार (**Social Types**) - इसमें वैसे व्यक्तियों को रखा जाता है जो अन्य लोगों को मदद करते है। जैसे - नैदानिक मनोवैज्ञानिक, परामर्श मनोवैज्ञानिक आदि।
 - e) उद्यमी प्रकार (**Enterprising Type**) - इसमें वैसे व्यक्तियों को रखा जाता है जो अन्य लोगों को अनुनयन एवं परिचालित करते है जैसे - राजनीतिज्ञ।
 - f) परम्परागत प्रकार (**Conventional Type**) - इसमें वैसे लोगों को रखा जाता है जो चीजों को नियमित करते है तथा कूटसंकेतिक करते है। जैसे - लेखापाल
- हॉलैंड द्वारा प्रस्तावित व्यक्तित्व के प्रकार को दो प्रकार उपागम का अंत बिंदु माना गया है।

अभ्यास प्रश्न - 3

1. स्थूलकाय प्रकार को की संज्ञा दी गई है।
2. मेसोमार्फी केशमर के प्रकार के समान है।

8.6 शीलगुण उपागम (Trait Approach)

शीलगुण सिद्धांत प्रकार सिद्धांत (type theory) से भिन्न एवं विषम (contrasting) है। शीलगुण सिद्धांत के अनुसार व्यक्ति की संरचना (structure) भिन्न-भिन्न प्रकार के शीलगुण से ठीक वैसी बनी होती है जैसे एक मकान की संरचना छोटी-छोटी ईंट से बनी होती है। शीलगुण (trait) से सामान्य अर्थ होता है व्यक्ति के व्यवहारों का वर्णन (description of human behaviour)। जैसे- सतर्क (alert), सक्रिय (active), मंदित (depressed) आदि कुछ ऐसे शब्द है जिनके सहारे मानव व्यवहार का वर्णन होता है। प्रश्न उठता है कि क्या सभी शब्द जिनसे मानव व्यवहार का वर्णन होता है, शीलगुण है? कदापि नहीं। शीलगुण कहलाने के लिए यह आवश्यक है कि उसमें संगति (consistency) का गुण हो। उदाहरणस्वरूप, यदि कोई व्यक्ति हर तरह की परिस्थिति में ईमानदारी (honesty) का गुण दिखलाती है तो हम कहते हैं कि उसके व्यवहार में संगति (consistency) है तथा उसमें ईमानदारी का शीलगुण है। परंतु जब वह कुछ परिस्थिति में ईमानदारी दिखलाता है तथा कुछ में नहीं, तो यह नहीं कहा जा सकता है

कि इस व्यक्ति में ईमानदारी (Honesty) का गुण है। हां, यह थोड़ी देर के लिए कहा जा सकता है कि उसमें ईमानदारी दिखलाने की आदत (habit) है जिसे वह कभी दिखलाता है कभी नहीं। इस तरह से हम कह सकते हैं कि व्यक्ति के व्यवहारों में पूर्णतः संगति (consistency) को शीलगुण तथा कम संगति (less consistency) को आदत कहा जाता है। किसी व्यवहार को शीलगुण कहलाने के लिए संगति के अलावा उसमें स्थिरता (stability) का भी गुण होना चाहिए। दूसरे शब्दों में, शीलगुण कहलाने के लिए कम से कम थोड़े समय के लिए स्थायित्व (relatively permanence) का गुण भी होना चाहिए। अतः शीलगुण एक ऐसी विशेषता होती है जिसके कारण व्यक्ति संगत ढंग से तथा सापेक्ष रूप से स्थायी ढंग से (relatively permanent way) एक-दूसरे से भिन्न होता है। एटकिन्सन, एटकिन्सन तथा हिलगार्ड (Atkinson, Akinson & Higar, 1983) ने भी शीलगुण को इसी तरह परिभाषित किया है। शीलगुण उपागम के अनुसार व्यक्ति का व्यवहार व्यक्तित्व के किसी 'प्रकार' द्वारा नियंत्रित नहीं होता है बल्कि भिन्न-भिन्न प्रकार के शीलगुणों द्वारा नियंत्रित होता है जो प्रत्येक व्यक्ति में मौजूद रहता है। इस तरह शीलगुण उपागम व्यक्तित्व के मौलिक इकाई को यानी शीलगुण को अलग करके उसके आधार पर व्यक्ति के व्यवहार की व्याख्या करता है।

8.6.1 ऐतिहासिक शीलगुण उपागम -

शीलगुण सिद्धांतों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में फ्रैंज जोसेफ गॉल (1758-1828), फ्रांसिस गाल्टन, विलियम स्टर्न, हेममन्स विर्समा, थर्स्टर्न आदि के विचार महत्वपूर्ण हैं।

8.6.2 आधुनिक शीलगुण उपागम -

8.6.2. (i) ऑलपोर्ट का योगदान (Contribution of Allport) -

ऑलपोर्ट द्वारा प्रतिपादित व्यक्तित्व के सिद्धांत को ऑलपोर्ट का शीलगुण सिद्धांत कहा जाता है। ऑलपोर्ट ने शीलगुण को मुख्यतः दो भागों में बांटा है जो इस प्रकार हैं -

a) सामान्य शीलगुण - सामान्य शीलगुण से तात्पर्य वैसे शीलगुणों से होता है जो किसी समाज या संस्कृति के अधिकतर लोगों में पाया जाता है। सामान्य शीलगुण ऐसे शीलगुण जिसके आधार पर किसी समाज या संस्कृति के अधिकतर लोगों की तुलना आपस में की जा सकती है।

b) व्यक्तिगत शीलगुण (Personal Trait) - व्यक्तित्व प्रवृत्ति से तात्पर्य वैसे शीलगुणों से होता है जो किसी समाज या संस्कृति के व्यक्ति विशेष तक ही सीमित होता है। ऑलपोर्ट ने व्यक्तिगत प्रवृत्ति को तीन भागों में बांटा है -

क. कार्डिनल प्रवृत्ति (Cardinal disposition) - इस तरह की व्यक्तिगत प्रवृत्ति व्यक्तित्व का इतना प्रमुख एवं प्रबल गुण होता है कि उसे छिपाया नहीं जा सकता है और व्यक्ति के प्रत्येक व्यवहार की व्याख्या इस तरह के कार्डिनल प्रवृत्ति के रूप में आसानी से की जा सकती है।

ख. केन्द्रीय प्रवृत्ति ; Central Disposition) - केन्द्रीय प्रवृत्ति सभी व्यक्तियों में पायी जाती है। प्रत्येक व्यक्ति में 5-10 ऐसे गुण होते हैं जिसके भीतर उसका व्यक्तित्व अधिक सक्रिय रहता है।

ग. गौण प्रवृत्ति (**Secondary Disposition**) - गौण व्यक्तित्व के लिए कम महत्वपूर्ण, कम संगत, कम अर्थपूर्ण तथ कम स्पष्ट होते हैं।

8.6.2. (ii) कैटल का योगदान (Contribution of Cattell) - कैटल ने व्यक्तित्व को शीलगुणों के आधार पर दो भागों में विभाजित किया है -

a) सतही शीलगुण (**Surface Trait**) - सतही शीलगुण ऐसे होते हैं जो व्यक्ति के दिन-प्रतिदिन की अन्तः क्रिया में आसानी से अभिव्यक्ति हो जाते हैं। जैसे - प्रसन्नता, परोपकारिता, सत्यनिष्ठा आदि।

b) स्रोत या मूलशीलगुण (**Source Trait**) - मूल शीलगुण व्यक्तित्व के भीतरी संरचना होती है जिसके बारे में हमें ज्ञान तब होता है जब हम उससे संबंधित सतही शीलगुण को एक साथ मिलाने की कोशिश करते हैं। जैसे - सामुदायिकता, निस्वार्थता दयास्य तीन ऐसे सतही शीलगुण हैं जिनके एक साथ मिलाने से एक नया मूल शीलगुण बनता है जिसे मित्रता की संज्ञा दी जाती है।

सामान्य रूप से मूल शीलगुण को कैटल ने दो भागों में बांटा है - पर्यावरण प्रभावित शीलगुण तथा स्वाभाविक शीलगुण।

8.6.2. (iii) कोस्टा एवं मैकक्रे (Coasta & Mc Crac 1994) का योगदान - इन शोधकर्ताओं ने व्यक्तित्व की निम्नलिखित पांच विमाएं बतायी हैं जो सभी द्विध्रुवीय हैं :-

a) बहिर्मुखता (**Extraversion E**) - व्यक्तित्व की यह ऐसी विमा है जिसमें एक परिस्थिति में व्यक्ति सामाजिक, मजाकिया स्नेहपूर्ण, बातूनी आदि का शीलगुण दिखाता है। तो दूसरी परिस्थिति में वह संयमी, गंभीर, रूखापन, शांति, सचेत रहने आदि का शीलगुण भी दिखाता है।

b) सहमतिजन्यता (**Aggreeableness or A**) - इस विमा के भी दो छोर या ध्रुव बतलाये गये हैं। इस विमा के अनुसार व्यक्ति एक परिस्थिति में सहयोगी दूसरों पर विश्वास करने वाला, उदार, सीधा सादा उत्तम प्रकृति आदि से संबद्ध व्यवहार दिखाता है। दूसरी परिस्थिति में वह असहयोगी, शंकालु चिडचिडा, जिद्दी आदि बनकर व्यवहार करता है।

c) कर्तव्यनिष्ठता (**Conscientiousness or C**) - इस विमा में एक परिस्थिति में व्यक्ति आत्म अनुशासित उत्तरदायी, सावधान एवं काफी सोच-विचार कर व्यवहार करने से संबद्ध शीलगुण दिखाता है तो दूसरी परिस्थिति में वही व्यक्ति बिना सोचे समझे, असावधानीपूर्वक कमजोर या आधे मन से भी व्यवहार करने से संबद्ध शीलगुण दिखाता है।

d) स्नायुविकृति (**Neuroticism or N**) - इस विमा में व्यक्ति एक और कभी-कभी तो सांवेगिक रूप से काफी शांत, संतुलित रोगभ्रमी विचारों से अपने आप को

मुक्त पाता है तो दूसरी और वह कभी-कभी अपने आप को सांवेगिक रूप से काफी उत्तेजित, असंतुलित तथा रोगभ्रमी विचारों से घिरा हुआ पाता है।

e) अनुभूतियों का खुलापन या संस्कृति (**Openness of experiences or culture or O**) इस विमा में कभी-कभी व्यक्ति एक तरफ काफी संवेदनशील काल्पनिक, बौद्धिक भद्र आदि व्यवहार से संबद्ध शीलगुण दिखाता है तो दूसरी और वह काफी असंवेदनशील, रूखा, संकीर्ण, असभ्य एवं अविशिष्ट व्यवहारों से संबद्ध शीलगुण भी दिखाता है।

उपर्युक्त पांच शीलगुणों को नॉरमैन ने दी बिग फाइव (The Big five) की संज्ञा दी है। इन सभी को मिलाकर 'OCEAN' के रूप में कहा जाता है।

अभ्यास प्रश्न - 4

1. शीलगुण उपागम के अनुसार व्यक्तित्व कुछ द्वारा नियंत्रित होता है।
2. Big Five Theory का कूट संकेतिक शब्द है।

8.4 प्रकार उपागम एवं शीलगुण उपागम में अंतर (Difference between trait & type approaches of personality) -

प्रकार उपागम	शीलगुण उपागम
1. प्रकार उपागम में व्यक्तित्व के स्वरूप को व्यक्तित्व के प्रकार के आधार पर समझने की कोशिश की गयी है।	1. शीलगुण उपागम में व्यक्तित्व के स्वरूप को व्यक्तित्व के कुछ शीलगुणों के आधार पर समझने की कोशिश की गयी है।
2. 'प्रकार' से तात्पर्य व्यक्तियों के ऐसे वर्ग से होता है जिनके गुण एक दूसरे से मिलते जुलते हैं।	2. 'शीलगुण' से तात्पर्य वैसी विशेषताओं से होती है जो एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में सतत ढंग से तथा सापेक्ष रूप से स्थायी ढंग से परिवर्तित होता है।
3. प्रकार उपागम के अनुसार व्यक्तित्व किसी प्रकार द्वारा नियंत्रित होता है।	3. शीलगुण उपागम के अनुसार व्यक्तित्व शीलगुणों द्वारा नियंत्रित होता है।
4. मुख्य प्रकार उपागम रोस्टन, मेस्लो, क्रेशमर, शेल्डन, स्प्रेन्जेर, आइजेन्क, हॉलैण्ड आदि द्वारा दिए गए।	4. मुख्य शीलगुण उपागम ऑलपोर्ट, कैटेल, मैकक्रे तथा कोस्टा द्वारा दिए गए।

अभ्यास प्रश्न - 5

सत्य/असत्य बताइये -

1. शीलगुणों में परिवर्तन असंभव है।
2. प्रकार उपागम में व्यक्तित्व प्रकार द्वारा नियंत्रित होता है।

8.8 सारांश

व्यक्तित्व से तात्पर्य लगभग स्थित आंतरिक कारकों से होता है जो व्यक्ति के व्यवहार को एक परिस्थिति से दूसरी परिस्थिति में संगत रखता है ताकि अन्य तुल्य परिस्थितियों में उस व्यक्ति के व्यवहार को अन्य व्यक्तियों से भिन्न भी करता है। व्यक्तित्व के स्वरूप की व्याख्या करने के लिए कई उपागमों का वर्णन किया गया है जिसमें प्रकार उपागम तथा शीलगुण उपागम प्रमुख हैं।

8.9 शब्दावली

- पांच कारकीय मॉडल - क्रोस्टा एवं मैकक्रे द्वारा प्रतिपादित सिद्धांत
- विसरोटोनिया - शेल्डन द्वारा प्रतिपादित व्यक्तित्व का एक प्रकार
- OCEAN - पांच कारकीय मॉडल का कूटसंकेत

8.10 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

अभ्यास प्रश्न - 1

1. लैटिन
2. शेल्डन तथा क्रेशमर

अभ्यास प्रश्न - 2

1. सत्य
2. सत्य

अभ्यास प्रश्न - 3

1. साइक्लाइड
2. पुष्टकाय

अभ्यास प्रश्न - 4

1. शीलगुणों
2. OCEAN

अभ्यास प्रश्न - 5

1. असत्य
2. सत्य

8.11 संदर्भ ग्रंथ

- सिंह, अरूण कुमार, (2005) उच्चतर सामान्य मनोविज्ञान, मोतीलाल बनारसीदास, नई दिल्ली
- वर्मा प्रीति एवं श्रीवास्तव डी.एन (2001) आधुनिक सामान्य मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।

8.12 निबंधात्मक प्रश्न

1. व्यक्तित्व के प्रकार उपागम विस्तारपूर्वक लिखिए।

2. व्यक्तित्व के शीलगुण उपागम विस्तारपूर्वक लिखिए।
3. व्यक्तित्व के सैद्धान्तिक उपागम लिखिए।

इकाई - 9

ऑलपोर्ट की व्यक्तित्व शीलगुण सिद्धांत, टाइप ए तथा बी व्यक्तित्व सिद्धांत: व्यक्तित्व के शीलगुण उपागम

(Allport's trait theory of personality, Type A & B personality theory, trait theories of personality)

इकाई की रूपरेखा

- 9.1 प्रस्तावना
- 9.2 उद्देश्य
- 9.3 ऑलपोर्ट का व्यक्तित्व शीलगुण सिद्धांत
- 9.4 टाइप ए तथा बी व्यक्तित्व सिद्धांत
- 9.5 व्यक्तित्व के शीलगुण उपागम
- 9.6 सारांश
- 9.7 शब्दावली
- 9.8 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
- 9.9 संदर्भग्रंथ
- 9.10 निबंधात्मक प्रश्न

9.1 प्रस्तावना

व्यक्तित्व सिद्धांत से तात्पर्य संबंधित पूर्वकल्पनाओं के एक ऐसे समूह से होता है जिनसे तार्किक निगमनात्मक विवेचन द्वारा जांचनीय प्राक्कल्पना बनायी जा सकती है तथा जिनसे प्रेक्षणों को एक संगठित रूप मिलता है शोध की उत्पत्ति होती है, व्यवहारों का मार्गदर्शन होता है एवं मानव व्यवहार में संगति की व्याख्या होती है। प्रस्तुत इकाई में आप ऑलपोर्ट के व्यक्तित्व सिद्धांत तथा टाइप ए एव बी व्यक्तित्व सिद्धांत का विस्तारपूर्वक अध्ययन करेंगे।

9.2 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप -

- ऑलपोर्ट के व्यक्तित्व सिद्धांत के बारे में जानेंगे।
- टाइप ए तथा बी व्यक्तित्व की विशेषताओं के बारे में बता सकेंगे।

9.3 गॉर्डन ऑलपोर्ट : व्यक्तित्व का शीलगुण सिद्धांत (Gordon Allport : Trait Theory of Personality)

गॉर्डन ऑलपोर्ट का व्यक्तित्व सिद्धांत एक ऐसा सिद्धांत है जिसमें मानवतावादी एवं व्यक्तिवादी दृष्टिकोणों की परख इस बात से होती है कि इसमें मानव व्यवहार के सभी पहलुओं जिसमें वर्धन की अन्तः शक्तियां अनुभवातीत्व तथा आत्मसिद्धि भी सम्मिलित हैं, के अध्ययन पर बल डाला गया है। व्यक्तिवादी (personalistic) के रूप में ऑलपोर्ट को एक ग्रहणशील मनोवैज्ञानिक (eclectic psychologist) माना गया है क्योंकि वे इस सिद्धांत के प्रतिपादन में विभिन्न क्षेत्रों, जैसे- दर्शनशास्त्र समाजशास्त्र, साहित्य आदि से महत्वपूर्ण तथ्यों का चयन करके उसे विशेष ढंग से पिरोया है।

पूर्वकल्पनाएं - ऑलपोर्ट के सिद्धांत की कुछ पूर्वकल्पनाएं निम्न हैं :-

- I. मानव व्यवहार जैसे विवेकपूर्णता, अग्रलक्षता तथा विषमस्थिति पर सर्वाधिक बल जाता है।
- II. मानव व्यवहार के कुछ पूर्वकल्पनाओं जैसे पूर्णतावाद एवं ज्ञेयता, स्वतंत्रता, आत्मनिष्ठता आदि पर बल डाला गया है।

ऑलपोर्ट के व्यक्तित्व सिद्धांत को निम्नांकित प्रमुख भागों में बांटा जा सकता है-

- अ) व्यक्तित्व की संरचना (Structure of Personality)
- ब) व्यक्तित्व की गतिकी (Dynamics of Personality)
- स) व्यक्तित्व का वर्धन (Growth of Personality)
- द) शोध एवं मापन (Research & Assessment)

अ) व्यक्तित्व की संरचना (**Structure of Personality**) - व्यक्तित्व की संरचना की व्याख्या तीन भागों में बांटकर की गयी है। व्यक्तित्व की परिभाषा, व्यक्तित्व शीलगुणा तथा प्रोपियमा इनका वर्णन निम्न प्रकार से है -

- i) **व्यक्तित्व की परिभाषा** - “ व्यक्तित्व व्यक्ति के भीतर उन मनोशारीरिक तंत्रों का गतिशील या गत्यात्मक संगठन है जो वातावरण में उसके अपूर्व समायोजन को निर्धारित करते हैं।”

(ऑलपोर्ट, 1937)

1961 में ऑलपोर्ट ने अपनी परिभाषा में थोड़ा संशोधन किया और अंतिम पांच शब्द बदलकर इस प्रकार कर दिया- “ unique adjustments of high environment” की जगह पर “characteristic behaviour and thought” को सम्मिलित किया गया। इस परिवर्तन का उद्देश्य यह बतलाना था कि व्यक्ति का व्यवहार मात्र अनुकूली (adaptive) ही नहीं होता है बल्कि कथनीय (expressive) भी

होता है। इसका मतलब यह हुआ कि व्यक्ति वातावरण के साथ सिर्फ समायोजन (adjustment) या अनुकूलन ही नहीं करता है बल्कि उसके साथ इस तरह अंतःक्रिया (interaction) करता है कि उस वातावरण को भी व्यक्ति के साथ अनुकूलन या समायोजन योग्य होना पड़ता है।

आलपोर्ट की इस परिभाषा के मुख्य बिंदुओं की व्याख्या इस प्रकार की जा सकती है-

- (i) मनोशारीरिक तंत्र (Psychophysical System)- व्यक्तित्व एक ऐसा तंत्र (system) है जिसके मानसिक या मनोवैज्ञानिक (Psychological) तथा शारीरिक (physical) दोनों ही पक्ष होते हैं। यह तंत्र ऐसे तत्वों का एक गठन होता है जो आपस में अंतःक्रिया करते हैं। इस तंत्र के मुख्य तत्व शीलगुण (trait), संवेग (emotion), चरित्र (character), अभिप्रेरक (motive) आदि हैं जो सभी मानसिक गुण हैं परंतु इन सबका आधार शारीरिक (physical) अर्थात् व्यक्ति के ग्रंथीय प्रक्रियाएं एवं तंत्रिकीय प्रक्रियाएं (neural processes) होती हैं। इसका स्पष्ट मतलब यह हुआ कि व्यक्तित्व न तो पूर्णतः मानसिक या मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाएं (Psychological) होता है और न पूर्णतः शारीरिक ही। व्यक्तित्व इन दोनों तरह के पक्षों का मिश्रण है।
- (ii) गत्यात्मक संगठन (Dynamic organization) गत्यात्मक संगठन से तात्पर्य यह होता है कि मनोशारीरिक तंत्र (Psychophysical System) के भिन्न-भिन्न तत्व जैसे शीलगुण (trait), आदत (habit) आदि एक-दूसरे से इस तरह संबंधित होकर संगठित होते हैं कि उन्हें एक-दूसरे से पूर्णतः अलग नहीं किया जा सकता है। इस संगठन में परिवर्तन (change) संभव है। यही कारण है कि इसे एक गत्यात्मक संगठन (Dynamic organization) कहा गया है इस तरह के संगठन में विसंगठन (disorganization) भी सम्मिलित होता है जिसके सहारे असामान्य व्यवहार की व्याख्या होती है। दूसरे शब्दों में, यदि किसी व्यक्ति के शीलगुणों के संगठन में इस ढंग का परिवर्तन आ जाता है कि उसका व्यवहार विसंगठित (disorganization) हो जाता है जिसके फलस्वरूप वह असामान्य व्यवहार अधिक करने लग जाता है तो इसे एक गत्यात्मक संगठन की श्रेणी में ही रखा जाता है।
- (iii) निर्धारण (Determine)- इस परिभाषा में 'निर्धारण' (Determine) का प्रयोग विशेष अर्थ में किया गया है। इससे आलपोर्ट का तात्पर्य यह है कि "व्यक्तित्व कुछ है तथा कुछ करता है" ("Personality is something and does something." Allport, 1961, p.29)। इसका मतलब यह हुआ कि व्यक्तित्व के सभी पहलू व्यक्ति के व्यवहारों एवं विचारों का उत्तेजित (activate) करते हैं तथा उसे निर्देशित (direct) करते हैं।
- (iv) विशिष्ट व्यवहार एवं चिंतन (Characteristic behaviour and thought)- इसका अर्थ यह हुआ कि प्रत्येक चीज जिसे व्यक्ति करता है या सोचता है, वह उस व्यक्ति की एक विशिष्टता होती है। इस तरह से प्रत्येक व्यक्ति अनूठा (unique) है तथा वह किसी दूसरे से समान (similar) नहीं होता है।
- ii) **व्यक्तित्व शीलगुण** - आलपोर्ट ने शीलगुण को उद्दीपकों के विभिन्न प्रकारों के प्रति समान ढंग से अनुक्रिया करने का झुकाव या पूर्ववर्ती के रूप में परिभाषित किया है। अपने वातावरण के

उद्दीपक पहलुओ की और संगत एवं सहनीय ढंग से अनुक्रिया करने के तरीकों को शीलगुण कहा जाता है। आलपोर्ट की इस परिभाषा से यह स्पष्ट है कि शीलगुण से उनका तात्पर्य व्यवहारों में संगठता (consistency) से है। आलपोर्ट (Allport, 1937) ने शीलगुण के कुछ विशेषताओं पर भी प्रकाश डाला है जिसमें निम्नांकित प्रमुख है।

- (i) व्यक्तित्व शीलगुण सिर्फ सैद्धांतिक संप्रत्यय (theoretical construct) नहीं होते है बल्कि वे वास्तविक (real) होते है और व्यक्ति के भीतर पाए जाते है।
- (ii) शीलगुण से व्यक्ति का व्यवहार निर्देशित होता है तथा उसके कारण व्यक्ति एक खास तरह का व्यवहार कर सकने में सफल होता है।
- (iii) शीलगुण को आनुभाविक रूप से (empirically) दिखलाया जा सकता है। यह बात अवश्य है कि शीलगुण को देखा तो नहीं जा सकता है परंतु उसके अस्तित्व की जांच की जा सकती है। ऐसा करने के लिए व्यक्ति के व्यवहारों का प्रेक्षण एक खास समय तक किया जाता है।
- (iv) शीलगुण की एक विशेषता यह है कि वे एक-दूसरे से पूर्णतः अलग नहीं होते है बल्कि वे कुछ हद तक परस्परव्यापी (overlap) होते है जैसे, आक्रामकता (aggression) तथा विद्वेषिता (hostility) दो अलग-अलग शीलगुण है परंतु वे सभी एक-दूसरे से काफी संबंधित एवं परस्पर-व्यापी है।
- (v) शीलगुण परिस्थिति के साथ परिवर्तित (very) होते है। वे एक परिस्थिति में उत्पन्न होते है तो दूसरी परिस्थिति में उत्पन्न नहीं होते है।

ऑलपोर्ट ने शीलगुणों को दो मुख्य भागों में बांटा है -

a) सामान्य शीलगुण

b) वैयक्तिक शीलगुण - कार्डिनल शीलगुण, केन्द्रीय शीलगुण, गौण शीलगुण

इन सभी की व्याख्या ईकार्ड - 8 में की जा चुकी है। बाद में आलपोर्ट ने अपने शब्दावली में परिवर्तन किया और सामान्य शीलगुण (common trait) के लिए सिर्फ शीलगुण (trait) का प्रयोग किया तथा वैयक्तिक शीलगुण (individual trait) के लिए वैयक्तिक पूर्ववृत्ति (personal disposition) का प्रयोग किया।

आलपोर्ट (Allport) ने वैयक्तिक पूर्ववृत्ति (personal disposition) को निम्नांकित तीन भागों में बांटा है-

- (i) कार्डिनल पूर्ववृत्ति या शीलगुण (Cardinal predisposition or trait)
- (ii) केन्द्रीय पूर्ववृत्ति या शीलगुण (Central predisposition or trait)
- (iii) गौण पूर्ववृत्ति या शीलगुण (Secondary predisposition or trait)

इन तीनों का वर्णन निम्नांकित है-

- (i) कार्डिनल पूर्ववृत्ति या शीलगुण (Cardinal predisposition or trait)- कार्डिनल पूर्ववृत्ति या शीलगुण से तात्पर्य वैसे शीलगुण से होता है जो व्यक्ति में इतना अधिक व्यापक (pervasive) होता है कि वह प्रत्येक व्यवहार इसी से प्रभावित होकर करता पाया जाता है।

अधिकतर लोगों में कार्डिनल शीलगुण नहीं होते हैं परंतु जिनमें होते हैं वे उस शीलगुण के लिए विश्वविख्यात होते हैं। जैसे, शांति एवं अहिंसा का शीलगुण महात्मा गांधी का एक कार्डिनल शीलगुण था। आक्रामकता (Aggressiveness) हिटलर एवं नेपोलियन का एक कार्डिनल शीलगुण था जिससे वे विश्वविख्यात थे।

- (ii) **केंद्रीय पूर्ववृत्ति या शीलगुण (Central predisposition or trait)**- केंद्रीय शीलगुण वैसे शीलगुणों को कहा जाता है जो व्यापक (pervasive) तो नहीं होते हैं परंतु महत्वपूर्ण जरूर होते हैं जिनपर व्यक्ति अपनी जिंदगी में अधिक प्रकाश डालता है। ऐसे शीलगुण प्रत्येक व्यक्ति में पाया जाता है तथा इसकी संख्या 5 से 10 होती है। ऐसे शीलगुणों की अभिव्यक्ति के बारे में कुछ अनुशंसा (recommendation) करते समय प्रायः किया जाता है। इन शीलगुणों की अभिव्यक्ति व्यक्ति प्रायः अपने व्यवहारों में करता है। बहिर्गमन (outgoing), भावुक (sentimental), सचेत (attentive), सामाजिक, आक्रामकता (aggression) आदि कुछ ऐसे ही शीलगुणों के उदाहरण हैं।
- (iii) **गौण पूर्ववृत्ति या शीलगुण (Secondary predisposition or trait)**- इस श्रेणी में उन शीलगुणों को रखा जाता है जो कम सुस्पष्ट (less conspicuous), कम संगठित (less organized), कम संगत (less consistent) होते हैं और इसलिए व्यक्तित्व की संरचना के लिए कम महत्वपूर्ण होते हैं। जैसे, विशेष हेयर-स्टाइल रखना, खास प्रकार के भोजन करना, विशेष मनोवृत्ति (specific attitude) आदि गौण पूर्ववृत्तियों (Secondary predisposition) के उदाहरण हैं जिनके आधार पर व्यक्तित्व की संरचना (structure) के बारे में कोई ठोस निष्कर्ष पर नहीं पहुंचा जा सकता है।
- iii) **प्रोपियम - प्रोपियम एक लैटिन शब्द 'Proprius' से बना है जिसका अर्थ 'अपना' होता है।** ऑलपोर्ट के अनुसार प्रोपियम से तात्पर्य व्यक्तित्व के उन सभी पहलुओं से होता है जिससे उसमें आन्तरिक एकता तथा संगतता आती है। प्रोपियम मानव प्रकृति के धनात्मक, सर्जनात्मक, वर्धन उन्मुखी तथा गतिशीलता के गुणों को दर्शाता है। आलपोर्ट ने प्रोपियम के स्वरूप एवं विकास का वर्णन सात अवस्थाओं (stages) के रूप में किया है। ये सात अवस्थाएँ का विकास पूर्ण हो जाता है। प्रथम तीन अवस्था अर्थात् शारीरिक-आत्मन् (bodily self), आत्म-पहचान (Self-identity) तथा आत्म-विस्तार (self-esteem) का विकास बच्चों के प्रथम तीन वर्ष की आयु में होता है। बाद की दो अवस्थाओं अर्थात् आत्म-विचार (self-extension) तथा आत्म-प्रतिमा (self-image) 4 साल से 6 साल की आयु में विकसित होती है तथा 'युक्तिसंगत समायोजन' (rational coping) की अवस्था का विकास 6 साल से 12 साल की आयु में होती है तथा 'उपयुक्त प्रयास' (propriate striving) की अवस्था किशोरावस्था में विकसित होती है। प्रोपियम में ये सभी सात पहलुओं का संगम पाया जाता है।

प्रोपियम के स्वरूप तथा विकास की सात अवस्थाएँ निम्न हैं :-

- a) **शारीरिक आत्मन (Bodily Self)** - इस अवस्था में बालक अपने अस्तित्व से अवगत होता है और अपने शरीर को वातावरण के अन्य वस्तुओं से भिन्न समझता है।

- b) आत्म पहचान (**Self Identity**) - इस अवस्था में बच्चे यह अनुभवन करने लगते हैं कि उनके भीतर कई तरह के परिवर्तन के बावजूद उनकी एक अलग पहचान बनी होती है।
- c) आत्म सम्मान (**Self Esteem**) - इस अवस्था में बच्चे अपने उपलब्धियों पर गर्व करने लगते हैं।
- d) आत्म विस्तार (**Self Extension**) - इस अवस्था में बच्चे उन वस्तुओं व लोगों को पहचानने लगते हैं जो उनके मतलब के होते हैं।
- e) आत्म प्रतिमा (**Self Image**) - यहां बच्चे अपने एवं अपने व्यवहार के बारे में एक वास्तविक एवं आदर्श प्रतिमा विकसित कर लेते हैं।
- f) युक्तिसंगत समायोजन के रूप में आत्मन् (**Self a rational copier**) - इस अवस्था में बच्चे दिन प्रतिदिन की समस्याओं के समाधान में तर्क एवं विवेक का प्रयोग करना सीख लेते हैं।
- g) उपयुक्त प्रयास - यह अवस्था किशोरावस्था में विकसित होती है और इसमें किशोर दीर्घकालीन योजना तथा लक्ष्य का निर्माण प्रारंभ कर देते हैं।
- ब) **व्यक्तित्व की गतिकी (Dynamics of Personality)** - व्यक्तित्व की गतिकी की व्याख्या ऑलपोर्ट ने कार्यात्मक स्वतंत्रता तथा चेतन एवं अचेतन अभिप्रेरण के तहत किया है। इन दोनों संप्रत्ययों की व्याख्या इस प्रकार है -
- i. कार्यात्मक स्वायत्ता (**Functional Autonomy**) - कार्यात्मक स्वायत्ता या संप्रत्यय एक प्रेरणात्मक संप्रत्यय है। कार्यात्मक स्वायत्ता का संप्रत्यय यह बतलाता है कि एक सामान्य व्यक्ति जिन साधनों से पहले किसी लक्ष्य की प्राप्ति करता था वह अब स्वयं लक्ष्य हो जाता है। उदाहरण के लिए एक उत्तम वृक्षवर्धन के लिए बीज पर आधारित होता है परंतु जब वह बड़ा हो जाता है तो उसका बीज से कोई संबंध नहीं रहता वह स्वयं आत्म निर्धारक हो जाता है। कार्यात्मक स्वायत्ता के दो स्तर हैं -
- a) संतनन कार्यात्मक स्वायत्ता (**Perseverative functional autonomy**) - यह एक साधारण संप्रत्यय है इसका संबंध कुछ व्यवहार जैसे व्यसन तथा पुनरावृत्ति होने वाली दैहिक क्रियाओं से होता है।
- b) उपयुक्त कार्यात्मक स्वायत्ता (**Propriate functional autonomy**) - इसे ऑलपोर्ट ने अधिक महत्वपूर्ण बतलाया है। कार्यात्मक स्वायत्ता से तात्पर्य व्यक्ति के अर्जित अभिरूचि, मूल्य, मनोवृत्ति, उद्देश्य आदि से होता है। उपयुक्त कार्यात्मक स्वायत्ता का नियंत्रण तीन नियमों से होता है-
- क) ऊर्जा स्तर को संगठित करने का नियम
- ख) दक्षता एवं निपुणता का नियम
- ग) उपयुक्त पैटर्निंग का नियम

इन तीनों का वर्णन निम्नांकित है -

- (a) ऊर्जा स्तर को संगठित करने का नियम (*principle of organizing the energy level*)-

यद्यपि यह नियम यह नहीं बतलाता है कि एक अभिप्रेरक किस प्रकार से विकसित होता है, फिर भी यह नियम इस बात पर बल डालता है कि व्यक्ति अपने बचे हुए ऊर्जा (energy) शक्ति का प्रयोग नये-नये अच्छे व्यवहारों को करने में करता है। ताकि वह इस बची हुई शक्ति का गलत उपयोग अर्थात् ध्वंसात्मक एवं हानिकारक कार्यों में नहीं कर सके। जैसे, जब व्यक्ति नौकरी से अवकाश प्राप्त करता है तो सामान कामों को खत्म करने के बाद भी उसके पास ऊर्जा (energy) एवं समय काफी बच जाता है जिसका वह उपयोग ने अभिप्रेरकों एवं अभिरुचियों की प्राप्ति में करता है।

- (b) दक्षता एवं निष्णुपता का नियम (*principle of mastery and competence*) - यह नियम बतलाता है कि व्यक्ति अपने अभिप्रेरकों की संतुष्टि उच्च स्तर पर करना चाहता है। एक सामान्य वयस्क अपनी उपलब्धियों से ही संतुष्ट नहीं हो जाता है बल्कि वह अपनी दक्षता एवं निष्णुता को और आगे बढ़ाने की ओर प्रेरित करता है।
- (c) उपयुक्त पैटर्निंग का नियम (*principle of appropriate patterning*) - यह नियम यह बतलाता है कि जितने भी उपयुक्त अभिप्रेरक (proprieate motives) होते हैं, वे सभी एक-दूसरे से स्वतंत्र नहीं होते हैं बल्कि वे आत्मन् (self) की संरचना पर आधारित होते हैं जिससे वे ठीक ढंग से जुड़े होते हैं। व्यक्ति अपना प्रत्यक्षज्ञाणात्मक (perceptual) तथा संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं (cognitive processes) को इसी आत्मन् (self) की ओर संगठित करता है। अतः संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि यह नियम व्यक्तित्व की संगतता (consistency) तथा संगठन (integration) की प्राप्ति की ओर किये जाने वाले प्रयासों पर बल डालता है।

आलपोर्ट (Allport) ने यह स्पष्ट किया कि सभी तरह के व्यवहार या अभिप्रेरक (motive) की व्याख्या कार्यात्मक स्वायत्तता (functional autonomy) के सिद्धान्त द्वारा नहीं की जा सकती है। उन्होंने निम्नांकित आठ ऐसे व्यवहारों की सूची प्रदान की है जिनकी व्याख्या कार्यात्मक स्वायत्तता के नियम द्वारा संभव नहीं हो पाता है-

- (i) जैविक अर्न्तनोद (biological drives) से उत्पन्न होने वाले व्यवहार, जैसे-भोजन करना, पानी पीना, सोना, सांस लेना आदि।
- (ii) सहज क्रिया (reflex action) जैसे-पलक गिराना, पाचन क्रिया, जानुक्षेप (kneejerk) आदि।
- (iii) शरीरगठनात्मक तत्त्व (constitutional element) जैसे- शारीरिक बनावट का खास प्रकार।
- (iv) आदत (habits)- कुछ आदतें तो कार्यात्मक रूप से स्वायत्त (autonomous) होती हैं परन्तु कुछ ऐसे होते हैं, जिनका कोई प्रेरणात्मक मूल्य (motivational values) नहीं होता है।
- (v) किसी पुनर्बलन (reinforcenent) के अभाव में छोड़ दिया गया व्यवहार नहीं किया जाने वाला व्यवहार।
- (vi) वैसे व्यवहार जिसे वयस्कावस्था में भी व्यक्ति अपने बाल्यावस्था के द्वंद (conflict) को दिखलाने के लिए करता है।
- (vii) बाल्यावस्था के दमित इच्छाओं से संबंधित व्यवहार।

(viii) उदात्तीकरण (sublimation) अर्थात् एक अभिप्रेरक जब दूसरे अभिप्रेरक के रूप में अभिव्यक्त होता है।

xi चेतन एवं अचेतन अभिप्रेरण (**Conscious & Unconscious Motivation**) - ऑलपोर्ट का मत है कि अधिकतर अभिप्रेरण जिसका संबंध चेतन मस्तिष्क से होता है, वास्तव में अचेतन में छिपी ईच्छाओं से प्रभावित होता है। एक असामान्य व्यक्तित्व भले ही अचेतन द्वारा नियंत्रित होता है परंतु एक परिपक्व व्यक्ति चेतन द्वारा ही नियंत्रित होता है।

स) **व्यक्तित्व का वर्धन (Growth of Personality)** - ऑलपोर्ट के अनुसार सामान्य विकास के अंतिम चरण में व्यक्ति एक परिपक्व एवं मानसिक रूप से स्वरूप व्यक्तित्व विकसित करता है। इन्होंने अपने सिद्धान्त में व्यक्तित्व विकास की व्याख्या के लिए कोई निश्चित कदम (steps) का वर्णन तो नहीं किया है (प्रोप्रियम के विकास के साथ कदमों या चरणों को छोड़कर) परन्तु यह स्पष्ट कर दिया है कि बाल्यावस्था के व्यक्तित्व (childhood personality) तथा वयस्कावस्था के व्यक्तित्व (adulthood personality) में कार्यात्मक निरंतरता (functional continuity) न होकर एक तरह का विभाजन (destructive), स्वार्थपरक, आश्रित आदि बतलाया है। बच्चे हमेशा अपने अर्न्तनोद (drives), तनाव एवं सहजक्रियाओं के अनुरूप इस ढंग से व्यवहार करते हैं कि उन्हें अधिक-से-अधिक आनन्द प्राप्त हो सके तथा कम-से-कम दुःख या तकलीफ हो सके। इस अवस्था की सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि बच्चा अपनी माँ से पर्याप्त सुरक्षा एवं स्नेह की प्राप्ति करना चाहता है और यदि वह ऐसा करने में सफल हो जाता है, तो उसमें धनात्मक मनोवैज्ञानिक विकास (positive psychological growth) होता है। दूसरी तरफ यदि बच्चों को माँ से पर्याप्त स्नेह एवं सुरक्षा नहीं मिल पाता है, तो उस परिस्थिति में एक-दूसरे तरह का व्यक्तित्व विकसित हो जाता है और ऐसे बच्चों में असुरक्षा, आक्रमकता, ईर्ष्या, आत्म-केन्द्रिता (self-centredness) आदि अधिक हो जाते हैं। इस तरह के व्यक्तित्व को अपरिपक्व व्यक्तित्व (immatured personality) कहा जाता है और ऐसे व्यक्तित्व सचमुच में बाल्यावस्था के व्यक्तित्व (childhood personality) का मात्र एक कार्यात्मक विस्तार (functional extension) माना जाता है। इन दोनों तरह के व्यक्तित्व में स्पष्ट विभाजन न होकर एक तरह का कार्यात्मक निरंतरता (functional continuity) बनी रहती है। ऑलपोर्ट ने अपने सिद्धान्त में यह बतलाया है कि सामान्य विकास (normal development) के अंतिम चरण में व्यक्ति एक परिपक्व एवं मानसिक रूप से स्वस्थ (mentally healthy) व्यक्तित्व विकसित करता है।

इस तरह के व्यक्तित्व की 6 कसौटिया है -

- i. आत्मन के ज्ञान का विस्तार
- ii. दूसरों के साथ सौहार्द्रपूर्ण संबंध
- iii. संवेगात्मक सुरक्षा
- iv. वास्तविक प्रत्यक्षण, कौशलो का विकास

v. आत्म वस्तुनिष्ठता

vi. जिंदगी की एक संतोषजनक नीति

द) **शोध एवं मापन (Research & Assessment)** - ऑलपोर्ट ने व्यक्तित्व शोध के लिए नियमान्वेषी दृष्टिकोण की तुलना में भावमूलक दृष्टिकोण को अधिक महत्वपूर्ण बताया है। व्यक्तित्व पर एक महत्वपूर्ण शोध अभिव्यक्ति व्यवहार पर किया गया है। व्यक्तित्व मापन के लिए विषय विश्लेषण, परीक्षण एवं मापनी, गहन, विश्लेषण, रेटिंग्स, व्यक्तिगत लेखन, शारीरिक एवं शरीर गठनात्मक निदान आदि प्रमुख विधियां हैं।

ऑलपोर्ट के सिद्धांत का मूल्यांकन - ऑलपोर्ट का व्यक्तित्व सिद्धांत उत्तेजनपूर्ण तथा व्याख्यात्मक दोनों ही हैं। इनका सिद्धांत स्पष्ट चिंतन एवं यथार्थता का एक उत्तम स्रोत है। व्यक्तित्व के क्षेत्र में आलपोर्ट का सबसे महत्वपूर्ण शोध अभिव्यक्ति व्यवहार (expressive behaviour) पर किया गया है। यह वह व्यवहार होता है जिससे व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति होती है, ऐसा व्यवहार अधिक स्वाभाविक (spontaneous) होता है, इससे व्यक्तित्व के मूल पहलुओं की अभिव्यक्ति होती है, यह सामान्यतः परिवर्तित नहीं होता है, इसका कोई विशिष्ट उद्देश्य (specific purpose) नहीं होता है और इसे व्यक्ति बिना किसी तरह के अपनी महत्वपूर्ण सूचनाएँ मिलती हैं। वर्ग में शिक्षक पढ़ाते समय विषय पर सुनियोजित ढंग से व्याख्यान देने के अलावा विशेष हाव-भाव, आनन अभिव्यक्ति (facial expression) तथा गति (movement) आदि करते हैं जो आलपोर्ट (Allport) के अनुसार अभिव्यक्ति व्यवहार (expressive behaviour) के उदाहरण हैं और इसका विश्लेषण कर शिक्षक के कुछ व्यक्तित्व शीलगुणों (personality traits) के बारे में अच्छे ढंग से जाना जाता है। आलपोर्ट तथा कैन्ट्रील (Allport & Cantril, 1934) तथा ऐस्टेस (Estes, 1938) ने एक अध्ययन करके प्रयोज्यों के आनन अभिव्यक्ति, बोलने का ढंग तथा हाव-भाव के आधार पर उनके कुछ शीलगुण जैसे- अन्तर्मुखता-वहिर्मुखता (introversion extroversion) के अस्तित्व के बारे में अंदाज लगाने में सफल हो पाये हैं।

जहाँ तक व्यक्तित्व मापक (personality measurement) का प्रश्न है, आलपोर्ट (Allport) ने इसके लिए कई विधियों का प्रतिपादन किया है। इन विधियों में विषय विश्लेषण (content analysis), परीक्षण (tests) एवं मापनी (scale), गहन विश्लेषण (depth analysis), रेटिंग्स (ratings), व्यक्तिगत लेखन (personal document), शारीरिक एवं शरीरगठनात्मक निदान (physiological and constitutional diagnosis) आदि प्रमुख हैं। आलपोर्ट ने अन्य दो सहकर्मियों अर्थात् वर्णन एवं लिण्डजे (Vernon & Lindzey) के साथ मिलकर 1960 में व्यक्ति मूल्यों (values) के मापने का भी एक परीक्षण बनाया है जिसका नाम “आलपोर्ट- वर्णन -लिण्डजे स्टडी ऑफ वैल्यू (Allport-Vernon-Lindzey Study of Values) रखा गया है जिसके माध्यम से स्प्रेंगर (Spranger) द्वारा बतलाये गए 6 प्रमुख मानवीय मूल्यों का मापन सफलतापूर्वक होता है। वे 6 मूल्य हैं- सैद्धान्तिक मूल्य (theoretical value), आर्थिक मूल्य (economic value), सौन्दर्यपरक मूल्य (aesthetic value), सामाजिक मूल्य (social-value), राजनैतिक मूल्य (political value) तथा धार्मिक मूल्य (religious value)।

आलपोर्ट के सिद्धान्त का मूल्यांकन (Evaluation of Allport's theory)- आलपोर्ट के व्यक्तित्व सिद्धान्त के कुछ गुण (merits) एवं कुछ परिसीमाएँ (limitations) भी हैं। इसके प्रमुख गुण निम्नांकित हैं-

- (i) आलपोर्ट (Allport) ने अपना व्यक्तित्व सिद्धान्त “शैक्षिक परिस्थितियों (academic setting) में न कि मनोविश्लेषणात्मक परिस्थिति (psychoanalytic setting) में विकसित किया था। अतः इस सिद्धान्त को शिक्षण मनोवैज्ञानिकों (academic psychologists) द्वारा तुलनात्मक रूप से अधिक मान्यता दी गई है।
- (ii) आलपोर्ट के सिद्धान्त का एक विशेष गुण यह बतलाया गया है कि इसमें व्यक्ति के वर्तमान एवं भविष्य को उसके भूत (past) की अपेक्षा महत्वपूर्ण समझा गया है। व्यक्ति के प्रेरणा (motivation) एवं व्यवहार को समझने के लिए आलपोर्ट (Allport) ने उसके वर्तमान एवं भविष्य पर जो बल डाला है, वह अपने आप में अद्वितीय है। इससे व्यक्तित्व की संरचना को वैज्ञानिक ढंग से समझने में काफी मदद मिलती है।
- (iii) आलपोर्ट को व्यक्तित्व शोध (personality research) के प्रति जो भावमूलक दृष्टिकोण (idiographic approach) है वह काफी सराहनीय है क्योंकि इससे व्यक्ति विशेष के व्यक्तित्व का विस्तृत विश्लेषण करने तथा उसे समझने में विशेष मदद मिलती है।
- (iv) आलपोर्ट के व्यक्तित्व सिद्धान्त में व्यक्तित्व की संरचना की व्याख्या शीलगुणों के रूप में की गई है। इन्होंने शीलगुणों के विस्तृत प्रकार बतलाकर व्यक्तित्व की संरचना का जो वर्णन प्रस्तुत किया है, उसे आधुनिक मनोवैज्ञानिकों द्वारा एक महत्वपूर्ण योगदान माना गया है। इन गुणों के बावजूद आलपोर्ट के व्यक्तित्व सिद्धान्त की कुछ आलोचनाएँ (criticisms) हैं जिनमें निम्नांकित प्रमुख हैं-

- (i) फिस्ट (Feist, 1985) का कहना है कि आलपोर्ट का व्यक्तित्व सिद्धान्त दर्शनशास्त्रीय अनुमान (philosophical speculation) एवं सामान्य बोध (common sense) पर आधारित है न कि वैज्ञानिक अनुसंधानों पर। आलपोर्ट ने अपने सिद्धान्त के आधार पर बनाये गये प्राक्कल्पनाओं (hypotheses) की जाँच करने के लिए कोई महत्वपूर्ण शोध नहीं किया है। अतः उनके सिद्धान्त के तथ्यों एवं मान्यताओं की वैधता (validity) अधिक नहीं बतलायी गयी है।
- (ii) मनोविश्लेषकों (psychoanalysts) ने आलपोर्ट के कार्यात्मक स्वायत्तता (functional autonomy) के संप्रत्यय पर आपत्ति जतायी है और कहा है कि इसमें व्यक्ति की गत अनुभूतियों को नजरअंदाज कर वर्तमान एवं भविष्य पर अधिक बल डाला गया है। इस तरह के वर्णन से व्यक्तित्व के स्वरूप को सही-सही समझना कठिन है।
- (iii) कुछ आलोचकों का मत है कि आलपोर्ट के सिद्धान्त द्वारा मनोवैज्ञानिक रूप से स्वस्थ व्यक्ति (psychological healthy person) के कार्यात्मक स्वायत्त अभिप्रेरकों (functionally autonomous motives) का तो वर्णन हो जाता है परन्तु बच्चों,

मनोविकृत (psychotic) तथा तंत्रिकातापी (neurotic) व्यक्तियों के अभिप्रेरकों (motives) की व्याख्या आलपोर्ट के सिद्धान्त में नहीं होती है। ऐसे व्यक्ति क्यों कोई व्यवहार करते हैं, इसका उत्तर हमें आलपोर्ट के सिद्धान्त में नहीं मिलता है।

- (iv) कार्यात्मक स्वायत्तता (functional autonomy) के बारे में एक आलोचना यह भी की जाती है कि आलपोर्ट ने इसमें यह नहीं बतलाया है कि किस तरह से मौलिक अभिप्रेरक (original motive) एक स्वायत्त अभिप्रेरक (autonomous motive) में बदल जाता है। उदाहरणस्वरूप, किसी प्रक्रिया द्वारा धन कमाने के लिए कड़ी मेहनत करने का अभिप्रेरक बाद में जब व्यक्ति धनी हो भी जाता है, तो वह अपने आप कड़ी मेहनत करने का एक स्वतंत्र अभिप्रेरक के रूप में किस तरह बदल जाता है। चूँकि परिवर्तन के इस प्रक्रम (mechanism) को आलपोर्ट ने नहीं बतलाया है, अतः आलोचकों का मत है कि यह पूर्वकथन (prediction) करना मुश्किल है कि बाल्यावस्था का कौन-सा अभिप्रेरक वयस्कावस्था में एक स्वतंत्र अभिप्रेरक (autonomous motive) के रूप में परिणत हो जाएगा?
- (v) आलपोर्ट ने व्यक्तित्व शोध (personality research) के प्रति जो भावमूलक दृष्टिकोण (idiographic approach) अपनाया है, उसकी भी आलोचना आधुनिक मनोवैज्ञानिकों द्वारा की गयी है। इन मनोवैज्ञानिकों का मत है कि व्यक्तित्व के अध्ययन का सही दृष्टिकोण भावमूलक शोध न होकर नियमान्वेशी शोध (nomothetic research) है जिसमें कई व्यक्तियों को (न कि किसी एक व्यक्ति को) एक साथ अध्ययन करके उसका सांख्यिकीय विश्लेषण करके सामूहिक रूप से इसकी व्याख्या की जाती है। इस आलोचना के मुख्य समर्थक सुल्ज (Schultz, 1990) हैं।
- (vi) आधुनिक मनोवैज्ञानिकों का मत है कि आलपोर्ट ने अपने व्यक्तित्व सिद्धान्त में सिर्फ स्वस्थ वयस्क (healthy adult) का अध्ययन किया है, तंत्रिकातापी (neurotic) तथा मनोविकृत व्यक्तियों को अध्ययन नहीं किया है। अतः इसकी उपयोगिता काफी सीमित है।
- (vii) कुछ आलोचकों जैसे फिट्स (Fitts, 1990) तथा फिशर (Fisher, 1989) का मत है कि आलपोर्ट के व्यक्तित्व सिद्धान्त के कुछ संप्रत्ययों (concepts) का अध्ययन प्रयोगात्मक विधि द्वारा करना संभव नहीं है। जैसे, आलपोर्ट के एक अतिमहत्त्वपूर्ण संप्रत्यय अर्थात् कार्यात्मक स्वायत्तता (functional autonomy) को प्रयोगशाला की परिस्थिति में किस तरह अध्ययन किया जा सकता है? इसे प्रयोगकर्ता प्रयोगशाला में किस तरह जोड़-तोड़ (manipulate) कर सकता है ताकि इसका प्रभाव अन्य चरों पर देखा जा सके? इन प्रश्नों का संतोशजनक उत्तर आलपोर्ट के सिद्धान्त में नहीं मिल पाता है।
- (viii) कुछ आलोचकों जैसे सुल्ज (Schultz, 1990) ने आलपोर्ट के इस दावे को अस्वीकार कर दिया है कि बच्चा तथा वयस्क एवं सामान्य तथा असामान्य के

व्यक्तित्व में अनिरंतरता (discontinuity) होती है। सुल्ज का मत है कि बच्चों पर तथा असामान्य व्यक्तियों पर कई ऐसे शोध किये गए हैं जिनमें क्रमशः वयस्क एवं सामान्य व्यक्तियों को समझने में काफी मदद मिली है।

- (ix) आलोचकों का यह भी मत है कि आलपोर्ट सिद्धान्त में व्यक्तित्व पर सामाजिक कारकों के पड़ने वाले प्रभावों की उपेक्षा की गयी है।

इन आलोचनाओं के बावजूद आलपोर्ट का व्यक्तित्व सिद्धान्त उत्तेजनपूर्ण (stimulating) तथा व्याख्यात्मक (illuminating) दोनों ही है। इसका सिद्धान्त स्पष्ट चिन्तन एवं यथार्थता (precision) का एक ऐसा मानक (standard) प्रदान करता है जो भविष्य के मनोवैज्ञानिकों के लिए प्रेरणा का एक उत्तम होते है।

अभ्यास प्रश्न - 1

- 1) प्रोपियम एक लैटिन शब्द से बना है।
- 2) आलपोर्ट ने व्यक्तित्व शोध के दृष्टिकोण को दृष्टिकोण से उत्तम माना है।

9.4 टाइप ए तथा बी व्यक्तित्व सिद्धान्त (Type a & B Personality Theory)

अ) परिभाषा -

जेनकिन (Jenkins, 1971) ने “प्रकार A “ व्यक्तित्व का वर्णन निम्न प्रकार किया है - “ यह एक जीवन शैली या व्यवहार है जिसकी विशेषता अत्यधिक प्रतिस्पर्धा, उपलब्धि के लिए अधिकतम संघर्ष, गुस्सा अधीरता, अत्यधिक सक्रियता, चेहरे पर तनाव, समय तथा जिम्मेदारियों की चुनौतियों का तनाव होती है। इस प्रकार के व्यक्ति अपने कार्य के लिए इतना गहरा तक समर्पित है कि उनके जीवन के अन्य पक्ष नकारे जाते हैं।

फ्रिडमैन तथा रोमसेन (1974) के अनुसार ‘ए प्रकार’ व्यवहार प्रतिरूप को क्रिया संवेग जटिल के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो उस व्यक्ति में देखा जा सकता है जो आक्रामक रूप से अधिक से अधिक कम समय में उपलब्ध करने के लगातार संघर्ष में लगा हो।

डेविड ग्लास (1977) ने एक अन्य गुण प्रकार व व्यवहार का बताया है। वे प्रकार ए व्यवहार को तनावपूर्ण स्थितियों से समायोजन की शैली के रूप में देखते हैं। प्रकार ए व्यक्ति स्थितियों पर नियंत्रण खोने से अधिक भयभीत हो सकते हैं और स्थिति पर नियंत्रण के लिए अधिकाधिक प्रयास करते हैं। नियंत्रण बनाये रखने की आवश्यकता उन्हें कई अनियंत्रित स्थितियों में असहाय, कुण्ठा एवं अवसाद के अनुभव बारम्बारता से देती है।

ब) टाइप ए व बी के गुण - Chesney, Frautsche and Rosenman, 1985, Friedman & Rosenman 1974 ने प्रकार व्यवहार F के प्रमुख गुण इस प्रकार बताए हैं -

- i. प्रतिस्पर्धात्मक उपलब्धि उन्मुखता (Competitive Achievement Orientation) - प्रकार ए के व्यक्ति अत्यधिक प्रतिस्पर्धात्मक, आकांक्षी, स्वाआलोचक तथा पूर्णतावादी होते हैं। वे लक्ष्यों के लिए प्रयासो अथवा उपलब्धि से बिना आनन्द की भावना के साथ कठोर कार्य करते

है। वे अधिकाधिक उपलब्धि प्राप्त करने के लिए अभिप्रेरित रहते हैं और कभी भी अपने पद/स्थिति या आय से संतुष्ट नहीं होते।

- ii. समय पाबंदी (**Time Urgency**) - प्रकार ए के व्यक्ति अत्यधिक समय के पाबंद होते हैं एवं सदैव कार्यों की अंतिम सीमा बांध कर उसे पूर्ण करने में संघर्षरत रहते हैं। एक ही समय में वे अनेक कार्य करने की कोशिश करते हैं जैसे बात करते हुए टेलीफोन सुनना, दूरदर्शन देखना आदि। वे अपनी बात को शीघ्रता से एवं जोर लगाकर बोलते हैं।
- iii. गुस्सा (**Anger / Hostility**) - प्रकार A के व्यक्तित्व वाले व्यक्ति शीघ्र ही चिडचिडे हो जाते हैं एवं गुस्सा करने लगते हैं, चाहे वे इसे बाह्य रूप से प्रदर्शित न करें। ये शीघ्र ही तर्क करने लगते हैं, चुनौती देने लगते हैं। इसके विपरीत प्रकार B प्रतिरूप के व्यक्ति तुलनात्मक रूप से शांत, सरलता से चलने वाले धैर्यवान होते हैं। वे कम प्रतिस्पर्धात्मक होते हैं जीवन को सरलता से, बिना शीघ्रता किये जीते हैं। साथ संघर्ष नहीं करते एवं कम गुस्सा व चिडचिडापन प्रदर्शित करते हैं।

स) व्यवहार प्रतिरूप एवं तनाव (**Behaviour Pattern & stress**) - प्रकार ए के व्यक्ति तनाव के स्रोतों के प्रति अन्य व्यक्तियों की तुलना में भिन्न रूप से प्रतिक्रिया करते हैं और उसकी व्यक्तिगत नियंत्रण के लिए भय के रूप में व्याख्या करते हैं। प्रकार ए के व्यक्ति उनके जीवन में चुनौतीपूर्ण स्थितियों को पसंद करते हैं। वे शीघ्रता में रहते हैं और देरी पसंद नहीं करते हैं।

द) प्रकार ए तथा बी व्यवहार का मूल्यांकन (**Assessing Type A & B Behaviour**) - प्रकार ए एवं प्रकार बी व्यवहार प्रतिरूपों का मापन संरचित साक्षात्कार (Structural Interviews) या प्रश्नावली (Questionnaire) विधि द्वारा किया जा सकता है। इनमें व्यवहार से संबंधित अनेक प्रश्न होते हैं जिनके लिए व्यक्ति प्रतिक्रिया व्यक्त करता है।

उदाहरण के लिए -

- i. क्या आप सामान्यतया जल्दी चलते हैं, और जल्दी खाते हैं?
- ii. यदि आराम के लिए अतिरिक्त समय लेते हैं तो क्या आप ग्लानि अनुभव करते हैं।
- iii. क्या आप अक्सर एक से अधिक चीजें एक साथ करने की कोशिश करते हैं ?

संरचित साक्षात्कार प्रश्नावली की तुलना में अधिक वैध एवं विश्वसनीय परिणाम देता है।

प्रकार ए व्यवहार एवं स्वास्थ्य - (Type A Behaviour & Health)

व्यवहार प्रतिरूप तथा स्वास्थ्य में संबंधों का अध्ययन करने के लिए अनेक शोध हुए हैं। एक अध्ययन में पाया गया कि प्रकार ए व्यक्ति अधिक श्वसन संबंधी (कफ, अस्थमा) पाचन संबंधी (अल्सर, अपच, जी मिचलाना) आदि परेशानियां अनुभव करते हैं। प्रकार ए व्यक्ति वाले व्यक्तियों में हृदयनाडी रोग होने की संभावना अधिक होती है। प्रकार बी व्यक्तित्व में यह संभावना कम होती है।

अभ्यास प्रश्न - 2

सत्य/असत्य कथन बताइये -

- 1 प्रकार बी व्यक्तित्व वाले व्यक्तियों में हृदय धमनी रोग होने की संभावना अधिक होती है।

इकाई - 10

आइजेन्क का व्यक्तित्व सिद्धांत तथा व्यक्तित्व का बिग फाइव कारकीय सिद्धांत (Eysenck Personality theory and the Big five theories of Personality)

इकाई की रूपरेखा

- 10.1 प्रस्तावना
- 10.2 उद्देश्य
- 10.3 आइजेन्क का व्यक्तित्व सिद्धांत
- 10.4 व्यक्तित्व का बड़े पांच कारकीय सिद्धांत
- 10.5 सारांश
- 10.6 शब्दावली
- 10.7 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
- 10.8 संदर्भग्रंथ
- 10.9 निबंधात्मक प्रश्न

10.1 प्रस्तावना

व्यक्तित्व व्यक्ति के मनोदैहिक गुणों का वह गत्यात्मक संगठन है जो व्यक्ति के वातावरण के प्रति अपूर्व समायोजन को निर्धारित करता है। व्यक्तित्व अध्ययन के लिए अन्य-अन्य सिद्धांतों/उपागमों का विकास हुआ। प्रस्तुत इकाई में आप आइजेन्क का व्यक्तित्व सिद्धान्त तथा व्यक्तित्व का वृहद पांच कारकीय सिद्धांत का विस्तार पूर्वक अध्ययन करेंगे।

10.2 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप -

- आइजेन्क के व्यक्तित्व सिद्धांत को समझेंगे।
- व्यक्तित्व के पांच कारकीय सिद्धांत को बता सकेंगे।

10.3 आइजेन्क का व्यक्तित्व सिद्धांत - (Eysenck Personality Theory)

व्यक्तित्व का अंग्रेजी अनुवाद 'Personality' है जो लैटिन शब्द परसोना (Persona) से बना है तथा जिसका अर्थ नकाब (Mask) होता है जिसे नायक (actor) नाट्य करते समय पहनते हैं। इसके अनुसार

व्यक्तित्व का अर्थ बाहरी गुणों से लगाया जाता है। जिस व्यक्ति की बाहरी वेशभूषा जितनी अधिक भडकीली होगी उसका व्यक्तित्व उतना ही अधिक अच्छा समझा जाएगा। परंतु वर्तमान में यह एक अवैज्ञानिक तथ्य समझा जाता है। एवं व्यक्तित्व की वैज्ञानिक तथ्यों के आधार पर कई नई परिभाषाएं दी गई हैं।

परिभाषाएं (Definitions) -

- ऑलपोर्ट (1937) के अनुसार “व्यक्तित्व व्यक्ति के भीतर उन मनोशारीरिक तंत्रों का गतिशील या गत्यात्मक संगठन है जो वातावरण में उसके अपूर्व समायोजन को निर्धारित करते हैं।”
- आइजेन्क (1952) के अनुसार “व्यक्तित्व व्यक्ति के चरित्र, चित्तप्रकृति, ज्ञानशक्ति तथा शरीर गठन का करीब-करीब एक स्थायी एवं टिकाऊ संगठन है जो वातावरण में उसके अपूर्ण समायोजन का निर्धारण करता है।”
- बेरोन (1933) के अनुसार “व्यक्तियों के संवेगों, चिन्तनों तथा व्यवहारों के अनूठे एवं सापेक्ष रूप से स्थित पैटर्न के रूप में व्यक्तित्व को सामान्यतः परिभाषित किया जाता है।”
- गुथरी (1944) के अनुसार, “ व्यक्तित्व की परिभाषा सामाजिक महत्व की उन आदतों तथा आदत संस्थानों के रूप में की जा सकती है जो स्थिर तथा परिवर्तन के अवरोध वाली होती है।”
- मनु (1953) के अनुसार, “ व्यक्तित्व की परिभाषा उस अति विशेषतापूर्ण संगठन के रूप में की जा सकती है। जिसमें व्यक्ति की संरचना, व्यवहार के ढंग, रूचियां, अभिवृत्तियां, क्षमताएं, योजनाएं और अभिक्षमताएं सम्मिलित हैं।”

चाइल्ड (Child, 1968) के अनुसार, “व्यक्तित्व से तात्पर्य कमोवेश स्थायी आंतरिक कारकों से होता है जो व्यक्ति के व्यवहार को एक समय से दूसरे समय में संगत बनाता है तथा तुल्य परिस्थितियों में अन्य लोगों के व्यवहार से अलग करता है।”

वाल्टर मिसकेल (Walter Mischel, 1981) के अनुसार, “प्रायः व्यक्तित्व से तात्पर्य व्यवहार के उस विशिष्ट पैटर्न (जिसमें चिंतन एवं संवेग भी सम्मिलित हैं) से होता है जो प्रत्येक व्यक्ति के जिंदगी की परिस्थितियों साथ होने वाले समायोजन का निर्धारण करता है।”

उपरोक्त परिभाषाओं के विश्लेषण से व्यक्तित्व का अर्थ अधिक स्पष्ट हो जाता है। इसका संयुक्त विश्लेषण निम्न प्रकार है -

1. व्यक्तित्व एक मनोशारीरिक तंत्र है अर्थात् एक ऐसा तंत्र है जिसके मानसिक तथा शारीरिक दोनों पक्ष होते हैं।
2. व्यक्तित्व में गत्यात्मक संगठन पाया जाता है। गत्यात्मक संगठन से तात्पर्य यह होता है कि मनोशारीरिक तंत्र के भिन्न-भिन्न तत्व जैसे शीलगुण, आदत, आदि एक दूसरे से इस तरह संबंधित होते हैं कि उन्हें एक दूसरे से पूर्णतः अलग नहीं किया जा सकता है। इस संगठन में परिवर्तन संभव है।

3. व्यक्तित्व से व्यवहार में संगतता पायी जाती है। अर्थात् व्यक्ति का व्यवहार एक समय से दूसरे समय में संगत होता है।
4. व्यक्तित्व के कारण ही व्यक्ति का वातावरण में अपूर्व समायोजन का निर्धारण होता है। अतः व्यक्तित्व भिन्न भिन्न शीलगुणों का ऐसा गत्यात्मक संगठन होता है जिसके कारण व्यक्ति का व्यवहार तथा विचार किसी भी वातावरण में अपने ढंग का अर्थात् अपूर्व होता है।

1. मनोशारीरिक तंत्र (Psychophysical system)-

व्यक्तित्व एक ऐसा तंत्र (system) है जिसके मानसिक (Psychophysical) तथा शारीरिक (Physical) दोनों ही पक्ष होते हैं; यह तंत्र ऐसे तत्वों (element) का एक गठन होता है जो आपस में अंतःक्रिया (interaction) करते हैं। इस तंत्र के मुख्य तत्व शीलगुण (trait), संवेग (emotion), आदत (habit), ज्ञानशक्ति (intellect) चित्तप्रकृति (temperament), चरित्र (character), अभिप्रेरक (motive), आदि हैं जो सभी मानसिक गुण हैं परंतु इन सब का आधार शारीरिक (Physical) अर्थात् व्यक्ति के ग्रंथीय प्रक्रियाएं एवं तंत्रिकीय प्रक्रियाएं (natural processes) हैं। इसका स्पष्ट मतलब यह हुआ कि व्यक्तित्व न तो पूर्णतः मानसिक (Psychological) है और न पूर्णतः शारीरिक ही होता है। व्यक्तित्व इन दोनों तरह के पक्षों का मिश्रण है।

2. गत्यात्मक संगठन (Dynamic organisation)-

गत्यात्मक संगठन से तात्पर्य यह होता है कि मनोशारीरिक तंत्र (Psychophysical system) के भिन्न-भिन्न तत्व (element) जैसे शीलगुण (trait), आदत (habit) आदि एक-दूसरे से इस तरह संबंधित होकर संगठित हैं कि उन्हें एक-दूसरे से पूर्णतः अलग नहीं किया जा सकता है। इस संगठन में परिवर्तन (change) संभव है। यही कारण है कि इसे एक गत्यात्मक संगठन (Dynamic organisation) कहा गया है। इस तरह से गत्यात्मक संगठन से स्पष्ट मतलब यह है कि व्यक्तित्व के शीलगुण या अन्य तत्व आपस में इस तरह से संगठित होते हैं कि उनमें परिवर्तन भी होते रहते हैं। उदाहरणस्वरूप कोई व्यक्ति नौकरी पाने के लिए पहले ईमानदार (honesty), उत्तरदायी (responsible) तथा समयनिष्ठ (punctual) हो सकता है परंतु नौकरी मिलने के कुछ वर्षों बाद उसमें उत्तरदायित्व (responsibility) तथा समयनिष्ठता (punctuality) का शीलगुण ज्यों-का-त्यों हो सकता है परंतु संभव है कि उसमें ईमानदारी का गुण बदलकर बेईमानी का गुण विकसित हो जाय। इस उदाहरण में पहले के तीन गुणों के संगठन (organisation) में नौकरी मिलने के बाद एक परिवर्तन दिखलाया गया है। ऐसा भी संभव है कि इन तीनों शीलगुणों का संगठन नौकरी मिलने के बाद पूर्णतः बदल जाय। (यानी, इसके तीनों शीलगुणों में परिवर्तन हो जाय)। शीलगुणों के संगठन में इस तरह का परिवर्तन गत्यात्मक संगठन (Dynamic organisation) का उदाहरण है। इस तरह से संगठन में विसंगठन (disorganisation) भी सम्मिलित होता है जिसके सहारे असामान्य व्यवहार (abnormal behaviour) की व्याख्या होती है। दूसरे शब्दों में, यदि किसी व्यक्ति के शीलगुणों (trait) के संगठन में इस ढंग का परिवर्तन आ जाता है कि उसका व्यवहार विसंगठित (disorganised) हो जाता है तथा जिसके फलस्वरूप वह असामान्य व्यवहार अधिक करने लग जाता है तो इसे भी एक गत्यात्मक संगठन की ही श्रेणी में रखेंगे।

3. संगतता (Consistency)-

व्यक्तित्व में व्यक्ति का व्यवहार एक समय से दूसरे समय में संगत होता है। संगतता से मतलब यह होता है कि व्यक्ति का व्यवहार दो भिन्न अवसरों पर भी लगभग एक समान होता है। इस कारक वह चाईल्ड के परिभाषा में प्रत्यक्ष रूप से बल डाला गया है। व्यक्ति के व्यवहार में इसी संगतता के आधार पर उसमें अमुक शीलगुण (जतंपज) के होने का अनुमान लगाया जाता है।

4. वातावरण में अपूर्व समायोजन का निर्धारण (Determination of unique ंdjustment to environment)-

प्रत्येक व्यक्ति में मनोशारीरिक गुणों का एक ऐसा गत्यात्मक संगठन (Dynamic organisation) पाया जाता है कि उसका व्यवहार वातावरण में अपने-अपने ढंग से अपूर्व (unique) होता है। वातावरण समान होने पर भी प्रत्येक व्यक्ति का व्यवहार (behaviour), विचार (thought), होने वाला संवेग (emotion) आदि अपूर्व होता है जिसके कारण उस वातावरण के साथ समायोजन (adjust) करने का ढंग भी प्रत्येक व्यक्ति में अलग-अलग होता है। आइजेंक (म्लेमदबा), आलपोर्ट (Illport), चाईल्ड (child) तथा मिसकेल (mischel) ने इस पक्ष पर समान रूप से अपनी-अपनी परिभाषाओं में बल डाला है। यही कारण है कि 1961 में आलपोर्ट (Allport) ने अपनी 1937 की परिभाषा के अंतिम पांच शब्द बदलकर इस प्रकार कर दिए (“unique adjustment to his environment) की जगह पर “characteristic behaviour and thought” को सम्मिलित किया गया। इस परिवर्तन का उद्देश्य यह बतलाना था कि व्यक्ति का व्यवहार मात्र अनुकूली (ंdaptive) ही नहीं होता है बल्कि कथनीय (experssive) भी होता है। इसका मतलब यह हुआ कि व्यक्ति वातावरण के साथ सिर्फ समायोजन (djustment) या अनुकूलन (daptation) ही नहीं करता है बल्कि उस वातावरण के साथ इस तरह अंतःक्रिया (interaction) करता है कि उस वातावरण को भी व्यक्ति के साथ अनुकूलन या अभियोजन योग्य होना पड़ता है।

निष्कर्ष तौर पर यह कहा जा सकता है कि व्यक्तित्व में भिन्न-भिन्न शीलगुणों (traitे) का एक ऐसा गत्यात्मक संगठन (Dynamic organisation) होता है जिसके कारण व्यक्ति का व्यवहार तथा विचार किसी भी वातावरण में अपने ढंग का अर्थात् अपूर्व (unique) होता है।

आइजेन्क ने युगम (1923) के व्यक्तित्व प्रकारों को मॉडल बनाकर इन प्रकारों को लक्षण सिद्धांतों से संबंधितकर एक नये सिद्धांत का प्रतिपादन किया है। आइजेन्क ने व्यक्तित्व के निम्नांकित तीन प्रकार बताये हैं जो द्विध्रुवीय हैं :-

1. अन्तर्मुखता - बहिर्मुखता (Introversion - Extraversion)

आइजेन्क ने युग के अन्तर्मुखता तथा बहिर्मुखता के सिद्धांत को तो स्वीकार किया परंतु युग के समान उन्होंने इसे व्यक्तित्व का दो अलग-अलग प्रकार नहीं माना। उनका कहना था कि चूंकि ये दोनों प्रकार एक दूसरे के विपरीत हैं अतः इन्हें एक साथ मिलाकर रखा जा सकता है तथा एक ही मापनी बनाकर अध्ययन किया जा सकता है। किसी व्यक्ति में सामाजिकता अधिक है तथा वह लोगों से मिलना जुलना अधिक पसंद करता है तो यह कहा जाता है कि व्यक्ति इस विमा के बहिर्मुखता पक्ष में ऊंचा है। दूसरी तरफ यदि व्यक्ति अकेले रहना पसंद करता है लज्जालु तथा

संकोचशील भी है तो ऐसा कहा जाता है कि ऐसा व्यक्ति इस विमा के अन्तर्मुखता पक्ष में अधिक ऊंचा है।

2. स्नायुविकृति- स्थिरता - (Neuroticism - Stability)

आइजेन्क के अनुसार व्यक्तित्व का यह दूसरा प्रमुख प्रकार है। व्यक्तित्व के इस प्रकार के पहले घोर पर होने पर व्यक्ति में सांवेगिक नियंत्रण कम होता है तथा उनकी इच्छा शक्ति कमजोर होती है। इनके विचारों एवं क्रियाओं में मंदता पायी जाती है। इनमें अन्य व्यक्तियों के सुझाव को चुपचाप स्वीकार कर लेने की प्रवृत्ति अधिक होती है इनमें समाजिकता का अभाव पाया जाता है। ऐसे व्यक्तियों द्वारा प्रायः अपनी इच्छाओं का दमन किया जाता है। इस प्रकार के दूसरे छोर पर वाले व्यक्तित्व में स्थिरता होती है। जिसकी और बढ़ने पर व्यक्ति में स्थिरता की मात्रा बढ़ती जाती है।

3. मनोविक्षिप्तता परां ह की क्रियाएं (Psychoticism - Superego functions) -

आइजेन्क के अनुसार मनोविक्षिप्तता वाले व्यक्तित्व के प्रकार में क्षीण, एकाग्रता, क्षीण स्मृति तथा क्रूरता का गुण अधिक होता है। इसके अलावा ऐसे व्यक्ति में असंवेदनशीलता, दूसरों के प्रति सौहार्दपूर्ण संबंधकी कमी आदित गुण पाए जाते हैं।

इस तरह हम देखते हैं कि आइजेन्क के तीनों प्रकार द्विध्रुवीय हैं।

अभ्यास प्रश्न - 1

सत्य/असत्य कथन बताइये -

1. अन्तर्मुखता-उभयमुखता आइजेन्क के सिद्धांत का एक आयाम है।
2. मनोविक्षिप्तता वाले व्यक्तित्व में क्षीण स्मृति तथा क्रूरता का गुण पाया जाता है।

10.4 व्यक्तित्व का वृहद पांच कारकीय सिद्धांत - (The Big Five factor theory of Personality)

कोस्टा एवं मैक्रे, होगान, मैक्रे, नौलर, ला एवं कैमरे ने व्यक्तित्व के क्षेत्र में महत्वपूर्ण शोध किए हैं। इन शोधकर्ताओं के बीच व्यक्तित्व के निम्नांकित पांच महत्वपूर्ण एवं हस्त-पुष्ट विमाएं हैं जो सभी द्विध्रुवीय हैं -

- i. बहिर्मुखता (Extraversion, E) - व्यक्तित्व की यह एक ऐसी विमा है जिसमें एक परिस्थिति में वह सामाजिक, मजाकिया, स्नेहपूर्ण, बातूनी आदि का शीलगुण दिखाता है तो दूसरी परिस्थिति में वह संयमी, गंभीर, रूखापन, शांत, सचेत रहने आदि का शीलगुण भी दिखाता है। इस तरह से बहिर्मुखता को एक द्विध्रुवीय विभा माना गया है।
- ii. सहमतिजन्यता (Agreeableness or A) - इस विभा के भी दो छोर या ध्रुव बतालाए गए हैं। इस विमा के अनुसार व्यक्ति एक परिस्थिति में सहयोगी और दूसरी पर विश्वास करने वाला उदार, सीधा सादा, उतर प्रकृति आदि से संबद्धव्यवहार दिखाता है। दूसरी परिस्थिति में वह असयोगी, शंकालुचिडचिडा, जिद्दी, बेरहम आदि बनकर भी व्यवहार करता पाया गया है।

- iii. कर्तव्यनिष्ठता (**Conscientiousness or C**) - इस विमा में एक परिस्थिति में व्यक्ति आत्म अनुशासित, उत्तरदायी, सावधान एवं काफी सोच विचार कर व्यवहार से संबद्ध शीलगुण दिखाता है तो दूसरी परिस्थापित में वही व्यक्ति बिना सोच समझे, असावधानीपूर्वक कमजोर या आधे मन से भी व्यवहार करने से संबद्ध शीलगुण दिखाता है।
- iv. स्नायुविकृति (**Neuroticism or N**) - इस विमा में व्यक्ति एक और कभी-कभी तो सांवेगिक रूप से काफी शांत, संतुलित, रोगभ्रमी विचारों से अपने आप को मुक्त पाता है तो दूसरी और वह कभी-कभी अपने आप को सांवेगिक रूप से काफी उत्तेजित, असंतुलित तथा रोगभ्रमी विचारों से घिरा हुआ पाता है।
- v. अनुभूतियों का खुलापन या संस्कृति (**Openness to experience or O**) - इस विमा में कभी-कभी व्यक्ति एक तरफ काफी संवेदनशील काल्पनिक बौद्धिक भद्र आदि व्यवहार से संबद्ध शीलगुण दिखाता है तो दूसरी और वह काफी असंवेदनशील रूखा, संकीर्ण असभ्य एवं अशिष्ट व्यवहारों से संबद्ध शीलगुण भी दिखाता है।
- उपयुक्त पांच शीलगुणों को नॉरमैन (Norman, 1963) जे दी बिग फाइव (The Big five) की संज्ञा दी है जो ऑलपोर्ट, कैटेल द्वारा दिए गए शोधों पर आधारित है। उपयुक्त विमाओं के प्रथम अक्षरों का कूटसंकेतीकरण 'OCEAN' के रूप में करके हम आसानी से याद रख सकते हैं। उक्त बिग फाइव की मापने के लिए कोस्टा एवं मैकके (Costa & MC care, 1992) ने एक विशेष प्रश्नावली भी विकसित की है जिसे नियो-व्यक्तित्व अविष्कारिका - संशोधित (NEO-Personality Inventory Revised) या NEO-PI-R कहा गया है।

अभ्यास प्रश्न - 2

1. पांच कारकीय व्यक्तित्व सिद्धांत में E का अर्थ है।
2. पांच कारकों को मापने के लिए बनायी गयी प्रश्नावली है।

10.5 सारांश

आइजेन्क का व्यक्तित्व सिद्धांत मनोवैज्ञानिक गुणों के आधार पर व्यक्तित्व गुणों को तीन द्विध्रुवीय विमाओं पर बांटा है - अन्तर्मुखता-बहिर्मुखता स्नायुविकृति-स्थिरता, मनोविक्षिप्तता-परांहकी क्रियाएं आइजेन्क ने भी मनोवैज्ञानिक गुणों के आधार पर व्यक्तित्व के तीन प्रकार बतलाये हैं जो निम्नलिखित हैं:-

a) अन्तर्मुखता - बहिर्मुखता (Introversion - Extraversion) आइजेन्क ने इस व्यक्तित्व श्रेणी के एक छोर पर अंतर्मुखी शीलगुणों से युक्त व्यक्तियों को रखा गया है। जबकि इसी श्रेणी के दूसरे छोर पर बहिर्मुखी शीलगुणों से युक्त व्यक्तियों को रखा गया है। यह स्पष्टतः एक द्विध्रुवीय विमा है।

b) स्नायुविकृति- स्थिरता (Neuroticism - Stability) - इस विमा में व्यक्तित्व के पहले स्तर पर होने पर व्यक्ति में सांवेगिक नियंत्रण कम होता है तथा उनकी इच्छा शक्ति कमजोर होती है। इनके विचारों एवं क्रियाओं में मंदता पायी जाती

है। दूसरे छोर पर वाले व्यक्तित्व में स्थिरता होती है जिसकी और बढ़ने पर उक्त व्यवहारों या लक्षणों की मात्रा घटती जाती है और व्यक्ति में स्थिरता की मात्रा बढ़ती जाती है।

c) मनोविकृति - पराअहं की क्रियाएं (Pshychoticism - supergo functional) - आइजेन्क के अनुसार मनोविकृतता वाले छोर के व्यक्तित्व प्रकार में क्षीण स्मृति, क्षीण एकाग्रता, क्रूरता का गुण अधिक पाया जाता है। इसके अलावा ऐसे व्यक्ति में असंवेदनशीलता दूसरो के प्रति सौहार्दपूर्ण संबंधकी कमी किसी प्रकार के खतरे के प्रति सतक्रता आदि के गुण भी पाये जाते है। इसी प्रकार दूसरे छोर पर पराहे की क्रियाएं होती है।

वही दूसरी और पांच कारकीय सिद्धांत व्यक्तित्व को पांच द्विध्रुवीय विमाओ में बांटकर किया है। ये विमाएं है - बहिर्मुखता, सहमतिजन्यता, कर्तव्यनिष्ठता, स्नायुविकृति, अनुभूतियों का खुलापन या संस्कृति। इन शोधकर्ताओं ने व्यक्तित्व की निम्नलिखित पांच विमाएं बतायी है जो सभी द्विध्रुवीय है :-

a) बहिर्मुखता (**Extraversion E**) - व्यक्तित्व की यह ऐसी विमा है जिमसे एक परिस्थिति में व्यक्ति सामाजिक, मजाकिया स्नहेपूर्ण, बातूनी आदि का शीलगुण दिखाता है। तो दूसरी परिस्थिति में वह संयमी, गंभीर, रूखापन, शांति, सचेल रहने आदि का शीलगुण भी दिखाता है।

b) सहमतिजन्यता (**Aggreeableness or A**) - इस विमा के भी दो छोर या ध्रुव बतलाये गये है। इस विमा के अनुसार व्यक्ति एक परिस्थिति में सहयोगी दूसरों पर विश्वास करने वाला, उदार, सीधा सादा उत्तस प्रकृति आदि से संबद्धव्यवहार दिखाता है। दूसरी परिस्थिति में वह असहयोगी, शंकालु, चिडचिडा, जिद्दी आदि बनकर व्यवहार करता है।

c) कर्तव्यनिष्ठता (**Conscientiousness or C**) - इस विमा में एक परिस्थिति में व्यक्ति आत्म अनुशासित उत्तरदायी, सावधान एवं काफी सोच-विचार कर व्यवहार करने से संबद्ध शीलगुण दिखाता है तो दूसरी परिस्थिति में वही व्यक्ति बिना सोचे समझे, असावधानीपूर्वक कमजोर या आधे मन से भी व्यवहार करने से संबद्धशीलगुण दिखाता है।

d) स्नायुविकृति (**Neuroticism or N**) - इस विमा में व्यक्ति एक और कभी-कभी तो सांवेगिक रूप से काफी शांत, संतुलित रोगभ्रमी विचारों से अपने आप को मुक्त पाता है तो दूसरी और वह कभी-कभी अपने आप को सांवेगिक रूप से काफी उत्तेजित, असंतुलित तथा रोगभ्रमी विचारों से घिरा हुआ पाता है।

e) अनुभूतियों का खुलापन या संस्कृति (**Openness of experiences or culture or O**) इस विमा में कभी-कभी व्यक्ति एक तरफ काफी संवेदनशील काल्पनिक, बौद्धिक भद्र आदि व्यवहार से संबद्धशीलगुण दिखाता है तो दूसरी और

वह काफी असंवेदनशील, रूखा, संकीर्ण, असभ्य एवं अविशिष्ट व्यवहारों से संबद्ध शीलगुण भी दिखाता है।

उपर्युक्त पांच शीलगुणों को नॉरमैन ने दी बिग फाइव (The Big five) की संज्ञा दी है। इन सभी को मिलाकर 'OCEAN' के रूप में कहा जाता है।

10.6 शब्दावली

- स्नायुविकृति - सांवेगिक नियंत्रण में कमी
- मनोविक्षिप्तता - मानसिक रोग
- OCEAN - पांच कारकीय मॉडल का संक्षिप्त कूट संकेतन
- NCO-PI-R - पांच कारको को मापने की मापनी

10.7 अभ्यास के प्रश्नों के उत्तर

अभ्यास प्रश्न - 1

1. असत्य
2. सत्य

अभ्यास प्रश्न - 2

1. Extraversion
2. NCO-PI-R

10.8 संदर्भ ग्रंथ

- सिंह अरूण कुमार (2005) उच्चतर सामान्य मनोविज्ञान मोतीलाल बनारसीदास, नई दिल्ली।
- वर्मा प्रीति एवं श्रीवास्तव, डी.एन (2000) आधुनिक सामान्य मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा।

10.9. निबंधात्मक प्रश्न

1. आइजेन्क का व्यक्तित्व सिद्धांत बताइये।
2. पांच कारकीय मॉडल की व्याख्या कीजिए।

इकाई -11

व्यक्तित्व मूल्यांकनके उपागम : आत्मन, प्रेक्षण व
व्यवहारात्मक मूल्यांकनमें प्रतिक्रिया की समस्या

**Trait and type theories of personality,
differences between trait and type,
state/trait approaches to personality**

इकाई की रूपरेखा

- 11.1 प्रस्तावना
- 11.2 उद्देश्य
- 11.3 व्यक्तित्व
 - 11.3.1 व्यक्तित्व के सैद्धान्तिक उपागम
- 11.4 भावमूलक एवं नियमान्वेषी उपागम
- 11.5 प्रक्षेपिय विधियाँ
- 11.6 प्रेक्षणात्मक विधियाँ
- 11.7 व्यक्तित्व परिसुचियाँ
- 11.8 सारांश
- 11.9 संदर्भग्रन्थ सूची
- 11.10 निबन्धात्मक प्रश्न

11.1 प्रस्तावना

व्यक्तित्व को जानने की जिज्ञासा सभी व्यक्तियों में पाई जाती है, व्यक्तित्व व्यक्ति के भीतरी एवं बाहरी गुणों का समावेश है। प्रस्तुत इकाई में आप व्यक्तित्व का अर्थ, परिभाषा, व्यक्तित्व के सैद्धान्तिक उपागम, आत्मन के बारे में, प्रक्षेपीय विधियों प्रेक्षणात्मक विधियों तथा इसके लाभों का विस्तारपूर्वक अध्ययन करेंगे।

11.2 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप -

- व्यक्तित्व का अर्थ बता सकेंगे एवं परिभाषित कर सकेंगे।
- व्यक्तित्व के सैद्धान्तिक उपागमों को बता सकेंगे।

- आत्मन् तथा आत्मन् के उपतंत्रों को बता सकेंगे।
- प्रक्षेपीय विधियों को विस्तारपूर्वक बता सकेंगे।
- व्यक्तित्व परिसूचियों को बता सकेंगे।

11-3 Personality (व्यक्तित्व)

व्यक्ति का व्यक्तित्व उसका आईना होता है। व्यक्तित्व को जानने की जिज्ञासा सभी में होती है। इस सम्बन्ध में मनोवैज्ञानिकों को भी काफी रूझान रहा। काफी अध्ययन भी किए गए। व्यक्तित्व शब्द कहाँ से लिया गया?

व्यक्तित्व शब्द को English में Personality कहते हैं, यह Personality शब्द लैटिन भाषा के "Persona" शब्द से बना है। जिसका अर्थ नकाब या मुखौटा होता है पहले के समय में व्यक्तित्व से तात्पर्य बाहरी आवरण से ही लिया जाता था। बाद में इसे अमान्य घोषित कर मनोवैज्ञानिकों ने काफी गहन अध्ययन किया तथा कई परिभाषाएँ दीं। जिनमें मनोवैज्ञानिक ऑलपोर्ट की परिभाषा को सभी मनोवैज्ञानिकों द्वारा समर्थन दिया गया, क्योंकि यह परिभाषा उचित एवं वैज्ञानिक है एवं व्यक्तित्व को प्रदर्शित करती है।

ऑलपोर्ट (Allport 1937) के अनुसार - “व्यक्तित्व व्यक्ति के भीतर उन मनोशारीरिक तंत्रों का गतिशील या गत्यात्मक संगठन है जो वातावरण में उसके अपूर्व समायोजन को निर्धारित करते हैं।”

इस तरह उक्त परिभाषा से ज्ञात हुआ कि व्यक्तित्व से तात्पर्य सिर्फ बाहरी आवरण नहीं है, व्यक्तित्व में व्यक्ति के भीतरी एवं बाहरी दोनों गुणों को सम्मिलित किया गया है।

आर्शेन्क (1952) - “व्यक्तित्व व्यक्ति के चरित्र, चित्तप्रकृति, ज्ञानशक्ति तथा शरीर गठन का करीब-करीब एक स्थायी एवं टिकाऊ संगठन है। वातावरण में उसके अपूर्ण समायोजन का निर्धारण करते हैं।”

चाइल्ड (1968) - “व्यक्तित्व से तात्पर्य क्रमोवेश स्थायी आन्तरिक कारकों से होता है, जो व्यक्ति के व्यवहार को एक समय में दूसरे समय में संगत बनाता है तथा तुल्य परिस्थितियों में अन्य लोगों के व्यवहार से अलग करता है।

(1) अभ्यास प्रश्न - (व्यक्तित्व, अर्थ, परिभाषा)

- (i) Personality शब्द ---- से बना है।
- (ii) Persona शब्द ---- भाषा से आया है।
- (iii) Persona का शाब्दिक अर्थ ----- है।

11.3.1 व्यक्तित्व के सैद्धान्तिक उपागम (Theoretical Approaches to Personality)

1. मनोविश्लेषणात्मक उपागम - इसका प्रतिपादन सिगमण्ड फ्रायड द्वारा किया गया। इसमें मानव प्रकृति के निराशावादी तथा निश्चयवादी छवि पर बल डाला गया है। इसमें व्यक्तित्व की व्याख्या

करने के लिए अचेतन की ईच्छाओं, यौन एवं आक्रामकता के जैविक आधारों, आरंभिक, बाल्यावस्था के मानसिक संघर्षों को महत्वपूर्ण समझा गया है।

2. नव मनोविश्लेषणात्मक उपागम - इस उपागम का विकास दो श्रेणी के मनोवैज्ञानिकों द्वारा हुआ है। एक श्रेणी में जैसे मनोवैज्ञानिक है जो कभी पहले फ्रायड के काफी नजदीक और निष्ठावान थे, परन्तु फ्रायड द्वारा व्यक्तित्व के कुछ विशेष पहलू पर अधिक जोर दिये जाने के कारण वे उनसे अलग होकर व्यक्तित्व के स्वरूप की एक स्वतंत्र व्याख्या प्रस्तुत किये। इनमें एडलर व युंग के नाम मशहूर हैं। दूसरे श्रेणी में उन मनोवैज्ञानिकों को रखा गया है जिन्होंने फ्रायड के विचारों को संशोधन कर उन्हें उन्नत बनाने की कोशिश की जबकि फ्रायड का उनसे व्यक्तिगत सम्बन्ध नहीं था। इनमें सुल्लीभान, कैरेन हार्नी, मर्रे, दूरिक फ्रोम हैं।

नवमनोविश्लेषणात्मक उपागम, मनोविश्लेषणात्मक उपागम से निम्न बिन्दुओं पर भिन्न है :-

- (i) नवमनोविश्लेषणात्मक उपागम में व्यक्तित्व के सामाजिक कारकों पर तुलनात्मक रूप से अधिक बल डाला गया है।
 - (ii) नवमनोविश्लेषणात्मक उपागम में मानव प्रकृति के आशावादी छवि पर अधिक बल डाला गया है। जबकि मनोविश्लेषणात्मक उपागम में मानव प्रकृति के निराशावादी छवि पर अधिक बल डाला गया है।
3. शरीरगठनात्मक उपागम - इस उपागम की विशेषता है कि इसमें व्यक्तित्व पैटर्न तथा विकास की व्याख्या शरीर के संगठन एवं उसके आकार-प्रकार तथा उससे सम्बन्धित चित्तप्रकृति के रूप में किया गया है। उसके तहत क्रेशमर तथा शेल्डन द्वारा प्रतिपादित व्यक्तित्व सिद्धान्तों को रखा जाता है।
 4. जीवन-अवधि उपागम - इस उपागम की विशेषता यह है कि इसमें व्यक्तित्व की व्याख्या जन्म से मृत्यु तक व्यक्ति के व्यवहारों में होने परिवर्तनों के आलोक में की जाती है। व्यक्तित्व के सभी पहलुओं की व्याख्या जन्म से लेकर मृत्यु तक की आठ अवस्थाओं में से प्रत्येक अवस्था में उत्पन्न संकट या परिवर्तन बिन्दुओं से उत्पन्न समस्याओं के समाधान के रूप में की जाती है। इसके तहत हम इरिक-इरिकसन के सिद्धांत को रख सकते हैं।
इसके अलावा फ्रायड, मर्रे, ऑलपोर्ट, युंग आदि ने भी व्यक्तित्व विकास में जीवन की कुछ खास-खास अवधियों को महत्वपूर्ण माना है।
 5. शीलगुण उपागम - इस उपागम में व्यक्तित्व की व्याख्या शीलगुणों के रूप में की जाती है। इन शीलगुणों के आधार पर इस तथ्य की व्याख्या की जाती है कि व्यक्ति अमुक व्यवहार क्यों करता है तथा उसके व्यवहार में संगति के क्या कारण हैं। इसके तहत ऑलपोर्ट तथा कैटेल द्वारा प्रतिपादित व्यक्तित्व के सिद्धांतों की व्याख्या होती है। इस उपागम की मुख्य मान्यता है कि शीलगुणों के ही कारण व्यक्ति विभिन्न परिस्थितियों में संगत ढंग से व्यवहार करता है।
 6. विमीय उपागम - व्यक्ति की व्याख्या यहां एक विमा के रूप में की जाती है न कि प्रकार के रूप में। चूंकि यहाँ व्यक्तित्व की व्याख्या एक विमा पर की जाती है, अतः व्यक्ति का सम्बन्ध विमा

पर उच्च या भिन्न के रूप में रेट किया जा सकता है। इसके तहत आइजेन्क के सिद्धान्त को रखा जाता है।

7. सांस्कृति या मानवतावादी उपागम - इस उपागम द्वारा व्यक्तित्व के आत्मगत अनुभूतियों पर ध्यान डाला जाता है। इसमें मानवतावादी संप्रत्यय पर बल डालने वाले मैस्लो तथा आत्मन सिद्धान्त पर बल देने वाले रोजर्स के सिद्धान्तों को रखा गया है।
8. संज्ञानात्मक उपागम - इसमें इस बात पर बल डाला गया है कि व्यक्ति किन तरीकों से अपने पर्यावरण तथा अपने आप को जानता है, वे उनका किस तरह से प्रत्यक्षण करता है, मूल्यांकन करता है, सीखता है, सोचता है, निर्णय लेता है, तथा समस्या का समाधान करता है। इस उपागम में सम्पूर्ण व्यक्तित्व को ही न कि उसके किसी अंश भाग को उसके संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं के रूप में समझने की कोशिश की जाती है। केली तथा कर्ट लेविन के सिद्धान्तों का वर्णन करते हैं।
9. व्यवहारात्मक एवं अधिगम उपागम - इस उपागम में व्यक्तित्व को उद्दीपकों के प्रति विशेष सीखी गई अनुक्रियाओं का एक संग्रहण तथा स्पष्ट व्यवहारों या आदत तंत्रों का एक सेट माना गया है। अतः इस उपागम में व्यक्तित्व से तात्पर्य सिर्फ उन तथ्यों से होता है जिसे वस्तुनिष्ठ रूप से प्रेक्षण किया जाए। इसके तहत व्यक्तित्व का अध्ययन करने के लिए लोगों के अर्जित या सीखे गए व्यवहारों को समझना जरूरी होता है। स्कीनर, हल, मिलर तथा डोलार्ड द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्त इसके अन्तर्गत आते हैं।

सामाजिक-संज्ञानात्मक उपागम - इसे पहले सामाजिक सीखना उपागम कहा जाता था। सामाजिक-संज्ञानात्मक उपागम की मुख्य मान्यता है कि व्यवहार व्यक्तिगत चरों एवं पर्यावरणी चरों के साथ अन्तः क्रिया तथा उनके संज्ञान पर पड़ने वाले प्रभाव का परिणाम होता है। इस उपागम के तहत अलबर्ट बंडूर, वॉल्टर मिशकेल तथा मार्टिन सेलिंगमैन द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्त हैं।

11.4 भावमूलक एवं नियमान्वेशी उपागम

1. भावमूलक उपागम - इस उपागम में विशिष्ट व्यक्तियों के अनोखेपन या अपूर्वता के अध्ययन पर बल डाला जाता है। शोधकर्ता उन शीलगुणों के संयोगों की पहचान करने की कोशिश करता है जो किसी विशिष्ट व्यक्ति के व्यक्तित्व की व्याख्या उचित ढंग से करता है। इस उपागम के समर्थक गौर्डन ऑलपोर्ट ने व्यक्तित्व शीलगुणों को तीन प्रमुख भागों में बांटा है - कार्डिनल शीलगुण, केन्द्रीय शीलगुण तथा गौण शीलगुण।
2. नियमान्वेषी उपागम - व्यक्तित्व अध्ययन के इस दृष्टिकोण में अध्ययनकर्ता व्यक्तियों के कुछ खास-खास विमाओं जैसे अन्तर्मुखता, उत्तरदायित्व आदि का चयन कर लेता है और ऐसे प्रत्येक विमा पर उन सभी व्यक्तियों की तुलना करता है, जिनका वह अध्ययन करना चाहता है। प्रत्येक विमा पर व्यक्तियों द्वारा प्राप्त माध्यों की तुलना आपस में करके किसी निश्चित निष्कर्ष पर पहुंचने की कोशिश की जाती है।
1. आत्मन् (Self) - रोजर्स के व्यक्तित्व सिद्धान्त में आत्मन पर विशेष बल डाला गया है। धीरे-धीरे अनुभव के आधार पर प्रासंगिक क्षेत्र का एक भाग अधिक विशिष्ट हो जाता है और इस

भाग को ही रोजर्स ने आत्मन् की संज्ञा दी है। रोजर्स के अनुसार आत्मन् व्यक्तित्व की अलग विमा न होकर किसी व्यक्ति में स्वयं आत्मन् का अर्थ ही सम्पूर्ण प्राणी से होता है। रोजर्स के अनुसार आत्मन् का विकास शैशवावस्था में होता है। रोजर्स के अनुसार आत्मन् के दो उपतंत्र हैं-

(क) आत्म-संप्रत्यय (Self Concept),

(ख) आदर्श आत्मन् (Ideal Self)

(क) आत्म-संप्रत्यय (Self Concept) - आत्म संप्रत्यय से तात्पर्य व्यक्ति के उन सभी पहलुओं एवं अनुभूतियों से होता है जिससे व्यक्ति अवगत होता है। आत्म संप्रत्यय की दो विशेषताएं हैं - 1. आत्म संप्रत्यय का निर्माण एक बार हो जाने से उसमें सामान्यतः परिवर्तन नहीं होता (2) व्यक्ति का आत्म संप्रत्यय उसके वास्तविक या जैविक आत्मन् का कुछ अंश या भाग ऐसा होता है। जिससे व्यक्ति अवगत नहीं होता है परन्तु व्यक्ति उस अंश या भाग से अवगत हो जाता है, वह आत्म संप्रत्यय बन जाता है।

(ख) आदर्श आत्मन् (Ideal Self) - आत्मन् का दूसरा उपतंत्र आदर्श-आत्मन् है। आदर्श-आत्मन् से तात्पर्य अपने बारे में विकसित की गयी एक ऐसी छवि से होता है, जिसे वह आदर्श मानता है। दूसरे शब्दों में आदर्श आत्मन् में वे सभी गुण होते हैं जो धनात्मक होते हैं।

रोजर्स का मत है कि आदर्श आत्मन् तथा प्रत्यक्षित आत्मन् में अन्तर एक सामान्य व्यक्तित्व में नहीं होता है। परन्तु जब इन दोनों में असंगतता विकसित हो जाती है ताकि इन दोनों में स्पष्ट अन्तर हो जाता है, तो इससे एक अस्वस्थकर व्यक्तित्व होने का संकेत मिलता है। मनोवैज्ञानिक रूप से एक स्वस्थ व्यक्ति जो वे है और जो वे होना चाहते हैं, में कोई अन्तर महसूस नहीं करता है।

अभ्यास प्रश्न - 3

1. रोजर्स के व्यक्तित्व सिद्धांत में ----- पर बल डाला गया।
2. रोजर्स के अनुसार आत्मन् का विकास ----- में होता है।
3. आत्म संप्रत्यय तथा आदर्श आत्मन् ----- है।

11.5 प्रक्षेपीय विधियाँ (Projective Methods)

लॉरेन्स फ्रैंक (Lawrence Frank, 1939) ने 'प्रक्षेपीय विधि' जैसे पद का प्रतिपादन किया था।

प्रक्षेपीय विधि द्वारा व्यक्तित्व की माप परोक्ष रूप से होती है। इसमें व्यक्ति के सामने कुछ अस्पष्ट तथा असंगठित उद्दीपक या परिस्थिति दिया जाता है। ऐसी परिस्थितियों के प्रति व्यक्ति कुछ अनुक्रिया करता है तथा अपने भिन्न-भिन्न प्रकार के शीलगुणों की अभिव्यक्ति परोक्ष रूप से करता है। व्यक्तित्व मापन के लिए कई तरह के प्रक्षेपीय परीक्षण निर्मित किए गए हैं।

लिण्डजे के अनुसार (1961) इन परीक्षणों को 5 भागों में बाँटा गया है-

1. साहचर्य परीक्षण
2. संरचना परीक्षण
3. पूर्ति परीक्षण

4. चयन या क्रम परीक्षण
5. अभिव्यंजक परीक्षण

1. साहचर्य परीक्षण - ऐसे परीक्षण में व्यक्ति अस्पष्ट उद्दीपकों को देखता है और बताता है कि उसमें वह किस चीज से साहचर्य कर रहा है। रोशार्क परीक्षण तथा शब्द साहचर्य परीक्षण इसके दो मुख्य प्रकार हैं।

(i) शब्द साहचर्य परीक्षण - व्यक्ति मापन में इस परीक्षण का उपयोग फ्रायड तथा युंग द्वारा प्रारम्भ किया गया। इस परीक्षण में निश्चित उद्दीपक शब्दों को एक-एक करके व्यक्ति के सामने उपस्थित किया जाता है और व्यक्ति को शब्द सुनने के बाद उसके मन में जो सबसे पहला शब्द आता है, उसे बताना होता है। इसके आधार पर युंग ने व्यक्ति के सांवेगिक संघर्षों का पता आसानी से लगाया। साधारण मानसिक रोग से ग्रसित व्यक्तियों के व्यक्तित्व के मापन में सुचारू रूप से किया गया।

(ii) रोशार्क परीक्षण - रोशार्क परीक्षण का प्रतिपादन स्वीटरलैण्ड के मनश्चित्सक हरमन रोशार्क ने 1921 में किया। इस परीक्षण में 10 कार्ड होते हैं। जिस पर स्याही के धब्बे के समान चित्र बने होते हैं। 5 कार्ड पर स्याही के धब्बे जैसी आकृति में पूर्णतः काला-सफेद में छपे होते हैं तथा 5 कार्ड पर स्याही के धब्बे जैसी आकृति रंगों में होती है। प्रत्येक कार्ड एक-एक करके उस व्यक्ति को दिया जाता है, जिसका व्यक्तित्व मापना होता है। कार्ड को देखकर उसे बताना होता है कि उसे उस कार्ड में क्या दिखलाई दे रहा है। व्यक्ति द्वारा दी गई अनुक्रियाओं को लिख लिया जाता है और बाद में उसका विश्लेषण कुछ अक्षर संकेतों के सहारे निम्न 4 भागों में बांटकर किया जाता है

- | | |
|---------------------------|------------------------------|
| 1. स्थल-निरूपण (Location) | 2. निर्धारक (Determinants) |
| 3. विषय वस्तु (Content) | 4. मौलिक अनुक्रिया एवं संगठन |

उपर्युक्त 4 भागों में विश्लेषण करने के बाद उसकी व्याख्या की जाती है।

रोशार्क के समान ही एक और स्याही धब्बा परीक्षण है, जिसका प्रतिपादन होब्जमैन ने 1961 में किया था। इसके दो फार्म हैं और प्रत्येक फार्म में 45 Card है। जिस पर स्याही के धब्बे बने होते हैं। प्रत्येक कार्ड के प्रति अधिक से अधिक एक अनुक्रिया व्यक्ति को करनी होती है।

2. संरचना परीक्षण - इस श्रेणी में वैसे प्रक्षेपीय परीक्षणों को रखा जाता है, जिसमें परीक्षण उद्दीपकों के आधार पर व्यक्ति को एक कहानी या अन्य सामान चीजों की संरचना करनी होती है। सबसे मुख्य परीक्षण इसका विषय-आत्मबोध परीक्षण (TAT) है। इस परीक्षण का निर्माण मुर्रे (1935) ने हारवर्ड विश्वविद्यालय में किया।

1938 में मार्गन के साथ मिलकर इस परीक्षण का संशोधन किया गया। इसमें कुल 31 कार्ड होते हैं। 30 कार्ड पर चित्र बने होते हैं तथा 1 कार्ड सादा होता है। जिसके व्यक्तित्व का मापन करना है, उसके यौन एवं उम्र के अनुसार 31 Cards में से 20 Cards का चयन कर लिया जाता है।

20 में से 19 Card पर चित्र अंकित तथा 1 सादा। एक व्यक्ति पर 20 Card से अधिक नहीं दिया जाता है। चित्र के आधार पर व्यक्ति कहानी लिखता है, जिसका सम्बन्ध भूत, भविष्य एवं वर्तमान तीनों से होता है। इस परीक्षण का क्रियान्वयन दो सत्रों में होता है। पहले सत्र में 10 Card और फिर दूसरे सत्र में 10 Card देकर कहानी लिखने को कहा जाता है। सादे Card पर मन से कोई चित्र मानकर कहानी लिखने को कहा जाता है। दो सत्रों के मध्य 24 घंटों के अन्तर को रखना जरूरी माना जाता है। लेखन का विश्लेषण निम्न प्रसंगों में किया जाता है - (1) नायक, (2) आवश्यकता, (3) प्रेस, (4) थीमा, (5) परिणाम।

इस श्रेणी में TAT के समान अन्य कुछ परीक्षणों का भी निर्माण किया गया है-

- (क) बाल आत्मबोधन परीक्षण - परीक्षण का विकास बेल्लाक द्वारा (1954) किया गया।
- (ख) रोजेनविग तस्वीर - इस परीक्षण का निर्माण रोजेनविग (1949) द्वारा किया गया।
- (ग) रोवर्टस आम्बोधन परीक्षण - बच्चों के लिए इस परीक्षण का निर्माण मैकअर्थर तथा रोवर्टस द्वारा किया गया।

3. पूर्ति परीक्षण (Complete Test) -

इसमें व्यक्ति को उद्दीपक (प्रायः एक वाक्य) का एक हिस्सा दिखलाया जाता है और दूसरा हिस्सा खाली होता है, जिसकी पूर्ति व्यक्ति अपनी इच्छानुसार करता है। यहाँ पूर्वकल्पना होती है, जिस तरह से व्यक्ति वाक्य को पूरा करेगा, उससे उसके व्यक्तित्व के महत्वपूर्ण विमाओं का पता चलेगा। इसे वाक्य पूर्ति परीक्षण कहा जाता है।

वाक्य पूर्ति रौट्टर (1950) में, रोहडे तथा हाइड्रोथ (1940) ने तथा भारत में विश्वनाथ मुखर्जी ने इस तरह के परीक्षण का निर्माण किया। इस परीक्षण में एकांश के कुछ उदाहरण -

मैं प्रायः सोचता रहता हूँ कि - - - - -

मेरे माता-पिता मुझसे अक्सर - - - - -

मेरी ईच्छा है कि - - - - -

व्यक्ति द्वारा दिये गये उत्तरों का विश्लेषण कर व्यक्तित्व के शीलगुणों के बारे में अंदाज लगाया जाता है।

- 4. चयन या क्रम परीक्षण - इस परीक्षण में व्यक्ति परीक्षण उद्दीपकों को एक विशेष क्रम में सुव्यवस्थित करता है या अपनी पसंद या आकर्षकता या अन्य कोई विमा के आधार पर दिए गए परीक्षण उद्दीपकों में से कुछ को चुनना होता है। ऐसे परीक्षण से व्यक्तित्व के शीलगुणों के बारे में अनुमान लगाया जाता है। इस श्रेणी का दूसरा मुख्य परीक्षण 'काहन टेस्ट ऑफ' सिम्बोल ऐरेन्जमेंट' है, जिसका निर्माण काहन (1955) द्वारा किया गया। इसमें व्यक्ति को प्लास्टिक के घने 16 विभिन्न आकारीय वस्तुओं को दिखलाया जाता है। व्यक्ति को प्रत्येक वस्तु को देखकर मन में आए साहचर्यों को बिना हिचक के बताना होता है। इसके बाद छाँटी गई वस्तुओं की व्याख्या प्रत्येक संकेत के अर्थ के संदर्भ में लगाया जाता है और इसके आधार पर व्यक्ति के अचेतन की प्रक्रियाओं के बारे में अनुमान लगा पाना सम्भव हो पाता है।

5. अभिव्यंजक परीक्षण - इस परीक्षण में व्यक्ति को अपने आप को अभिव्यक्त करने का मौका दिया जाता है। व्यक्ति को एक तस्वीर बनानी होती है। बनाई गई आरेक्षण (Drawing) के आधार पर व्यक्ति के व्यक्तित्व का अनुमान लगाया जाता है। इस श्रेणी के दो मुख्य परीक्षण ड्रा-ए-पर्सन परीक्षण तथा घर-पेड़-व्यक्ति परीक्षण (House-Tree-Person Test)

डॉ. ए. पर्सन का निर्माण मैकोवर (1949) द्वारा किया गया, जिसमें व्यक्ति को एक व्यक्ति के चित्र को बनाना होता है। इससे व्यक्ति की आत्म-प्रतिमाह, मानसिक संघर्ष प्रत्यक्ष चिन्तन आदि के बारे में एक स्पष्ट अंदाज लगाना संभव हो पाता है।

घर-पेड़-व्यक्ति परीक्षण का निर्माण बक (1948) द्वारा किया गया। व्यक्ति को इससे एक पेड़ तथा एक व्यक्ति के चित्र का आरेखण करना होता है, और फिर उसकी विवेचना एक साक्षात्कार में करनी होती है। इसके आधार पर व्यक्ति के व्यक्तित्व के बारे में महत्वपूर्ण सूचनाएँ मिलती हैं। इन परीक्षणों के अतिरिक्त वेण्डर-गेस्टाल्ट परीक्षण को भी इस श्रेणी का ही एक (प्रक्षेपीय विधि) एवं कुछ लोगों द्वारा माना गया है। इसके द्वारा व्यक्ति के बौद्धिक हास की मात्रा का पता चलता है। इस परीक्षण का निर्माण लिऊरेटा वेण्डर द्वारा किया गया। इस परीक्षण में 9 अति साधारण चित्र होते हैं। जिसे देखकर पहले व्यक्ति उसकी नकल उतारता है, उसके बाद उसके सामने से डिजाईन हटा लिया जाता है और उसे स्मृति से ही उस डिजाईन का आरेखण करना होता है। त्रुटियों की गंभीरता एवं बारंबारता के आधार पर व्यक्ति के व्यक्तित्व का अंदाजा लगाया जा सकता है।

यद्यपि प्रक्षेपीय परीक्षण व्यक्तित्व को मापने की श्रेष्ठ विधि है, फिर भी कई मनोवैज्ञानिकों ने इसकी आलोचना की है -

1. प्रक्षेपीय परीक्षणों का प्राप्तांक लेखन तथा व्याख्या काफी आत्मनिष्ठ है।
2. प्रक्षेपीय परीक्षण का आधार कोई अर्थपूर्ण तथा परीक्षणीय सिद्धान्त नहीं है।
प्रक्षेपीय परीक्षण की वैधता अधिक नहीं है।

अभ्यास प्रश्न - 4

1. प्रक्षेपीय विधि जैसे पद का प्रतिपादन ----- ने किया था।
2. रोशार्क परीक्षण का प्रतिपादन ----- ने 1921 में किया।
3. विषय आत्मबोध परीक्षण का निर्माण मर्ने ने ----- में किया।
4. डॉ. ए. पर्सन का निर्माण ----- द्वारा किया गया।

11.6 प्रक्षेणात्मक विधियाँ (Observational Methods)

प्रेक्षण विधि, वह विधि है, जहाँ एक प्रेक्षक व्यक्ति की क्रियाओं का ध्यानपूर्वक प्रेक्षण कर नियंत्रित परिस्थिति या एक वास्तविक परिस्थिति में करता है तथा फिर उनकी क्रियाओं के लेखा-जोखा का विश्लेषण कर उसके व्यक्तित्व के बारे में एक निश्चित निष्कर्ष पर पहुँचता है। इसकी दो विधियाँ हैं -

(i) रेटिंग मापनी (Rating Scale) - रेटिंग मापनी एक ऐसी मापनी है, जिसके सहारे व्यक्तित्व के शीलगुणों के बारे में लिये गये निर्णय को कुछ श्रेणियों में रिकॉर्ड किया जाता है। इस मापनी में कुछ संख्यात्मक श्रेणियाँ या फिर आलेखीय (Graphic) श्रेणियाँ बनी होती है। इन श्रेणियों का खास-खास अर्थ होता है। प्रेक्षक व्यक्तित्व मापे जाने वाले व्यक्तियों के शीलगुणों के बारे में निर्णय कर अपनी प्रतिक्रिया इन श्रेणियों के माध्यम से व्यक्त करता है। बाद में इन श्रेणियों के माध्यम से व्यक्त करता है। बाद में इन निर्णयों का सांख्यिकीय विश्लेषण किया जाता है तथा व्यक्तित्व के बारे में एक निश्चित निष्कर्ष पर पहुंचा जा सकता है। रेटिंग मापनी की सफलता निम्नांकित बातों पर निर्भर करती है।

1. रेटिंग मापनी एक विश्वस्त मापनी हो।
2. रेटर उन व्यक्तियों से भली-भाँति परिचित हो, जिनके व्यवहारों या शीलगुणों का रेटिंग किया जाने वाला है।
3. रेटर अपने आप को पूर्वाग्रह या पक्षपात से दूर रखें तभी रेटिंग की यथार्थता बनी रहती है।

(ii) साक्षात्कार - व्यक्तित्व मापन में साक्षात्कार का प्रयोग बहुतायत से किया जाता है। साक्षात्कार में भेंटकर्ता व्यक्ति से आमने-सामने की परिस्थिति में कुछ प्रश्नों को पूछकर उनके द्वारा की गई प्रतिक्रियाओं का प्रेक्षण करता है और इसके आधार पर व्यक्तित्व के बारे में आंकलन करता है। साक्षात्कार दो तरह के होते हैं- असंगठित साक्षात्कार तथा संगठित साक्षात्कार।

संगठित साक्षात्कार में भेंटकर्ता पूछे जाने वाले प्रश्नों की एक निश्चित सूची तैयार करता है। मानक पैटर्न को अपनाते हुए वह प्रत्येक व्यक्ति से जिनके व्यक्तित्व का मापन करता है, एक निश्चित क्रम में पूछता है। व्यक्तियों द्वारा दिये गये उत्तरों के विश्लेषण के आधार पर व्यक्तित्व की माप की जाती है।

इस साक्षात्कार का लाभ यह है कि प्रश्नों को एक क्रम में पूछा जाता है, जिससे कई व्यक्तियों के व्यक्तित्व की तुलना संभव है, तथा इसका एक दोष यह भी है कि भेंटकर्ता को व्यक्तित्व मापने से सम्बन्धित प्रश्नों को गहन रूप से पूछने की स्वतंत्रता नहीं होती है।

असंगठित साक्षात्कार में भेंटकर्ता प्रश्नों की एक निश्चित सूची अपने पास पहले से नहीं रखता है और व्यक्तित्व मापने के लिये अपनी ईच्छानुसार प्रश्न करते जाता है। इसका प्रमुख गुण है कि इसके द्वारा व्यक्तित्व का मापन गहन रूप से हो पाता है और मुख्य दोष है कि इसमें भेंटकर्ता को पूर्वाग्रह या पक्षपात दिखलाने का भी मौका काफी मिलता है।

अभ्यास प्रश्न 5 -

1. ----- वह विधि है, जहाँ एक प्रेक्षक व्यक्ति की क्रियाओं का प्रेक्षण करता है।
2. ----- में संख्यात्मक या आलेखीय श्रेणियाँ बनी होती है।
3. साक्षात्कार के दो प्रकार ----- है।

11.7 व्यक्तित्व परिसूचियाँ

मनोवैज्ञानिको ने व्यक्तित्व मापन की बहुत सी विधियो या परीक्षणों का प्रतिपादन किया है जिनमे से एक निम्न है।

(क) व्यक्तित्व अविष्कारिका :- इस विधि में व्यक्तित्व के खास रवास शीलगुणों से सम्बन्धित कुछ प्रश्न बने होते है। जिनका उत्तर प्रायः हाँ-नहीं, सही - गलत आदि में दिया रहता है। व्यक्ति इनके उत्तर दिय गए उत्तरो में से देता है। इस तरह की आविष्कारिका के प्रत्येक प्रश्न को व्यक्ति स्वयं पढ़ता है और अपने बारे मे एक रिपोर्ट देता है। इस कारण इसे आत्म - रिपोर्ट आविष्कारिका भी कहा जाता है। वुडवर्थ ने भी (1918) एक व्यक्तित्व आविष्कारिका तैयार की जिसका नाम वुडवर्थ परसनल डाटा इन्वेन्ट्री रखा। इसमे कुल 116 प्रश्न थे।
कुछ व्यक्तित्व आविष्कारिका की चर्चा निम्न प्रकार से है

➤ माइनेसोटा मल्टीफेजीक पर्सनालिटी इन्वेन्ट्री-2-: MMPI का निर्माण मूलत हाथावे एवं मैककिनले (1940) ने किया। जिसमें 550 एकांश थे और प्रत्येक एकांश के तीन उत्तर थे - True, False, Can't Say। इसके दो प्रतिरूप है:- वैयक्तिक कार्ड प्रतिरूप तथा सामूहिक पुस्तिका प्रारूप। इस इन्वेन्ट्री का उद्देश्य व्यक्तित्व के रोगात्मक शिल्गुणो को मापना है। MMIP के कई संशोधित प्रारूप तैयार किए गए है जिनमें सबसे नवीनतम संशोधन को MMPI -2 कहा। यह संशोधन वुचर, डाहस्ट्रोम, ग्राहम, टेलेगन तथा केमर द्वारा तीन मुख्य वैधता मापनी है। इन सभी 10 वैदानिक मापनी है तथा वैधता मापनी को वर्णित किया गया है:-

नैदानिक मापनी:-

1. रोगभ्रम:- इस मापनी में 32 एकांश है। इसके द्वारा व्यक्ति की शारीरिक स्वास्थ्य व कार्य के बारे मे चिंता की प्रवृति का माप किया जाता है।
2. पिषद- इसमें 57 एकांश है। इसके द्वारा भावात्मक विकृति का मापन होता है।
3. रूपांतर हिस्ट्रीया- इसमें 60 एकांश है। स्नायु प्रवृति का मापन होता है।
4. मनोविकृत विचलन- इस मापनी में 50 एकांश है। सामाजिक एवं नैतिक मानकों को अवहेलना करने वाली प्रवृत्तियाँ मापी जाती है।
5. पुरुषत्व:- नारीत्व इस मापनी में 56 एकांश है। व्यक्ति के सीमांतीय यौन भूमिका करने की प्रवृति की माप होती है।
6. स्थिर व्यामोह- इस मापनी में 40 एकांश है। शक करने की प्रवृति, अविश्वास, भ्रान्ति का मापन होता है।
7. मनोदौर्वल्यता- इस मापनी में कुल 48 एकांश है जिनके द्वारा व्यक्ति में मनोग्रंथि, बाध्यता आदि का मापन होता है।
8. मनोविदलता - 78 एकांश है। इसके द्वारा असामान्य चिन्तन की प्रवृति का मापन होता है।

9. अल्पोन्माद- इसमें 46 एकांश है। सांवेगिक उत्तेजन, अतिक्रिय आदि का मापन होता है।
 10. सामाजिक अन्तमुखता- इसमें 69 एकांश है। इसके द्वारा लाजालु प्रवृत्ति, असुरक्षा आदि का मापन होता है।
- वैधता मापनी:- इसके अर्न्तगत उन एकांशों को रखा जाता है, जिनका उत्तर व्यक्ति नहीं दे पाया है। इसके मापनी है Lie(L), Frequency Or (Infrequency)(F), Corretion(K) |
- MMPI के लाभ -
- (i) इसके द्वारा परीक्षण के प्रति व्यक्ति के उत्तर देने की मनोवृत्ति का पता लग जाता है।
 - (ii) इसके द्वारा वैदानिक विशेषज्ञ की तरह की समस्याओं के बारे में नैदानिक विशेषज्ञों ढंग से ज्ञान प्राप्त कर लेते है।
 - (iii) नैनादिक विशेषज्ञों के आत्मनिष्ठ छवि से प्रभावित नहीं होता है।
अलाभ - एकांशों का स्वरूप शाब्दिक है। जिस कारण इसके द्वारा सभी तरह के व्यक्तित्व का मापन सम्भव नहीं है।
 - (iv) कुछ खास तरह के असामान्य व्यवहार के प्रति अधिक संवेदनशील नहीं दिखलाता है।
कुछ चित्त विकृतियों का मापन MMPI द्वारा संभव नहीं।
- (ख) कैलिफोर्निया साईकोलॉजिकल आविष्कारिका - इस परीक्षण का मौलिक निर्माण वर्ष 1957 है, फिर 1987 में गफ द्वारा इसे संशोधित किया गया है। इसका विकास व्यक्तित्व के सामान्य शीलगुणों को मापने के लिये किया गया है। इसमें 462 एकांश है। जिनका उत्तर 'सही-गलत' के प्रारूप में देना होता है। इसके द्वारा प्रभुत्व, उत्तरदायित्व, आत्म-स्वीकृति, आत्म-नियंत्रण जैसे शीलगुणों का मापन होता है। 3 वैधता मापनी है और इसके द्वारा व्यक्ति के गलत मनोवृत्तियों का पता चलता है।
- (ग) बेल समायोजन आविष्कारिका - इस आविष्कारिका का निर्माण बेल ने (1934) में किया। इस आविष्कारिका का उद्देश्य व्यक्ति में समायोजन सम्बन्धी कठिनाईयों का पता लगाना होता है। इसके दो फार्म है - विद्यार्थी फार्म तथा व्यावसायिक फार्म। विद्यार्थी फार्म में 140 एकांश है जो वार क्षेत्र - गृह, स्वास्थ्य, सामाजिक तथा सांवेगिक अवस्था से सम्बन्धित समस्याओं का पता लगाता है। व्यावसायिक फार्म में इन 140 एकांशों में 20 एकांश और जोड़ दिया गया है, जिससे इस फार्म के 5 क्षेत्र हो जाता है, जो कि वयस्क समायोजन की और इंगित करते है।
- (घ) कैटेल सोलह व्यक्तित्व-कारक प्रश्नावली - इसका निर्माण कैटेल ने कारक विश्लेषण के आधार पर किया है। जिनके द्वारा 17 वर्ष से अधिक आयु वाले व्यक्तियों के 16 शीलगुणों को मापा जाता है। इस प्रश्नावली में सम्मिलित किये गये सभी 16 शीलगुण द्विध्रुवी है। 16 शीलगुणों को मापने के लिए बिने 16 मापनी पर उच्च प्राप्तांक तथा कम प्राप्तांक का खास मतलब होता है, जिसे हम इस प्रकार बदला सकते है।

क्र.सं.	उच्च प्राप्तांक	अक्षर चिन्ह	निम्न प्राप्तांक
1.	Out Going	A	Reserved
2.	More Intelligent	B	Less Intelligent
3.	Stable	C	Emotional
4.	Assertive	E	Humble
5.	Happy-Go-Lucky	F	Sober
6.	Conspicuous	G	Expedient
7.	Bold	H	Shy
8.	Tenderminded	I	Thoughtminded
9.	Suspicious	L	Trusting
10.	Imaginative	M	Practical
11.	Shrend	N	Forthright
12.	Apprehensive	O	Placid
13.	Experimenting	Q.1	Traditonal
14.	Self-Sufficient	Q.2	Group-Tied
15.	Controlled	Q.3	Casual
16.	Tense	Q.4	Relaxed

इस परीक्षण का विश्वसनीयता गुणांक 34 से 93 तक पाया गया है। संप्रत्यय वैधता 85 तक पायी गयी। इसके अलावा भी व्यक्तित्व आविष्कारिका है। जैसे Eysenck Personality Questionnaire. इसका निर्माण आइजेन्क (1975) ने किया।

Edwards Personal preference Schedule इसका निर्माण एडवार्ड्स (1959) ने किया।

इसका प्रयोग नैदानिक तथा सामान्य दोनों ही परिस्थिति में होता है।

दोष -

1. व्यक्तित्व आविष्कारिका के एकांश बिल्कुल ही अस्पष्ट एवं प्रत्यक्ष होते हैं, फलस्वरूप इन एकांशों के सही उत्तर को व्यक्ति आसानी से छिपाकर उसकी जगह पर नकली उत्तर देता है।
2. इसका स्वरूप चूंकि शाब्दिक होता है, अतः इसका उपयोग केवल पढ़े-लिखे व्यक्तियों के व्यक्तित्व को मापने के लिये ही किया जाता है।

3. व्यक्तित्व आविष्कारिका की वैधता अधिक नहीं होती है। इस तरह की आविष्कारिका से प्राप्त आंकड़े से कोई सही अर्थ नहीं निकल पाता है।
इन आलोचनाओं के बावजूद इसका काफी महत्व है।

अभ्यास प्रश्न 6

1. MMPI का पूरा नाम ----- है।
2. MMPI का निर्माण ----- ने किया।
3. सोलह व्यक्तित्व-कारक प्रश्नावली का निर्माण ----- ने किया।
4. बेल समायोजन आविष्कारिका का निर्माण बेल ने ----- में किया।

11.8 सारांश

व्यक्तित्व की विभिन्न परिभाषा दी गई। सर्वमान्य परिभाषा यह है कि व्यक्तित्व मनोदैहिक गुणों का एक ऐसा गत्यात्मक संगठन है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने वातावरण के साथ समायोजन करता है। व्यक्तित्व के कई उपागम की चर्चा कि गई है। व्यक्तित्व मापन की विधियों पर पर्याप्त प्रकाश डाला गया है।

अभ्यास प्रश्न के उत्तर :-

अभ्यास प्रश्न 1

- 1 परसोना 2 लैटिन 3 नकाब या मुखोटा

अभ्यास प्रश्न 2

- 1 सिगमण्ड फ्रायड 2 नवमनोविश्लेषणात्मक
3 मैसलो

अभ्यास प्रश्न 3

- 1 आत्मन 2 “शैषवावस्था 3 आत्मन के उपतंत्र

अभ्यास प्रश्न 4

- 1 लोरेन्स फ्रैक 2 हरमन रोषार्क 3 1935
4 मैकोवर

अभ्यास प्रश्न 5

- 1 प्रेक्षण विधि 2 रेटिंग मापनी 3 संगठित व असंगठित

अभ्यास प्रश्न 6

- 1 माइनेसोटा मल्टीफेलिक पर्सनालिटी इन्वेन्ट्
- 2 हाथावे एवं मैककिनले
- 3 कैटल
- 4 1934

11.9 संदर्भ सूची

- मौहम्मद सूलेमान, रिजवाना तरन्नुम, 2005, मनोविज्ञान में प्रयोग एवं परीक्षण, मोतीलाल बनारसी दास, 41 यू.ए. बंगलों रोड, जवाहर नगर, दिल्ली
- सिंह अरूण कुमार, 1997, उच्चतर सामान्य मनोविज्ञान, मोतीलाल बनारसी दास, 236-नाइन्थ मेन 3^{रक} ब्लॉक, जयनगर, बंगलौर

11.10 निबन्धात्मक प्रश्न

- 1 व्यक्तित्व से आप क्या समझते हैं ? व्यक्तित्व के कौन कौन से सैद्धान्तिक उपागम हैं ? वर्णन कीजिए।
- 2 व्यक्तित्व को परिभाषित कीजिए एवं आत्मन एवं प्रक्षेपिय विधियों का वर्णन कीजिये।
- 3 प्रेक्षणात्मक विधि क्या है? प्रेक्षणात्मक विधि का सविस्तार वर्णन कीजिए ?

(2) अभ्यास प्रश्न - (व्यक्तित्व, अर्थ, परिभाषा)

(i) Personality शब्द ---- से बना है।

उत्तर - Persona

(ii) Persona शब्द ---- भाषा से आया है।

उत्तर - लैटिन

(iii) Persona का शाब्दिक अर्थ ----- है।

उत्तर - नकाब या मुखौटा

(3) अभ्यास प्रश्न - (सैद्धान्तिक उपागम)

(i) मनोवैज्ञानिक उपागम का प्रतिपादन ----- ने किया।

उत्तर - सिमगण्ड फ्रायड

(ii) ----- आगम में मानव प्रकृति के आशावादी छवि पर अधिक बल डाला गया है।

उत्तर - नवमनोविश्लेषणात्मक

(iii) मानवतावादी उपागम पर बल देने वाले मनोवैज्ञानिक ----- है।

उत्तर - मैसलों

(4) अभ्यास प्रश्न - (आत्मन)

(i) रोजर्स के व्यक्तित्व सिद्धांत में ----- पर बल डाला गया।

उत्तर - आत्मन्

(ii) रोजर्स के अनुसार आत्मन् का विकास ----- में होता है।

उत्तर - शैशवावस्था।

- (iii) आत्म संप्रत्यय तथा आदर्श आत्मन् ----- है।
उत्तर - आत्मन् के उपतंत्र
- (5) अभ्यास प्रश्न - (प्रक्षेपीय विधियाँ)
- (i) प्रक्षेपीय विधि जैसे पद का प्रतिपादन ----- ने किया था।
उत्तर - लॉरेन्स फ्रेंक
- (ii) रोशार्क परीक्षण का प्रतिपादन ----- ने 1921 में किया।
उत्तर - हरमन रोशार्क
- (iii) विषय आत्मबोध परीक्षण का निर्माण मर्ने ने ----- में किया।
उत्तर - 1935
- (iv) डॉ ए. पर्सन का निर्माण ----- द्वारा किया गया।
उत्तर - मैकोवर
- (6) अभ्यास प्रश्न -
- (i) ----- वह विधि है, जहाँ एक प्रेक्षक व्यक्ति की क्रियाओं का प्रेक्षण करता है।
उत्तर - प्रेक्षण विधि
- (ii) ----- में संख्यात्मक या आलेखीय श्रेणियां बनी होती है।
उत्तर - रेटिंग मापनी में।
- (iii) साक्षात्कार के दो प्रकार ----- है।
उत्तर - संगठित एवं असंगठित
- (7) अभ्यास प्रश्न
- (i) MMPI का पूरा नाम ----- है।
उत्तर - माइनेसोटा मल्टीफेलिक पर्सनैलिटी इन्वेन्ट्री
- (ii) MMPI का निर्माण ----- ने किया।
उत्तर - हाथर्वे एवं मैककिनले
- (iii) सोलह व्यक्तित्व-कारक प्रश्नावली का निर्माण ----- ने किया।
उत्तर - कैटल
- (iv) बेल समायोजन आविष्कारिका का निर्माण बेल ने ----- में किया।
उत्तर - 1934

इकाई- 12

व्यवहार मूल्यांकन एवं व्यक्तित्व के अन्य मापन Behavioral assessment, other measures of personality (Q-sort techniques)

इकाई की रूपरेखा

- 12.1 प्रस्तावना
- 12.2 उद्देश्य
- 12.3 व्यक्तित्व का माप
 - 12.3.1 जीवन वृत्त विधि
 - 12.3.2 जीवन वृत्त विधि की विशेषता
 - 12.3.3 जीवन वृत्त विधि के प्रकार
 - 12.3.4 जीवन वृत्त विधि के लाभ एवं दोष
 - 12.3.5 जीवन वृत्त विधि के दोषों को दूर करने के उपाय
- 12.4 साक्षात्कार विधि
 - 12.4.1 साक्षात्कार विधि के प्रकार
 - 12.4.2 साक्षात्कार विधि के लाभ व परिसीमाएं
- 12.5 प्रश्नावली विधि
 - 12.5.1 प्रश्नावली विधि के प्रकार
- 12.6 निर्माण परीक्षण विधियां
- 12.7 पेन्सिल कागज विधियां
- 12.8 मूल्यांकन विधि
- 12.9 परिस्थिति परीक्षण
- 12.10 मनोविश्लेषणात्मक विधि
- 12.11 क्यू शार्ट प्रणाली
 - 12.11.1 क्यू शार्ट के प्रकार
 - 12.11.2 क्यू प्रणाली का मूल्यांकन
- 12.12 सारांश
- 12.13 शब्दावली
- 12.14 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

12.15 संदर्भग्रंथसूची

12.16 निबंधात्मक प्रश्न

12.1 प्रस्तावना

व्यक्तित्व को जानना ही आवश्यक नहीं है, अपितु व्यक्तित्व का मापन भी उतना ही आवश्यक है। प्रस्तुत इकाई में आप व्यक्तित्व मापन की विभिन्न विधियों तथा क्यू सार्ट विधि का विस्तारपूर्वक अध्ययन कर सकेंगे।

12.2 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप-

- व्यक्तित्व मापन की विधियों का बता सकेंगे।
 - सार्ट प्रविधि को बता सकेंगे।
-

12.3 व्यक्तित्व का माप -

आधुनिक शिक्षा व्यक्तिगत शिक्षा है। शिक्षा की प्रक्रिया में व्यक्तित्व के माप का व्यापक महत्व होता है। व्यक्तित्व के माप के लिए अनेक प्रणालियों का प्रयोग किया जाता है। जिसमें से मुख्य निम्नलिखित है।

12.3.1 जीवन वृत्त विधि

जीवन वृत्त विधि का उपयोग सबसे पहले फ्रेड्रिक ली प्ले द्वारा 1840 में पारिवारिक बजट के अध्ययन में किया गया है। एक व्यक्ति, एक परिवार, एक संस्था आदि के जीवन की घटनाओं का अन्वेषण एवं विश्लेषण किया जाता है। व्यक्तित्व के गुण-दोष तथा असामान्यताओं का अध्ययन किया जाता है। इससे व्यक्तित्व सम्बन्धी कठिनाई के विश्लेषण, निदान और उपचार में सहायता मिलती है।

पी.वी.यंग ने इसे परिभाषित किया है -

“ केस अध्ययन एक ऐसी विधि है जिसके द्वारा सामाजिक इकाई की जीवनी का अन्वेषण तथा विश्लेषण किया जा सकता है। “

जीवन वृत्त के अध्ययन में यह पता लगाते हैं कि व्यक्ति के असामान्य व्यवहार का मूल कारण क्या है? जीवन वृत्त की मुख्य विशेषताएं हैं -

- 1- केस अध्ययन एक सीमाबद्ध विधि है।
- 2- केस अध्ययन में कुछ केस का अध्ययन होता है।
- 3- केस अध्ययन में केस की सम्पूर्णता, एकता तथा अखण्डता को बचाकर रखने का स्पष्ट प्रयास किया जाता है।
- 4- केस अध्ययन में ऑकडे के बहुत सारे श्रोतों को तथा बहुत सारे ऑकडे संग्रहण विधियों का उपयोग किया जाता है।

12.3.2 केस अध्ययन की चार प्रमुख विधियाँ :-

- 1- केस अध्ययन एक सीमाबद्ध विधि होती है- इसमें जिस केस का विश्लेषण किया जाता है उसकी सीमाएं होती हैं। संदर्भ तथा केस के बीच की सीमा हमेशा स्पष्ट नहीं होती है परन्तु इस सीमा की वास्तविकता निश्चित रूप से होती है। शोधकर्ता विशेष प्रयास करके केस की सीमा की पहचान करता है तथा उसका वर्णन करता है।
- 2- केस अध्ययन में केस कुछ का केस होता है- केस अध्ययन में शोधकर्ता को यह पहचान करना होता है कि केस किस चीज का केस है क्योंकि इससे उसे विश्लेषण की इकाई के बारे में निर्धारण करने में सुविधा होती है
- 3- केस अध्ययन में केस की सम्पूर्णता, एकता और अखण्डता को बचाकर रखने का स्पष्ट प्रयास किया जाता है।
केस अध्ययन के एक केस की सम्पूर्णता, एकता तथा उसके अखण्डता को बनाकर रखते हुए उसका अध्ययन किया जाता है। चूंकि शोधकर्ता यह जानते हैं कि केस की प्रत्येक चीज का अध्ययन संभव नहीं है। इसलिए वे के कुछ पहलुओं पर विशिष्ट ध्यान इस प्रकार देते हैं कि उसकी अखण्डता पर कोई आंच न आये।
- 4 केस अध्ययन में आँकड़ों के बहुत सारे स्रोतों को तथा बहुत सारे आँकड़ों संग्रहण करने की विधियों का उपयोग किया जाता है। विशेषकर स्वाभाविक परिस्थितियों में किये जाने वाले केस अध्ययन में आँकड़ों के भिन्न भिन्न स्रोतों तथा आँकड़ों के संग्रहण के भिन्न भिन्न विधियों का उपयोग होता है।
स्पष्ट हुआ कि केस अध्ययन की कुछ स्पष्ट विशेषताएँ हैं जो इसे अन्य विधियों से सार्थक रूप से भिन्न करता है।

12.3.3 केस अध्ययन विधि के प्रकार :-

व्यवहार परक वैज्ञानिकों ने केस अध्ययन के मुख्य दो उप प्रकार बतलाए हैं जो निम्नांकित हैं -

- क. अपसरित केस विश्लेषण :- केस अध्ययन के इस प्रकार में शोधकर्ता एक ही साथ दो ऐसे केसों को लेता है जिसमें काफी समानता होते हुए भी भिन्नता होती है।
- ख. पृथक नैदानिक केस विश्लेषण - इस प्रकार के केस विश्लेषण में शोधकर्ता वैयक्तिक इकाईयों का विश्लेषण उसके विप्लेशणात्मक समस्याओं के आलोक में करता है। इस ढंग के केस अध्ययन में शोधकर्ता द्वारा किसी व्यक्ति के बीते हुए दिनों के घटनाचक्रों का विस्तृत विश्लेषण किया जाता है और उसके आधार पर एक अन्तिम निष्कर्ष पर पहुँचा जाता है। इस विधि का प्रयोग मनोविश्लेषण में सर्वाधिक होता है।
केस अध्ययन विधि के दोनों प्रकार काफी लोकप्रिय हैं। अन्तर इतना ही है कि पृथक नैदानिक केस विश्लेषण का प्रयोग नैदानिक परिस्थितियों में अधिक होता है। जबकि अपसरित केस विश्लेषण का प्रयोग सामान्य अवस्थाओं में अधिक होता है।

तीन तरह के भिन्न केस हैं -

- क. आन्तरिक केस अध्ययन -यह ऐसा केस अध्ययन होता है जहाँ शोधकर्ता इसलिए अध्ययन प्रारम्भ करता है क्योंकि वह लक्ष्य केस के बारे में गहराई से जानना चाहता है।
- ख साधनात्मक केस अध्ययन- यह ऐसा केस अध्ययन होता है जहाँ शोधकर्ता किसी विशेष केस का अध्ययन इसलिए करता है क्योंकि उससे समस्या को समझने में विशेष सूझ उत्पन्न होती है या किसी सिद्धान्त को परिष्कृत करने में मदद मिलती है।
- ग सामूहिक केस अध्ययन- यह एक ऐसा केस अध्ययन होता है जहाँ शोधकर्ता साधनात्मक केस अध्ययन का विस्तार कई केसेज का अध्ययन करने के लिए करता है तथा जिसमें घटना, सामान्य अवस्था तथा जीव संख्या के बारे में अधिक कुछ सीखने के प्रयास किया जाता है।

केस अध्ययन विधि की पूर्व कल्पनाएँ -

- 1- मानव प्रकृति में एकरूपता होती है हालांकि यह भी सच है कि मानव व्यवहार परिस्थिति के अनुसार परिवर्तित होते रहते हैं।
- 2- मानव संबंधित इकाई स्वाभाविक इतिहास पर आधारित होता है।
- 3- इस विधि में सम्बन्धित इकाई का विस्तृत अध्ययन संभव हो पाता है।

12.3.5 केस अध्ययन विधि के लाभ एवं दोष :-

लाभ निम्नांकित हैं -

- 1- केस अध्ययन विधि में दो विभिन्न केसेज को लेकर उनका तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
- 2- केस अध्ययन विधि द्वारा अध्ययन के लिए चयन किये गए केस का अध्ययन गहन रूप से अध्ययन संभव होता है। क्योंकि इसमें एक समय में किसी एक केस या सामाजिक इकाई का ही अध्ययन किया जा सकता है।
- 3- केस अध्ययन द्वारा किसी प्राक्कल्पना के निर्माण में काफी मदद मिलती है।
- 4- केस अध्ययन विधि एक ऐसी विधि है जिससे प्राप्त तथ्यों के आधार पर भविष्य में किये जाने वाले अध्ययनों में उत्पन्न होने वाली कठिनाईयों को पहले से ही आँका जा सकता है तथा उसे दूर करने के उपायों का वर्णन किया जा सकता है।
- 5- इस विधि में चूंकि सामाजिक इकाई का गहन अध्ययन किया जाता है, इसलिए इसमें सम्बन्धित इकाई के व्यवहारपरक पैटर्न को पूर्णरूप से समझने में मदद मिलती है।
- 6- यह विधि सामाजिक इकाई के स्वाभाविक इतिहास के बारे में जानने में मदद करने के साथ ही साथ इसका सम्बन्ध वातावरण के अन्य सामाजिक कारकों से भी स्थापित करने में मदद करता है।

केस अध्ययन विधि में कुछ खामियाँ भी हैं। जो निम्न हैं -

- 1- केस अध्ययन विधि में आत्म निष्ठा अधिक पायी जाती है जिसका प्रतिकूल प्रभाव अध्ययन के निष्कर्ष पर पड़ता है। इस विधि में शोधकर्ता तथा अध्ययन के लिए चुने गए सामाजिक इकाई में अधिक घनिष्टता तथा सोहार्द स्थापित हो जाता है। जिसका परिणाम यह होता है कि शोधकर्ता सामाजिक इकाई से प्राप्त तथ्य का सही सही वस्तुनिष्ठ मूल्यांकन नहीं कर पाता है।

- 2- केस अध्ययन विधि में शोधकर्ता निश्चितता का मिथ्या भाव उत्पन्न हो जाता है। शोधकर्ता अपने निष्कर्ष के बारे में विश्वस्त हो जाता है कि वह अपने अध्ययन में सम्मिलित केसेज का प्रतिनिधिक मानकर एक खास तरह के परिणाम के बारे में पूर्णतः निश्चित हो जाता है। इस तरह की निश्चितता का कुप्रभाव यह होता है कि शोधकर्ता शोध डिजायन के मूलभूत नियमों को पूर्णतः उपेक्षा कर बैठता है।
- 3- केस अध्ययन विधि में शोधकर्ता पर पूर्ण जवाबदेही इस बात की भी दी जाती है कि वह किसी सामाजिक इकाई जैसे व्यक्ति या परिवार के इतिहास तैयार करे। उनके द्वारा दी गई सूचनाओं की वैधता की जाँच करने का कोई तरीका इस विधि में नहीं बतलाया गया है।
- 4- केस अध्ययन विधि द्वारा अध्ययन में समय काफी लगता है
- 5- अक्सर देखा गया है कि मात्र किसी एक केस के अध्ययन के आधार पर लिया गया निष्कर्ष सही नहीं होता है।

12.3.5 केस अध्ययन विधि के दोषों को दूर करने के उपाय :-

- 1- शोधकर्ता को इस विधि द्वारा अध्ययन करने में एक प्रतिदर्श का निष्पक्ष चयन कर लेना चाहिए न कि सिर्फ किसी एक केस का गहन अध्ययन कर अपने आपको सतुष्ट कर लेना चाहिए। ऐसा करने से केस अध्ययन विधि की अधिकतर पिकायतें अपने आप दूर हो जाएगी।
- 2- प्रतिदर्श की जीवसंख्या का प्रतिनिधिक बनाना :- शोधकर्ता को चाहिए कि केस अध्ययन विधि में जब वह एक प्रतिदर्श का चयन कर रहा हो तो प्रतिदर्श जीवसंख्या का सही सही प्रतिनिधित्व करता हो। किसी प्रतिदर्श में जब प्रतिनिधित्व का गुण बढ़ता है, तो उससे प्राप्त आँकड़ों की विश्वसनीयता तथा वैधता में भी वृद्धि होती है।
- 3- सूचनाओं का वस्तुनिष्ठ कोडिंग करना :- यदि शोधकर्ता केस अध्ययन विधि से प्राप्त आँकड़ों को एक वस्तुनिष्ठ कोडिंग करता है, तो इससे सूचनाओं में किसी तरह के हेर-फेर करने की संभावना समाप्त हो जाती है और तब उसका उचित सांख्यिकीय विश्लेषण भी आसानी से हो जाता है।
- 4- शोधकर्ता को विशिष्ट प्रशिक्षण देना :- केस अध्ययन विधि को उन्नत बनाने का एक तरीका यह भी है कि शोधकर्ता जो इस विधि द्वारा अध्ययन करने वाले हैं, को विशिष्ट रूप से प्रशिक्षित किया जाए।

अभ्यास प्रश्न 1

- 1- जीवन वृत्त विधि का प्रयोग सबसे पहले..... द्वारा किया गया था
- 2- 1840 में पारिवारिक बजट के रूप में विधि का अध्ययन किया गया।

12.4 साक्षात्कार विधि

साक्षात्कार विधि व्यक्तित्व की परीक्षा के लिए सबसे अधिक सामान्य विधि साक्षात्कार विधि है। डेजिन 1970 ने साक्षात्कार को परिभाषित किया है- 'साक्षात्कार आमने-सामने किया गया एक संवादोचित आदान-प्रदान है जहाँ एक व्यक्ति, दूसरे व्यक्ति से कुछ सूचनाएं प्राप्त करता है।

विशेषताएं -

1. साक्षात्कार आमने सामने की परिस्थिति है।
2. साक्षात्कार में प्रश्न पूछे जाते हैं तथा उनके उत्तर शाब्दिक रूप से दिये जाते हैं।
3. साक्षात्कार में साक्षात्कारकर्ता द्वारा न कि परीक्षार्थी द्वारा सूचनाओं को रिकार्ड किया जाता है। परीक्षार्थी के लिए दिए हुए उत्तरों के अतिरिक्त उसके हाव भाव तौर तरीके तथा अन्य बातों से भी उसके व्यक्तित्व का पता चलता है।

12.4.4 साक्षात्कार के प्रकार :-

कार्य या उद्देश्य के आधार पर निम्न प्रकार बताये हैं -

- 1- नैदानिक साक्षात्कार :- इसे गहन साक्षात्कार भी कहा जाता है तथा यह ऐसा साक्षात्कार है जिसमें भेटकर्ता साक्षात्कार किये जाने वाले व्यक्ति की अन्तर्निहित भावनाओं, प्रेरणाओं एवं संघर्षों के अध्ययन में अधिक रूचि दिखलाता है।
- 2- निदानात्मक साक्षात्कार :- इस तरह के साक्षात्कार में साक्षात्कारकर्ता किसी खास रोग के संभावित कारणों का पता लगाने के लिए विषयी से पूछताछ करता है।
- 3- चयन साक्षात्कार :- चयन साक्षात्कार से तात्पर्य वैसे साक्षात्कार से होता है जिसमें साक्षात्कारकर्ता किसी पद या नौकरी के लिए चयन करने के ख्याल से विषयी से कुछ पूछताछ करता है।
- 4- केन्द्रित साक्षात्कार :- केन्द्रित साक्षात्कार का सम्बन्ध वैसे लोगो या विषयी से होता है जिससे स्वयं किसी घटना विशेष दुर्घटना या कोई विशेष चलचित्र देखा हो या कोई विशेष कमेन्ट सुनी हो। इस प्रकार के साक्षात्कार में सिर्फ उन्ही परिस्थितियों पर प्रकाश डाला जाता है जिनका विश्लेषण साक्षात्कार के पहले किया जा चुका हो।
- 5- शोध साक्षात्कार :- इस तरह के साक्षात्कार में साक्षात्कारकर्ता किसी शोध समस्या के बारे में विस्तृत रूप से विषयी से पूछ ताछ कर आँकड़ों का संग्रहण करता है।
- 6- संरचित साक्षात्कार :- संरचित साक्षात्कार वैसे साक्षात्कार को कहा जाता है जिसमें साक्षात्कारकर्ता विषयी से पूर्व निर्धारित प्रश्नों को एक निश्चित क्रम में पूछता है तथा विषयी द्वारा दिये गये उत्तरों को एक मानवीकृत फार्म में रिकॉर्ड किया जात है। इस तरह से इस साक्षात्कार में साक्षात्कार देने वाले सभी व्यक्तियों से एक ही तरह का प्रश्न एक निश्चित क्रम में पूछकर साक्षात्कारकर्ता एक खास निष्कर्ष पर पहुंचने की कोशिश करते हैं। इस तरह के साक्षात्कार को अन्य नामों जैसे औपचारिक साक्षात्कार या प्रतिकृत साक्षात्कार के नाम से भी जाना जाता है।

चूँकि संरचित साक्षात्कार में प्रश्नों को पूछने का तरीका मानकीकृत होता है इसलिए इससे प्राप्त परिणामों की विश्वसनीयता तथा निर्भरता अधिक होती है तथा इस तरह के साक्षात्कार की परिस्थिति काफी संरचित होती है अर्थात् उसके प्रश्न पूछने का क्रम तथा प्रासांक लेखन विधि सभी पहले से ही निश्चित होती है इसलिए कम प्रशिक्षित साक्षात्कारकर्ता भी इस तरह के साक्षात्कार को आसानी से संचलित कर सकते हैं। इन गुणों के बावजूद इसके दो अवगुण भी हैं -

- 1- संचरित साक्षात्कार के संचालन की प्रक्रिया अधिक खर्चीली तथा समय लेने वाली होती है।
- 2- गिलफोर्ड ने बतलाया कि संरचित साक्षात्कार द्वारा प्राप्त परिणाम की वैधता सामान्यतः जीवनी ऑकड़ें विश्लेषण तथा मानकीकृत मनोवैज्ञानिक परीक्षण से प्राप्त परिणामों की वैधता से काफी कम होती है।
- 7- असंरचित साक्षात्कार :- असंरचित साक्षात्कार में साक्षात्कारकर्ता साक्षात्कार देने वाले व्यक्तियों से जो प्रश्न पूछता है, पूर्व निर्धारित नहीं होता है और न तो वह किसी एक खास क्रम में ही इन प्रश्नों को पूछता है साक्षात्कारकर्ता की मर्जी पर छोड़ दिया जाता है और वह जैसा उचित समझता है, वैसा ही करता है। इस तरह के साक्षात्कार में कोई समय-सीमा भी नहीं होती है। किसी किसी विषयी से कई मिनटों तक प्रश्नों को पूछा जाता है तो किसी किसी विषयी से चन्द मिनटों में ही निबट लिया जाता है।

लाभ :-

- 1- इस तरह के साक्षात्कार में स्वतः प्रकृति या स्वाभाविकता का गुण पाया जाता है
- 2- लचिलेपन का गुण अधिक होता है।

दोष :-

- 1- असंरचित साक्षात्कार में एक साक्षात्कार से प्राप्त ऑकड़ों को दूसरे साक्षात्कार से प्राप्त ऑकड़ों के साथ वैज्ञानिक तुलना नहीं की जा सकती है। इसका प्रधान कारण यह है कि इस तरह के साक्षात्कार में प्रश्नों के पूछने के तरीके पर साक्षात्कारकर्ता का कोई नियंत्रण नहीं रहता है।
- 2- असंरक्षित साक्षात्कार में अधिक समय देकर भी विषयी से अर्थपूर्ण सूचनाओं को प्राप्त करना मुश्किल है क्योंकि इस तरह के साक्षात्कार में प्रश्न पूछे जाने का दोष पहले से परिभाषित नहीं रहता है।

एक सफल साक्षात्कार के लिए आवश्यक परिस्थितिया-

साक्षात्कार का चाहे जो भी प्रकार क्यों न हो, इसकी सफलता के लिए कुछ विशेष परिस्थितियों का होना आवश्यक है।

- 1- अभिगम्यता :- किसी साक्षात्कार की सफलता इस बात पर निर्भर करता है कि साक्षात्कार में पूछी या प्रत्यर्थी के लिए आसानी से अभिगम्य या प्राप्य करना संभव हो।
- 2- संज्ञान :- संज्ञान से यहाँ तात्पर्य इस तथ्य से होता है कि प्रत्यर्थी या विषयी को यह पूर्णरूपेण ज्ञात होना चाहिए कि उससे क्या पूछा जा रहा है तथा किस ढंग की सूचनाएं उससे अपेक्षित हैं।
- 3- अभिप्रेरणा :- किसी भी साक्षात्कार की सफलता के लिए यह आवश्यक है कि विषयी या प्रत्यर्थी वैसी सूचनाएं देने के लिए अभिप्रेरित होता है जो उनसे प्राप्त करने की कोशिश की जा रही है।

12.4.2 साक्षात्कार के लाभ तथा परिसीमाएं

- 1- साक्षात्कार द्वारा साक्षात्कारकता कम समय में ही वांछित सूचनाओं को प्राप्त कर लेता है।
- 2- साक्षात्कार ही एक ऐसी विधि है जिसमें शोधकर्ता पूर्णतः यह आश्वस्त हो जाता है कि प्रत्यर्थी ने पूछे गए प्रश्नों की व्याख्या ठीक ढंग से की है।
- 3- साक्षात्कार के प्रश्नों में लचीलापन होने के कारण शोधकर्ता के लिए कम समय में गहन जानकारी प्राप्त करना संभव हो पाता है। इसके अन्तर्गत प्रश्न नही समझ में आने पर उसे पुनः दोहरा कर या कुछ परिवर्तन कर पूछा जा सकता है।
- 4- साक्षात्कार में शोधकर्ता के लिए परिस्थिति पर नियंत्रण रखना काफी आसान होता है जिसका परिणाम यह होता है कि साक्षात्कारकर्ता उचित प्रश्नों को पूछ पाता है तथा साथ ही साथ प्रत्यर्थी उसका उत्तर सही सही ढंग से दे पाता है।
- 5- साक्षात्कार में शोधकर्ता या साक्षात्कारकर्ता को प्रत्यर्थी से कुछ अषाब्दिक संकेत भी प्राप्त होता है।

सीमाएं :-

- 1- शाब्दिक अनुक्रिया के आधार पर लिया गया कोई निर्णय को अधिक वैध नहीं माना जा सकता है।
- 2- यदि साक्षात्कारकर्ता काफी थका हुआ है तो वह प्रत्यर्थी की अनुक्रियाओं को ठीक ढंग से रिकॉर्ड नहीं कर पाता है। ऐसी स्थिति में साक्षात्कार के आधार पर कोई अर्थपूर्ण निष्कर्ष पर पहुंचना संभव नहीं है।
- 3- साक्षात्कार में आत्मविश्ठता का गुण पाया जाता है।
- 4- साक्षात्कार समय लेने वाली एक प्रविधि है।

साक्षात्कार में त्रुटियों के प्रमुख स्रोत :-

- 1- साक्षात्कारकर्ता की मनोवृत्ति।
- 2- प्रश्नों की अबोधगम्यता।
- 3- साक्षात्कार परिस्थिति में हार्दिकता की कमी।
- 4- प्रत्यर्थी में प्रेरणा की कमी।
- 5- साक्षात्कार की लम्बी अवधि।

अभ्यास प्रश्न 2

- 1- साक्षात्कार आमने-सामने किया गया एक संवादोचित आदान-प्रदान है जहाँ एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से कुछ सूचनाएं प्राप्त करता है। यह परिभाषा के द्वारा दी गई थी।
- 2- एक सफल साक्षात्कार के लिए आवश्यक परिस्थितियाँ है।

12.5 प्रश्नावली विधि

व्यक्तित्व के सामाजिक गुणों जैसे सामाजिक, आत्म-प्रकाषण आदि की परीक्षा के लिए मनोविज्ञान में प्रश्नावलियों का बड़े पैमाने पर प्रयोग किया जाता है, कुछ ऐसे चुने हुए प्रश्नों की सूची होती है जिनके

उत्तरों से व्यक्तित्व की इन विशेषताओं पर प्रकाशपडता है। इन प्रश्नों के सामने हों या नही लिखा रहता है जिनमें से परीक्षार्थी गलत शब्द को काट देता है अथवा सही के आगे निशान लगा देता है।

प्रश्नावली के प्रकार :-

- 1- प्रतिबन्धित प्रश्नावली :- इस प्रश्नावली में प्रश्नों का उत्तर अधिकतर हों या नहीं में दिया जाता है।
 - 2- खुली प्रश्नावली :- इस प्रश्नावली में उत्तर हों या नही में न देकर पूरा लिखना पडता है।
 - 3- चित्रित प्रश्नावली :- दिए हुए चित्रों पर निशान लगाकर प्रश्नों का उत्तर दिया जाता है।
 - 4- मिश्रित प्रश्नावली :- उपर्युक्त तीनों प्रकार के प्रश्नों का मिश्रण होता है।
- इस विधि में विभिन्न परीक्षार्थियों द्वारा एक प्रश्न के अनेक उत्तर दिये जाने से तुलनात्मक अध्ययन में बडी सहायता मिलती है।

अभ्यास प्रश्न 3

- 1- प्रश्नों का उत्तर हों या नही में दिया जाता है।
- 2- जहाँ उत्तर हों या नहीं में नहीं देकर मुक्त रूप से देते है उसे कहते है।

12.6 निर्माण परीक्षण विधियाँ

निर्माण परीक्षण विधि में और हार्टषोर्न ने चलाई। इस विधि में परीक्षार्थी को कुछ विशेष प्रकार का काम देकर उसके व्यक्तित्व के शीलगुण की परीक्षा दी जाती है। उदाहरण के लिए- कुछ बालको की ईमानदारी की जाँच करने के लिए एक परीक्षण में 8,10 वजनों को जिनमें बहुत कम अन्तर था, एक जगह रखा दिया गया। हर एक वजन के नीचे उनकी तौल लिख दी गयी। अब बालको को उन वजनों को तौल के क्रम में लिखने को कहा गया ईमानदार बालकों को ऐसा करने में बडी कठिनाई हुई। जबकी बेईमान बालकों ने उनके नीचे वजनों को पढकर वजनों को झटपट क्रमानुसार लगा दिया।

अभ्यास प्रश्न 4

1. निर्माण परीक्षण विधि ने चलाई थी।
2. निर्माण परीक्षण विधि में व्यक्तित्व के की परीक्षा की जाती है

12.7 पेंसिल कागज विधियाँ

व्यक्तित्व परीक्षण की कुछ सरल विधियाँ पेंसिल कागज विधियाँ कही जा सकती है , क्योकि इनमें पेंसिल कागज का उपयोग किया जाता है। इसमें प्रयोज्य दिये हुए प्रश्न पत्र में प्रश्नों का उत्तर देने के लिये कागज पर निशान लगाता है। इस प्रकार के एक पेंसिल कागज का प्रसिद्ध उदाहरण है। यह परीक्षण वैयक्तिक और सामूहिक दोनों ही प्रकार का होता है।

अभ्यास प्रश्न 5

- 1- पेंसिल कागज परीक्षण विधि का प्रसिद्ध उदाहरण है।
- 2- पेंसिल कागज परीक्षण विधि दोनों ही प्रकार का होता है।

12.8 मूल्यांकनविधि

व्यक्तित्व को मापने की एक अन्य विधि मूल्यांकन विधि है। इस विधि में स्थूल रूप से दो प्रकार से काम किया जाता है। एक तो प्रयोज्य से कुछ ऐसे प्रश्नों का उत्तर देने को कहा जाता है जो कि व्यक्तित्व के गुणों से सम्बन्धित हो। प्रयोज्य जिस तरह के उत्तर देता है अथवा दिये हुए उत्तरों में जिनको चुनता है। उनसे दूसरी विधि प्रयोज्य को वास्तविक परिस्थिति में रखकर उसके व्यवहारों और प्रतिक्रियाओं का अध्ययन करना है। उदाहरण के लिए, किसी व्यक्ति में कार्य पटुता मेहनत आदि विभिन्न गुणों की जाँच करने के लिए उनको कई कई काम दिये जा सकते हैं।

मूल्यांकन विधि में मुख्य रूप से निम्नलिखित दो प्रकार के निर्धारण मानदण्ड होते हैं -

- 1- सापेक्ष निर्धारण मानदण्ड :- इसमें जैसा की इसके नाम से स्पष्ट है, बहुत से व्यक्तियों को एक दूसरे के सापेक्ष सम्बन्ध में श्रेष्ठता क्रम में रखा जाता है। इस विधि को थोड़े ही लोगों में प्रयोग किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, यदि दस व्यक्तियों में मिलनसारिता का अध्ययन करना है तो उनमें सबसे अधिक मिलनसार व्यक्ति को पहला और सबसे कम मिलनसार व्यक्ति को दसवाँ स्थान दिया जावेगा और इन दोनों के बीच में बाकी लागो को रखा जावेगा।
- 2- निरपेक्ष निर्धारण मानदण्ड :- जैसा की इसके नाम से ही स्पष्ट है, इसमें व्यक्तियों की तुलना नहीं की जाती है, बल्कि उन्हें पूर्व निश्चित विशेषताओं की निरपेक्ष कोटियों में रखा जाता है।

स्थूल रूप से इस विधि में मुख्य कठिनाईयाँ निम्नलिखित हैं -

- इस विधि में परीक्षक में अधिक कोषलता और योग्यता की आवश्यकता होती है।
- इसमें पक्षपात की सम्भावना बहुत अधिक रहती है क्योंकि यह एक सामान्य बात है कि अपने प्रियजनों की बुराई कोई नहीं देखता।
- इस विधि में एक अन्य कठिनाई यह है कि किसी व्यक्ति में एक विशेष गुण अथवा अवगुण दिखाई देने पर हम उसके चरित्र को अच्छा या बुरा मान लेते हैं और चरित्र के अन्य पहलुओं में भी गुण अथवा दोष देखने लगते हैं।
- इस विधि में चौथी कठिनाई यह है कि किसी भी शीलगुण की मात्रा को आँकना बड़ा कठिन है, बहुधा इसमें गलती हो जाती है

उपयुक्त कठिनाईयों के बाद भी परीक्षक में आवश्यक गुण होने पर मूल्यांकन को बहुत कुछ यथार्थ बनाया जा सकता है।

अभ्यास प्रश्न 6

1. सापेक्ष तथा निरपेक्ष निर्धारण मानदण्ड के मानदण्ड हे।
2. में व्यक्तियों की तुलना नहीं की जाती बल्कि उन्हें पूर्व निश्चित विशेषताओं की निरपेक्ष कोटियों में रखा जाता है

12.9 परिस्थिति परीक्षण

परिस्थिति परीक्षण में, व्यक्ति को कुछ विशेष परिस्थितियों में रख कर उसके व्यक्तित्व के गुण दोषों की जाँच की जाती है। वास्तव में यह विधि निर्माण परीक्षण जैसा ही है, परन्तु अन्तर केवल यह है कि इसमें व्यक्ति को एक परिस्थिति में रखा जाता है और निर्माण परीक्षण विधि में उसको कुछ कार्य करने को दिये जाते हैं। बहुधा मनोवैज्ञानिकों ने इन दोनों विधियों को एक ही मान लिया है अतः इसका अलग वर्णन करना अनावश्यक है।

अभ्यास प्रश्न 7

1- में व्यक्ति को कुछ विशेष परिस्थितियों में रखकर उसके व्यक्तित्व के गुण दोषों की जाँच की जाती है।

12.10 मनोविश्लेषणात्मक विधि

व्यक्तित्व की परीक्षा करने के लिए मनोविश्लेषणात्मक विधि में दो तरह के परीक्षण अधिक प्रचलित हैं। पहला मुक्त साहचर्य एवं दूसरा स्वप्न विश्लेषण। इन दोनों परीक्षणों की सहायता से मनोविश्लेषक व्यक्तित्व की अचेतन विशेषताओं को मालूम करता है और बुद्धि का प्रयोग किये बिना अर्थात् मन को खुला छोड़ कर स्वप्न में दिखाई दी हुई वस्तुओं, जीवों तथा क्रियाओं के साथ स्वतंत्र साहचर्य करता है। बुद्धि का अंकुष न होने के कारण इस साहचर्य से अक्सर उसके अचेतन मन की सही बात प्रकट हो जाती है। मनोविश्लेषण विधि विशेषतया असामान्य व्यक्तियों के व्यक्तित्व की विशेषताओं, मानसिक ग्रन्थियों और मानसिक रोगों का पता लगाने में प्रयोग की गयी है। इस विधि में सबसे बड़ी कठिनाई यह है कि इसके लिये बड़े कुशल और अनुभवी मनोविश्लेषक की जरूरत होती है। बहुधा सफल मनोविश्लेषक पहले अपने मन का विश्लेषण कर लेता है जिसे पक्षपात का भय नहीं रहता है।

अभ्यास प्रश्न 8

1- मनोविश्लेषण विधि में दो तरह के परीक्षण प्रचलित है।

2- का प्रयोग मानसिक रोगों का पता लगाने के लिए किया गया।

12.11 शॉर्ट प्रणाली

इस प्रणाली की व्याख्या सबसे पहले विलियम स्टीफेन्सल ने 1953 में मनोवृत्ति, पसन्दो आदि के बारे में दिए गए कथनों या अन्य कथनों का विश्लेषण करते हुए अध्ययन करने के लिए किया गया था। इस प्रविधि में व्यक्ति दिए गए कथनों या अन्य उद्दीपकों को विभिन्न भागों में छोटता है। इन भागों को शॉर्ट कहा जाता है।

प्रविधि में प्रयोज्य दिए गए वस्तुओं जैसे तस्वीरों, कथनों, शब्दों आदि को एक कोटिक्रम के रूप में दिए गये श्रेणियों में किसी निश्चित कसौटी के आधार पर छोटता है। करलिंगर 1986 ने अपना मत व्यक्त करते हुए कहा है कि किसी भी प्रविधि का विश्वसनीय होने के लिए तथा उसमें सांख्यिकीयमात्रा पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध होने के लिए यह आवश्यक है कि छोटती जाने वाली वस्तुओं की संख्या 60 से कम नहीं तथा 140 से अधिक नहीं होनी चाहिए। प्रतिदिन में कभी-कभी प्रयोज्यों से यह भी आग्रह किया जाता है कि वे

प्रत्येक श्रेणियों में छोटे गए वस्तुओं की संख्या बराबर रखे। इस तरह के सार्टिंग से मिलने वाले वितरण को आयताकार वितरण कहा जाता है।

प्रविधि की एक सबसे मुख्य पूर्वकल्पना है कि जहाँ तक संभव हो छोटे जाने वाली वस्तुएं समजातीय हो। इसका प्रधान कारण यह है कि इस तरह की प्रविधि में शोधकर्ता एक यथार्थ तुलनात्मक अनुक्रियाओं जो दिये गये वस्तुओं से उत्पन्न होती है, के अध्ययन में रूचि रखता है। अगर दिये गये उद्दीपन समजातीय नहीं होंगे तो इस ढंग के तुलनात्मक अनुक्रियाओं का कोई अर्थ ही नहीं रह जावेगा।

प्रणाली में सांख्यिकीय विश्लेषण प्रणाली में जब सार्टिंग समाप्त हो जाता है तो उसके बाद उन ऑकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण करके किसी निश्चित निष्कर्ष पर पहुंचने की कोशिश की जाती है।

सांख्यिकीय विश्लेषण करने में निम्नांकित दो तरह के सांख्यिकीय का प्रयोग अधिक किया जाता है -

- 1- सहसम्बन्ध विधि
- 2- प्रसरण विधि

12.11.1 क्यू सार्ट के प्रकार :-

शोर्ट मनोवैज्ञानिको ने क्यू सार्ट को निम्नांकित दो भागों में बाँटा है -

- 1- असंरचित क्यू सार्ट
- 2- संरचित क्यू सार्ट

- असंरचित क्यू सार्ट :- ननली के अनुसार असंरचित क्यू सार्ट एकांश या सामग्रीया यादृच्छिक प्रतिदर्शन पर आधारित होते है। इसमें शोधकर्ता विभिन्न स्रोतों से प्रतिनिधिक सामग्रीयों का चयन करता है। जैसे- वह भिन्न भिन्न किताबों एवं मैगजिनों से कुछ खास खास तरह के कथनों का संग्रह कर सकता है। परन्तु ये सभी सामग्रीयों किसी सिद्धान्त या नियम पर आधारित नहीं होती है। उन्हे सार्टिंग के लिए ऐसे ही यादृच्छिक ढंग से चयन कर लिया जाता है। शोधकर्ता जितने एकांश को चाहे उसमें सम्मिलित कर सकता है। सच पूछा जाए तो असंरचित शार्ट के एकांशों का स्वरूप मनोवृति या व्यक्तित्व मापनी के एकांश के समान ही होता है। सार्टिंग कर लेने के बाद प्राप्त ऑकड़ो के आधार पर सहसम्बन्ध ज्ञान कर यह देखने की कोशिश की जाती है कि विभिन्न तरह के सार्टर सामग्रीयों या एकांशों के प्रति किस ढंग का अपना मत या विचार रखते है।

- संरचित क्यू सार्ट :- असंरचित क्यू सार्ट की तरह संरचित क्यू सार्ट में सभी एकांश एक ही क्षेत्र के होते है परन्तु वे सभी एकांश किसी खास प्राक्कल्पना या चर से सम्बन्धित होते है और विश्लेषण के दौरान उन्हें एक या एक से अधिक विधियों या कसौटियों के आधार पर दो या अधिक भागों में बाँटा जाना संभव होता है।

यदि डिजाइन ऐसा होता है जिसमें एकांशों को एक चर वर्गीकरण के आधार पर दो भागों में बाँटा जाता है तो इसे एक तरफा संरचित क्यू सार्ट कहा जाता है। परन्तु यदि डिजाइन ऐसा होता है जिसमें एकांशों को दो चर वर्गीकरण के आधार पर दो या अधिक भागों में बाँटा जाता है तो इसे दो तरफा संरचित क्यू सार्ट कहा जाता है।

12.11.2 प्रणाली का मूल्यांकन लाभ :-

- 1- सबसे प्रमुख लाभ यह बताया है कि इसमें बहुत सारे एकांश्या उद्दीपन के प्रति प्रयोज्य तुलनात्मक अनुक्रिया करने में समर्थ हो जाता है।
- 2- प्राप्त निष्कर्ष वैध एवं दुरुस्त होता है।
- 3- क्यू सार्ट द्वारा व्यक्ति का गहन अध्ययन संभव है।
- 4- क्यू सार्ट में स्वतः शोध गुण होता है क्योंकि यह नये विचारों एवं नये प्राक्कल्पनाओं को जन्म देता है।

क्यू सार्ट के कुछ परिसीमाएं :-

- 1- इस अध्ययन से व्यक्ति के भीतर प्रत्येक शीलगुण की मात्रा का पता नहीं चलता है।
- 2- इससे प्राप्त निष्कर्ष का सामान्यीकरण संभव नहीं है।
- 3- क्यू सार्ट का उपयोग क्रास वर्गीय अध्ययनों के लिए संभव नहीं है।

अभ्यास प्रश्न 9

- 1- क्यू प्रणाली की व्याख्या 1953 में की गई।
- 2- व्यक्ति दिए गए कथनों या अन्य उद्दीपनों को विभिन्न भागों में छोटता है। इन भागों को कहते हैं।
- 3- छोटे जाने वाले वस्तुओं की संख्या से कम तथा से अधिक नहीं होनी चाहिए।

12.12 सारांश

व्यक्तित्व ही व्यक्ति का आईना है। शिक्षाकी प्रक्रिया में व्यक्तित्व के माप का व्यापक महत्व है। प्रस्तुत अध्याय में हमने व्यक्तित्व माप की विधियाँ जीवन वृत्त विधि, साक्षात्कार विधि प्रश्नावली विधि, निर्माण परीक्षण विधियाँ, पेंसिल कागज विधि, मूल्यांकन विधि, परिस्थिति परीक्षण, मनोविश्लेषणात्मक विधि, सार्ट प्रणाली का विस्तृत अध्ययन किया। ये सभी विधियाँ व्यक्तित्व मापन में काफी सहायक हैं।

12.13 शब्दावली

- प्रश्नावली - प्रश्नों का क्रम
- साक्षात्कार - भेंट, समागम
- संरचित - निर्माण किया हुआ
- प्रतिदर्श - नमूना, प्रतिरूप
-

12.14 अभ्यास प्रश्न के उत्तर

अभ्यास प्रश्न 1

- 1- फ्रेडकिली प्ले
2. जीवन वृत्त विधि

अभ्यास प्रश्न 2

- 1- डेजिन 2 अभिगम्यता , संज्ञान ,
अभिप्रेरणा

अभ्यास प्रश्न 3

- 1- प्रतिबन्धित प्रश्नावली 2. खुली प्रश्नावली

अभ्यास प्रश्न 4

- 1- मै तथा हार्टषोर्न 2. शीलगुण

अभ्यास प्रश्न 5

- 1- डडच्प् 2. वैयक्तिक या सामूहिक

अभ्यास प्रश्न 6

- 1- मूल्यांकन विधि 2 निरपेक्ष निर्धारण मानदण्ड

अभ्यास प्रश्न 7

- 1- परिस्थिति परीक्षण

अभ्यास प्रश्न 8

- 1- मुक्त साहचर्य और स्वप्न विश्लेषण 2. मनोविश्लेषणात्मक

अभ्यास प्रश्न 9

- 1- विलियम स्टीफेन्सन 2. क्यूशार्ट 3 ं60 , 140

12.15 संदर्भग्रंथसूचि

- सुलेमान मुहम्मद, तरन्नुम रिजवाना, “मनोविज्ञान में प्रयोग एवं परीक्षण”, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली ।
- सिंह अरूण कुमार, 2011 “ उच्चतर मनोवैज्ञानिक प्रयोग एवं परीक्षण”, भारती भवन , पटना ।
- सिंह अरूण कुमार, 2014 “ उच्चतर सामान्य मनोविज्ञान”, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली ।
- सिंह अरूण कुमार, 2012, “ उच्चतर नैदानिक मनोविज्ञान” मोतीलाल बनारसीदास, बंगलो रोड, दिल्ली ।
- डॉ. वर्मा प्रीति, डॉ. श्री वास्तव डी.एन., 1996, “ आधुनिक प्रयोगात्मक मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मन्दिर , आगरा ।

12.16 निबंधात्मक प्रश्न

- 1- जीवन वृत्त विधि का अर्थ बताते हुए उसके विशेषताएं एवं प्रकारों का वर्णन कीजिए।
- 2- साक्षात्कार विधि के प्रकारों की विस्तार पूर्वक बताते हुए इनके लाभ एवं परिसीमाओं की चर्चा कीजिए।
- 3- निम्न पर संक्षिप्त टिप्पणी कीजिए।
अ. मनोविश्लेषणात्मक विधि ब. प्रश्नावली विधि
- 4- मूल्यांकन विधि का अर्थ बताते हुए इसके निर्धारित मानदण्ड एवं कठिनाईयों की चर्चा कीजिए।
- 5- क्यू शार्ट विधि का अर्थ बताते हुए इसके प्रकारों की चर्चा कीजिए।

इकाई-13

व्यक्तित्व विकृतियों का परिचय एवं प्रकार

Introduction and types of personality disorders

इकाई की रूपरेखा

- 13.1 प्रस्तावना
- 13.2 उद्देश्य
- 13.3 व्यक्तित्व
- 13.4 परिभाषा : व्यक्तित्व विकृति
 - 13.4.1 व्यक्तित्व विकृति का अर्थ एवं स्वरूप
 - 13.4.2 व्यक्तित्व विकृति के कारण
 - 13.4.3 व्यक्तित्व विकृति की पहचान या निदान में सम्मिलित समस्याएँ
 - 13.4.4 व्यक्तित्व विकृति के उपचार
 - 13.4.5 व्यक्तित्व विकृति के प्रकार
 - 13.4.5.1 सीमान्त रेखीय व्यक्तित्व विकृति
 - 13.4.5.2 आत्ममोही व्यक्तित्व विकृति
 - 13.4.5.3 स्किजोआयड व्यक्तित्व विकृति
 - 13.4.5.4 स्थिर-व्यामोही व्यक्तित्व विकृति
- 13.5 मनोविकारी व्यक्तित्व या समाज विरोधी व्यक्तित्व
- 13.6 व्यक्तित्व विकृति के कारणात्मक कारक
 - 13.6.1 जैविक कारक
 - 13.6.2 मनोवैज्ञानिक कारक
 - 13.6.3 सामाजिक-सांस्कृतिक कारक
- 13.7 व्यक्तित्व विकृति के उपचार एवं प्रतिफल
- 13.8 सारांश
- 13.9 शब्दावली
- 13.10 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
- 13.11 संदर्भग्रन्थ
- 13.12 निबंधात्मक प्रश्न

13.1 प्रस्तावना

व्यक्तित्व विकृति मूलतः शीलगुणों की विकृति है, जो पर्यावरण को कुसमायोजित ढंग से प्रत्यक्षण करने तथा उसके प्रति अनुक्रिया करने की प्रवृत्ति की और इशारा करता है।

प्रस्तुत इकाई में आप व्यक्तित्व विकृति का अर्थ, परिभाषा, इसके उद्देश्य पहचान एवं प्रकारों के बारे में विस्तार पूर्वक अध्ययन करेंगे।

13.2 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप -

- व्यक्तित्व विकृति का अर्थ बता सकेंगे एवं परिभाषित कर सकेंगे।
- व्यक्तित्व विकृति का स्वरूप एवं पहचान बता सकेंगे।
- व्यक्तित्व विकृति के प्रकारों को विस्तारपूर्वक जानकारी ले सकेंगे।
- व्यक्तित्व विकृति के उपचार की जानकारी ले सकेंगे।

13.3 व्यक्तित्व

पर्सनालिटी व्यक्तित्व का अंग्रजी अनुवाद है जो लेटिन शब्द परसोना ;परसोना से बना है जिसका अर्थ नकाब से होता है जिसे नायक नाटक करते समय पहनते हैं। इस शाब्दिक अर्थ को ध्यान में रखते हुए व्यक्तित्व को बाहरी वेश-भूषा तथा बाह्य दिखावे के आधार पर परिभाषित किया गया है।

आइजेन्क ; 1952 के अनुसार, “व्यक्तित्व व्यक्ति के चरित्र, चित्तप्रकृति, ज्ञानशक्ति तथा शरीरगठन का करीब-करीब एक स्थायी एवं टिकाऊ संगठन है जो वातावरण में उसके अपूर्व समायोजन का निर्धारण करता है।”

13.4 व्यक्तित्व विकृति की परिभाषाएँ:

व्यक्तित्व विकृति एक ऐसी श्रेणी है जिसमें उन व्यक्तियों को रखा जाता है जिनके व्यक्तित्व के शीलगुण एवं उनका विकास इतने अपरिपक्व तथा विकृत होते हैं कि अपने वातावरण के प्रत्येक चीज, घटनाओं एवं व्यक्ति के बारे में वे एक दोषपूर्ण चिन्तन तथा प्रत्यक्षण करते हैं।

कारसन तथा बचुर (1992) :- के शब्दों में “सामान्यतः व्यक्तित्व विकृतियाँ व्यक्तित्व शीलगुणों का एक उग्र या अतिरंजित प्रारूप हैं जो व्यक्ति को उत्पाति व्यवहार विशेषकर अंतवैयक्तिक प्रकृति के उत्पाति व्यवहार को करने के लिए एक झुकाव उत्पन्न करता है।”

डेविसन एवं नील (1996) :- के अनुसार, “व्यक्तित्व विकृति विकृतियों का विषय समूह है जो वैसे व्यवहारों एवं अनुभूतियों का स्थायी एवं अनम्य पैटर्न होता है जो सांस्कृतिक प्रत्याशाओं से विचलित होता है और तकलीफ या हानि पहुँचाता है।”

13.4.1 व्यक्तित्व विकृति का अर्थ एवं स्वरूप

उपरोक्त परिभाषाओं का विश्लेषण करने पर इमें व्यक्तित्व विकृति का अर्थ एवं स्वरूप के बारे में कुछ महत्वपूर्ण तथ्य प्राप्त होते हैं :-

- 1- व्यक्तित्व विकृति में व्यक्ति में व्यवहारात्मक अर्थात् व्यवहारों में विसामान्यताएँ इतनी अधिक एवं विचित्र होती हैं कि दूसरे लोगों के लिए उनसे कोई अर्थ निकालना संभव नहीं हो पाता है तथा साथ-ही-साथ उनका व्यवहार अपूर्वानुमानेय हो जाता है।

- 2- व्यक्तित्व विकृति की श्रेणी में किसी विकृति को रखे जाने के लिए यह आवश्यक है कि विकृत शीलगुण का स्वरूप चिरकालिक हो।
- 3- अगर किसी बीमार ; आदि के कारण उसमें थोड़े दिनों से विकृत शीलगुण के लक्षण उसमें दिखलाई देते है तो मात्र इसके आधार पर उसे व्यक्तित्व विकृति की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता है।
- 4- व्यक्तित्व विकृति के सभी लक्षण प्रायः किशोरावस्था तक स्पष्ट हो जाते है जो वयस्कावस्था में भी बने रहते है।

व्यक्तिगत विकृतियों की कुछ विशेष सामान्य विशेषताएँ हैं जिनके आधार पर व्यक्तिगत विकृति के स्वरूप को समझना आसान है। ऐसी कुछ सामान्य विशेषताएँ निम्नांकित है -

- 1- विघटित व्यक्तिगत संबंध - व्यक्तिगत विकृति का चाहे जो भी प्रकार क्यों न हो, उसमें वह विघटित व्यक्तिगत संबंधकी विशेषता पायी जाती है। ऐसे व्यक्तियों का व्यक्तिगत संबंध अन्य व्यक्तियों के साथ इतना बुरा होता है कि अन्य लोग उससे काफी नाराज रहते ही है। साथ ही साथ घबराए भी रहते है।
- 2- चिरकालिक दुखदायी व्यवहार - व्यक्तित्व विकृति में व्यक्ति ऐसा व्यवहार काफी लम्बे अरसे से दिखलाता है जो दूसरों के लिए कष्टकर एवं दुखदायी होता है। वे एक पर एक कहर अन्य लोगों पर ढाते चले जाते है जिससे उनके संपर्क में आये व्यक्तियों को काफी दुःख पहुँचता है।
- 3- नकारात्मक नतीजा - व्यक्तित्व विकृति में व्यक्ति को अपनी जिंदगी की घटनाओं का नकारात्मक नतीजा ही सामने आता है। इन नकारात्मक नतीजों में विवाह-विच्छेद ; व्यसनी विकृति अपराधिक व्यवहार आदि प्रधान है।
- 4- एक ही कुसमायोजी व्यवहार को दोहराना व - ऐसा देखा गया है कि व्यक्तित्व विकृति में जो भी विशेष शीलगुण पैटर्न है जैसे - शक करना, विद्वेष दिखाना, जिद्दीपन करना आदि विकसित होता है, वह प्रत्येक परिस्थिति में उनके द्वारा दिखलाया जाता है जिसके परिणामस्वरूप व्यक्ति एक ही तरह का कुसमायोजी व्यवहार बार-बार करता है। जैसे - किसी व्यक्तित्व विकृति में यदि निर्भरता के शीलगुण की प्रधानता होती है, तो वह अपनी विशेष माँग पर हठ दिखलाकर अपने प्रियजन से संबंधको तोड़ लेता है। इसके बाद वह पुनः किसी दूसरे व्यक्ति के साथ उसी ढंग की निर्भरता का संबंधदिखलाता है और पुनः उसी व्यवहार को दोहराता है आर्थात् कुछ दिन के बाद पुनः उससे अपना संबंधविच्छेद कर लेता है।
- 5- व्यक्तित्व विकृति - व्यक्तित्व विकृति में व्यक्ति अपनी समस्याओं एवं कुसमायोजी पैटर्न से छुटकारा पाना नहीं चाहता है। फलस्वरूप वह अपनी और से शायद ही कभी किसी प्रकार की चिकित्सा उपायों पर अमल करता है। यदि कोई अन्य व्यक्ति द्वारा उसे चिकित्सा के लिये भेजा भी जाता है, तो वह चिकित्सक के साथ धोखाधड़ी करता है या उसके साथ पूर्ण सहयोग नहीं दिखलाता है जिसके फलस्वरूप उसकी विकृति की गंभीरता बनी रहती है।
- 6- व्यवहार परिवर्तन के विरोधी - व्यक्तित्व विकृति में व्यक्ति द्वारा ऐसा व्यवहार पैटर्न दिखलाया जाता है जिसमें वह किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं करना चाहता है। ऐसे व्यक्ति न तो अपने

व्यवहार में नया परिवर्तन लाना चाहते हैं और न ही दूसरों को इस बात का अवसर ही देते हैं कि उनके व्यवहार में परिवर्तन की माँग कर सकें।

उपर्युक्त विशेषताओं के आधार पर यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि व्यक्तित्व विकृति की कुछ खास-खास विशेषताएँ हैं जिनके आधार पर इनके स्वरूप को आसानी से समझा जा सकता है।

13.4.2 व्यक्तित्व विकृति के कारण

अनेक मनोवैज्ञानिकों ने मनोविकृत व्यक्तित्व के कारण के संबंध में भी अपने विचार व्यक्त किए हैं। इनके अनुसार व्यक्तित्व में विकृति उत्पन्न होने के कारण हैं जिनमें से कुछ महत्वपूर्ण कारणों का वर्णन क्रमशः किया जाता है :

- (i) वंशानुक्रम :- व्यक्तित्व की उत्पत्ति और निर्माण में वंशानुक्रम का महत्वपूर्ण योगदान है। व्यक्ति वंशानुक्रम के द्वारा ही शील-गुणों को प्राप्त करता है। इसलिए जैविक रचना तथा शरीर रसायन के दोष होने के कारण व्यक्ति में यह विकार उत्पन्न होता है। इसी कारण से इनका उपचार नहीं किया जा सकता है। इसके विपरीत कुछ मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि यह कहना गलत है कि ये विकृति वंशानुक्रम की देन है ; क्योंकि बहुत से लोग इस प्रकार के शील-गुण को अपने जीवन में वातावरण के द्वारा अर्जित करते हैं और यह भी देखा गया है कि एक मनोविकारी माता-पिता का बच्चा स्वरूप और सच्चरित्र होता है और दूसरी तरफ सच्चरित्र माता-पिता की संतान इस दोष से युक्त होती है।
- (ii) वातावरण:- हम जानते हैं कि व्यक्तित्व के निर्माण में जितना अधिक हाथ खानपान का रहता है उतना ही वातावरण का भी रहता है। इसीलिए विद्वानों का कहना है कि मनोविकारी व्यक्तित्व के निर्माण में सामाजिक और भौतिक वातावरण का प्रमुख स्थान है। व्यक्ति जैसे समूह या वातावरण में रहता है या उसका पालन-पोषण होता है, उसी के अनुरूप उसका सामाजिकरण होता है और उसके व्यक्तित्व का विकास होता है। इसलिए अपराधी समाज में रहने वाले व्यक्तियों में अपराध करने की विशेषता पायी जाती है।
- (iii) मनोवैज्ञानिक कारक:- हम जानते हैं कि व्यक्ति किसी भी तरह का अपराध मानसिक तनाव के कारण ही करता है। जब व्यक्ति को असफलता मिलती है, असुरक्षा की भावना उत्पन्न होती है, कोई इच्छा अतृप्त रह जाती है या संवेगात्मक असंतुलन उपस्थित हो तो इससे मुक्ति पाने के लिए व्यक्ति मदिरा इत्यादि का सेवन करता है और उसमें मनोविकारी व्यक्तित्व का विकास होता है।
- (पअ) मस्तिष्क दोष:- हिल तथा वाटसन, साइमन्स एवं डीथेन्स ने अपने अध्ययनों के आधार पर यह बतलाया है कि मनोविकारी व्यक्तित्व की उत्पत्ति का कारण मस्तिष्क दोष है। इसका समर्थन सोलोमन ने भी किया है। अपने अध्ययन के आधार पर इन्होंने बतलाया कि मस्तिष्क में चोट लगने से व्यक्ति के मस्तिष्क तरंगों में असामानता आ जाती है जिसके कारण व्यक्ति में यह दोष उत्पन्न होता है।

- (v) केन्द्रीय स्नायु-मण्डल की विकृति:- सिलवरमैन, डीथेम ब्रिल आदि ने अध्ययनों के आधार पर बतलाया कि केन्द्रिय स्नायु - मण्डल के विकृत विकास के कारण मनोविकारी व्यक्तित्व का विकास होता है।
- (vi) मातृ-प्रेम तथा अन्य ग्रन्थियाँ:- इसके अन्तर्गत फ्रायड का नाम उल्लेखनीय है। इन्होंने अपने सिद्धान्त में बतलाया था कि लड़का माँ से प्रेम करता है और लड़की बाप से प्यार करती है। यदि कोई उसकी इस प्रवृत्ति में बाधा उत्पन्न करता है तो व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास विकृत ढंग से हो जाता है और उसमें मनोविकारी व्यक्तित्व की विशेषताएँ दृष्टिगोचर होने लगती हैं।
- (vii) अवैध जन्म :- हैण्डसन् गिलिस्पी इत्यादि मनोवैज्ञानिकों ने अध्ययनों के आधार पर यह बतलाया कि मनोविकारी व्यक्ति का कारण अवैध जन्म या अवैध गर्भाधान होता है।
- (viii) प्रारम्भिक सामाजिक वचना :- फ्रायड तथा नव्य फ्रायडियन का कहना है कि प्रारम्भिक सामाजिक जीवन का प्रभाव बच्चे के व्यक्तित्व के विकास पर पड़ता है, इनका कहना है कि जिन बच्चों को प्रारम्भिक अवस्था में माता-पिता का उचित प्यार, स्नेह मिलता है, जिनकी आवश्यकता की पूर्ति उचित समय पर होती है उसमें सामान्य व्यक्तित्व की उत्पत्ति और विकास होता है और जिन बच्चों को कम उम्र में ही माता - पिता के प्यार से वंचित रहना पड़ता है, आर्थिक स्थिति खराब होने के कारण बचपन की सुविधाओं एवं आवश्यकताओं की पूर्ति में बाधा उत्पन्न हो जाती है तो ऐसे ही बच्चों में मनोविकारी व्यक्तित्व का विकास होता है।
- (ix) दोषपूर्ण शिक्षण :- मनोवैज्ञानिक का कहना है कि दोषपूर्ण शिक्षण भी मनोविकारी व्यक्तित्व की उत्पत्ति का कारण होता है। जिस परिवार में माता-पिता का संबंधतनावपूर्ण होता है, जिस परिवार में बच्चों के अपराध को छिपा लिया जाता है ऐसे परिवार के ही बच्चे आगे चलकर अपराधी बन जाते हैं।
इस प्रकार हम देखते हैं कि मनोविकारी व्यक्तित्व की उत्पत्ति के अनेक कारण हैं जिनका वर्णन ऊपर किया गया है।

13.4.3 व्यक्तित्व विकृति की पहचान या निदान में सम्मिलित समस्याएँ

व्यक्तित्व विकृति का सही-सही पहचान करने या उसका सही-सही निदान करने में कई तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। ऐसी प्रमुख समस्याएँ निम्नांकित हैं -

- 1- व्यक्तित्व विकृति का सही निदान या पहचान करने में सबसे पहली समस्या इस क्षेत्र में नाम मात्र किये गए शोधों का होना है। व्यक्तित्व विकृति को अब तक लोगों ने स्पष्ट ढंग से परिभाषित भी नहीं किया है जिसके कारण रोग की पहचान ठीक-ठीक करना संभव नहीं हो पाता है।
- 2- प्रायः यह देखा गया है कि एक ही व्यक्ति में व्यक्तित्व विकृति के एक से अधिक प्रकार की विशेषताएँ देखने को मिलते हैं जिससे व्यक्तित्व विकृति के किसी एक निश्चित प्रकार के होने की पहचान करना संभव नहीं है।

- 3- फ्रान्सेस (1980) के अनुसार व्यक्तित्व विकृतियों में पाये जाने वाले व्यक्तित्व शीलगुण का स्वरूप विमीय होने के कारण वे सामान्य अभिव्यक्ति ; से लेकर रोगात्मक अभिव्यक्ति दोनों में पाये जाते है।
- 4- व्यक्तित्व विकृतियों को अनुमानित शीलगुणों के आधार पर परिभाषित किया जाता है न कि वस्तुनिष्ठ व्यवहारों के आधार पर। नतीजन, ऐसी विकृतियों का सही-सही पहचान करना संभव नहीं हो पाता है।
उपयुक्त चार समस्याओं में से किसी भी समस्या से निदान की विश्वसनीयता बुरी तरह प्रभावित है। अतः मनश्चिकित्सकों ; तथा नैदानिक मनोवैज्ञानिकों द्वारा यह प्रयास किया जा रहा है कि व्यक्तित्व विकृति के कुछ वस्तुनिष्ठ कसौटी तैयार कर ली जाए ताकि इसके निदान में किसी प्रकार की कोई भूल नहीं हो सके।

13.4.4 व्यक्तित्व विकृति के उपचार

मनोविकारी व्यक्तित्व के उपचार के विषय में मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि ऐसे व्यक्तियों में कोई मानसिक रोग नहीं पाया जाता और इनका व्यवहार भी बहुत दूर तक सामान्य व्यक्तियों से मिलता-जुलता रहता है जिसके कारण इनका उपचार किसी भी विधि से करना कठिन कार्य है। फिर भी व्यवहारवादियों ने इनके उपचार के लिए व्यवहार चिकित्सा विधि को उपयोगी बतलाया है। उन्होंने बतलाया है कि इसके द्वारा उपचार करने के लिए सबसे पहले रोगी के सामने चिकित्सक एक अच्छे व्यवहारवाले व्यक्ति के रूप में उपस्थित होता है और अच्छा व्यवहार प्रस्तुत करता है। रोगी उनके व्यवहार का अनुकरण करता जाता है। जैसे-जैसे उसमें सुधार होता जाता है, उसे पुरस्कार प्रदान किया जाता है। जब रोगी बिना किसी की उपस्थिति के स्वयं उपर्युक्त व्यवहार करने लगता है तो उसे भौतिक पुरस्कार के बदले प्रोत्सहित किया जाता है, जिसके कारण उसके व्यवहार में नियंत्रण आ जाता है और वह बहुत दूर तक सामान्य व्यक्ति बन जाता है।

अभ्यास प्रश्न : 1

- 1- सामान्यतः व्यक्तित्व विकृतियाँ व्यक्तिगत का एक उग्र या अतिरंजित प्रारूप है।
- 2- व्यक्तित्व विकृति में व्यक्ति के में विसामान्यताएं इतनी अधिक और विचित्र होती है कि दूसरे लोगों के लिए उनसे कोई अर्थ निकालना संभव नहीं हो पाता।

13.4.5 व्यक्तित्व विकृति के प्रकार

;1994 जो मनोरोग के वर्गीकरण का नवीनतम सर्वमान्य अमेरिकन पद्धति है, के अनुसार व्यक्तित्व विकृति के निम्नांकित प्रमुख 10 प्रकार है -

- 1- स्थिर व्यामोही व्यक्तित्व विकृति
- 2- स्किजोआयड व्यक्तित्व विकृति
- 3- स्किजोटाइपल व्यक्तित्व विकृति

- 4- हिस्ट्रीओनिक व्यक्तित्व विकृति
- 5- आत्ममोही व्यक्तित्व विकृति
- 6- समाज विरोधी व्यक्तित्व विकृति
- 7- सीमान्तरेखीय व्यक्तित्व विकृति
- 8- परिवर्जित व्यक्तित्व विकृति
- 9- अवलम्बित व्यक्तित्व विकृति
- 10- मनोग्रस्ति बाध्यता व्यक्तित्व विकृति

- क्लैड – प्ट में स्थिर व्यामोही व्यक्तित्व विकृति, स्केजोआयड व्यक्तित्व विकृति तथा स्किजोटाइपल व्यक्तित्व विकृति को समूह 'अ' ; में रखा गया है। इस समूह में आने वाले तीनों व्यक्तित्व विकृतियों का व्यवहार लगभग एक समान होता है। उनका व्यवहार विचित्र, अनियमित तथा असामाजिक होता है। उनका व्यवहार विचित्र, अनियमित तथा असामाजिक होता है।
- समूह 'ब' में चार व्यक्तित्व विकृतियों को रखा गया है- समाज विरोधी व्यक्तित्व विकृति सीमान्तरेखीय व्यक्तित्व विकृति हिस्ट्रीओनिक व्यक्तित्व विकृति तथा आत्ममोही व्यक्तित्व विकृति। इन चारों को एक समूह में रखने का तर्क यह रखा गया है कि इन सबों का व्यवहार नाटकीय, सांवेगिक तथा सनकी तरह का होता है।
- समूह 'स' में व्यक्तित्व विकृति के तीन उपप्रकारों को रखा गया है- परिवर्जित व्यक्तित्व विकृति अवलम्बित व्यक्तित्व विकृति तथा मनोग्रासित-बाध्यता व्यक्तित्व विकृति। इनमें चिंता या डर होने की समानता के साथ-साथ, कुछ विशेष नियमों के साथ जुड़कर व्यवहार करके तथा सांवेगिक हार्दिकता की कमी आदि के रूप में अधिक समझा जाता है।

उपर्युक्त तीन समूहों में से चार व्यक्तित्व विकृतियों का वर्णन इस प्रकार है :-

13.4.5.1 सीमान्तरेखीय व्यक्तित्व विकृति

इस विकृति से पीड़ित व्यक्ति सामान्यता तथा मनोविदलता के बीच सीमा रेखा पर होता है। व्यक्ति में कई तरह की असमर्थाँ देखी जाती है। इस तरह की विकृति वाले व्यक्ति में व्यक्तित्व विकृति के लक्षण के अलावा कुछ ऐसे लक्षण भी पाये जाते हैं जो गंभीर मानसिक रोग यानी भावनात्मक रोग में पाये जाते हैं।

- जैसे :- अस्थिर अन्तवैयक्तिक सम्बन्ध, नाटकीय ढंग से बदलते हुए भाव अनुपयुक्त भाव अभिव्यक्ति, विद्यटित आत्म-धारण क्रोध एवं मनोदशा का प्रदर्शन, जुआ तथा उचक्कापन जैसे आवेगी कार्य इत्यादि। ऐसे व्यक्ति थोड़ा सा भी उत्तेजना पाने से अत्यधिक क्रोधित हो जाते हैं। ऐसे व्यक्ति की प्रकृति आवेगशील होती है तथा उनका व्यवहार अपूर्वानुमेय अस्थिर एवं आक्रमकतापूर्ण होता है।

- विडिगर (1986) के अनुसार ऐसे व्यक्तियों की पहचान आवेगशीलता तथा आत्म-विकृति के आधार पर आसानी से किया जाता है।

13.4.5.2 आत्ममोही व्यक्तित्व विकृति

ऐसी विकृति वाले व्यक्तित्व में आत्म-महत्व की भावना काफी तीव्र एवं मजबूत होती है। ऐसे व्यक्ति अपने आप को काफी महत्वपूर्ण व्यक्ति समझते हैं और लोगों से अलग विशेष सेवा की उम्मीद करते हैं। ऐसे व्यक्ति महत्वाकांक्षी होते हैं अपनी इच्छा एवं विचार के समक्ष दूसरों की इच्छा एवं दूसरे व्यक्ति को अपने निकट आने नहीं देते हैं तथा साथ-ही-साथ अपने ऊपर उसे निर्भर भी होने नहीं देते हैं। ऐसे व्यक्तियों में परानुभूमि की सर्वथा कमी होती है। वे अपने व्यक्तित्व में कभी भी किसी प्रकार के दोष या विकृति की उपस्थिति को स्वीकार नहीं करते हैं। फलतः वे कभी भी मनोवैज्ञानिक उपचार की आवश्यकता महसूस नहीं करते हैं। इस विकृति के मुख्य लक्षण या विशेषताएँ हैं -

आत्म-महत्व अपनी उपलब्धियों का अधिमूल्यांकन की प्रवृत्ति, दूसरों से ध्यान एवं प्रशंसा पाने के लिए आत्मप्रदर्शन, सफलता, सम्पत्ति, अधिकार, सम्मान अथवा आदर्श प्रेम की कल्पनाओं में ध्यानमग्नता ;

13.4.5.3 स्किजोआयड व्यक्तित्व विकृति

ऐसी विकृति वाले व्यक्तियों में लोगों के साथ सामाजिक संबंध बनाये रखने की अक्षमता होती है और साथ-साथ उनकी इस दिशा में कोई अभिरूचि भी नहीं होती है। ऐसे लोगों में अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त करने की पूरी क्षमता भी नहीं होती है। यही कारण है कि अन्य व्यक्तियों द्वारा इन्हें असामाजिक एवं एकान्तप्रिय ; समझा जाता है। इसमें सामाजिक कौशलता की सर्वथा कमी पायी जाती है। स्किजोआयड व्यक्तित्व विकृति के कुछ निश्चित लक्षण हैं, जिनके आलोक में इसे पहचाना जा सकता है :-

- संवेगात्मक उदासीनता
- गोपनीयता
- एकाकीपन
- परिहार

तथा दूसरों के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध कायम करने की अयोग्यता। इस विकृति में चिन्तन, वाणी तथा व्यवहार की अनियमितता का अभाव रहता है।

13.4.5.4 स्थिर-व्यामोही व्यक्तित्व विकृति

ऐसे व्यक्तित्व विकृति वाले व्यक्तियों में मूल रूप से शक, अतिसंवेदनशीलता ईर्ष्या, जिद्दीपन जैसे शीलगुणों की अधिकता पायी जाती है। ऐसे लोग अपने गलत कार्यों को भी तर्क के आधार पर सही ठहराने की कोशिश करते हैं। वे हमेशा अपने को निर्दोष साबित करने की कोशिश करते हैं। हांलाकि उनका व्यवहार हर तरह से दोषपूर्ण ही होता है। ऐसे लोग अपने पद एवं कोटि के प्रति अधिक सतर्क होते

है और जो लोग इनसे उँचे आहदे या प्रतिष्ठा वाले होते हैं, उनके प्रति इनमें जलने का भाव अधिक होता है। स्थिर-व्यामोही व्यक्तित्व विकृति के मुख्य लक्षण हैं:-

- अत्यधिक संदेह
- वैरभाव ;
- दोषरोपण के संकेत के प्रति अति संवेदनशीलता

इस तरह से हम देखते हैं कि व्यक्तित्व विकृति के कई प्रकार ; हैं। जिनमें से हमने सीमान्त रेखीय व्यक्तित्व विकृति, आत्ममोही व्यक्तित्व विकृति, स्किजोआयड व्यक्तित्व विकृति तथा स्थिर-व्यामोही व्यक्तित्व विकृति को विस्तारपूर्वक समझा।

क्योंकि व्यक्तित्व विकृतियों ; में सबसे प्रमुख व्यक्तित्व विकृति समाज विरोधी व्यक्तित्व है, जिसे मनोविकारी व्यक्तित्व भी कहा जाता है । जिसे मनोवैज्ञानिकों एवं मनश्चिकित्सकों ने अधिक गंभीरतापूर्वक अध्ययन किया है, अतः हम भी इसका थोड़ा सा वर्णन जरूर करना चाहेंगे:-

13.5 मनोविकारी व्यक्तित्व या समाजविरोधी व्यक्तित्व

लैंडिस तथा बॉल्स ने मनोविकारी व्यक्तित्व की परिभाषा इस प्रकार दी है - “मनोविकारी व्यक्तित्व ऐसे व्यक्ति की श्रेणी है जिसमें दुखदायी तथा व्यक्ति विध्वंसात्मक व्यवहार वाले व्यक्ति होते हैं, लेकिन ऐसे व्यक्ति को मनः स्नायुविकृति, मनोविकृति या मानसिक गड़बड़ी की श्रेणियों में नहीं रखा जाता है।” ऐसे व्यक्ति परिवार तथा समाज के लिए काफी दुखदायी होते हैं। ऐसे व्यक्ति मानसिक रूप से स्वस्थ होते हुए भी समाज में आतंक फैलाने व शांति भंग करने वाले होते हैं। कुंडे- प्ट के वर्गीकरण पद्धति के अनुसार सिर्फ उन्हीं व्यक्तियों को समाज-विरोधी व्यक्तित्व की श्रेणी में रखा जा सकता है। जो निम्नांकित कसौटी के अनुरूप होते हैं:-

- 1- किसी नियमानुकूल व्यवहार करने में सामाजिक मानकों के प्रति अनुरूपता दिखाने में असफल रहना।
- 2- बार-बार झूठ बोलना।
- 3- आवेगशील
- 4- चिड़चिड़ापन तथा आक्रमणशीलता दिखलाना।
- 5- सतत उत्तरदायित्वहीनता दिखाना।
- 6- व्यक्ति की आयु कम से कम 18 वर्ष का निश्चित रूप से हो।

अभ्यास प्रश्न : 2

- 1- कुंडे – प्ट ;1994 के अनुसार व्यक्तित्व विकृति के कुल प्रकार हैं।
- 2- व्यक्तित्व विकृति वाले लोगों में लोगों के साथ सामाजिक संबंध बनाये रखने की अक्षमता होती है।
- 3- व्यक्तित्व विकृति की पहचान आवेगशीलता तथा आत्म विकृति के आधार पर आसानी से की जा सकती है।

13.6 व्यक्तित्व विकृति के कारणात्मक कारक

व्यक्तित्व विकृति के निम्नांकित तीन कारण बतलाये गये हैं -

13.6.1 जैविक कारक

कुछ अध्ययनों से यह पता चलता है कि बच्चों में खास तरह के शारीरिक संगठनात्मक प्रतिक्रिया प्रवृत्ति जैसे : अत्याधिक संवेदशीलता उच्च या निम्न जीवन शक्ति आदि से एक खास तरह के व्यक्तित्व विकृति के उत्पन्न होने की संभावना अधिक हो जाती है। केन्डलर तथा ग्रुनवर्ग (1982) ने अपने अध्ययन में पाया है कि जननिक कारकों की भूमिका स्पष्ट होती है।

13.6.2 मनोवैज्ञानिक कारक

मनोवैज्ञानिक कारकों में प्रारंभिक सीखना के कारक को काफी महत्वपूर्ण माना गया है। इस विचार के अनुसार बचपनावस्था में ही बच्चे खास-खास ढंग से कुछ अनुक्रियाओं को करना विशेष परिस्थितिवंश या अपने से बड़ों को करते देखकर सीख लेते हैं। इनमें से कुछ अनुक्रियाएँ ऐसी होती हैं जो बालकों में बाद में चलकर व्यक्तित्व विकृति उत्पन्न करती हैं।

13.6.3 सामाजिक-सांस्कृतिक कारक

ऐसी विशेषज्ञों का अनुमान है कि आधुनिक संस्कृति की विशेष माँगों जैसे : समस्या का तुरन्त समाधान होना, आरामदेह जिन्दगी, तुरन्त संतुष्टि आदि से व्यक्ति के जीवन शैली में उत्तरदायित्वहीनता ; आत्मकेन्द्रिता आदि जैसे : लक्षण विकसित होते हैं जो व्यक्ति में धीरे-धीरे व्यक्तित्व विकृति उत्पन्न करते हैं।

निष्कर्षतः : यह कहा जा सकता है कि व्यक्तित्व विकृति के तीन सामान्य कारण बतलाये गये हैं।

अभ्यास प्रश्न : 3

- 1- स्थिर व्यामोही व्यक्तित्व विकृति के विकास में कारकों की भूमिका स्पष्ट होती है।
- 2- मनोवैज्ञानिक कारकों में के कारक को काफी महत्वपूर्ण माना गया है।
- 3- व्यक्तित्व विकृति का तीसरा कारक है।

13.7 व्यक्तित्व विकृति के उपचार एवं प्रतिफल

विशेषज्ञों का मत है कि व्यक्तित्व विकृति का स्वरूप कुछ ऐसा होता है कि वह अपने आप से किसी भी तरह की चिकित्सा का विरोधी होता है। ऐसे लोग यह मानने के लिए तैयार नहीं होते हैं कि उनमें कुछ असामान्यताएँ हैं जिनका उपचार करना आवश्यक है। फलतः व्यक्तित्व विकृति के रोगियों का उपचार काफी कठिन हो जाता है। यही कारण है कि भाईलैन्ट (1975) ने यह सुझाव दिया है कि ऐसे लोगों का उपचार बाहरी रोगी के रूप से नहीं करना चाहिए बल्कि इनका उपचार कुछ खास-खास परिस्थिति जैसे : कारागार ; आदि में रखकर करना चाहिए जहाँ ऐसे लोगों के व्यवहारों में उदंडता कम हो जाती है और वे चिकित्सक के साथ बहुत हद तक सहयोग भी करते हैं। लीमैन तथा मुंलभे (1973) ने उपचार के लिए एक विशेष उपाय का वर्णन किया है जिसमें उन्होंने दो तरह की बातों को ऐसे रोगी के उपचार में

महत्वपूर्ण बतलाया है। पहली बात तो यह है कि ऐसे रोगियों को प्रारंभ में ही बतला देना चाहिए कि चिकित्सा की अवधि थोड़ी होगी तथा दूसरी बात यह है कि उनकी ज़िन्दगी चलाने का उत्तरदायित्व नहीं लेने जा रहे हैं।

इन बातों को बतलाकर यदि उन्हें चिकित्सीय सत्र ; दिया जाता है, तो यह काफी लाभकर सिद्ध होता है।

13.8 सारांश

व्यक्तित्व विकृतियों के तौर पर डिजाइन किया गया अनुदेशन है, जिसमें व्यक्तित्व विकृतियों की परिभाषा, अर्थ, स्वरूप, उसकी पहचान, प्रकार व निदान आदि शामिल है। इसके अन्तर्गत व्यक्तित्व विकृति के 10 प्रकार बताये गये हैं। इन प्रकारों में सीमान्त रेखीय व्यक्तित्व विकृति, आत्ममोही व्यक्तित्व विकृति, स्किजोआयड व्यक्तित्व विकृति तथा स्थिर व्यामोही व्यक्तित्व विकृति का विस्तार पूर्वक वर्णन किया गया है। इन प्रकारों में समाज विरोधी व्यक्तित्व पर भी शुरूआत में प्रकाश डाला गया है, क्योंकि मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि समाज विरोधी व्यक्तित्व सबसे अधिक प्रमुख है।

इसके अलावा इन प्रकारों के लक्षणों तथा कारणों का भी वर्णन इसमें किया गया है। इन कारणों को मुख्य तीन श्रेणियों ; में बाँटा गया है। जैविक कारक मनोसामाजिक कारक तथा सामाजिक-सांस्कृतिक कारक जहाँ तक व्यक्तित्व विकृति के उपचार ; तथा प्रतिफल का प्रश्न है, इस पर मनोवैज्ञानिकों ने प्रकाश डाला है। ऐसी विकृति वाले व्यक्तियों का उपचार थोड़ा कठिन कार्य अवश्य है फिर भी उन्हें विशेष परिस्थिति अर्थात् कारागार ; आदि में रखकर सफलतापूर्वक उपचार किया गया है।

13.9 शब्दावली

- संवेगिक हार्दिकता :- अपनापन वाला भाव
- उचक्कापन :- दुकानों से सामान चोरी करना
- आवेगशील :- बिना सोच विचार किये कार्य करना
- अपूर्वानुमेय :- भविष्य का अनुमान लगाये बिना कार्य करना
- आत्म-विकृति :- अपने आप को हानि पहुँचानी
- ध्यानमग्नता :- दिमाग को पहले से किसी कार्य में व्यस्त रखना
- प्रिहार :- पलटाव या वापसी

अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

अभ्यास प्रश्न - 1

- 1- शीलगुणों
2. व्यवहारों या व्यवहारात्मक

अभ्यास प्रश्न - 2

1. 10
2. स्किजोआयड 3. सीमान्त रेखीय

अभ्यास प्रश्न - 3

13.10 संदर्भ ग्रन्थ

- अरूण कुमार सिंह (2002), “आधुनिक असामान्य मनोविज्ञान” स्नातकोत्तर मनोविज्ञान विभाग, पटना।
- एच. के. कपिल (2007), “असामान्य मनोविज्ञान” मनोविज्ञान विभाग, आर. बी. एस. कालेज, आगरा।
- अरूण कुमार सिंह (2001), “उच्चतर नैदानिक मनोविज्ञान” स्नातकोत्तर मनोविज्ञान विभाग, पटना।
- मुहम्मद सुलेमान (2005), “मनोरोगविज्ञान” मगध विश्वविद्यालय, बोध गया, पटना (बिहार)
- विमला कपूर (2011), “मनोरोग नर्सिंग की पाठ्य पुस्तक” ।

13.11 निबंधात्मक प्रश्न :-

- 1- व्यक्तित्व विकृति के स्वरूप पर प्रकाश डालें। किन-किन कसौटियों के आधार पर आप ऐसे व्यक्तित्व विकृति की पहचान करेंगे।
- 2- व्यक्तित्व विकृति के पहचान या निदान में सम्मिलित मुख्य समस्याओं का उल्लेख करें।
- 3- व्यक्तित्व विकृति के कारणात्मक कारकों का वर्णन करें।
- 4- स्थिर व्यामोही व्यक्तित्व विकृति को विस्तारपूर्वक वर्णन करें।
- 5- समाज-विरोधी व्यक्तित्व का अर्थ बतलावें। सीमान्त रेखीय व्यक्तित्व विकृति के मुख्य लक्षणों का वर्णन करें।

व्यक्तित्व एवं मनोविकृति विज्ञान: मनोस्नायुविकृति के प्रकार, कारण एवं उपचार

Personality and psychopathology: Type, Causation and Treatment of Psychoneurosis

इकाई की रूपरेखा

- 14.1 प्रस्तावना
- 14.2 उद्देश्य
- 14.3 मनोस्नायुविकृति का अर्थ एवं स्वरूप
- 14.4 दुश्चिन्ता विकृति का अर्थ तथा प्रकार
 - 14.4.1 चिंता विकृति या दुश्चिन्ता विकृति का स्वरूप, उत्पत्ति के सामान्य कारण एवं उपचार
 - 14.4.2 चिंता विकृति के उपचारी उपाय
- 14.5 दुर्भिति विकृति
 - 14.5.1 दुर्भिति विकृति की परिभाषाएँ एवं लक्षण
 - 14.5.2 दुर्भिति के कारण
 - 14.5.3 दुर्भिति का उपचार
- 14.6 सामान्यीकृत चिंता विकृति की परिभाषा, कारण एवं उपचार
 - 14.6.1 सामान्यीकृत चिन्ता विकृति के कारण
- 14.7 मनोग्रस्ति-बाध्यता विकृति की परिभाषा, कारण एवं उपचार
 - 14.7.1 मनोग्रस्ति-बाध्यता के कारण
 - 14.7.2 मनोग्रस्ति-बाध्यता विकृति के उपचार
- 14.8 कायाप्रारूप विकृतियाँ
 - 14.8.1 रूपान्तर विकृति या रूपान्तर उन्माद की परिभाषा
 - 14.8.2 रूपान्तर विकृति (रूपान्तर उमाद) के कारण
 - 14.8.3 रूपान्तर उन्माद विकृति के उपचार
- 14.9 मनोविच्छेदी विकृति का अर्थ, परिभाषा एवं लक्षण
 - 14.9.1 मनोविच्छेदी विकृति के कारण
 - 14.9.2 मनोविच्छेदी विकृति के उपचार
- 14.10 सारांश
- 14.11 शब्दावली

14.12 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

14.13 संदर्भग्रंथ

14.14 निबंधात्मक प्रश्न

14.1 प्रस्तावना

मानसिक बीमारियाँ अनेक हैं। सभी मानसिक बीमारियों को साधारणतः दो श्रेणियों में विभक्त किया गया है। एक प्रकार के अन्तर्गत आनेवाली सभी मानसिक बीमारियों को मनः स्नायुविकृतियाँ कहते हैं तथा दूसरे प्रकार के अन्तर्गत आनेवाली सभी मानसिक बीमारियों को मनोविकृतियाँ कहते हैं।

इस अध्याय में चिंता विकृति - सामान्यीकृत चिंता विकृति मनोग्रसित बाध्यता तथा दुर्भिति के कारण एवं उपचार के बारे में विस्तार में वर्णन किया गया है। इसके अलावा दूसरी व तीसरी श्रेणी - कायाप्रारूप विकृतियों में रूपांतर हिस्ट्रीया तथा मनोविच्छेदी विकृतियों के भी कारण व उपचार के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई है।

14.2 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप -

- 'मनोस्नायुविकृति' ; का अर्थ बता सकेंगे।
 - 'मनोस्नायुविकृति' की परिभाषा, श्रेणियाँ तथा उद्देश्यों के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
 - 'मनोस्नायुविकृतियों' के लक्षणों व प्रकारों की विस्तृत जानकारी दे सकेंगे।
 - 'मनोस्नायुविकृतियों' के कारणों को बता सकेंगे।
 - 'मनोस्नायुविकृतियों' के उपचार सम्बन्धित आवश्यकताओं को बता सकेंगे।
 - 'मनोस्नायुविकृतियों' अर्थात् उसकी तीनों श्रेणियाँ - चिंता विकृति कायाप्रारूप विकृति में रूपांतर हिस्ट्रीया तथा मनोविच्छेदी विकृतियों के उत्पत्ति के कारण तथा उपचार की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
-

14.3 मनोस्नायुविकृति का अर्थ एवं स्वरूप:

'स्नायुविकृति' या 'मनोस्नायुविकृति' पद का प्रयोग सबसे पहले अंग्रेज वैज्ञानिक विलियम कूलेन द्वारा स्नायुमंडल के विकृत संवेदनों के लिए 1796 में प्रकाशित सिस्टम ऑफ नोसोलॉजी में किया गया था। बाद में फ्रायड तथा उनके सहयोगियों ने स्नायुविकृति का उपयोग चिंता से उत्पन्न मानसिक रोगों के लिये किया और आज भी इसका उपयोग करीब-करीब इसी अर्थ में आम लोगों द्वारा किया जाता है।

मनोस्नायुविकृति में कई तरह के मानसिक विकृतियों को रखा गया था जिसमें चिंता स्नायुविकृति दुर्भिति स्नायुविकृति रूपांतर स्नायुविकृति रोगभ्रमी स्नायुविकृति मनोग्रसित बाध्यता स्नायुविकृति आदि को रखा गया।

में मनश्चिकित्सकों ने 'स्नायुविकृति' जैसे नैदानिक श्रेणी को अमान्य घोषित इसलिए किया कि इतने विभिन्न विशेषताओं या लक्षणों वाले मानसिक विकृतियों को एक श्रेणी में रखना उचित नहीं होगा, क्योंकि उनके भिन्न लक्षणों एवं कारकों का वैज्ञानिक अध्ययन संभव नहीं हो पायेगा। फलतः में 'स्नायुविकृति' जैसी श्रेणी को हटा दिया गया है और सचमुच में 'स्नायुविकृति' जैसी पुरानी श्रेणी को तीन नये प्रमुख भागों में बाँट कर उनके गहन अध्ययन पर प्रकाश डाला गया है। वे तीन श्रेणियाँ हैं - चिंता विकृति कायाप्रारूप विकृति तथा विच्छेदी विकृति।

उपर्युक्त अर्थ व स्वरूप से यह ज्ञात होता है कि 'स्नायुविकृति' या 'मनोविकृति' को दुश्चिन्ता विकृति जो सबसे प्रमुख नैदानिक समस्या है, से ही जाना जाता है।

14.4 दुश्चिन्ता विकृति का अर्थ तथा प्रकार

दुश्चिन्ता या चिंता विकृति से तात्पर्य वैसे विकृति से होता है जिसमें क्लायंट या रोगी में अवास्तविक चिंता एवं अतार्किक डर की मात्रा इतनी अधिक होती है कि उससे उसका सामान्य जिन्दगी का व्यवहार अपअनुकूलित हो जाता है तथा उससे व्यक्ति का दिन प्रतिदिन का समायोजन कुप्रभावित हो जाता है। के अनुसार दुश्चिन्ता विकृति के मुख्य छह प्रकार होते हैं और केस्लर तथा उनके सहयोगियों के अनुसार वयस्क जनसंख्या के करीब 15 से 16: लोग दुश्चिन्ता विकृति के किसी-न-किसी प्रकार से अवश्य ही ग्रस्त होते हैं। दुश्चिन्ता विकृति के छह प्रकार निम्नांकित हैं -

- 1- दुर्भिति विकृति
- 2- सामान्यीकृत दुश्चिन्ता विकृति
- 3- भीषिका विकृति
- 4- मनोग्रसित-बाध्यता विकृति
- 5- तीक्ष्ण प्रतिवल विकृति
- 6- उत्तर अभिघात प्रतिक्षण विकृति ;

इनमें से इस इकाई में हम सबसे पहले चिंता विकृति, दुर्भिति तथा मनोग्रसित-बाध्यता विकृति को विस्तार में समझेंगे, इनका अर्थ, परिभाषा एवं लक्षण तथा कारण एवं उपचार का वर्णन करेंगे। तत्पश्चात हम 'मनोस्नायुविकृति की अन्य दो श्रेणियों का वर्णन अर्थात् कायाप्रारूप विकृति तथा विच्छेदी करेंगे।

14.4.1 चिंता विकृति या दुश्चिन्ता विकृति का स्वरूप, उत्पत्ति के सामान्य कारण एवं उपचार

असामान्य मानोविज्ञान में चिंता एवं उसमें उत्पन्न मानसिक विकृतियों पर सर्वाधिक ध्यान दिया गया है। चिंता से तात्पर्य डर एवं आशंका के दुखद भाव से होता है।

चिंता विकृति की उत्पत्ति के सामान्य कारण चिंता विकृति की उत्पत्ति के कुछ सामान्य कारण ; बतलाये गए हैं :-

- (क) जैविक कारक
- (ख) मनोवैज्ञानिक कारक

(ग) सामाजिक - सांस्कृतिक कारक

चिंता विकृति की उत्पत्ति में इन तीन कारकों की भूमिका इस प्रकार है :-

(क) जैविक कारक

जैविक कारकों में शरीरगठनात्मक कारक तथा आनुवांशिक कारकों को मूलतः सम्मिलित किया गया है। नैदानिक अध्ययनों से यह सबूत मिला है कि चिंता विकृति का रोग उन व्यक्तियों में अधिक होता है जिनके परिवार में इस रोग के होने का इतिहास पहले से रहा हो।

इसके अलावा यौन, उम्र, शरीरगठनात्मक कारक एवं ग्रन्थीय कार्यों की अनियमितता आदि के रूप में चिंता विकृति की उत्पत्ति की व्याख्या की गयी है।

(ख) मनोवैज्ञानिक कारक

चिंता विकृति की उत्पत्ति में जितना मनोवैज्ञानिक कारकों का हाथ है, उतना किसी भी अन्य कारकों का नहीं है। ऐसे प्रमुख मनोवैज्ञानिक कारक निम्नांकित हैं :-

- 1- चिन्ता - सुरक्षा - कोई भी तनावपूर्ण परिस्थिति जब व्यक्ति में अत्याधिक चिन्ता उत्पन्न कर देती है तो उसे अपने अहं ;महवद्ध को बचाने के लिए व्यक्ति कुछ अहं-सुरक्षात्मक उपायों को अपनाता है।
- 2- दोषपूर्ण सीखना - चिंता विकृति की उत्पत्ति कुछ कुसमायोजित व्यवहारों को सीखने तथा कुछ आवश्यक सक्षमताओं को न सीखने के फलस्वरूप भी होता है। जब किसी कारण से व्यक्ति में दिन-प्रतिदिन की समस्याओं का समाधान करने की आवश्यक सक्षमता नहीं होती है तो वह अपने आप को असुरक्षित, अपर्याप्त एवं चिंतित पाता है।
- 3- अवरूद्ध व्यक्तिगत विकास - जब किसी कारण से व्यक्ति का अपना मूल्य आशाएं एवं अस्तित्व अर्थहीन नजर आता है, तो वैसी परिस्थिति में उसका व्यक्तिगत विकास मानसिक रूप से अवरूद्ध हो जाता है और उसमें आवश्यक निपुणता एवं कौशल की कमी हो जाती है। इसके परिणामस्वरूप उसकी जीवनशैली दोषपूर्ण हो जाती है।

(ग) सामाजिक - सांस्कृतिक कारक

नैदानिक मनोवैज्ञानिकों एवं मनोरोग विज्ञानियों के अध्ययनों से यह स्पष्ट हुआ है कि विशेष प्रकार के चिंता विकृति कुछ खास प्रकार के सामाजिक-सांस्कृतिक में अधिक देखने को मिलता है। जैसे :- सामान्य रूप से रूपांतर हिस्टीरियां अविकसित देश की संस्कृति में अधिक देखने को मिलता है जबकि मनोग्रासित - बाध्यता विकृति तथा सामान्यीकृत चिंता विकृति विकसित देशों में अधिक देखने मिलता है।

इस तरह यह स्पष्ट हुआ है कि चिंता विकृति जैसी नैदानिक समस्या की उत्पत्ति के कई कारण हैं।

14.4.2 चिंता विकृति के उपचारी उपाय

चिंता विकृति के उपचार के तरीके भिन्न-भिन्न हैं। चिंता विकृति के उपचार में जैविक चिकित्सा तथा मनोवैज्ञानिक चिकित्सा दोनों को अलग-अलग या संयुक्त रूप से उपयोग किया जाता है। इन दोनों तरह के उपचारी उपायों का वर्णन निम्नांकित है :-

(क) औषधि चिकित्सा एवं अन्य जैविक चिकित्सा

कुछ मनोरोगविज्ञानियों का मत है कि मन स्नायुविकृति के करीब 70: रोगियों का उपचार विभिन्न तरह के प्रशान्तकों जैसे - भेलियम या लिब्रियम आदि औषध को खिलाकर आसानी से कर लिया जाता है। इन औषध के खाने से उनकी चिन्ता तथा मानसिक तनाव कम हो जाती है।

इस औषध चिकित्सा के अलावा कुछ अन्य जैविक उपचारी प्राविधियाँ जैसे - 'एलेक्ट्रोस्लीप' का भी उपयोग अधिक लाभप्रद बतलाया गया है। सामान्यीकृत चिंता विकृति के कोई-कोई रोगियों में एलेक्ट्रोस्लीप का प्रभाव ऐसा हुआ कि बहुत ही कम दिनों में उनमें सामान्यता कायम हो गई।

(ख) मनोवैज्ञानिक प्रविधियाँ

नैदानिक मनोवैज्ञानिकों का दावा है कि चिंता विकृति के उपचार में मनोवैज्ञानिक विधियाँ, जैविक विधियों लाभप्रद एवं उपयोगी हैं।

(1) वैयक्तिक चिकित्सा ; - इस श्रेणी में आनेवाली चिकित्सा प्रविधियों का मूल उद्देश्य आत्म-सूझ का विकास वास्तविक संदर्भ, मूल्यों के संतोषजनक पैटर्न, समायोजनात्मक माँगों को पूर्ति करने का प्रभावकारी प्रविधियों के विकास पर बल डालना होता है।

इस श्रेणी में अन्य चिकित्सा विधियों के अलावा क्लायंट - केन्द्रित चिकित्सा तथा मनोवैश्लेषित चिकित्सा के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

(2) व्यवहार चिकित्सा - चिंता विकृति के उपचार में व्यवहार चिकित्सा मूलतः कुसमायोजी व्यवहार को दूर करने, आवश्यक सक्षमता तथा समायोजी व्यवहार को सीखने तथा उन पर्यावरणी हालातों को जो कुसमायोजी व्यवहारों को पुनर्बलित करते हैं तथा सपेक्षित करते हैं, को दूर करने पर बल डालना है। व्यवहार चिकित्सा की नई प्राविधियाँ हैं जिनमें चिन्ता विकृति के रोगियों के लिए कुछ खास-खास प्रकार की प्रविधियाँ जैसे - क्रमबद्ध असंवेदिकरण विरूचि चिकित्सा अन्तः स्फोटात्मक चिकित्सा फ्लडिंग तथा मॉडलिंग काफी अधिक प्रचलित हैं।

(3) पारिवारिक चिकित्सा - रोगग्रस्त पारिवारिक परिस्थिति से भी स्नायुविकृति ; संतोषित होती है।

अतः इन लोगों का मत है कि ऐसे मानसिक रोगों का सही-सही उपचार तभी संभव है जब उनके परिवार के सभी सदस्यों को विश्वास में लेकर चिकित्सा की जाए। इस तरह की चिकित्सा मनोग्रसित-बाध्यता स्नायुविकृति तथा सामान्यीकृत चिंता विकृति के रोगियों के उपचार में काफी लाभप्रद पाया गया है।

(4) बहुमॉडल चिकित्सा - यह चिकित्सा की एक ऐसी विधि है जिसमें चिंता विकृति के रोगियों का उपचार कई प्रविधियों को एक साथ मिलाकर किया जाता है। इस तरह के बहुमॉडल चिकित्सा से चिंता विकृति के रोगियों के उपचार में अप्रत्याशित सफलता मिलती है। ऐसे रोगी के स्नायुविकृति शैली जलसमृद्ध को नियंत्रित करने के लिए अन्तवैयक्तिक चिकित्सा तथा साथ-साथ ही विशेष कुसमायोजी लक्षण को दूर

करने के लिए व्यवहार चिकित्सा का प्रयोग यदि किया जाता है, तो इससे ऐसे रोगियों के उपचार में आशातीत सफलता मिल सकती है।

अभ्यास प्रश्न : 1

- 1- में 'स्नायुविकृति' जैसी पुरानी श्रेणी को तीन नये प्रमुख भागों में बाँट दिया गया, वे तीन श्रेणियाँ हैं 1., 2. 3.
- 2- चिंता विकृति में रोगी में अवास्तविक एवं अतार्किक की मात्रा इतनी अधिक होती है कि उससे उसका सामान्य जिन्दगी का व्यवहार अपअनुकूलित हो जाता है।
- 3- चिंता विकृति के कुल प्रकार हैं।
- 4- चिंता विकृति की उत्पत्ति के, तथा , मनोवैज्ञानिक कारकों के नाम हैं।

14.5 दुर्भिति विकृति

दुर्भिति एक बहुत ही सामान्य चिंता विकृति है जिसमें किसी ऐसे विशिष्ट वस्तु या परिस्थिति से सतत एवं असंतुलित मात्रा में डरता है जो वास्तव में व्यक्ति के लिए कोई खतरा या न के बराबर खतरा उत्पन्न करता है। जैसे - जिस व्यक्ति में मकड़ा से दुर्भिति उत्पन्न हो गया है, वह उस कमरे में नहीं जा सकता है। जहाँ मकड़ा मौजूद है। स्पष्टतः मकड़ा एक ऐसा जीव-जन्तु है जो व्यक्ति के लिए कोई खतरा नहीं पैदा करता है। परन्तु इससे दुर्भिति उत्पन्न हो जाने पर व्यक्ति के सामान्य व्यवहार को वह विचलित ; कर देता है।

14.5.1 दुर्भिति विकृति की परिभाषाएँ एवं लक्षण

सेलिंगमन एवं रोजेनहान 1998 ने दुर्भिति को इस प्रकार परिभाषित किया है - “दुर्भिति एक सतत डर प्रतिक्रिया है जो खतरा के वास्तविकता के अनुपात से परे होता है।”

डेविडसन एवं नील 1996 ने दुर्भिति को कुछ और स्पष्ट ढंग से इस तरह परिभाषित किया है, “मनोरोगविज्ञानियों द्वारा दुर्भिति को एक विघटकारी, डर-व्यवहृत परिहार जो किसी खास वस्तु या परिस्थिति से उत्पन्न खतरा के अनुपात से अधिक होता है तथा जिसे प्रभावित व्यक्ति द्वारा आधारहीन समझा जाता है, के रूप में परिभाषित किया गया है।”

इन परिभाषाओं से स्पष्ट होता है कि इस तरह से दुर्भिति में पाया गया डर दिन-प्रतिदिन के जीवन में पाया गया सामान्य डर से भिन्न होता है, तथा इस डर से व्यवहार अपअनुकूलित होता है।

दुर्भिति के लक्षण

- (i) किसी विशिष्ट परिस्थिति या वस्तु से इतना अधिक सतत डर जो वास्तविक खतरा के अनुपात से कहीं अधिक होता है।
- (ii) व्यक्ति या रोगी यह समझता है कि डर अत्यधिक या अवास्तविक है।
- (iii) व्यक्ति दुर्भिति उत्पन्न करने वाली परिस्थिति या वस्तु से दूर रहना पसंद करता है।

दुर्भिति विकृति के मुख्य तीन श्रेणी होते हैं - एगोराफोबिया

सामाजिक दुर्भिति तथा विशिष्ट दुर्भिति

- (1) एगोराफोबिया : इसमें व्यक्ति ऐसे सार्वजनिक जगहों में जाने से डरता है जिससे पलायन संभव नहीं है या विभिषिका के समान लक्षण उत्पन्न होने पर उनकी कोई मदद करने के लिए उपलब्ध नहीं हो पायेगा।
- (2) सामाजिक दुर्भिति : इसमें व्यक्ति वैसी सामाजिक परिस्थिति में जाने से डरता है जहाँ वह समझता है कि उसका मूल्यांकन किया जा सकता है। ऐसे लोग प्रायः जन समूह के सामने बोलने या कुछ क्रिया करने में काफी डरते हैं।
- (3) विशिष्ट दुर्भिति : वैसी दुर्भिति होती है जिसमें व्यक्ति विशिष्ट वस्तु या परिस्थिति से काफी डरता है। जैसे - कुछ लोग विशेष तरह के पशु, पक्षी या कीड़े-मकोड़े से काफी डरते हैं।

14.5.2 दुर्भितिके कारण दुर्भिति के निम्नांकित चार प्रमुख सिद्धांत या कारक या रूपावली ; हैं जिनमें उसकी व्याख्या अलग-अलग ढंगों से की गयी है-

- (1) जैविक सिद्धांत या कारक
- (2) मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत या कारक
- (3) व्यवहारपरक सिद्धांत या कारक
- (4) संज्ञानात्मक सिद्धांत या कारक

इन सबों के वर्णन निम्नांकित है -

(1) जैविक सिद्धांत या कारक:

इस क्षेत्र में किये गये शोधों से यह स्पष्ट हुआ है कि निम्नांकित दो क्षेत्रों से संबद्ध जैविक कारक महत्वपूर्ण हैं :-

(i) स्वायत्त तंत्रिका तंत्र

दुर्भिति उन व्यक्तियों में अधिक उत्पन्न होता है। जिनका स्वायत्त तंत्रिका तंत्र कई तरह के पर्यावरणीय उद्दीपकों से बहुत ही जल्द उत्तेजित हो जाता है। लेसी 967 ने इस तरह के स्वायत्त तंत्रिका को स्वायत्त अस्थिरता कहा जाता है। गाबे 1992 के अनुसार स्वायत्त अस्थिरता बहुत हद तक वंशानुगत रूप से निर्धारित होता है। अतः व्यक्ति के अनुवांशिकता का दुर्भिति उत्पन्न होने में एक निश्चित भूमिका होती है।

(ii) आनुवांशिक कारक

कुछ ऐसे अध्ययन हुए हैं जिनसे यह स्पष्ट सबूत मिलता है कि दुर्भिति होने की संभावना उन व्यक्तियों में अधिक होता है जिसके माता-पिता तथा तुल्य संबंधियों में इस तरह का रोग पहले हो चुका हो।

(2) मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत

फ्रायड के अनुसार दमित उपांश इच्छाओं से उत्पन्न चिंता के प्रति रोगी द्वारा अपनाया गया दुर्भिति एक सुरक्षा ; होता है। यह चिंता डर उत्पन्न करने वाले उपांश की इच्छाओं से विस्थापित होकर किसी वैसे वस्तु या परिस्थिति से संबंधित हो जाता है जो इन इच्छाओं से किसी-न-किसी ढंग से जुड़ा होता है। वह

वस्तु या परिस्थिति जैसे बंद स्थान, ऊँचाई कीड़े मकोड़े आदि तब व्यक्ति के लिए दुर्भिति उत्पन्न करने वाले उद्दीपक हो जाते हैं। उनसे दूर रहकर व्यक्ति अपने आप को दमित संघर्ष से बचाता है।

(3) व्यवहारपरक सिद्धांत

इस सिद्धांत के अनुसार व्यक्ति में दुर्भिति उत्पन्न होने का मुख्य कारण दोषपूर्ण सीखना होता है। इस दोषपूर्ण सीखना की व्यख्या निम्नांकित तीन तरह के कारकों से की गयी है-

- (i) परिहार अनुबंधन
- (ii) मॉडलिंग
- (iii) धनात्मक पुनर्बलन

इन तीनों का वर्णन निम्नांकित है -

(1) परिहार अनुबंधन

इसकी सटीक व्याख्या मार्जर 1947 द्वारा किया, इसके अनुसार दुर्भिति दो तरह के संबद्ध सीखना से होता है- कलासिकी अनुबंधन द्वारा जब किसी तटस्थ उद्दीपक को जिसे अनुबंधित उद्दीपक भी कहा जाता है, डर उत्पन्न करने वाला उद्दीपक या घटक के साथ युग्मित कर दिया जाता है, तो व्यक्ति पहले इस तटस्थ उद्दीपक के प्रति डरना सीख लेता है।

दुर्भिति के उत्पन्न होने के लिए यह आवश्यक है कि उत्पन्न डर सामान्यीकृत हो अर्थात् व्यक्ति सिर्फ अनुबंधित उद्दीपक से ही नहीं डरे बल्कि अन्य समान उद्दीपकों से भी डरे। जैसे - वह सिर्फ कोई विशेष ऊँचे मकान से ही नहीं डरे, बल्कि सभी ऊँची चीजों पर जाने से डरे।

(ii) मॉडलिंग

मॉडलिंग के अनुसार दुर्भिति व्यक्ति में दूसरों के व्यवहार को प्रेक्षण करके (या उसके बारे में दूसरों से सुनकर भी) विकसित होता है। प्रेक्षण द्वारा इस तरह के सीखना को स्थानापन्न सीखना या प्रेक्षणात्मक सीखना भी कहा जाता है। जिसमें यह स्पष्ट रूप से यह पाया गया कि जब प्रयोज्यों ने दूसरों से किसी वैद्युत उपकरण को स्पर्श करने पर दर्द का अनुभव होते कई प्रयासों में प्रेक्षण किया, तो उससे भी उस उपकरण से असंगत डर उत्पन्न हो गया।

(iii) धनात्मक पुनर्बलन

दुर्भिति का विकास व्यक्ति में धनात्मक पुनर्बलन के आधार पर भी होता है। जैसे - मान लिया जाए कि कोई बच्चा स्कूल जाने से डर कर अपने माता-पिता के सामने कुछ ऐसा बहाना बनाता है कि उसे स्कूल नहीं जाना पड़े। यदि माता-पिता उसके इस बहाना को सुनकर उसे स्वीकार कर लेते हैं और जिसके परिणामस्वरूप, उसे स्कूल नहीं जाना पड़ता है तो यहाँ माता-पिता द्वारा बच्चे को स्कूल नहीं जाने के लिए सीधा धनात्मक पुनर्बलन मिल रहा है। इसका परिणाम यह होगा कि बच्चा भविष्य में डर कर स्कूल न जाने की अनुक्रिया को करना सीख लेगा।

इस उदाहरण से स्पष्ट होता है कि धनात्मक पुनर्बलन से भी व्यक्ति में डर या दुर्भिति उत्पन्न होता है।

(4) संज्ञानात्मक सिद्धांत

दुर्भिति के विकास में कुछ संज्ञानात्मक कारकों की भी अहम भूमिका रही है। दुर्भिति विकृति से ग्रस्त व्यक्ति जान-बूझकर परिस्थिति को या उससे मिलने वाली सूचनाओं को इस ढंग से संसाधित करते हैं कि उससे उनका दुर्भिति और भी मजबूत हो जाता है। इस तरह से दुर्भिति के उत्पन्न होने तथा उस संशोधित होने में एक तरह का संज्ञानात्मक पूर्वाग्रह ;बवहदपजपअम इपवेपेद्ध होता इस तथ्य का समर्थन एक अध्ययन से होता है। इस अध्ययन में साँप या मकड़ा से डरने वाले प्रयोज्यों का दो समूह तैयार किया। साँप या मकड़ा से कम डरने वाले प्रयोज्यों का समूह तथा साँप या मकड़ा से अधिक डरने वालों का समूह। अध्ययन के आधार पर प्रयोगकर्त्तों द्वारा इस निष्कर्ष पर पहुँचा गया कि साँप या मकड़ा से अधिक मात्रा में डरने वाले प्रयोज्य जान-बूझकर सूचनाओं को इस ढंग से संपोषित कर रहे थे कि उनमें ऐसे डर और अधिक संशोधित होता रहे या बना रहे।

14.5.3 दुर्भिति का उपचार

दुर्भिति के रोगियों के उपचार के लिए विभिन्न विधियों का प्रयोग किया जाता है।

मनोचिकित्सक को रोगी के साथ इतनी घनीष्ठता स्थापित करने की आवश्यकता होती है ताकि रोगी अपने प्रेम, घृणा, कुंठा, अपराध व पाप भावनाओं को खुलकर अभिव्यक्त कर सके। इससे रोग के मूल स्रोत को समझने में आसानी होती है। इस प्रकार चिंता के मूल स्रोत की जानकारी के पश्चात रोगी को धैर्यपूर्वक तथा विश्वास के साथ ऐसी चिन्ता का सामना करने के लिए उसके व्यवहार को धीरे-धीरे परिवर्तित करना होता है। व्यवहार के ऐसे रूपान्तरण की दो मुख्य विधियाँ हैं :-

- (i) असम्बद्धता - इस विधि द्वारा व्यक्ति के गलत परिवेश से अधिगमित भय एवं चिन्ता को दण्ड द्वारा या अन्य मनोवैज्ञानिक चरों के सहयोग से समाप्त करने का प्रयत्न किया जाता है। इस विधि के उपयोग से यह उद्देश्य रहता है कि व्यक्ति अपने अतार्किक पूर्व अनुभवों को भूल जाय तथा पुनः उसका तार्किक अधिगम कर सके।
- (ii) असंवेदनशीलता - इसका अर्थ है भय की स्थिति का वस्तु के प्रति व्यक्ति को असंवेदनशील बनाना। उदाहरणार्थ यदि एक व्यक्ति को छिपकली से डर लगता है, तो पहले उसके समक्ष प्लास्टिक की छिपकली लायी जाय, फिर धीरे-धीरे इस छिपकली को इतना निकट तक लाते रहना चाहिए जब तक वह इस विषय के प्रति असंवेदनशील न हो जाय। यदि दुर्भिति ग्रस्त व्यक्ति को उपरोक्त विधियों से लाभ नहीं मिल पाता है तब रोगी को विद्युत आघात मिलने पर रोगी में सुधार दिखाई देने लगता है।

14.6 सामान्यीकृत चिन्ता विकृति की परिभाषा, कारण एवं उपचार

सामान्यीकृत चिन्ता विकृति वास्तव में चिन्ता विकृति (anxiety disorder) का एक प्रकार है। इस मानसिक विकृति को स्वतंत्र प्रवाही विकृति (free-floating disorder) भी कहते हैं। इस विकृति में चिन्ता इतना अधिक चिरकालिक (chronic), दृढ़ (persistent) तथा व्यापक (Pervasive) हो जाती है कि सह स्वतंत्र प्रवाही लगने लगती है। इस मानसिक विकृति को चिन्ता-प्रतिक्रिया (anxiety reaction) भी कहते हैं।

सरासन तथा सरासन (Sarason and Sarason, 2003) ने इस मानसिक विकृति की एक समग्र परिभाषा दी है। उनके अनुसार - "सामान्यीकृत चिन्ता विकृति का तात्पर्य दृढ़ चिन्ता से है जो कम से कम एक महीना तक बनी रहती है और जिसमें कई लक्षण सम्मिलित होते हैं - गति, तनाव, स्वचालित अतिक्रिया, आशंकित प्रत्याशा, सतर्कता तथा अवलोकन।"

14.6.1 सामान्यीकृत चिन्ता विकृति के कारण

निम्नलिखित कारण हैं :-

- 1- मनोवैज्ञानिक कारक (Causes of Generalized Anxiety disorder, GAD) - सिगमण्ड फ्रायड (Sigmund Freud) के अनुसार इस रोग का कारण इड (id) तथा इगो (ego) के आवेगों (impulses) के बीच अचेतन द्वन्द्व है। इड की कामुक अथवा आक्रमणशील इच्छाएँ जब चेतन रूप से संतुष्ट नहीं हो जाती है तो वे अचेतन में दमित हो जाती हैं। किन्तु ये दमित या अचेतन इच्छाएँ अपनी अभिव्यक्ति एवं संतुष्टि के लिए हमेशा प्रयत्नशील रहती हैं, किन्तु इगो इस पर रोक लगाए रहता है क्योंकि इसे दण्ड का भय लगा रहता है। इस प्रकार इड तथा इगो के विरोधी आवेगों से उत्पन्न द्वन्द्व या संघर्ष के कारण व्यक्ति चिन्ता का शिकार बन जाता है।
- 2- अधिगत कारक (learning factors)- अधिगम मॉडल (learning model) अथवा व्यवहारवादी मॉडल (behavioural model) के अनुसार सामान्यीकृत चिन्ता विकृति (GAD) के विकास में बाह्य कारकों का हाथ होता है। दूसरे शब्दों में यह चिन्ता विकृति का स्रोत वास्तव में वातावरणीय कारक है।
3. व्यवहारवादी मॉडल (Behavioural Model) - बरलों (Barlow, 1988) के अनुसार अनिवार्य आशंकित करने की घटना पर (unscapable threatening event) के लगातार प्रभाव के कारण यह विकृति विकसित होती है।
4. संज्ञानात्मक कारक (cognitive factors) - संज्ञानात्मक दृष्टिकोण (cognitive view) के अनुसार सामान्यीकृत चिन्ता विकृति (GAD) का आधार व्यक्ति का विकृत संज्ञान है। संज्ञान का अर्थ प्रत्यक्ष चिंतन विवेक इत्यादि है। व्यक्ति किसी उत्तेजना से उत्तेजित होते समय क्या प्रत्युक्षण करता है, कैसे सोचता है आदि का गहरा प्रभाव उस रूप में उसकी मानसिकता पर पड़ता है।
5. जैविक कारक (Biological factor) - टोरगर्सेन (Torgersen, 1983) ने सही सांमजस्य सामान्यीकृत चिन्ता विकृति के लिए समान जुडवा तथा असमान जुडवाँ बच्चों के जोड़े में पाया लेकिन, वंशानुक्रम को इस रोग के लिए अपवर्जक कारक (exclusive factor) नहीं माना जा सकता है।

14.6.2 सामान्यीकृत चिन्ता विकृति के उपचार (Treatment of Generalized Anxiety Disorder):

सामान्यीकृत चिन्ता विकृति (generalized anxiety disorder) के उपचार के लिए निम्नलिखित चिकित्सा विधियों का उपयोग आवश्यकता के अनुसार किया जा सकता है :-

- 1- मनोविश्लेषणात्मक चिकित्सा (Psychoanalytic therapy) मनोविश्लेषण (psychoanalysis) के अनुसार इस मानसिक रोग का कारण ईगो की दुर्बलता से उत्पन्न अचेतन में दमित इड की लैंगिक इच्छा के चेतन में उपस्थित होने की धमकी है। अतः इसके उपचार के लिए ईगो को पुनर्संरचित करना तथा सबल बनाना आवश्यक है। अतः ईगो को सबल बनाकर इस रोग का उपचार किया जा सकता है।
- 2- व्यवहार चिकित्सा (Behaviour therapy) - व्यवहारवादी विचारधारा के अनुसार इस रोग का कारण रोग में आत्मक्षमता तथा आत्मविश्वास की कमी है। अतः मॉडलिंग, मौखिक निर्देश, प्रवर्तन अनुकूलन आदि के माध्यम से रोगी के आत्मविश्वास तथा आत्म क्षमता को बढ़ाकर उसे रोगमुक्त किया जा सकता है।
- 3- संज्ञानात्मक चिकित्सा (Cognitive therapy) - संज्ञानात्मक उपागम (cognitive approach) के अनुसार इस रोग का कारण दोषपूर्ण संज्ञान है। अतः रोगी के प्रत्यक्षीकरण, विश्वास तथा चिंतन करने के ढंग में परिवर्तन लाकर इस रोग का उपचार किया जा सकता है।
- 4- मेडिकल चिकित्सा (Medical Therapy) - सामान्यीकृत चिन्ता विकृति के उपचार के लिए चिन्ता विरोधी औषधों (anti-anxiety drugs) का उपयोग काफी प्रभावी होता है।
अतः सामान्यीकृत चिन्ता विकृति के रोगी के उपचार के लिए उपर्युक्त चिकित्सा प्रविधियों में से एक अथवा एक से अधिक प्रविधियों का उपयोग किया जा सकता है।

अभ्यास प्रश्न - 2

- 1- दुर्भिति विकृति के मुख्य तीन श्रेणियाँ....., तथा है।
- 2- मॉडलिंग के अनुसार दुर्भिति व्यक्ति में दूसरों के व्यवहार को करके विकसित होता है।
- 3- “सामान्यीकृत चिन्ता विकृति का तात्पर्य चिन्ता से है” जो कम से कम एक महीना तक बनी रहती है।
- 4- मेडिकल चिकित्सा में सामान्यीकृत चिन्ता विकृति के उपचार के लिए का उपयोग काफी प्रभावी होता है।

14.7 मनोग्रस्ति-बाध्यता विकृति की परिभाषा, कारण एवं उपचार (Definitions, Causation and treatment of Obsessive Compulsive Disorder – O.C.D.)

मनोग्रस्ति - बाध्यता एक ही व्यक्तित्व विकार के दो ऐसे अभिन्न रूप होते हैं जिसके अन्तर्गत मनोग्रस्ति (obsession) से व्यक्ति के चेतन पर किसी एक विशेष विचार अथवा अप्रिय इच्छा का अनिच्छित तथा सतत रूप से आते रहने का बोध होता है तथा बाध्यता (compulsion) से प्रत्यक्षतः उसमें उस विचार से सम्बन्धित किसी एक विशिष्ट क्रिया से सम्पन्न करने के लिए आन्तरिक रूप से बारम्बार एक अदम्य विवशता के आवेग के उत्पन्न होते रहने का बोध होता है।

Corson & Butcher, 1992 ने मनोग्रस्ति बाध्यता को परिभाषित करते हुए कहा है कि -''मनोग्रस्ति-बाध्यता से मनस्ताप में व्यक्ति जिस चीज पर विचार नहीं करना चाहता है, उसके लिये अपने को बाध्य समझता है अथवा वह कोई कार्य अपने इच्छा के विपरीत करता है।''

मनोग्रस्ति - बाध्यता विकृति के नैदानिक लक्षणों का सम्बन्ध अभिन्न: व्यक्ति के दमित व अचेतन काम - आवेगों, विरोध व घृणा के भावों, नैतिक व अनैतिक इच्छाओं तथा आकर्षण व विकर्षण के विभिन्न रूपों, विचारों तथा विचित्र क्रियाओं से जुड़ा रहता है। इसके अलावा मनोग्रस्ति व्यक्ति के मन में सदैव शंका व संशय के विचार घर किये रहते हैं।

मनोग्रस्ति - बाध्यता विकृति से सम्बन्धित अनुसन्धानों का सर्वेक्षण करने पर इस तथ्य पर प्रकाश पड़ता है कि इस रोग से ग्रस्त रोगियों का व्यक्तित्व अन्तर्मुखी होता है, ऐसे व्यक्ति नैतिक तथा सामाजिक मूल्यों का सम्मान करते हैं, पूर्णतावादी, बुद्धिमान, पुरातनपन्थी, अन्तर्विवेकशील, दृढ़, भावुक, शंकालू तथा सावधानी रखने वाले होते हैं।

14.7.1 मनोग्रस्ति-बाध्यता के कारण ; obsessive Compulsive Disorder):

इस मनोविकृति व्यवहार के अनेक कारण हैं जिनका वर्णन अद्योप्रस्तुत है :-

- 1- जैविक कारक (Biological Factors)/आनुवंशिकता (Heredity) अनेक चिकित्सकीय अध्ययनों से यह परिणाम प्राप्त किया गया है कि अनियमितता के पाये जाने पर मनोग्रस्ति - बाध्यता विकृति के लक्षण उत्पन्न होते हैं। इसी प्रकार मस्तिष्क -कल्प अध्ययनों (brain imaging studies) से प्राप्त प्रदत्त यह प्रदर्शित करते हैं। रोगी के अग्र प्रखण्ड (frontal lobes) बेसल गेंगलिया (basal ganglia) तथा सिंगुलक (cingulum) की क्रियाशीलता में वृद्ध होने से मनोग्रस्ता - बाध्यता विकृति के उत्पत्ति में सहायक होते हैं।
- 2- पुनरावृत्ति (Repetition) - कुछ मनोवैज्ञानिकों ने पुनरावृत्ति को इस रोग का कारण माना है। उनका कहना है कि बचपन में बहुत से खेल ऐसे होते हैं, जिनमें किसी संख्या या शब्द को बार-बार दुहराना पड़ता है। इसके साथ-साथ खेल के नियम का पालन करने के लिए भी एक ही क्रिया की पुनरावृत्ति करनी होती है। बार-बार एक शब्द या संख्या को दुहराने या किसी क्रियाविशेष को बार-बार करने से उसकी आदत पड़ जाती है। अतः कुछ दिनों के बाद व्यक्ति बाध्यता का गुलाम हो जाता है। परन्तु यह विचार भी सर्वमान्य नहीं है।
- 3- असुरक्षा की भावना (Insecurity feeling) - कुछ मनोवैज्ञानिकों का मत है कि व्यक्ति अपनी सुरक्षा - भावना को दृढ़ बनाने के लिए बाध्यताओं का सहारा लेता है। रोगी में असुरक्षा की भावना प्रबल होती है और उसकी पूर्ति बाध्यताओं का सहारा होती है। इस तरह बार-बार हाथ धोना, बीमारी तथा गन्दगी से बचने का उपाय है। बार-बार ताला खींचकर देखना इसी रक्षात्मक मानसिक रचना की देन है।
- 4- मानसिक संघर्ष (Mental conflict) - फ्रॉयड का कहना है कि इस रोग का कारण लैंगिक इच्छा का दमन ही है। कामेच्छा के दमन के कारण मानसिक संघर्ष उत्पन्न हो जाता है और इस संघर्ष से निर्मुक्त होने के लिए व्यक्ति बाध्यता का शिकार हो जाता है। उसने काम-शक्ति (libido) के प्रतिगमन और उसकी असंतुष्टि पर विशेष जोर दिया है।

- 5- स्थानापन्न क्रियाएँ (Substitute activities) - कुछ मनोवैज्ञानिकों ने स्थानापन्न क आधार पर इसकी व्याख्या की है। उनका कहना है कि बाध्यताएँ सिर्फ स्थानापन्न (substitute) की क्रियाएँ हैं। एक समय में व्यक्ति एक ही विचार को मन में स्थान दे सकता है या एक ही क्रिया कर सकता है। इस तरह, यदि व्यक्ति बातें सोचने का मौका ही नहीं मिलेगा।

14.7.2 मनोग्रस्ति - बाध्यता विकृति के उपचार ; ज्तमंजउमदज व िobsessive Compulsive Disorder):

मनोग्रस्ति - बाध्यता विकृति के विभिन्न कारणों के विवरण के पश्चात् अब इस विकार के उपचार की विधियों का वर्णन अति आवश्यक है।

इस व्यक्तित्व विकार के उपचार में मनोचिकित्सा की अति महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। इस प्रक्रम के अन्तर्गत पहले व्यक्ति के अचेतन मन के अध्ययन के लिए मनोविश्लेषण विधि के उपयोग की आवश्यकता होती है, जिससे व्यक्ति के आन्तरिक तनाव के मूलस्रोत का पता लग सके।

अधिकांशत् ऐसे केस आन्तरिक रूप से तनाव के मूलस्रोत की जानकारी से ही ठीक होने लगते हैं। अब यदि इस सम्बन्ध में सफलता कम ही मिलती है, तब -

- 1- ऐसे व्यक्ति को अपने आन्तरिक काम-सम्बन्धी आवेगों के स्वरूप को समझने व स्वीकार करने के लिए सहमत बनाना होता है।
- 2- काल्पनिक तथा वास्तविक संकटों में भेद करने की आवश्यकता तर्क - शक्ति विकसित करने को प्रोत्साहित करना होता है, तथा
- 3- उसे आपके रूढ़िवादी व कर्मकाण्डी व्यवहार के पालन करने के स्थान पर सुनियोजित तथा रचनात्मक व्यवहार करने के लिए अभिप्रेरित करना होता है।

यदि ऐसे रोगी के आन्तरिक तनाव के अध्ययन में मनोविश्लेषण विधि सफल न होने पाये, तब इसके लिए नाकोशिस (संवेदन मन्दता) की आवश्यकता पड़ सकती है। इस स्थिति में रोगी के गहन नैदानिक साक्षात्कार से भी महत्वपूर्ण सहायता मिल सकती है। इन विधियों के विफल होने पर ही विद्युत आघात विधि तथा एक अन्य शैल्य चिकित्सा अथवा प्रमस्तिष्क अंशोन्धेदन (टोपेक्टामी - Topectomy) का भी अन्तिम विकल्प के रूप में उपयोग किया जा सकता है। टोपेक्टामी - चिकित्सा विधि के अन्तर्गत मस्तिष्क के उस विशेष अंग को विच्छेदित करके बाहर निकाल दिया जाता है। जिसका सम्बन्ध मनोग्रस्तिज विचार से पाया जाता है।

14.8 कायाप्रारूप विकृतियाँ (Somatoform Disorders)

DSM-IV के अनुसार कायाप्रारूप विकृतियों का विभेदन उन शारीरिक लक्षणों के आधार पर किया जाता है जिनमें कुछ चिकित्सकीय दशाएँ पाई जाती हैं।

DSM-IV (1995) के अनुसार - “कायाप्रारूप विकृति को अनेक उन शारीरिक लक्षणों के द्वारा विशेषीकृत किया जा सकता है जिनकी उपयुक्त व्याख्या शारीरिक अथवा प्रयोगशालायी परीक्षणों के आधार पर सम्भव नहीं है।”

DSM-IV के अनुसार कायाप्रारूप विकृतियों के सात प्रकार हैं :-

- 1- कायिक विकृति (Somatization disorder)
 - 2- अविभेदीकृति कायाप्रारूप विकृति (Undifferentiated Somatization disorder)
 - 3- रूपान्तरण विकृति (Conversion disorder)
 - 4- दर्द विकृति (Pain disorder)
 - 5- रोग भ्रम (Hypochondriasis)
 - 6- शरीर दुष्क्रिया आकृति विकृति (Body dysmorphic disorder)
 - 7- अन्यत्र न वर्णित कायाप्रारूप विकृति (Somatoform disorder not otherwise specified)
- ‘मनोस्नायुविकृति’ की दूसरी श्रेणी।

इसमें से हम रूपान्तरण विकृति (conversion disorder or conversion hysteria) को विस्तार से जानेंगे।

14.8.1 रूपान्तर विकृति या रूपान्तर उन्माद की परिभाषा (Definition of Conversion Disorder or Conversion Hysteria):

DSM – IV (1994) के पहले रूपान्तर-उन्माद को स्नायुविकृति (neurosis) अथवा मनोस्नायुविकृति (psychoneurosis) का एक प्रकार माना जाना था। लेकिन DSM – IV में दो तरह के परिवर्तन किए गए। पहला परिवर्तन यह किया गया कि स्नायुविकृति या मनोस्नुविकृति के स्थान पर चिन्ता विकृति शब्द को उपयोग किया। दूसरा परिवर्तन यह किया गया कि रूपान्तर उन्माद के स्थान पर रूपान्तर विकृति शब्द का उपयोग किया गया। इसे कायप्रारूप विकृति का एक प्रकार माना। अतः यह बात स्मरण रखना चाहिए कि रूपान्तर विकृति तथा रूपान्तर उन्माद समानार्थी शब्द है।

रेबर तथा रेबर (Reber and Reber, 2001) ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि “रूपान्तर विकृति एक कायाप्रारूप विकृति है, जिसमें मानसिक द्वन्द्वों का रूपान्तरण दैहिक लक्षणों के रूप में हो जाता है। उन्होंने यह भी कहा है कि रूपान्तर विकृति के रूपान्तर प्रतिक्रिया (conversion reaction) रूपान्तर उन्माद (conversion hysteria) या उन्माद स्नायुविकृति (hysteria neurosis) भी कहते हैं।”

14.8.2 रूपान्तर विकृति (रूपान्तर उमाद) के कारण (Etiology or Causes of Conversion Disorder or Conversion Hysteria):

- 1- अचेतन लैंगिक इच्छाएँ (unconscious sexual wishes) - मनोविश्लेषणात्मक सिद्धान्त के अनुसार रूपान्तर उन्माद या रूपान्तर विकृति के विकास में अचेतन इच्छाओं और विशेष रूप से दमित लैंगिक इच्छाओं का हाथ होता है। सिंगमण्ड फ्रायड के अनुसार जिन लैंगिक इच्छाओं की संतुष्टि चेतन स्तर पर नहीं होती है, उनका दमन (repression) या दलन (suppression) अचेतन में हो जाता है। लेकिन, अचेतन स्तर पर भी वे सक्रिय रहती हैं जिससे अचेतन द्वंद्वों (conflicts) की उत्पत्ति होती है। इन्हीं द्वंद्वों का समाधान शारीरिक लक्षणों के रूप में होती है।
- 2- गुप्त आक्रमणशील आवेग (hidden aggressive urge) उन्मत्त लकवा (hysterical paralysis) के विकास में अचेतन आक्रमणशील आवेग का हाथ होता है। जैसे - एक

अनुभवी तथा सफल सर्जन का दाहिना हाथ अचानक लकवाग्रस्त हो गया। मेडिकल जाँच से उसके हाथ में कोई कायिक दोष नहीं पाया गया।

- 3- भयानक तथा संकटमय परिस्थियाँ (Dreadful and threatening situation) - डेविडसन तथा नील (1996) ने इस संदर्भ में कहा है कि युद्ध या लड़ाई से भयानक तथा संकटमय परिस्थिति से बचाव के लिए सैनिक में उन्माद के लक्षण जैसे - लकवा, अंधापन, बहरापन, प्रकम्पन आदि विकसित होते हैं।
- 4- आयु एवं यौन भिन्नता (Age and sex difference) - रूपान्तर विकृति के विकास पर आयु तथा यौन-भिन्नता का प्रभाव पड़ता है। इस रोग का आक्रमण सामान्यतः किशोरा अवस्था अर्थात् 13 से 19 वर्ष की आयु में अधिक होता है।
- 5- व्यक्तित्व शीलगुण (personality traits) - अध्ययनों से पता चला है कि कुछ खास तरह के शीलगुण वाले व्यक्ति में रूपान्तर उन्माद के लक्षणों के विकसित होने की संभावना अधिक रहती है जबकि कुछ अन्य तरह के शीलगुण वाले व्यक्ति में इसकी संभावना कम होती है। जिन लोगों में अति-संवेदनशीलता अधिक संकेतशीलता संवेगशीलता तथा आवेगशीलता के शीलगुण होते हैं, उनमें इस रोग के विकसित होने की संभावना अपेक्षाकृत अधिक होती है।
- 6- दोषपूर्ण अनुशासन (Faulty discipline) - दोषपूर्ण अनुशासन का अर्थ है अनुशासन जो अत्यधिक ढीला-ढाला अथवा अत्यधिक कठोर होता है। इस तरह के अनुशासन से बच्चों में आत्मनियंत्रण की योग्यता का विकास समुचित रूप से नहीं हो पाता है, जिससे उनमें आगे चलकर उन्माद के लक्षणों के विकसित होने की पृष्ठभूमि बन जाती है।
- 7- सामाजिक - सांस्कृतिक कारक (socio-cultural factors) - परिवार की सामाजिक आर्थिक स्थिति, सामाजिक मानक के स्वरूप, देहाती-शहरी क्षेत्र आदि का प्रभाव भी इस मानसिक रोग के विकास पर पड़ता है। उच्च सामाजिक आर्थिक स्थिति की अपेक्षा निम्न सामाजिक-आर्थिक स्थिति के लोगों में यह रोग अधिक पाया जाता है।

14.8.3 रूपान्तर उन्माद विकृति के उपचार (Treatment of Conversion Disorder):

रूपान्तर विकृति या उन्माद के उपचार के लिए कई तरह की चिकित्सा विधियों का उपयोग किया जा सकता है।

इनमें से मुख्य निम्नालिखित हैं :-

- 1- मनोचिकित्सा (psychotherapy) - इस प्रकार की विकृति में व्यक्ति के लिए मनोचिकित्सा (psychotherapy) के प्रभावी उपचार के रूप में सर्वप्रथम यह आवश्यक होता है कि सम्बन्धित रोगी को विश्वस्त रूप से यह बताया तथा समझाया जाय कि उसके लक्षणों का आकार केवल प्रकार्यात्मक (functional) अथवा मनोजन्म ही है, कोई दैहिक विकार नहीं। दूसरे, ऐसे व्यक्ति के मानसिक भार को कम करने के लिए उसके जीवन प्रक्रम में से उन प्रतिबलक स्थितियों के निराकरण की आवश्यकता होती है, जो कि उसके सम्बन्धित लक्षणों के लिए पुनर्बलन का कार्य करती देखी जाती है।

- 2- प्लेस्बो (Placebo) - अब यदि ऐसे रोगी पर मनश्चिकित्सा का प्रभाव कम ही देखने में आता है, तब उसे उपचार के रूप में प्लेस्बो के देने की आवश्यकता होती है। प्लेस्बो एक निष्प्रभावी-सामग्री (जैसे व्यावहाकितः) कैल्सियम की टिकिया होती है, जिसे एक व्यक्ति को एक प्रभावी औषधि के रूप में दी जाती है। अब यदि सम्बन्धित रोगी प्लेस्बो के उपचार से भी प्रभावित नहीं होता है, तब
- 3- सम्मोहन (hypnotism) - इसके द्वारा ही उपचार करना अधिक उपयुक्त रहता है। परन्तु इस सम्बन्ध में रोगी में लक्षणों के फिर से उभरने की सम्भावना समाप्त नहीं हो जाती।
- 4- नैदानिक साक्षात्कार (clinical interview) - इसमें मनोविश्लेषण नैदानिक साक्षात्कार फिर मनोविश्लेषण के माध्यम से समझने की आवश्यकता होती है। इसके आधार पर रोगी को अपने रोग के लक्षणों के कारणों को समझने तथा उनको दूर करने के लिए अपनी जीवन-शैली को यथासम्भव बदलने के लिए प्रोत्साहित करने की आवश्यकता होती है।

अभ्यास प्रश्न - 3

- 1- मनोग्रस्ति बाध्यता के कारणों में मानसिक संघर्ष एक कारण है जिसमें फ्रॉयड का कहना है कि इस रोग का कारण इच्छा का दमन ही है।
2. रूपान्तर विकृति एक कायाप्रारूप विकृति है, जिसमें मानसिक द्बन्धों का रूपान्तरण _____ लक्षणों के रूप में हो जाता है।

14.9 मनोविच्छेदी विकृति का अर्थ, परिभाषा एवं लक्षण (Meaning, Definition and Symptoms of Dissociative Disorder)

DSM-IV के अनुसार मनोविच्छेदी विकृति, ‘‘मनोस्नायुविकृति’ की तीसरी श्रेणी में शामिल की गई है।

‘मनोविच्छेदी विकृति’ एक मानसिक रोग है जिसमें व्यक्तित्व (personality) का सामान्य समाकलन (normal integration) अकस्मात तथा अस्थायी रूप में विघटित (disintegrated) हो जाता है। रेबर तथा रेबर (Reber and Reber, 2001) ने इस मानसिक रोग को परिभाषित करते हुए कहा है कि- ‘‘मनोविच्छेदी विकृति ऐसी मनोवैज्ञानिक विकृतियों के लिए एक आवरण शब्द है, जिनकी विशेषताएँ हैं चेतना के सामान्य समाकलित कार्यों, स्व-प्रत्यक्षीकरण तथा संवेदी/गति व्यवहार में विघटन, जैसे व्यक्तिविलोप, बहुव्यक्तित्व, स्मृतिलोप तथा आत्मविस्मृति।’’

मनोविच्छेदी का सबसे प्रमुख लक्षण विच्छेदन (dissociation) है। विच्छेदन की अनुभूति में अन्य बातों के अलावा निम्नांकित पाँच तरह की अनुभूतियाँ अधिक होती हैं-

- (i) स्मृतिलोप (amnesia) – स्मृतिलोप में रोगी अपने पूर्व अनुभूतियों का आंशिक या पूर्णरूपेण प्रत्याहान (recall) करने में असमर्थ रहता है।
- (ii) व्यक्तित्वलोप (depersolization) – इसमें रोगी अपने आप से असंबद्ध महसूस करता है।
- (iii) वास्तविकता लोप (derealization) – इसमें रोगी को पूरा वातावरण ही अवास्तविक एवं अविश्वसनीय लगता है।

- (iv) पहचान संभ्रंति (identity confusion) – इसमें रोगी को अपने बारे में यह संभ्रंति उत्पन्न होती है कि वह कौन है, क्या है, आदि आदि।
- (v) पहचान बदलाव (identity alteration) – इसमें रोगी कभी-कभी कुछ आश्चर्य उत्पन्न करने वाले कौशलों से अपने को लेश पाता है जैसे उसे आश्चर्य होता है कि उसे पता भी नहीं रहता है कि उसमें ऐसा कौशल है।

14.9.1 मनोविच्छेदी विकृति के कारण (Causation of Dissociative disorder)

अध्ययनों से पता चलता है कि मनोविच्छेदी विकृति अथवा मनोच्छेदी उन्माद के निम्नलिखित कारण हैं:-

- 1) बाल्यावस्था के दुर्व्यवहार (childhood abuse) – ब्लिस (Bliss, 1980) के अनुसार मनोविच्छेदी विकृति की पहचान विकृति (dissociation identity disorder) की स्थापना बचपन में अत्यधिक विक्षुब्ध घटनाओं (disturbed events) का सामना करने हेतु आत्म-सम्मोहन (self-hypnosis) द्वारा हो जाती है।
- 2) मातृप्रेम अवस्था की लैंगिक इच्छाओं का दमन (Repression of unacceptable infantile sexual wishes of oedipal stage) – मनोविश्लेषणात्मक सिद्धान्त के अनुसार मनोविच्छेदी विकृति या मनोविच्छेदी उन्माद का मुख्य कारण मातृप्रेम अवस्था की अस्वीकृति लैंगिक इच्छाओं का दमन है।
- 3) मन्द बुद्धि (Low intelligence) – हॉलिंगवर्थ (Hollingworth) का कहना है कि कम बुद्धिमान व्यक्ति ही इस रोग का शिकार होता है। अपने इस कथन की पुष्टि उसने सैनिक रोगियों के अध्ययन के आधार पर की है। उसने अपने अध्ययन में देखा कि ऊँचे पद वाले रोगी इस रोग से पीड़ित नहीं थे।
- 4) त्रुटिपूर्ण अनुशासन (Defective discipline) – कुछ मनोवैज्ञानिकों का मत है कि इस रोग का कारण त्रुटिपूर्ण अनुशासन (defective discipline) है। स्वस्थ तथा समुचित अनुशासन में रहने से बच्चों में आत्म-नियंत्रण की योग्यता का विकास होता है। परन्तु अत्यधिक कठोर या अत्यधिक शिथिल अनुशासन से आत्म-नियंत्रण की योग्यता का समुचित विकास नहीं हो पाता है।
- 5) व्यक्तित्व प्रकार (Type of personality) – कुछ मनोवैज्ञानिकों का मत है कि इस विकृति का रोग अधिकतर बहिर्मुखी (extrovert) व्यक्ति को होता है। अध्ययनों से पता चलता है कि अन्तर्मुखी की अपेक्षा बहिर्मुखी व्यक्ति में मनोविच्छेदी विकृति अथवा मनोविच्छेदी उन्माद के लक्षणों के विकसित होने की संभावना अधिक होती है।
- 6) मानसिक उपाय (Mental trauma) – मनोविच्छेदी विकृति का एक कारण मानसिक आघात या धक्का है। कुछ लोग अपने में ऐसी संवेगात्मक परिस्थिति में फँस जाते हैं कि उनसे निकलना मुश्किल हो जाता है।

14.9.2 मनोविच्छेदी विकृति के उपचार (Treatment of Dissociative Disorder)

मनोविच्छेदी विकृति अथवा मनोविच्छेदी उन्माद के रोगी के उपचार के लिए निम्नलिखित चिकित्सा विधियों का उपयोग किया जा सकता है:-

1. मनोविश्लेषणात्मक चिकित्सा (Psychoanalytic therapy) – इस चिकित्सा विधि को सिगमण्ड फ्रॉयड (Sigmund Freud) ने विकसित किया। इसमें रोगी के ईगो को पुनर्संरचित (restructured) करके इतना सबल बना दिया जाता है कि वह अचेतन द्वन्द्वों को नियंत्रित करने में सक्षम हो सकें।
2. सम्मोहन चिकित्सा (Hypno therapy) – इस मानसिक रोग से पीड़ित रोगी के उपचार के लिए सम्मोहन का उपयोग किया जाता है। इसका उपयोग सामान्यतः आदेश चिकित्सा (Directive therapy) में करना अधिक प्रभावी होता है।
3. संज्ञानात्मक चिकित्सा (Cognitive therapy) – संज्ञानात्मक चिकित्सा से भी मनोविच्छेदी विकृति के उपचार में मदद मिलती है। इस चिकित्सा से रोगी के विवेक को जगाने का प्रयास किया जाता है।

अतः उपर्युक्त चिकित्सा विधियों का उपयोग मनोविच्छेदी विकृति के रोगी के उपचार के लिए आवश्यकता अनुसार किया जा सकता है।

अभ्यास प्रश्न - 4

1. मनोविच्छेदी का प्रमुख लक्षण _____ है।
2. मनोविच्छेदी विकृति के उपचार में मनोविश्लेषणात्मक चिकित्सा के अन्तर्गत, रोगी के ईगो को _____ करके इतना सबल बना दिया जाता है।

14.10 सारांश (Summary)

चिंता विकृति (anxiety disorder) से तात्पर्य ऐसी विकृति से है जिसमें व्यक्ति बेचैनी तथा आशंका का अनुभव करता है। वह अस्पष्ट दिशाहीन चिन्ता का अनुभव करता है, जिसका स्रोत वह बता नहीं पाता है। DSM-IV में मस्त्रिकित्सकों ने 'स्नायुविकृति' (neurosis) जैसे नैदानिक श्रेणी वाले मानसिक विकृतियों को एक, दो व तान श्रेणी में रखा है। इस पाठ के अन्तर्गत हमने इन तीनों श्रेणियों के अर्थ, कारण व उपचारों का वर्णन किया है। ये तीन श्रेणियाँ हैं- चिंता विकृति, कायाप्रारूप विकृति तथा विच्छेदी विकृति। चिंता विकृति में दुर्भिति, मनोग्रस्ति-बाध्यता विकृति जिसमें दुर्भिति में व्यक्ति असंगत भय से भयभीत रहता है तथा मनोग्रस्ति-बाध्यता में बार-बार एक ही तरह का विचार मन में आना और एक ही व्यवहार करने के लक्षण पाये जाते हैं।

इसी प्रकार कायाप्रारूप में रूपांतर विकृति जिसे पहले रूपांतर उन्माद भी कहते हैं, इसमें संवेदी लक्षण तथा पैशीय लक्षण प्रमुख हैं। मनोविच्छेदी विकृति एक महत्वपूर्ण एवं सामान्य (common) मानसिक रोग है जिसमें रोगी के मानसिक प्रक्रियाएँ विशेषकर स्मृति या चेतना विच्छेदित हो जाता।

14.11 शब्दावली

- अपअनुकूलित - कुयमायोजन
- शरीरगनात्मक - शरीर का गठन किस प्रकार का है, जैसे - मोटा, पतला, ताकतवर आदि।
- पलायन- बचना, साफ बच जाना
- उद्दीपक- उत्तेजित करने वाली वस्तु-जैसे कोई भी चीज, परिस्थिति या इन्सान
- चिरकालिक - पुराना रोग बहुत पुराने समय से
- व्यापक - फैलती हुई
- कायिक दोष - शारीरिक बीमारी
- विघटित - अलग करना

14.12 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

अभ्यास प्रश्न - 1

1. चिंता विकृति, कायाप्रारूप विकृति, विच्छेदी विकृति।
2. चिंता, डर।
3. 6।
4. चिन्ता सुरक्षा, दोषपूर्ण सीखना, अवरूद्ध व्यक्तिगत विकास।

अभ्यास प्रश्न - 2

1. एगोराफोबिया, सामाजिक दुर्भिति, विशिष्ट दुर्भिति।
2. प्रेक्षण
3. दृढ़
4. चिन्ता विरोधी औषधी।

अभ्यास प्रश्न - 3

1. लैंगिक
2. दैहिक

अभ्यास प्रश्न - 4

1. विच्छेदन
2. पुनर्संरचित।

14.13 संदर्भ ग्रंथ

- मुहम्मद सुलेमान (2004) “मनोरोगविज्ञान” (मगध विश्वविद्यालय, बोध गया) पटना (बिहार)
- अरूण कुमार सिंह (2001) “आधुनिक असमान्य मनोविज्ञान” स्नातकोत्तर मनोविज्ञान विभाग, पटना विश्वविद्यालय, (बिहार)
- एच.के.कपिल (2007) “अपसामान्य मनोविज्ञान” मनोविज्ञान विभाग, आर.बी. एस. कॉलेज, आगरा
- विनती आनंद (2003) “मनोविकृति-विज्ञान” शिबली नेशनल स्नातकोत्तर महाविद्यालय, आजमगढ़ (उ. प्र.)
- (कुमारी) नवरत्न हर्षवाल “असामान्य मनोविज्ञान” युनिवर्सिटी पब्लिकेशन्स, जयपुर
- रामचन्द्र सिंह (1999) “असामान्य मनोविज्ञान एवं आधुनिक जीवन” स्नातकोत्तर मनोविज्ञान विभाग, महाराजा कॉलेज, आरा, बिहार।

14.14 निबंधात्मक प्रश्न

1. मनोस्नायुविकृति अथवा स्नायुविकृति क्या है? इसे क्यों चिंता विकृति पद द्वारा विस्थापित कर दिया गया है?
2. सामान्यीकृत चिन्ता विकृति क्या है? इसके कारण प्रस्तुत करें?
3. दुर्भिति से आप क्या समझते हैं? दुर्भिति के उपचार के विभिन्न प्रविधियों का वर्णन करें।
4. मनोग्रसित - बाध्यता विकृति के कारणों की विवेचना करें।
5. रूपांतर विकृति या रूपांतर हिस्ट्रीया के उपचारों का वर्णन करें।
6. कायाप्रारूप विकृति से आप क्या समझते हैं? उसके कारणों के विवेचना करें।

इकाई 15

व्यक्तित्व एवं मनोविकृति विज्ञान: मनोविकृति कारण एवं उपचार

Personality and Psychopathology: Psychoses- Its causes and treatment

इकाई की रूपरेखा

- 15.1 प्रस्तावना
- 15.2 उद्देश्य
- 15.3 मनोविक्षिप्ति या मनोविकृति का अर्थ एवं परिभाषा
- 15.4 मनोविकृति का वर्गीकरण
- 15.5 मनोविकृति के सामान्य लक्षण
- 15.6 मनोविकृति के मनोजन्य विकारों के प्रकार
 - 15.6.1 मनोविदलता का अर्थ एवं परिभाषा
 - 15.6.1.1 मनोविदलता के लक्षण
 - 15.6.1.2 मनोविदलता के कारण
 - 15.6.1.3 मनोविदलता के उपचार
 - 15.6.2 पैरानोयया का अर्थ व परिभाषाएँ
 - 15.6.2.1 पैरानोयया के लक्षण
 - 15.6.2.2 पैरानोयया के कारण
 - 15.6.2.3 पैरानोयया के उपचार
 - 15.6.3 भावनात्मक मनोविकृति
 - 15.6.3.1 भावनात्मक मनोविकृति या उत्साह विषाद मनोविकृति के कारण
 - 15.6.3.2 भावात्मक मनोविकृति के उपचार
- 15.7 सारांश
- 15.8 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
- 15.9 संदर्भग्रंथ सूची
- 15.10 निबंधात्मक प्रश्न

15.1 प्रस्तावना

आधुनिक समाज में विकृति के पाये जाने की संभावना दिन-प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही है जिसका कारण सामाजिक प्रगति तथा सामाजिक औद्योगिकरण ही है, जिससे व्यक्ति के मूल्यों में बदलाव ही नहीं आया है, वरन् यह बदलाव एक और जहाँ जीवन को आसान बनाने के काम आया है, वहीं हमें अपेक्षाकृत अधिक तनावों, कुंठाओं और प्रतिबलों का सामना भी करना पड़ा है।

प्रस्तुत इकाई में आप मनोविकसित या मनोविकृतियों का अर्थ, परिभाषा, स्वरूप, लक्षण तथा विस्तार में इनके कारण एवं उपचारों के बारे में अध्ययन किया गया है।

15.2 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप -

- मनोविकृतियों को सही तरह से समझ सकेंगे
 - मनोविकृतियों के प्रकारों की जानकारी ले सकेंगे।
 - मनोविकृतियों का अर्थ एवं परिभाषा बता सकेंगे।
 - मनोविकृतियों के स्वरूप तथा लक्षणों को बता सकेंगे।
 - मनोविकृतियाँ होने के कौन-कौन से कारण हैं उनको बता सकेंगे।
 - मनोविकृतियों के उपचार के तरीके बता सकेंगे।
-

15.3 मनोविकृति का अर्थ एवं परिभाषा

मनोविकृति ; एक गंभीर मानसिक विकृति है, जिसके अन्तर्गत कई मानसिक विकृतियों की गणना की जाती है जैसे - व्यामोह विकृति ; कमसनेपवदंस कपेवतकमतद्धए मनोदशा विकृति ; मनोविदलता ; ङ्ग आदि। इसी कारण मनीविकृति ; को मनोविकृति विकृतियाँ ; कहते हैं।

सरासन तथा सरासन ; 2003ङ्ग के अनुसार - “मनोविकृति वह विकृति है जिसमें व्यामोह, विभ्रम, असंगति, पुनरावृत्त विचार विचलन, विचार संगति की स्पष्ट कमी, स्पष्ट अतार्किकता तथा गंभीर रूप से विसंगठित अथवा केटाटोनिक व्यवहार देखे जाते हैं।”

मनोविकृति एक प्रकार की असामान्यता है जिसका स्वरूप तीव्र एवं गम्भीर होता है। इस रोग से पीड़ित व्यक्ति के व्यक्तित्व का विघटन हो जाता है, यथार्थ से उसका सम्बन्ध टूट जाता है, उसका व्यवहार अशोभनीय एवं विचित्र प्रतीत होता है, उसमें आत्मसंयम एवं सामाजिक सन्तुलन का अभाव पाया जाता है, उसे अपने कार्य की अच्छाई-बुराई का ज्ञान नहीं रहता है, इनके व्यवहार में विभ्रम और व्यामोह ; की अधिकता पाई जाती है, तथा ऐसे रोगी चिकित्सक की बात को मानने के लिए तैयार नहीं होते हैं और आत्महत्या के लिए तत्पर रहते हैं। ऐसे रोगियों के इदम ; अहम ; तथा पराअहम ; का सन्तुलन बिगड़ जाता है ; ठतवूदए 1940ङ्ग बोलचाल की भाषा में ऐसे रोगियों को पागल ; की संज्ञा दी जाती है। यह

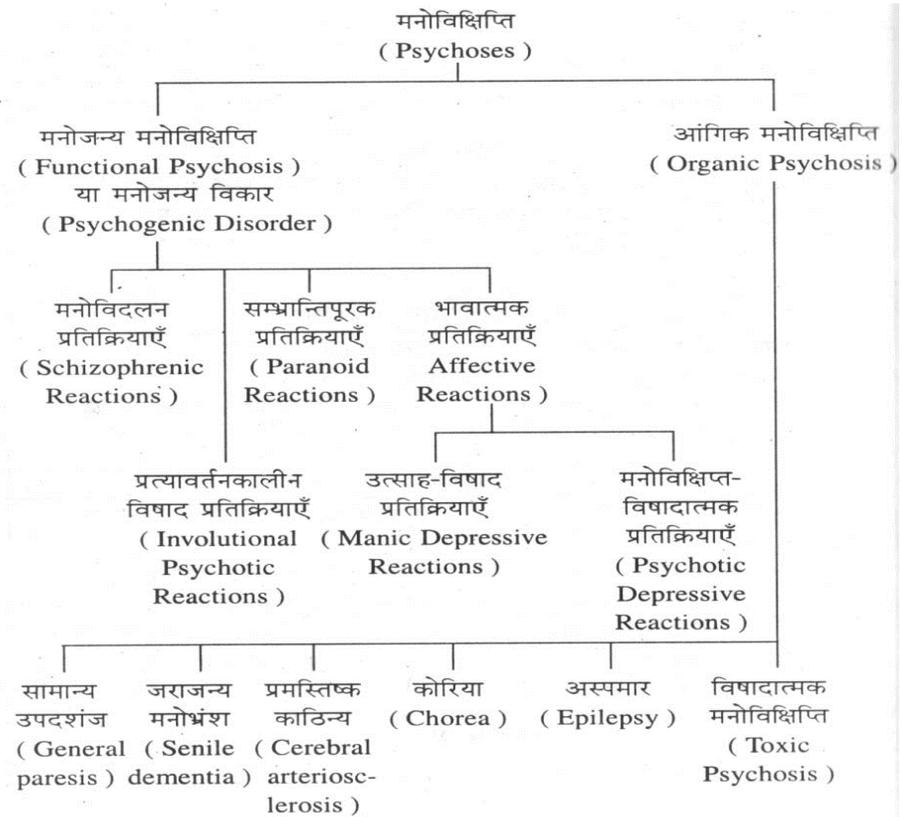
समाज के अन्य सदस्यों से उपयुक्त सम्बन्ध नहीं स्थापित कर पाते हैं। इसलिए इस विकृति का स्वरूप मनस्ताप ; की तुलना में अधिक गम्भीर होता है।

;1976 के अनुसार - “मनोविक्षिप्ति गम्भीर व्यक्तित्व विकार है जिसमें रोगी का सम्बन्ध वास्तविकता से टूट जाता है तथा जिसका चरित्र-चित्रण व्यामोह और विभ्रमों से होता है। सामान्यतया इनको अस्पताल ले जाना पड़ता है।”

ब्रसमउंद;1972 का मत है कि - “मनोविक्षिप्ति के लक्षणों का जन्म या तो मनोवैज्ञानिक बालाघातपूर्ण स्थिति या आंगिक मस्तिष्क व्याधि या इन दोनों ही स्थितियों के कारण होता है।”

15.4 मनोविकृति का वर्गीकरण

सामान्यतया मनोविकृति या मनोविक्षिप्ति को इस प्रकार वर्गीकृत किया जाता है :-



15.5 मनोविकृति के सामान्य लक्षण

मनोविकृति के सामान्य लक्षण निम्नलिखित हैं :-

- 1- व्यवहार सम्बन्धी लक्षण मनोविकृति से ग्रस्त रोगियों के व्यवहार का अध्ययन करने से पता चलता है कि उनके व्यवहार बेढंगा ; विचित्र; झुंझलाहटपूर्ण ; तथा अपने एवं दूसरों के लिए भी हानि कारक ; होते हैं।
- 2- संवेगात्मक तथा सामाजिक विकृति ; - मनोविकृति के रोगियों में संवेगात्मक विकृति तथा विकृत सामाजिक सम्बन्ध के लक्षण पाए जाते हैं। संवेगात्मक विकृति के अन्तर्गत आशंका,

उदासीनता या विषाद की स्थिति ; असंगति ; सन्देह, चिड़चिड़ापन, आत्महत्या की प्रवृत्ति भाव-शून्यता ; तथा उल्लास ; के लक्षण मुख्य रूप से पाए जाते हैं। इन्हीं संवेगात्मक विकृतियों के कारण रोगी में विध्वंसकारी क्रियाएँ उत्पन्न होती हैं तथा रोगी का चरित्र आचारहीन हो जाता है।

- 3- व्यामोह ; - इस रोग से ग्रस्त रोगी को यह गलत विश्वास हो जाता है कि दूसरे लोग सदा उसी के बारे में बातें करते रहते हैं या उसके सम्बन्ध में तरह-तरह के झूठे प्रचार का उसे बदनाम कर रहे हैं। वह सदा व्यक्तिगत महत्व के कारण बैचैन रहता है। फलतः दो या दो से अधिक व्यक्तियों की बातें करते देखकर वह समझ लेता है कि वे उसी बारे में बातें कर रहे हैं।
- 4- स्मृति दोष ;— मनोविकृति से पीड़ित रोगियों की स्मृति दोषपूर्ण हो जाती है। रोगी को कुछ भी याद नहीं रहता है या जो कुछ वह याद करता है उसमें सम्बद्धता नहीं होती है।
- 5- वास्तविकता से सम्बन्ध का विच्छेद ;स्ववेपदह बवदजमदज— इसके कारण उसे रात-दिन, उपस्थिति-अनुपस्थिति आदि बातों का सही ज्ञान नहीं रहता है।

15.6 मनोविकृति के मनोजन्य विकारों के प्रकार

प्रस्तुत अध्याय में हम मनोविकृति के मनोजन्य विकारों को विस्तार पूर्वक अध्ययन करेंगे - मनोविदलता विकृति (Schizophrenia),

स्थिर व्यामोही मनोविकृति (Paranoid disorder)

भावात्मक मनोविकृति (Affective disorder)

15.6.1 मनोविदलता का अर्थ एवं परिभाषा

मनोविदलता वास्तव में मनोविकृति ; चेलबीवेपेद्ध का एक प्रकार है। इसका शाब्दिक अर्थ है व्यक्तित्व विभाजन ;। इस व्यक्तित्व विभाजन के कारण रोगी में गंभीर संज्ञानात्मक, संवेगात्मक तथा क्रियात्मक विकृतियाँ विकसित हो जाती हैं, जिससे रोगी का सम्बन्ध वास्तविकता ; से टूट जाता है।

कैमरान ; के शब्दों में, “मनोविदलता सम्बन्धी प्रतिक्रियाएँ वे प्रतिगमनात्मक प्रयास हैं जिनमें व्यक्ति तनाव तथा चिन्ता से पलायन करता है। यह पलायन वह वास्तविक अन्तवैयक्तिक वस्तु सम्बन्धों के स्थान पर व्यामोह और विभ्रमों के निर्माण द्वारा करता है।”

कोलमैन ; ब्वसमउंदद्ध के शब्दों में, “मनोविदलता वह विवरणात्मक पद है जिसमें मनोविक्षिप्तता से सम्बन्धित कई विकारों का बोध होता है इसमें बड़े पैमाने पर वास्तविकता की तोड़ मरोड़ दिखाई देती है। रोगी, सामाजिक अन्तःक्रियाओं से पलायन करता है। व्यक्ति का प्रत्यक्षीकरण विचार व संवेग अपूर्ण और विघटित रूप से होते हैं।”

15.6.1.1 मनोविदलता के लक्षण ;

मनोविदलता के लक्षण निम्न प्रकार हैं -

- (1) चिन्ता एवं आतंक - मनोविदलता से पीड़ित व्यक्ति अक्सर चिन्तित व आतंकित रहता है। इस प्रकार के रोग के व्यक्तित्व का केन्द्र बिन्दु विसरित, अव्यवस्थित रहता है जिससे उसकी विचार प्रक्रिया अवरूद्ध हो जाती है और भावनाओं में सामंजस्य नहीं रहता।

- (2) व्यामोह ; चूतंदवपंद्ध - मनोविदलता के रोगी में व्यामोह भी देखने को मिलते हैं जिसमें रोगी झूठे विश्वासों को बिना प्रमाण के ही सत्य मानने लगते हैं।
- (3) भाषा में विकृति - मनोविदलता के रोगी प्रायः बहुत कम बोलते हैं यदि उनसे बार-बार कुछ पूछा जाये या उन्हें बुलाया जाये तो भी वे नहीं बोलते। इनकी बातें प्रायः अंसगत व अस्पष्ट होती हैं। लेकिन कुछ ऐसे रोगी भी देखने को मिलते हैं जो सामान्य से अधिक बोलते हैं।
- (4) स्वलीनता - मनोविदलता की स्थिति में व्यक्ति का स्वयं कल्पनाओं एवं संवेगों द्वारा व्यवहार का निर्धारण होता है। अतः स्वलीनता ; नजपेउद्ध भी एक लक्षण है जो मनोविदलता के रोगी में पाया जाता है।
- (5) असक्षमता - मनोविदलता की स्थिति में व्यक्ति के जीवन की यथार्थता से सम्बन्ध विच्छेद हो जाता है तथा व्यक्ति सामाजिक उत्तरदायित्व निभाने में असक्षम महसूस करता है।
- (6) संवेगात्मक प्रकृति - मनोविदलता की स्थिति में संवेगात्मक दृष्टि से रोगी का व्यवहार छिन्न-भिन्न हो जाता है। अक्सर वह गम्भीर बात पर हँसने लगता है तथा जिस बात पर हँसना चाहिये उस बात पर वह गम्भीर हो जाता है। कई बार रोगी इतनी भयानक हँसी हँसने लगता है कि देखने वाला उससे डरने लगता है।
- (7) वास्तविकता से पलायन - मनोविदलता की स्थिति में व्यक्ति अपने वातावरण एवं सम्बन्धित व्यक्तियों में रूचि लेना प्रायः कम कर देता है। व्यक्ति अपने स्वयं तक ही सीमित रहने लगता है जिसमें वह अपनी कल्पनाओं, संवेगों व इच्छाओं में ही खोया रहता है। जैसे-जैसे व्यक्ति मनोविदलता से ग्रस्त होता जाता है वैसे-वैसे उसका वास्तविकता से पलायन होता जाता है।

15.6.1.2 मनोविदलता के कारण ; बंनेमे व िबीप्रवचीतमदपंद्धरू

यहां हम मनोविदलता के मुख्य कारणों को अग्रलिखित प्रकार से समझ सकते हैं -

- (1) सामाजिक - सांस्कृतिक कारण ; - मनोविदलता के कारणों के सम्बन्ध में किये गये अध्ययनों से यह बात भी कुछ सीमा तक सिद्ध हुई है कि जिन लोगों का सामाजिक-आर्थिक स्तर निम्न होता है उनमें मनोविदलता के अधिक लक्षण पाये जाते हैं तथा इसके साथ यह भी प्रमाणित हुआ है कि जो व्यक्ति बड़े नगरों में रहते हैं वे गांवों और कस्बों के रहने वाले व्यक्तियों की अपेक्षा मनोविदलता के अधिक शिकार होते हैं। इसका मुख्य कारण मनोवैज्ञानिकों के अनुसार नगरीय समाज में होने वाले सामाजिक परिवर्तन हैं। इसी प्रकार के कुछ अन्य भी सामाजिक - आर्थिक कारण मनोविदलता के लिए उत्तरदायी पाये गये हैं जैसे - गरीबी, भुखमरी, असुरक्षा की भावना, गन्दी बस्तियों की समस्याएँ, सामाजिक विघटन आदि। सांस्कृतिक विभिन्नताओं को भी मनोविदलता का कारण माना गया है।
- (2) जैविक कारण - ये निम्न प्रकार के होते हैं -
 - (i) आनुवांशिकता ; - आनुवांशिकता भी मनोविदलता होने का एक महत्वपूर्ण कारण माना गया है। इस सम्बन्ध में मनोवैज्ञानिकों द्वारा किये गये विभिन्न अध्ययनों से जो निष्कर्ष सामने आये हैं उनसे यह स्पष्ट होता है कि यदि माता-पिता या दोनों में से कोई एक भी मनोविदलता का शिकार है तो उनकी सन्तान में भी मनोविदलता के लक्षण उत्पन्न हो सकते हैं।

(ii) केन्द्रीय स्नायुमण्डल ; बमदजतंस छमतअवने - ऐसा भी माना जाता है कि जब व्यक्ति को केन्द्रीय स्नायुमण्डल में दोष आ जाते हैं तो व्यक्ति मनोविदलता से ग्रस्त हो सकता है। अतः केन्द्रीय स्नायुमण्डल का दोषपूर्ण होना भी एक जैविक कारण माना गया है।

(iii) व्यक्ति की शारीरिक बनावट ; - व्यक्ति की शारीरिक बनावट को भी मनोवैज्ञानिकों द्वारा मनोविदलता का जैविक कारण माना गया है। इस सम्बन्ध में प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक शेल्डन तथा क्रैशमर ने अपने विचार स्पष्ट किये हैं, उनके अनुसार जो व्यक्ति एस्थेनिक प्रकार की शारीरिक वाला होता है वह मनोविदलता का शिकार हो सकता है।

(iv) अन्तः स्त्रावी ग्रन्थि - कुछ मनोवैज्ञानिकों द्वारा व्यक्ति की अन्तः स्त्रावी ग्रन्थि द्वारा स्त्रावित रस की सामान्य से अधिक मात्रा को भी मनोविदलता का कारण माना गया है। इसी प्रकार से व्यक्ति के दिल का छोटा होना भी मनोविदलता के लिए जिम्मेदार माना गया है।

(3) मनोवैज्ञानिक कारण ; - निम्न मनोवैज्ञानिक कारणों को मनोविदलता के लिए उत्तरदायी माना गया है -

(i) अन्तर्द्वन्द्व तथा नैराश्य - मनोवैज्ञानिकों की इस सम्बन्ध में यह धारणा है कि व्यक्ति की अन्तर्द्वन्द्व तथा नैराश्य के प्रति दोषपूर्ण क्रियाओं के कारण मनोविदलता के लक्षण उत्पन्न हो सकते हैं।

(ii) पारिवारिक स्थितियां - परिवार में अतिसंरक्षण, अति तिरस्कार, कठोर अनुशासन, अत्यधिक उच्च नैतिक आदर्श आदि स्थितियां भी मनोविदलता के लिए कई बार उत्तरदायी बन जाती हैं इसके साथ ही परिवार के सदस्यों के पारस्परिक सम्बन्ध, माता-पिता का अनुचित प्रभाव भी बालकों में मनोविदलता के लक्षण उत्पन्न कर सकता है।

(iii) यौन इच्छाओं का प्रतिगमन - फ्रायड का मानना है कि अचेतन में छिपी समलैंगिकता के कारण व्यक्ति प्रतिगमन के माध्यम से अचेतन की अमान्य इच्छाओं से रक्षा करता है जिससे उसमें मनोविदलता के लक्षण उत्पन्न हो सकते हैं।

15.6.1.3 मनोविदलता का उपचार

रोगी के स्वरूप के अनुकूल निम्नलिखित चिकित्सा विधियों में किसी एक अथवा एक से अधिक विधियों का उपयोग किया जा सकता है :-

1- जैविक उपचार ; ठपवसवहपबंस जतमंजउमदजद्ध - इस उपचार के अन्तर्गत आघात चिकित्सा मनोशल्यचिकित्सा ; तथा औषध चिकित्सा ; कतनह जीमतंचल का उपयोग किया जाता है। आरंभ में मनोविदलता के रोगी के उपचार के लिए आघात चिकित्सा का उपयोग बड़े पैमाने पर किया जाता था। रोगी को विद्युत आघात देकर उसके लक्षणों को दूर करने का प्रयास किया जाता था। आगे चलकर इसके साथ-साथ इन्सुलिन चिकित्सा के उपयोग पर सकेल ; नामक नैदानिक मनोवैज्ञानिक ने बल दिया। लेकिन यह चिकित्सा विधि अधिक सफल प्रमाणित नहीं हो सकी। जैविक उपचार के अन्तर्गत औषध चिकित्सा ; कतनह जीमतंचलद्ध अधिक सफल प्रमाणित हुई। मनोविकृति विरोधी औषधों ; के उपयोग से मनोविदलता के रोग को लाभ होता है। विशेष रूप से क्लोरप्रोमाइजिन ; का उपयोग मनोविदलता के उपचार में अधिक प्रभावी प्रमाणित हुआ। वर्तमान

समय में अन्य औषधों जैसे - बुटाइरोफेनोनेस ; तथा थीरौकसानथेन्स ; का उपयोग भी मनोविदलता के रोगियों के उपचार में सफलतापूर्वक किया जाता है।

- 2- संज्ञानात्मक कौशल प्रशिक्षण ; - चिरकालिक मनोविदलता से पीड़ित व्यक्तियों के उपचार के लिए संज्ञानात्मक कौशल प्रशिक्षण लाभप्रद सिद्ध होता है। कारण, ऐसे रोगियों में सामाजिक कौशल ; तथा सामाजिक प्रत्यक्षीकरण ; की कमी पायी जाती है। संज्ञानात्मक कौशल प्रशिक्षण से इस कमी को दूर किया जा सकता है ; परिवार चिकित्सा ; - मनोविदलता के रोगी के उपचार में अनुकूल पारिवारिक कार्यक्रम ; के रूप में पारिवारिक चिकित्सा लाभप्रद सिद्ध होती है। मनोविदलता के रोगी के प्रति नकारात्मक भावों ; दमहंजपअम मिमसपदहेद्ध तथा हानिप्रद अभिव्यक्त संवेग ; को दूर करने में पारिवारिक कार्यक्रम लाभदायक होता है। इसमें रोग के दोबारा होने तथा रोगी को दोबारा अस्पताल में भरती होने से बचाया जा सकता है।
- 3- सामुदायिक चिकित्सा ; - विशेष रूप से ऐसे रोगियों के लिए समुदाय-सहारा , आवश्यक है, जिनके पारिवारिक सदस्य नहीं होते हैं। अस्पताल से निकलने के बाद ऐसे रोगियों के लिए समूह गृह ; दिवालोक सावधानी सुविधाएँ आदि का प्रबन्ध आवश्यक है।
- 4- सम्मिलित उपचार ; - मनोविदलता के रोगी के सफल उपचार के लिए औषध के साथ-साथ कौशल प्रशिक्षण, परिवार कार्यक्रम तथा समुदाय सहारा का सम्मिलित उपयोग आवश्यक है।

15.6.2 पैरानोयया या स्थिर व्यामोह का अर्थ एवं परिभाषा

स्थिर व्यामोह ; मनोविकृत का एक मुख्य प्रकार है, जिसको स्थिर व्यामोही विकृति ; चंतंदवपक कपेवतकमतद्ध तथा व्यामोही विकृति ; भी कहते हैं। यह एक ऐसा मानसिक रोग है जिसमें नाना प्रकार के व्यामोह ; पाए जाते हैं, जो अपेक्षाकृत स्थायी रूपरूप के होते हैं।

चैपलिन ; 1975 के अनुसार - " स्थिर-व्यामोह एक मनोविकृति है, जिसकी विशेषता है उत्पीड़न अथवा श्रेष्ठता के अत्यन्त क्रमबद्ध व्यामोह, जिनमें कोई बिगाड़ नहीं होता है।"

रेबर तथा रेबर 2001 ने इस मानसिक रोग के अर्थ को स्पष्ट करते हुए कहा है कि - "व्यामोही विकृति एक व्यापक शब्द है, जिससे ऐसी मानसिक विकृति का बोध होता है जिसमें किसी तरह के व्यामोह का अर्थपूर्ण लक्षण होता है।"

उपर्युक्त परिभाषाओं से स्पष्ट हो जाता है कि स्थिर व्यामोह ; अथवा व्यामोही विकृति ; एक मनोविकृति है, जिसका मुख्य लक्षण व्यामोह है।

पैरानोयया ; मनोविक्षिप्तता का ही एक प्रकार है जो मूलतः ग्रीक के पैरा ; दो शब्दों से मिलकर बना है। पैरा से तात्पर्य विकृत, दोषपूर्ण या गलत से है तथा नोयस से तात्पर्य चिन्तन या मन से है। प्राचीन समय में व्यामोह के अर्थ में पैरानोयया शब्द का इस्तेमाल किया जाता था लेकिन 18 वीं शताब्दी में पैरानोयया को एक मानसिक विकार के रूप में जाना जाने लगा जिसमें कुछ व्यामोह व्यवस्थित रूप से रहते हैं। पैरानोयया के अर्थ को स्पष्ट करने के लिए विभिन्न मनोवैज्ञानिकों द्वारा इसे शब्दों में बांधने का प्रयास किया गया है।

15.6.2.1 पैरानोयया या स्थिर व्यामोही के लक्षण

स्थिर-व्यामोही विकृति ; के निम्नलिखित नैदानिक लक्षण है :-

- (i) इस विकृति का सर्वप्रमुख लक्षण यही है कि इसमें एक या एक से अधिक सामान्य व्यामोह के लक्षण पाये जाते हैं जिनकी अवधि कम-से-कम एक माह अवश्य होती है।
- (ii) मनोविदलता के अन्य लक्षणों के अभाव में स्थिर-व्यामोही विकृति के पाये जाने की सम्भावना रहती है परन्तु उनका निदान सम्भव नहीं हो पाता है।
- (iii) यदि श्रवण अथवा दृष्टिपरक विभ्रम पाया जाता है परन्तु वह प्रभावी नहीं है, तो त्वचीय अथवा गंधपरक विभ्रम उपस्थित एवं प्रभावी हो सकते हैं, यदि वे व्यामोहपरक विषय वस्तु से सम्बन्धित हैं।
- (iv) इसमें मनोसामाजिक प्रकार्यता अधिक दुर्बल नहीं होते हैं तथा व्यवहार न तो अनोखा प्रतीत है और न अनुपयुक्त ही।
- (v) यदि व्यामोह के साथ ही मनोदशा सम्बन्धी ; घटित होती है तो मनोदशा घटनाओं की अवधि स्थिर व्यामोह विकृति की कूल अवधि की तुलना में अधिक कम होती है।
- (vi) यह व्यामोह विकृति किसी पदार्थ (कोकीन) अथवा चिकित्सकीय दशा ;। मप्रत्यक्ष शरीरिक प्रभावों के कारण नहीं उत्पन्न होती है।

15.6.2.2 पैरानोयया या स्थिर व्यमोही के कारण

पैरानोयया की स्थिति में व्यक्ति मुख्य रूप से मनोवैज्ञानिक कारणों से ही पहुंचता है लेकिन कुछ जैविक कारण भी इसके लिए उत्तरदायी हैं अतः पैरानोयया के कारणों को हम निम्न प्रकार से समझ सकते हैं-

- 1- अहम संगठन का रूप विकृत होना - व्यक्ति में पैरानोयया के लक्षण अहम संगठन के विकृत रूप होने के कारण उत्पन्न होते हैं। जब एक बालक जीवन की विषम परिस्थितियों के कारण निरन्तर मानसिक तनाव व दबाव में रहने लगता है तो उसमें घृणा की भावना जन्म लेने लगती है तथा बालक के विश्वास में कमी होने लगती है। तब बालक किसी भी व्यक्ति पर विश्वास करने में कमी होने लगती है। तब बालक किसी भी व्यक्ति पर विश्वास नहीं कर पाता जिससे उसके मन में विचार आते रहते हैं कि अन्य लोग हानि पहुंचा सकते हैं। परिणामस्वरूप व्यक्ति का व्यक्तित्व रूग्ण बन जाता है तथा आगे चलकर उसमें पैरानोयया के लक्षण उत्पन्न होने लगते हैं।
- 2- विकृत मानसिक स्थिति ; - कई बार ऐसा होता है कि व्यक्ति के व्यक्तित्व का निर्विरोध विकास नहीं हो पाता परिणामस्वरूप उसे सम्पर्क में आने वाले व्यक्तियों के दुर्व्यवहार के कारण उत्पन्न विरोध व क्रोध की भावना को दबाना पड़ता है जिससे उसके अहम ; में विकृति आ जाती है व्यक्ति विकृत मानसिक स्थिति में पहुंच जाता है जिससे वह तनावग्रस्त रहने लगता है। व्यक्ति जब तनाव से बचने के लिए विभिन्न व्यामोही का सहारा लेता है तो उसमें पैरानोयया के लक्षण उत्पन्न हो सकते हैं।

- 3- आत्म आसक्ति की प्रवृत्ति ; - किसी बालक में आत्म आसक्ति की प्रवृत्ति तब उत्पन्न होती है जब उसका पालन-पोषण उचित ढंग से नहीं हो पाता । इससे बालक अहम केन्द्रित हो जाता है अतः इस कारण भी पैरानोयया के लक्षण उत्पन्न होने लगते हैं।
- 4- व्यक्ति की अक्षमता ; - पैरानोयया होने का एक कारण व्यक्ति की अक्षमता भी होती है । ऐसा तब होता है जब व्यक्ति अपने बचपन में ही यथार्थता एवं कठिनाइयों का सामना करने की आदत नहीं अपनाता । इससे व्यक्ति को व्यावहारिक क्षेत्र में सफलता प्राप्त नहीं हो सकती ।
- 5- कुंठा की भावना - कई बार किन्हीं कारणों से व्यक्ति में कुंठा उत्पन्न हो जाती है जो आगे चलकर पैरानोयया का कारण बन सकती है।
- 6- अतिरंजित संवेग - अतिरंजित संवेग के कारण भी व्यक्ति में पैरानोयया के लक्षण उत्पन्न होने की संभावना रहती है। मनोवैज्ञानिकों का ऐसा मानना है कि व्यक्ति का मस्तिष्क अतिरंजित संवेगों के कारण असन्तुलित हो जाता है जिससे व्यक्ति में पैरानोयया के लक्षण उत्पन्न हो सकते हैं।
- 7- यौन असमायोजन - इस कारण के सम्बन्ध में मनोवैज्ञानिक फ्रायड ; का मानना है कि कई बार व्यक्ति में तीव्र समलिंगीय यौन इच्छा उत्पन्न होती है जब यह इच्छा व्यक्ति पूर्ण नहीं कर पाता तो प्रतिकरण एवं आरोपण के माध्यम से इस प्रकार की अमान्य इच्छाओं से अपने अहम् ; की रक्षा करने का प्रयास करता है।
- 8- जैविक कारकों का प्रभाव ; - कुछ मनोवैज्ञानिकों की यह मान्यता है कि व्यक्ति में पैरानोयया के लक्षण वंशानुक्रम के कारण भी उत्पन्न होते हैं जबकि इस मत से पर्याप्त पुष्टि नहीं हो पाई है।
- 9- सामाजिक-आर्थिक स्तर ; - जिन व्यक्तियों का सामाजिक तथा आर्थिक स्तर उच्च होता है उनमें पैरानोयया होने की अधिक संभावना पाई जाती है। मनोवैज्ञानिकों द्वारा पैरानोयया के सामाजिक-आर्थिक स्तर (कारण) पर विस्तृत जानकारी नहीं दी गई है।

15.6.2.3 पैरानोयया या स्थिर व्यामोही का उपचार स्थिर व्यामोह (व्यामोही विकृति) के रोगी के उपचार के लिए निम्नलिखित चिकित्सा विधियों का उपयोग किया जा सकता है :-

- 1- मनोविश्लेषणात्मक चिकित्सा ; - यह चिकित्सा इस विश्वास पर आधारित है कि रोगी के लक्षणों के विकसित होने का मुख्य कारण ईगो की कमजोरी है। अतः रोगी के ईगो को फिर से संरचित करके उसको इस हद तक प्रबलित किया जाए कि वह अचेतन इच्छाओं पर फिर से पूर्ण नियंत्रण प्राप्त कर सके। लेकिन, निपूर्ण तथा प्रशिक्षित चिकित्सक ही इसमें सक्षम हो सकता है । इसलिए, व्यावहारिक रूप से यह एक कठिन चिकित्सा विधि है।
- 2- सम्मोहन-विश्लेषण ; - इस विधि में रोगी की अचेतन इच्छाओं का विश्लेषण सम्मोहित अवस्था में किया जाता है और इसी अवस्था में उसके ईगो को सबल बनाने का प्रयास किया जाता है। ईगो के सबल हो जाने पर रोगी के लक्षण दूरे हो जाते हैं। लेकिन, यह विधि भी व्यावहारिक रूप से कठिन है।

- 3- व्यवहार चिकित्सा ; - इस मानसिक रोगी के उपचार के लिए एक प्रभावी विधि व्यवहार चिकित्सा है। इस सन्दर्भ में विमुखता चिकित्सा ; के उपयोग से रोगी को अधिक लाभ होता है ; ज़ेपीमतए 1985द्ध
- 4- समूह चिकित्सा ; - स्थिर व्यामोह के रोगी को समूह चिकित्सा से भी लाभ होता है। इस चिकित्सा से रोगी को स्व-अभिव्यक्ति ; स्वीकृति एवं समर्थन ; दूसरों के निरीक्षण ; तथा दूसरों की समस्याओं से अपनी समस्या को साधारण समझने के अवसर मिलते हैं। इससे रोगी के लक्षणों के विलोपन में मदद मिलती है।
- अतः स्थिर व्यामोह या व्यामोही विकृति के रोगी के उपचार के लिए उपर्युक्त चिकित्सा प्रविधियों का उपयोग आवश्यकता के अनुसार किया जा सकता है। परिवार चिकित्सा तथा समुदास-चिकित्सा का उपयोग भी लाभप्रद होता है।

15.6.3 भावात्मक मनोविकृतियाँ (Affective Disorders):

जिसका सम्बन्ध रोगी के भावात्मक पक्ष (Affective side) से होता है। विकृति भावात्मक पक्ष मुख्य रूप से संवेगात्मक अव्यवस्थाओं से सम्बन्धित होता है। दूसरे शब्दों में उत्साह-विषाद मनोविकृति संवेगात्मक अव्यवस्थाओं का परिणाम है। इस प्रकार के रोग में रोगी में दो विरोधाभासी भावना-तरंगें उत्पन्न होती हैं। उन्माद या उत्साह की स्थिति में रोगी अत्यन्त क्रियाशील, प्रसन्न तथा बहिर्मुखी हो जाता है और विषाद की स्थिति में अत्यन्त दुःखी, उदास तथा अन्तर्मुखी हो जाता है। यह रोग तीन अवस्थाओं में अपना प्रकाशन करता है - 1. उत्साह मनोविकृति 2. विषाद मनोविकृति 3. मिश्रित मनोविकृति।

- I. उत्साह-मनोविकृति (Manic disorder) – उत्साह-अवसाद मनोविकृति दो विरोधाभासी संवेगात्मक अव्यवस्थाओं का परिणाम है। उत्साह को तीव्रता की अव्यवस्थाओं के अनुसार तीन भागों में विभक्त किया जा सकता है- (1) अल्पोत्साह (Hypomania), (2) तीव्र उत्साह (Acute mania) (3) अतितीव्र उत्साह (Delirious mania)।
- (1) अल्पोत्साह (Hypomania) की स्थिति में रोगी में उत्साह की मात्रा बहुत अधिक नहीं होती है। इस स्थिति में वह प्रत्येक बात को मजाक के रूप में लेकर विषयों को बार-बार बदलता है, वह बातचीत के समय दूसरों पर अधिकार जमाना चाहता है, उसकी जो आलोचना करता है उसे वह बेवकूफ समझता है।
- (2) तीव्र उत्साह (Acute mania) की स्थिति में उत्साह की मात्रा बहुत अधिक बढ़ जाती है। वह जोर-जोर से बोलने लगता है, नाचने, गाने तथा दौड़ने लगता है, वह क्षण भर भी शान्त नहीं रह पाता, वह विभ्रम तथा भ्रान्ति का शिकार बन जाता है, विचार व शारीरिक क्रियाओं में तीव्रता आ जाती है तथा वह अपने को ही सर्वेसर्वा समझने लगता है। वह अपने बौद्धिक तथा नैतिक कार्यों पर नियन्त्रण नहीं रख पाता है तथा उसकी विचार अव्यवस्थित हो जाती है।

- (3) अति तीव्र उत्साह (Hyper acutemania or Delirious mania) उत्साह की तीव्रतम स्थिति होती है। इस स्थिति में आकर रोगी पूरी तरह उत्तेजित तथा विभ्रमित हो जाता है। उसकी मनोगामकता अत्यधिक बढ़ जाती है, उसके व्यवहार इतने असंगत हो जाते हैं कि लोग उसे प्रत्यक्ष रूप से 'पागल' कहने लगते हैं। उसकी उत्तेजना इतनी बढ़ जाती है कि वह आक्रामक तथा विध्वंसात्मक कार्य करने लगता है। तोड़-फोड़ तथा मारपीट कर वह पास के लोगों को हानि पहुँचाने लगता है।

II. विषाद या अवसाद-मनोविकृतियाँ (**Depressive Disorder**) – मनो- अवसाद की स्थिति में मानसिक रोगी अत्यन्त घोर अवसाद से ग्रसित हो जाते हैं। इस रोग में रोगी अत्यन्त उदास, दुखी तथा एकान्तप्रिय हो जाते हैं। उत्साह-अवस्थाओं के समान ही अवसाद की अवस्थाएँ भी तीन स्तरों की पाई जाती हैं- (1) सरल विषाद (Simple Depression), (2) तीव्र विषाद (Actute Depression) तथा (3) अतितीव्र विषाद (Stuporous Depression)।

- (1) सरल विषाद (Simple Depression) की स्थिति में रोगी की मनोगामक क्रियाओं में उल्लेखनीय मात्रा में कमी आ जाती है। रोगी उदास तथा दुखी रहता है। उसका किसी भी कार्य में मन नहीं लगता है। वह बहुत कम बोलता है तथा अपने चारों ओर निराशा ही निराशा उसे नजर आती है।

- (2) तीव्र विषाद (Actute Depression) की स्थिति में रोगी की मनोगामक क्रियाएँ और भी अधिक कम हो जाती हैं। वह बहुत अधिक दुखी, उदास तथा आत्मकेन्द्रित हो जाता है। वह किसी से मिलना-जुलना पसन्द नहीं करता है। वह प्रायः सोचा करता है कि उसने कोई भारी पाप किया है जिसके कारण सम्पूर्ण विश्व किसी घोर आपत्ति में जाने वाला है।

- (3) अतितीव्र विषाद (Stuporous Depression) अवसाद या उदासीनता की तीव्रतम अवस्था है। इस अवस्था में रोगी की आत्म-ग्लानि अपनी चरम सीमा पर पहुँच जाती है। वह अत्यन्त दुःखी तथा पश्चाताप की भावना से ग्रसित रहता है। फलतः प्रायः आत्महत्या की बात सोचता है। उसमें आत्म से सम्बन्धित विभ्रम तथा भ्रान्ति विकसित हो जाते हैं। वह दुख तथा विभ्रमों में इतना तल्लीन हो जाता है कि उसे अपने निकट के वातावरण का भी बोध नहीं रहता है तथा वह नाम, स्थान तथा घटनाओं को पूरी तरह भूल जाता है।

III. मिश्रित उत्साह-विषाद (**Mixed Manic Depresssion**) – मिश्रित उत्साह विषाद की स्थिति में रोगी में उत्साह तथा विषाद की स्थिति बारी-बारी से आती है। इस स्थिति में रोगी कभी उत्साह-स्थिति के लक्षण प्रकट करता है तथा थोड़ी देर बाद विषाद में डूब जाता है। इस स्थिति में रोगी कभी खिलखिलाकर हँसता, नाचता तथा दौड़ता है, तो दूसरे ही क्षण जोर-जोर से रोने लगता है अथवा विषाद में चला जाता है।

15.6.3.1 भावात्मक मनोविकृति के कारण (Causes of Affective Disorder)

मनोविदलन (Schizophrenia) के समान ही उत्साह-विषाद मनोविकृतियाँ भी जैविक, मनोवैज्ञानिक तथा सामाजिक कारणों से उत्पन्न होती हैं। नीचे इन्हीं तीन कारणों की चर्चा की गई है।

- (i) **जैविक कारण (Biological Factors)** – अनेक शोध कार्यो के परिणामों से स्पष्ट हो चुका है कि उत्साह-विषाद मनोविकृतियाँ जैविक कारणों का परिणाम होती है। समरूप यमजों (Identical Twins) का अध्ययन करने पर कालमैन (Kallmann) के समरूप यमजों में उत्साह-विषाद मनोविकृति की सहसम्बद्धता 16% होती है। इसी प्रकार रेनी (Renni) तथा फाउलर (Fowler) ने निष्कर्ष निकाला कि 63% रोगियों ने यह रोग वंशानुक्रम से प्राप्त किया है। क्रेस्मर (Kretschmer) तथा पावलोव (Pavlov) जैसे मनोवैज्ञानिक उत्साह-विषाद की उत्पत्ति मस्तिष्क क्रियाओं की अव्यवस्था मानते हैं।
- (ii) **मनोवैज्ञानिक कारण (Psychological Factors)** – कुछ व्यक्तित्व सम्बन्धी आयाम भी अधिकांशतः उन्मादी-अवसादी स्थिति के जनन में विशिष्ट भूमिका अदा करते देखे जाते हैं। जो व्यक्ति सामाजिक प्रतिष्ठा तथा सामाजिक अनुमोदन के प्रति अत्यधिक अधीर व आकांक्षी रहते हैं, या फिर, अपनी अपरिपक्वता के कारण अत्यधिक ईश्या व प्रतिस्पर्धा रखने वाले होते हैं, उनको भी कुण्ठित होने पर, या फिर, दूसरे व्यक्तियों की अप्रत्याशित सफलता से प्रायः अति दुखी व अवसादी होते देखा जाता है।
ऐसे ही, व्यावसायिक तथा वैवाहिक जीवन की घोर विफलताएँ, तलाक, प्रियजन की मृत्यु, घोर आत्महीनता, तीव्र ताप, अपराध भावना, संवेगात्मक सम्बन्धों का विच्छेदन व बिछुड़न कुछ मनोवैज्ञानिक दृष्टि से संवेदनशील व्यक्तियों में अवसादी स्थिति के लिए उत्तरदायी होते देखा जाता है।
- (iii) **सामाजिक कारण (Social Factors)** – उत्साह-विषाद मनोविकृतियों के विकास पर मनोविदलन की ही भाँति सामाजिक परिस्थितियों का भी प्रभाव पड़ता है। मनोविदलन के ही समान सरल सामाजिक व्यवस्थाओं में उत्साह-विषाद मनोविकृतियाँ अपेक्षाकृत कम पाई जाती हैं जबकि संघर्षपूर्ण जीवनयुक्त समाजों में यह रोग अधिक पाया जाता है। इसी प्रकार भौतिक रूप से उन्नत समाजों में भी यह रोग अधिक मात्रा में देखने को मिलता है। जिन समाजों में आधुनिक शिक्षा व उद्योगों का विकास अधिक है वहाँ भी यह रोग अधिक होता है। इसी प्रकार, ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में नगरीय क्षेत्रों में उत्साह-विषाद मनोविकृतियाँ अधिक पाई जाती हैं। जिन समाजों में तलाक लेना अधिक सरल तथा प्रचलित है वहाँ भी यह रोग अधिक पाया जाता है।

15.6.3.2 भावात्मक मनोविकृति के उपचार (Treatment of Affective Disorder)

उत्साह-विषाद मनोविकृतियों से पीड़ित रोगियों को विभिन्न प्रकार के प्रशान्तक (Tranquillizers) देना लाभदायक रहता है। प्रशान्तकों के प्रभाव से रोगियों की अतिसक्रियता (Hyper Activation) कम हो जाती है। फलतः वे अधिक उत्साह या उन्माद की स्थिति में नहीं जा पाते हैं। प्रशान्तकों का प्रयोग इस रोग का स्थायी उपचार नहीं है, यह केवल सामयिक शान्ति प्रदान करते हैं। स्थायी उपचार हेतु इन्हें मानसिक अस्पतालों में भर्ती करा देना सदैव ठीक रहता है। जहाँ उन्हें आघात-चिकित्सा (Shock Therapy), सामाजिक चिकित्सा (Socio Therapy) तथा मनोविश्लेषण (Psychoanalysis) की सहायता से स्थायी उपचार दिये जाते हैं। इन रोगियों को तेल की मालिश के बाद गुनगुने जल से स्नान

कराना भी लाभदायक रहता है। इन रोगियों के इलाज के समय यह ध्यान रखना चाहिए कि ये रोगी लम्बे समय तक निष्क्रिय ना रहें, क्योंकि निष्क्रियता की स्थिति में रोगी संवेगात्मक अव्यवस्थाओं की दुनिया में जाकर उत्साह-विषाद का प्रदर्शन कर सकते हैं अतः इन रोगियों को लिखने, पढ़ने, काम करने तथा मनोरंजन की सुविधाएँ बराबर मिलती रहनी चाहिए। यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि इन रोगियों को ऐसे उद्दीपक (Stimulus) प्रदान न किये जायें जिससे की इनको पुनः उत्तेजना हो। इन रोगियों के साथ सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार सदैव लाभदायक रहता है।

अभ्यास प्रश्न - 1

- 1- मनोविकृति का वर्गीकरण _____ तथा _____ में किया जाता है।
- 2- मनोविदलता के मनोवैज्ञानिक कारणों में अन्तर्द्वन्द्व तथा नैराश्य, _____ तथा यौन इच्छाओं का प्रतिगमन है।

अभ्यास प्रश्न - 2

- 1- स्थिर व्यामोह (paranoid) मनोविकृति का एक मुख्य प्रकार है, जिसको स्थिर व्यामोही विकृति (paranoid disorder) तथा _____ भी कहते हैं।
- 2- स्थिर व्यामोह के उपचार के लिए व्यवहार चिकित्सा (Behaviour Therapy) के संदर्भ में _____ चिकित्सा के उपयोग से रोगी को अधिक लाभ होता है।

अभ्यास प्रश्न - 3

- 1- भावात्मक मनोविकृति या उत्साह मनोविकृति रोग तीन अवस्था या भागों में विभक्त किया जा सकता है - (1) _____, (2) _____ (3) _____।
- 2- भावात्मक मनोविकृति के जैविक कारणों में क्रेशमर तथा पावलोव जैसे मनोवैज्ञानिक, भावात्मक मनोविकृति की उत्पत्ति _____ क्रियाओं की अव्यवस्था मानते हैं।

15.7 सारांश

मनोविकृति के रोगियों के बारे में सामान्यता यह बात कही जा सकती है कि केवल एक तिहाई रोगी ही अपने उपचार के लिए चिकित्सालय जाते हैं, शेष रोगी की देखभाल उनके परिवार के सदस्य ही करते हैं। ऐसे रोगियों की औसत आयु लगभग 44 वर्ष है।

मनोविकृति के रोगी का अहं और पराहम् अत्यन्त निर्बल हो जाता है। ऐसे रोगियों का इदम, अहम् और पराहम् (id, ego and super ego) का समन्वय छिन्न-भिन्न हो जाता है।

इस पाठ के अन्तर्गत हमने मनोविकृतियों का वर्गीकरण कर - मनोविदालिता, स्थिर व्यामोही मनोविकृति तथा भावात्मक मनोविकृतियों का विस्तार पूर्वक अध्ययन किया है, उनके लक्षणों, कारणों एवं उपचारों की जानकारी होने से, हम सही तरह की मदद समाज को प्रदान कर सकते हैं।

15.8 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

अभ्यास प्रश्न - 1

- 1- मनोजन्य मनोविकृति, आगिक मनोविकृति
- 2- पारिवारिक स्थितियाँ

अभ्यास प्रश्न - 2

- 1- व्यामोही (delusional disorder)
- 2- विमुखता चिकित्सा (aversive therapy)

अभ्यास प्रश्न - 3

- 1- अल्पोत्साह, तीव्र उत्साह तथा अति तीव्र उत्साह

15.9 संदर्भ ग्रंथ सूची

- विनती आनन्द (2003), “मनोविकृति विज्ञान” शिबली नेशनल स्नातकोत्तर महाविद्यालय, आजमगढ़ (उ.प्र.)।
- एच. के. कपिल (2007), “असामान्य मनोविज्ञान” मनोविज्ञान विभाग, आर. बी. एस. कॉलेज, आगरा।
- नवरत्न हर्षवाल, युनिवर्सिटी पब्लिकेशन्स, जयपुर।
- अरूण कुमार सिंह (2001), “आधुनिक असामान्य मनोविज्ञान” स्नातकोत्तर मनोविज्ञान विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना।
- रामपालसिंह वर्मा, “नैदानिक मनोविज्ञान” जियालाल शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान, अजमेर।
- मुहम्मद सुलेमान (2004), “मनोरोगविज्ञान” स्नातकोत्तर मनोविज्ञान विभाग, कॉलेज ऑफ कामर्स (मगध विश्वविद्यालय, बोध गया) पटना (बिहार)।

15.10 निबंधात्मक प्रश्न

1. मनोविदलता से आप क्या समझते हैं? इसके लक्षण एवं उपाय बताइये।
2. पैरानोयया मनोविकृति क्या है? इसके कारणों का वर्णन कीजिए।
3. मनोविदलता को परिभाषित करें तथा कारणों का वर्णन करें।
4. भावनात्मक मनोविकृति क्या है? इसके उपचारों की व्याख्या करें।
5. मनोविकृति को समझाये तथा उसका वर्गीकरण कीजिए।

इकाई-16

**व्यक्तित्व एवं मनोविकृति विज्ञान: समकालीन
उपागम एवं मनोचिकित्सा:- व्यवहारात्मक,
मनोविश्लेषणात्मक तथा मानवतावादी उपागम
(Personality and Psychopathology:
Contemporary Approaches to therapy: -
Behaviouristic, Psychoanalytic &
humanistic)**

इकाई की रूपरेखा

- 16.1 प्रस्तावना
- 16.2 उद्देश्य
- 16.3 मनोचिकित्सा का अर्थ एवं परिभाषा
 - 16.3.1 मनोचिकित्सा के स्वरूप एवं महत्व
 - 16.3.2 मनोचिकित्सा का उद्देश्य
 - 16.3.3 मनोचिकित्सा के प्रकार
- 16.4 मनोविकृति-विज्ञान के उपागम
 - 16.4.1 मनोविश्लेषणात्मक या मनोगतिक उपागम
 - 16.4.1.1 मनोविश्लेषणात्मक का अर्थ एवं लक्ष्य
 - 16.4.1.2 फ्रयडियन मनोवैश्लेषिक चिकित्सा की प्रविधि
 - 16.4.2 व्यवहारवादी उपागम
 - 16.4.2.1 व्यवहार चिकित्सा का अर्थ एवं स्वरूप
 - 16.4.2.2 व्यवहार चिकित्सा की प्रविधियाँ
 - 16.4.3 मानवतावादी उपागम
 - 16.4.3.1 मानवतावादी चिकित्सा के स्वरूप एवं लक्ष्य
 - 16.4.3.2 मानवतावादी चिकित्सा में परिघटनात्मक मॉडल के तहत चिकित्साओं के प्रकार एवं विधियाँ

- 16.5 सारांश
- 16.6 संदर्भग्रंथसूची
- 16.7 निबंधात्मक प्रश्न

16.1 प्रस्तावना

मनुष्य में जब ज्ञान और विज्ञान का विकास हुआ, उसी समय से मानसिक रोगियों के उपचार की समस्याएँ भी उत्पन्न हुईं। आज का युग एक ऐसा युग है जिसमें जनसंख्या की वृद्धि तीव्र गति से होती जा रही है। संसार का राजनैतिक माहौल, विज्ञान की प्रगति तथा एक-दूसरे से आगे निकल जाने की होड़, ये सभी कारक इस विकरालता एवं जटिलता की तीव्रता को और भी बढ़ा दे रहा है।

असामान्य मनोविज्ञान मानसिक बीमारी का स्वरूप, प्रकार, लक्षण तथा कारण के विषय में अध्ययन करता है, लेकिन मानसिक बीमारी के संबंधमें अधिक से अधिक जानकारी, ज्ञान, नियम एवं सिद्धांत ये सब चिकित्सा के द्वारा ही प्राप्त हुए हैं।

प्रस्तुत इकाई में आप मनोचिकित्सा का अर्थ, परिभाषा, स्वरूप तथा प्रकारों का अध्ययन करेंगे। इसके अलावा मनोविकृति विज्ञान के समकालीन उपागमों तथा चिकित्साओं के बारे में विस्तार पूर्वक अध्ययन करेंगे।

16.2 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने बाद आप -

- मनोचिकित्सा का अर्थ एवं उद्देश्य को बता सकेंगे।
- मनोचिकित्सा के प्रकारों को बता सकेंगे।
- मनोविकृति विज्ञान के उपागमों की जानकारी ले सकेंगे।
- मनोचिकित्साओं का अर्थ एवं लक्ष्यों को बता सकेंगे।
- मनोचिकित्साओं में मनोविश्लेषणात्मक, व्यवहारवादी तथा मानवतावादी चिकित्साओं की प्रविधियों को बता सकेंगे।

16.3 मनोचिकित्सा का अर्थ एवं परिभाषा

मनोचिकित्सा का तात्पर्य ऐसी प्रविधि ; या प्रविधियों से है, जिसका उपयोग करके मानसिक विकृतियों का उपचार किया जाता है।

रेबर तथा रेबर 2001 ने मनोचिकित्सा को परिभाषित करते हुए कहा है कि - “मनोचिकित्सा का तात्पर्य पूर्णतया किसी प्रविधि या प्रक्रिया के उपयोग से है जिसके लघुकारी या रोगहर प्रभाव किसी मानसिक, संवेगात्मक या व्यवहारपरक विकृति पर पड़ते हैं।”

इस परिभाषा के विश्लेषण से मनोचिकित्सा के सम्बन्ध में निम्नलिखित बातें स्पष्ट होती हैं :-

- (i) मनोचिकित्सा एक ऐसी प्रविधि है, जिसके आधार पर मानसिक विकृति, संवेगात्मक विकृति अथवा व्यवहार सम्बन्धी विकृति को कम किया जाता है।

- (ii) मनोचिकित्सा प्रविधि के आधार पर मानसिक विकृति संवेगात्मक विकृति या व्यवहार सम्बन्धी विकृति को दूर किया जाता है।
- (iii) मनोचिकित्सा के माध्यम से कभी मानसिक विकृतियों, संवेगात्मक विकृतियों की गंभीरता में कमी लाई जाती है और कभी इन विकृतियों को पूरी तरह दूर करके रोगमुक्त किया जाता है।

16.3.1 मनोचिकित्सा के स्वरूप एवं महत्व

असामान्य मनोविज्ञान मानसिक बीमारी का स्वरूप, प्रकार, लक्षण तथा कारण के विषय में अध्ययन करता है, लेकिन मानसिक बीमारी के संबंधमें अधिक से अधिक जानकारी, ज्ञान नियम एवं सिद्धांत से सब चिकित्सा के द्वारा ही प्राप्त हुए है। शाकों, जोसेफ, बुअर, लाइवाल्ड तथा फ्रायड ऐसा करते है और इनके सभी नियम उपचार के द्वारा ही प्राप्त हुए है। अतः बिना इनको समझे हम असामान्यता का अध्ययन वैज्ञानिक रूप से नहीं कर सकते है। अतः असामान्य मनोविज्ञान आधारशिला मनोचिकित्सा ही है।

“मनोचिकित्सा एक ऐसा उपाय है जिसके द्वारा मानसिक रोग का उपचार मनोवैज्ञानिक नियम एवं सिद्धांत या दवा से मस्तिष्क को आघात देकर या मस्तिष्क शल्य-चिकित्सा के आधार पर सफल अभियोजन के लिए किसी एक समय में किसी एक उपाय का अनुसरण करते हुए करता है।”

16.3.2 मनोचिकित्सा के उद्देश्यः

मनोचिकित्सा के कुछ निश्चित लक्ष्य या उद्देश्य होते है। इस सन्दर्भ में मुख्य उद्देश्यों का उल्लेख नीचे किया जाता है।

- 1- लक्षणों से छुटकारा पाना - मनोचिकित्सक का मुख्य उद्देश्य रोगी के लक्षणों को दूर करके उसे दुःख से मुक्ति दिलाना है। चिकित्सक यह अच्छी तरह समझता है कि लक्षण रोगी के संघर्ष, निराशा, संवेगात्मक या सामाजिक विसंलुलन का परिणाम मात्र है। अतः इन लक्षणों को दूर करने के लिए रोगी की विभिन्न समस्याओं को वह समझने की कोशिश करता है। फिर विभिन्न प्रविधियों के द्वारा रोगी को इस योग्य बनाने का प्रयास करता है कि वह अपनी समस्याओं को खुद समझ सके तथा उनका निराकरण कर सके।
- 2- प्रसन्न रहने की क्षमता बढ़ाना - कुसमायोजित ; व्यक्तियों में प्रसन्न रहने की क्षमता का पूर्ण या आंशिक अभाव रहता है। ऐसी हालत में मनोचिकित्सा का उद्देश्य यह होता है कि रोगी को इस लायक बना दे कि उसमें आनन्द प्राप्त करने की क्षमता बढ़ जाए और उसका जीवन सुखी बन सके।
- 3- कार्यक्षमता को बढ़ाना - इसका कारण अचेतन संघर्ष तथा प्रवार्तियाँ है। अतः मनोचिकित्सक उनका समाधान करके रोगी को इस योग्य बना देता है कि वह किसी कार्य, या व्यवसाय के द्वारा सामान्य रूप से अपनी जीविका चला सके।
- 4- सामाजिक समायोजन से सहायता करना - कुछ कुसमायोजित ; व्यक्ति ऐसे होते है जो समाज के अन्य सदस्यों को शक की नजर से देखते है। अतः यहाँ मनोचिकित्सा का उद्देश्य यह होता है कि वह ऐसे व्यक्तियों को इस लायक बना दे कि वे भली-भाँति अपने सामाजिक वातावरण में समायोजन कर सके।

- 5- आत्म - सम्मान एवं सुरक्षा की चेतना बढ़ाना - मनोचिकित्सक इस बात की कोशिश करता है कि रोगी अपने आपको असहाय, निकम्मा या दोषी नहीं समझे और न आकस्मिक आपत्ति की चिन्ता करे। उसे समझाया जाता है कि सभी व्यक्तियों के साथ ऐसी समस्याएँ किसी-न-किसी रूप से होती हैं।
- 6- आत्म-स्वीकृति में वृद्धि करना - मनोचिकित्सक के लिए रोगी की आत्म-स्वीकृति में वृद्धि करना भी आवश्यक है। उसे इस योग्य बना दिया जाता है कि आत्म-संस्थापन एवं साहस को स्वीकार करके आगे बढ़ने की वह चेष्टा करे।

16.3.3 मनश्चिकित्सा के प्रकार ;

मनश्चिकित्सा के पाँच प्रमुख सामान्य प्रकार हैं और फिर प्रत्येक के कई उपप्रकार हैं जिनका वर्णन इस प्रकार है -

- (1) मनोगतिकी चिकित्सा - मनोगतिकी चिकित्सा से तात्पर्य एक ऐसे मनोवैज्ञानिक उपचार दृष्टिकोण से होता है जिसमें व्यक्ति या रोगी के व्यक्तित्व की गति पर मनोविश्लेषणात्मक परिप्रेक्ष्य ; में बल डाला जाता है। इस चिकित्सा के तहत पाँच प्रमुख उपप्रकार हैं जो इस प्रकार हैं-
 - (i) फ्रायड का मनोविश्लेषिक चिकित्सा
 - (ii) एडलर का वैयक्तिक चिकित्सा
 - (iii) युंग का विश्लेषण
 - (iv) अहं विश्लेषण
 - (v) संक्षिप्त मनश्चिकित्सा
 - (vi) वस्तु संबंधी चिकित्सा
 - (vii) अन्तवैयक्तिक मनोगत्यात्मक चिकित्सा
- (2) व्यवहार चिकित्सा - व्यवहार चिकित्सा में कुसमायोजी या अपअनुकूलित व्यवहार के जगह पर समायोजी या अनुकूलित व्यवहार ;, स्कीनर तथा वैण्डुरा द्वारा बतलाये गए सिद्धान्तों पर आधारित प्रविधियों द्वारा सीखलाया जाता है।
- (3) संज्ञानात्मक व्यवहार चिकित्सा - इस तरह की चिकित्सा में चिकित्सक रोगी के संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं जैसे - चिन्तन, प्रत्यक्षण, मूल्यांकन तथा आत्म-कथनों को ध्यान में रखते हुए चिकित्सा प्रदान करता है। इसके चार प्रमुख उपप्रकार हैं -
 - (i) रेशलन - इमोटिव चिकित्सा
 - ii) संज्ञानात्मक चिकित्सा
 - (iii) तनाव-टीका चिकित्सा
 - (पअ) बहुआयामी चिकित्सा

(4) मानवतावादी - अनुभवजन्य चिकित्सा - इस चिकित्सा में रोगी की समस्याओं का समाधान उनके भीतर छिपे अन्तःशक्तियों एवं अस्तित्वात्मक पहलुओं के आलोक में की जाती है। इसके अन्तर्गत निम्नांकित तरह के चिकित्सा प्रकारों को रखा गया है -

(i) क्लायंट केन्द्रित चिकित्सा

(ii) अस्तित्वात्मक चिकित्सा

(iii) गेस्टाल्ट चिकित्सा

(iv) लोगो चिकित्सा

(v) नियत भूमिका चिकित्सा

(5) सामूहिक चिकित्सा - सामूहिक चिकित्सा में रोगी का उपचार एक समूह में न कि वैयक्तिक रूप से की जाती है। इसके अन्तर्गत निम्नांकित पाँच प्रकार के चिकित्सा पद्धति को रखा गया है-

(i) मनोनाटक

(ii) पारिवारिक चिकित्सा

(iii) वैवाहिक या युग्म चिकित्सा

(iv) सव्यवहार विश्लेषण

(v) सामूहिक मुठभेड़ चिकित्सा

उपर्युक्त मनोचिकित्सय प्रकारों में हमने मनोगतिकी, व्यवहार तथा मानवतावादी उपागमों तथा चिकित्साओं का इस अध्याय में वर्णन किया है।

16.4 मनोविकृति-विज्ञान के उपागम (Approaches to Psychopathology)

नैदानिक मनोवैज्ञानिकों, मनचिकित्सकों, मनोविश्लेषकों आदि के ध्यान को मनोविकृति-जन्य कारणों ने आकर्षित किया है। ये सभी लोग यह जानने के लिए उत्सुक रहे हैं कि मनोविकृतिजन्य व्यवहार का कारण क्या है? मनोविकृतिजन्य व्यवहार के नैदानिक स्वरूप (clinical picture), जिसमें ऐसे व्यवहारों के लक्षण (symptoms), हेतु विज्ञान (etiology) और उसके उपचार (treatment) को सम्मिलित किया जा सकता है, को समझने के लिए अनेक उपागमों (approaches) का प्रयोग किया गया है। इन उपागमों के माध्यम से मनोविकृतिजन्य व्यवहारों की व्याख्या की जा सकती है।

I. जननिक (उत्पत्तिमूलक) उपागम (Genetic Approach)

इस उपागम को जैविक उपागम (biological approach), चिकित्सकीय उपागम (medical approach) अथवा रोग उपागम (disease approach) की भी संज्ञा दी गयी है। इस उपागम के द्वारा मनोविकृतिजन्य व्यवहार की व्याख्या दो स्तरों पर की जाती है। प्रथम स्तर, मनोविकृतिजन्य व्यवहार का कारण केन्द्रिय तन्त्रिका तन्त्र (Central Nervous System) है जिसमें मनोविकृतिजन्य व्यवहार की विशेषता या तो जन्मजात रूप से पाई जाती है या किसी मस्तिष्कीय विकार (brain pathology) के कारण मनोविकृतिजन्य व्यवहार की उत्पत्ति होती है। द्वितीय स्तर मनोविकृतिजन्य व्यवहार का कारण

जैवरसायनिक प्रक्रियाओं (biochemical process) का असंतुलन (imbalance) है। जब व्यक्ति में जैव रसायनिक प्रक्रियाएँ असंतुलित हो जाती हैं, तब व्यक्ति में मनोविकृतियाँ (mental disorders) पाये जाती हैं।

II. मनोसामाजिक उपागम (Psychosocial Approach)

मनोविकृतिजन्य व्यवहार की व्याख्या करने के लिए मनोसामाजिक उपागम का भी प्रयोग किया गया है। इस उपागम में मनोविकृतिजन्य व्यवहार की व्याख्या व्यक्ति के जीवन की प्रारम्भिक अनुभूतियों (experiences) तथा जीवन के सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं के प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसलिए इसे मनोसामाजिक उपागम (Psychosocial Approach) अथवा मनोसामाजिक प्रारूप (Psychosocial model) अथवा मनोसामाजिक दृष्टिकोण (Psychosocial viewpoint) की संज्ञा दी जाती है। यह उपागम अनेक विचारधाराओं का मिश्रित रूप है जिनमें निम्न विचारधाराओं को प्रमुखता प्रदान की गई है :-

1. मनोगतिक उपागम (Psychodynamic Approach)
2. व्यवहारवादी उपागम (Behaviouristic Approach)
3. संज्ञानात्मक उपागम (Cognitive Approach)
4. मानवतावादी-अस्तत्वात्मक उपागम (Humanistic-Existential Approach)
5. अन्तर्व्यक्तित्व उपागम (Interpersonal Approach)

16.4.1 मनोगतिक उपागम (Psychodynamic Approach)

इस उपागम को मनोविश्लेषणात्मक उपागम (psychoanalytic approach) की भी संज्ञा दी जाती है जिसका प्रतिपादन Freud (1856-1939) ने किया। इस उपागम की पुष्टि Adler (1870-1937) तथा Carl Gustav Jung (1857-1961) ने भी किया है।

मनोविकृतिजन्य व्यवहारों की व्याख्या के लिए अनेक अभिग्रहों (assumptions) को प्रतिपादित किया:-

- (i) Freud ने Id (उपांह/इदम), Ego (अहं) एवं Super ego (पराअहं) को व्यक्तित्व के महत्वपूर्ण उपप्रणाली (subsystem) के रूप में स्वीकार किया है। Freud के अनुसार Id कामुक आवेगों, अचेतन इच्छाओं दमित भावनाओं और प्रणोदनों (drives) का प्रधान स्रोत है। वह व्यक्ति की दमित इच्छाओं और वासनाओं की अभिव्यक्ति के लिए सर्वदा प्रयत्नशील रहता है। इसका सम्बन्ध पाश्चिक इच्छाओं से होता है। Ego संसार की वास्तविकताओं और इदम की इच्छाओं की पूर्ति में मध्यस्थ की भूमिका निभाता है। इसका सम्बन्ध यथार्थ से भी होता है और अचेतन इच्छाओं से भी। Super ego व्यक्ति की अन्तरात्मा है। यह व्यक्तित्व का नैतिक कमाण्डर (moral commander) होता है जो व्यक्ति को सही और गलत निर्णय करने के लिए निर्देश देता है। अतः इसका सम्बन्ध व्यक्ति के नैतिक पक्ष से होता है जिसके कारण व्यक्ति अनैतिक और असामाजिक आचरण से बचता है। इन तीनों व्यक्तित्व उपतन्त्रों (subsystem) में इच्छा पूर्ति के सन्दर्भ में सर्वदा अन्तर्द्वन्द्व विद्यमान रहता है।

- (ii) फ्रायड ने चेतन के अतिरिक्त अचेतन के महत्व को अत्यधिक प्रदर्शित किया है। इनके अनुसार दमित इच्छाओं, कामनाओं, वासनाओं तथा अभिप्रेरकों का भण्डार च्यक्ति का अचेतन मन है। इनके अनुसार च्यक्ति के मनोविकृतिजन्य व्यवहार के लिए उसका अचेतन मन उत्तरदायी है।
- (iii) फ्रायड के मानसिक रोगों के उपचार के लिए मनोविश्लेषणात्मक उपचार पद्धति (psychoanalytic therapy) को विकसित किया जिसे मनोविज्ञान में मील का पत्थर माना जाता है। इसके द्वारा रोगी के अचेतन में दमित अन्तर्द्वन्द्वों की खोज की जाती है और उनके उन्मूलन का प्रयास किया जाता है। इसे कभी-कभी मनोगतिकी चिकित्सा (psychodynamic therapy) की संज्ञा दी जाती है।

16.4.1.1 मनोविश्लेषणात्मक चिकित्सा या मनोगतिक उपागम का अर्थ एवं लक्ष्य

मनोविश्लेषण पद का प्रयोग तीन अर्थों में किया जाता है। पहले अर्थ में मनोविश्लेषण का तात्पर्य मनो विज्ञान का विशिष्ट सिद्धान्त है। इसके अनुसार व्यक्ति के विकास पर प्राथमिक अनुभूतियों का अधिक प्रभाव पड़ता है। इनका मौलिक कारण शैशवावस्था में उत्पन्न मन क वे प्रेरणाएँ एवं इच्छाएँ हैं जिनका स्वरूप गत्यात्मक होता है। दूसरे अर्थों में, मनोविश्लेषण का तात्पर्य मनोविज्ञान की एक प्रविधि है, जिसके द्वारा अचेतन मानसिक क्रियाओं का अध्ययन किया जाता है। इसके द्वारा हम जान पाते हैं कि अचेतन मन में किस प्रकार के विचार या इच्छाएँ रहती हैं और उनका प्रभाव किस प्रकार व्यक्ति पर निरन्तर पड़ता रहता है। तीसरे अर्थ में, मनोविश्लेषण मनोचिकित्सा की एक प्रविधि है। इसके द्वारा मानसिक विकृतियों, विशेषकर मनोस्नायु-विकृतियों का उपचार किया जाता है।

मनोविश्लेषणात्मक उपचार के निम्नांकित तीन मुख्य उद्देश्य हैं -

- (अ) रोगी के समस्यात्मक व्यवहार के कारणों में बौद्धिक एवं सांवेगिक ; सुझ विकसित करना। इस तरह का सुझ रोगी में एक दो मनोविश्लेषणात्मक सत्र में न विकसित होकर कई सत्रों से गुजरने के बाद विकसित होता है।
- (इ) रोगी से सुझ विकसित होने के बाद उस सूझ के आशय के बारे में पता लगाना होता है।
- (ब) धीरे-धीरे रोगी के उपाह तथा पराहं की क्रियाओं पर अहं ; के नियंत्रण को बढ़ाना होता है।

16.4.1.2 फ्रयडियन मनोवैश्लेषिक चिकित्सा

फ्रायड द्वारा प्रतिपादित मनोविश्लेषिक चिकित्सा पर यदि हम ध्यान दे तो पायेंगे कि यह चिकित्सा कुछ खास-खास चरणों में सम्पन्न किया जाता है। इनमें प्रमुख चरण निम्नांकित हैं -

- (1) स्वतंत्र साहचर्य की अवस्था
- (2) प्रतिरोध की अवस्था
- (3) स्वप्न विश्लेषण की अवस्था
- (4) दिन-प्रतिदिन के व्यवहारों की व्याख्या की अवस्था
- (5) स्थानान्तरण की अवस्था
- (6) समापन की अवस्था

इन अवस्थाओं का वर्णन निम्नांकित है -

- (1) स्वतंत्र साहचर्य अवस्था - फ्रायड की चिकित्सा प्रणाली की सबसे पहली अवस्था स्वतंत्र साहचर्य की होती है। रोगी को एक मन्द-प्रकाश कक्ष या कमरा में एक आरामदेह एवं गद्दीदार कोच ;बवंबीद्ध पर लेटा दिया जाता है तथा चिकित्सक रोगी की दृष्टि से ओझल होकर अर्थात् पीछे बैठ जाता है। चिकित्सक रोगी के कुछ देर तक सामान्य ढंग से बातचीत कर एक सौहादर्पूर्ण वातावरण स्थापित कर लेता है और रोगी से यह अनुरोध करता है कि उसके मन में जो कुछ भी आता जाए, उसे वह बिना किसी संकोच के कहता जाए, चाहे वे विचार सार्थक हों या निरर्थक हों, नैतिक हों या अनैतिक हों। रोगी की बातों को चिकित्सक ध्यानपूर्वक सुनता है और यदि कही उसे हिचकिचाहट आदि होती है, तो चिकित्सक या विश्लेषक उसकी मदद करते हैं। इस प्रविधि को स्वतंत्र साहचर्य की विधि कहा जाता है जिसका उद्देश्य रोगी के अचेतन में छिपे अनुभवों, मनोलैंगिक इच्छाओं एवं मानसिक संघर्षों को कुरेदकर अचेतन स्तर पर लाना होता है।
- (2) प्रतिरोध की अवस्था - प्रतिरोध की अवस्था स्वतंत्र साहचर्य की अवस्था के बाद उत्पन्न होती है। रोगी जब अपने मन में आने वाले किसी भी तरह के विचारों को कहकर विश्लेषक को सुनाता है, तो इसी प्रक्रिया में एक ऐसी अवस्था आ जाती है जहाँ वह अपने मन के विचारों को व्यक्त नहीं करना चाहता है और या तो अचानक चुप हो जाता है या कुछ बनावटी बात जान-बुझकर करने लगता है। इस अवस्था को प्रतिरोध की अवस्था कहा जाता है। प्रतिरोध की अवस्था तब उत्पन्न होती है जब रोगी के मन में शर्मनाक एवं चिन्ता उत्पन्न करने वाली बात आ जाती है जिसे वह विश्लेषक को नहीं बतलाना चाहता है। फलस्वरूप वह चुप हो जाता है या उसकी जगह पर कुछ दूसरी बनावटी बातें करने लगता है। विश्लेषक या चिकित्सक इस प्रतिरोध की अवस्था को खत्म करने का प्रयास करता है ताकि चिकित्सा में प्रगति हो सके। प्रतिरोध को खत्म करने के लिए वह सुझाव, सम्मोहन लिखकर विचार व्यक्त करने पेन्टिंग, चित्रांकन आदि का सहारा लेता है।
- (3) स्वप्न-विश्लेषण की अवस्था - रोगी के अचेतन में दमित प्रेरणाओं, बाल्यावस्था की मनोलैंगिक इच्छाएँ ; एवं मानसिक संघर्षों को कुरेदकर चेतन -स्तर पर लाने के लिए विश्लेषक रोगी के स्वप्न का अध्ययन एवं उसका विश्लेषण करता है। फ्रायड के अनुसार स्वप्न में व्यक्ति अपने अचेतन की दमित इच्छाओं की पूर्ति करता है। अतः रोगियों के स्वप्नों के अनुसार स्वप्नों का विश्लेषण करके चिकित्सक उसके अचेतन के संघर्षों एवं चिन्ताओं के बारे में जान पाते हैं।
- (4) दिन-प्रतिदिन के व्यवहारों की व्याख्या - फ्रायड ;थमनकद्ध ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक “दी साइकोपेथोलोजी ऑफ एवरीडे लाईफ में स्पष्टतः यह बतलाया है कि दिन-प्रतिदिन के व्यवहार से भी अचेतन के ढ्ढढ तथा रक्षाओं का पता चलता है। उसी के अनुरूप मनोविश्लेषक रोगी के दिन-प्रतिदिन के सभी तरह के व्यवहारों चाहे वे तुच्छ से तुच्छ ही क्यों न हो, पर ध्यान देने की कोशिश करते हैं तथा उसका भी विश्लेषण करने की कोशिश करते हैं। बोलने की भूलें नामों को भूलना ; लिखने की भूले वस्तुओं को गलत स्थान पर रखना आदि दिन-प्रतिदिन के कुछ ऐसे व्यवहार हैं जिनकी व्याख्या से व्यक्ति के अचेतन ढ्ढढों का अंदाज होता है।

(5) स्थानान्तरण की अवस्था - चिकित्सीय सत्र के दौरान जैसे-जैसे रोगी एवं चिकित्सक के बीच अन्तःक्रिया होते जाती है, दोनों के बीच जटिल एवं सांवेगिक नये संबंध; भी उभर कर सामने जा जाते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि रोगी अक्सर अपने गत जिन्दगी ; में जैसी मनोवृत्ति शिक्षक, माता या पिता या दोनों के प्रति बना रखा होता है, वैसी ही मनोवृत्ति यह चिकित्सक के प्रति विकसित कर लेता है। इसे ही स्थानान्तरण ; की संज्ञा दी जाती है। इस तरह से रोगी विश्लेषक को ही अपनी घृणा अथवा प्रेम दोनों का ही पात्र मान बैठता है और अचेतन में संचित संवेगात्मक एवं भावनात्मक प्रवाहों का उसकी और प्रदर्शन करने लगता है।

स्थानान्तरण के तीन प्रकार होते हैं -

(i) घनात्मक स्थानान्तरण - इसमें रोगी विश्लेषक के प्रति अपने स्नेह एवं प्रेम की प्रतिक्रियाओं को दिखलाता है।

(ii) ऋणात्मक स्थानान्तरण - इसमें रोगी विश्लेषक के प्रति अपनी घृणा एवं संवेगात्मक विलगाव की प्रतिक्रियाओं की अभिव्यक्ति करता है।

(iii) प्रति स्थानान्तरण - इसमें विश्लेषक ही रोगी के प्रति स्नेह, प्रेम एवं संवेगात्मक लगाव दिखाता है।

(6) समापन की अवस्था - चिकित्सा के अन्त में विश्लेषक ; के सफल प्रयास के फलस्वरूप रोगी को अपने संवेगात्मक कठिनाई एवं मानसिक सघर्षों के अचेतन कारणों का एहसास होता है जिससे रोगी में अन्तर्दृष्टि या सूझ का विकास होता है। रोगी में सुझ का विकास हो जाने से उसके आत्म-प्रत्यक्षण सामाजिक प्रत्यक्षण में परिवर्तन आ जाता है।

16.4.2 व्यवहारवादी उपागम (Behaviouristic Approach)

मनोविश्लेषणवादी तकनीकों-युक्त साहचर्य और स्वप्न विश्लेषण से प्राप्त प्रदत्तों को वैज्ञानिकता को व्यवहारवादियों ने चुनौती दी। व्यवहारवाद के संस्थापक J.B. Watson (1878-1958) थे जिन्होंने व्यक्ति के जीवन में अधिगम को विशेष महत्व दिया। इस उपागम/मॉडल के विकास में वाटसन के अतिरिक्त पावलव (1849-1936), थॉर्नडाइक (1874-1949), स्कीन्जर (1904-1989) आदि मनोवैज्ञानिकों का विशेष योगदान रहा है। पावलव ने कुत्ते पर अपने अनुबन्ध सम्बन्धी अध्ययन क्रम में प्रयोगात्मक मनस्ताप (experimental neurosis) का प्रमाण प्राप्त किया।

इस उपागम के समर्थकों का यह मत है कि वांछित तथा सामाजिक व्यवहारों का अधिगम न कर पाने के कारण ही मनोविकृतिजन्य व्यवहार उत्पन्न होता है तथा अनाभियोजित अनुक्रियाओं (unadjusted responses) के कारण असामान्य व्यवहार विकसित होते हैं। व्यवहारवादियों ने अधिगम आधृत परिमार्जन विधि (behavior modification technique) को विकसित किया जिसमें विकर्षणात्मक अनुबन्धन (aversive conditioning), विधेयात्मक पुनर्बलन (positive reinforcement) तथा परिवेशगत दशाओं के निराकरण (removal of environmental conditions) की विधियों का प्रयोग प्रमुखता से मानसिक रोगों के उपचार में किया जाने लगा।

16.4.2.1 व्यवहार चिकित्सा का अर्थ एवं स्वरूप

‘व्यवहार चिकित्सा’ के बदले में कभी-कभी व्यवहार परिमार्जन पद का भी उपयोग किया जाता है। व्यवहार चिकित्सा मनश्चिकित्सा की एक ऐसी प्रविधि है जिसमें मानसिक रोगों का उपचार कुछ ऐसी विधियों से किया जाता है जिसका आधार अनुबंधन के क्षेत्र में विशेषकर पैवलव ; तथा स्कीनर द्वारा तथा संज्ञानात्मक सीखना के क्षेत्र में किये गए प्रमुख सिद्धांत एवं नियम होते हैं। ओल्फ 1969 जो व्यवहार चिकित्सा के जाने-माने समर्थक है, ने व्यवहार चिकित्सा को इस प्रकार परिभाषित किया है, “अपअनुकूलित व्यवहार को परिवर्तित करने के ख्याल से प्रयोगात्मक रूप से स्थापित अधिगम या सीखने के नियमों का उपयोग है। अपअनुकूलित आदतों को कमजोर किया जाता है तथा उनका त्याग किया जाता है, अनुकूलित आदतों की शुरुआत की जाती है तथा मजबूत किया जाता है।”

उक्त परिभाषा से यह स्पष्ट है कि व्यवहार चिकित्सा में अपअनुकूलित व्यवहार के जगह पर अनुकूलित व्यवहार को मजबूत करने की कोशिश की जाती है ताकि व्यक्ति सामान्य व्यवहार ठीक ढंग से करे।

शोधों के आधार पर व्यवहार चिकित्सा के कुछ प्रमुख नियमों ; का प्रतिपादन किया गया है जो इस प्रकार है -

- (i) सामान्य व्यवहार तथा असामान्य व्यवहार में निरंतरता होती है जो यह बतलाता है कि अधिगम या सीखने में जो मौलिक नियम है, वे दोनों तरह के व्यवहार पर लागू होते हैं।
- (ii) व्यवहार चिकित्सा का मुख्य उद्देश्य व्यक्ति द्वारा स्पष्ट रूप से किये गए अपअनुकूलित व्यवहार को परिमार्जित करना होता है। ऐसे व्यवहार से संबंधितसंज्ञान एवं संवेगों पर भी प्रत्यक्ष रूप से ध्यान दिया जाता है।
- (iii) व्यवहार चिकित्सा की जितनी भी प्रविधियाँ हैं, वे प्रयोगात्मक मनोविज्ञान के सैद्धान्तिक मूल तथा आनुभविक तथ्यों पर आधृत हैं।
- (iv) व्यवहार चिकित्सा में रोगी के वर्तमान समस्याओं पर न कि उसके बाल्यावस्था की अनुभूतियों या ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर बल डाला जाता है।

16.4.2.2 व्यवहार चिकित्सा की प्रविधियाँ

व्यवहार चिकित्सा की कई प्रविधियाँ हैं जिनमें निम्नांकित प्रमुख हैं :-

- (i) क्रमबद्ध असंवेदीकरण
- (ii) विरूचि चिकित्सा
- (iii) अन्तःस्फोटात्मक चिकित्सा
- (iv) दृढ़ग्राही चिकित्सा
- (v) संभाव्यता प्रबंधन
- (vi) मॉडलिंग
- (vii) बायोफिडबैक विधि

इन सभी प्रविधियों का वर्णन हम अलग-अलग से करेंगे

(i) क्रमबद्ध असंवेदीकरण

चिकित्सा की कार्यविधि - रोगी को कोच पर लेटने को कहा जाता है। इसके बाद उसे शरीर के विभिन्न पेशियों को व्यवस्थित रूप से सिकोड़ने तथा फैलाने को कहा जाता है। इस तरह के प्रशिक्षण के बाद रोगी को चिकित्सा के बीच घर पर भी पेशियों को सिकोड़ने तथा फैलाने का अभ्यास करने को कहा जाता है। इससे क्रमशः वह अपने पेशियों पर नियन्त्रण कर पाता है और उन्हें इच्छापूर्वक तनावहीनता की स्थिति में ला सकता है तो वह असंवेदीकरण की प्रक्रिया प्रारम्भ करता है।

असंवेदीकरण की अवधि में रोगी को पहले सीखी हुई विधि से तनावहीन बनने को कहा जाता है और उसे कहा जाता है कि जब कभी चिंता या कष्ट का अनुभव करे वह अपनी ऊँगली उठाकर चिकित्सक को सूचित कर दे। उसे तटस्थ दृश्य की कल्पना करने को प्रोत्साहित किया जाता है जो कष्टदायक न हो। चिकित्सक फिर उसे सूची की सबसे कम कष्टदायक एक या दो भयावह परिस्थितियों की कल्पना करने की सलाह देता है। इस तरह प्रथम एक दो सत्र में चिकित्सक यह जानना चाहता है कि रोगी कितनी स्पष्टता से भयावह परिस्थिति की कल्पना कर सकता है और इन परिस्थितियों से सम्बन्धित रोगी के अनुभवों को वह नोट कर लेता है। बाद के सत्रों में रोगी के सामने सूची की सबसे अधिक चिन्ता उत्पन्न करने वाली परिस्थितियों को उस समय तक उपस्थित किया जाता है जब तक कि रोगी कि चिन्ता या भय के लक्षण दूर नहीं हो जाते हैं। उदाहरण - मान लें कि कोई व्यक्ति साँप से डरता है। पहले रोगी को तनावहीन बनाया जाता है। फिर साँप से सम्बन्धित एक सूची बनायी जाती है। पहले सूत्र में रोगी को साँप के सम्बन्ध में लिखी हुई पुस्तक पढ़ने को कहा जाता है। फिर उसी कमरों में रोगी को रहने की बात कही जाती है जिसमें साँप है और अन्त में साँप को पकड़ने के लिए सलाह दी जाती है। यह क्रिया उस समय तक चलती है जबतक कि साँप से वह बिल्कुल डरना छोड़ न दे।

(ii) **विरूचि संबंध प्रत्यावर्तन** भी व्यवहार चिकित्सा का एक आधार है। यह विधि क्लासिकल अनुकूलन के सिद्धांत पर आधारित है। इस विधि के द्वारा उपचार करने के लिए रोगी को दण्ड दिया जाता है। यह दण्ड किसी भी रूप में दिया जा सकता है, लेकिन साधारणतः दण्ड के लिए बिजली के आघात का प्रयोग किया जाता है। बार-बार रोगी को गलत व्यवहार के लिए दण्ड दिया जाता है जिसके कारण रोगी उस गलत कार्य को छोड़ देता है।

(iii) **दृढ़ग्राही प्रशिक्षण** - भी व्यवहार चिकित्सा विधि का एक प्रकार है। इस विधि के द्वारा उपचार करने के लिए चिकित्सा रोगी से बात-चीत के क्रम में उसके रोग के कारणों की जानकारी प्राप्त कर लेता है। जानकारी प्राप्त कर लेने के बाद चिकित्सक कहता है कि यह कोई बीमारी नहीं है। यह एक सामान्य घटना है। ऐसा सभी लोग करते हैं, इस तरह से चिकित्सक उसके अन्दर घर बैठी हीन-भावना को समाप्त कर आत्मबल पैदा करता है। रोगी को वह बतलाता है कि आप इतने शक्तिशाली व्यक्ति हैं कि इस तरह की परिस्थिति का सामना बहुत आसानी से कर सकते हैं। हमने अनेक व्यक्तियों को देखा है जो इस परिस्थिति का सामना बहुत आसानी से कर सकते हैं। हमने अनेक व्यक्तियों को देखा है जो इस परिस्थिति का सामना इतनी जल्दी नहीं कर पाए,

जितनी जल्दी आप कर पाए है और अधिक मात्रा में कर पाए है। वह वास्तविक परिस्थिति में अभियोजित कराने के लिए रोगी को पूर्वाभ्यास ; कराता है और इस तरह से परिस्थिति में अभियोजित करने के लिए इसका सहारा लेकर रोगी को रोग से मुक्त करता है।

(iv) **अंतः स्फोटात्मक तथा फ्लडिंग** - अंतः स्फोटात्मक चिकित्सा तथा फ्लडिंग दो ऐसी प्रविधियां है जो विलोपन के नियम पर आधारित है। इन दोनों तरह की चिकित्सा प्रविधि की मुख्य पूर्वकल्पना यह है कि व्यक्ति किसी उद्दीपन या परिस्थिति के प्रति इसलिए डरते है या चिंतित रहते है क्योंकि वे यह सचमुच में नहीं सीख पाये है कि ऐसे उद्दीपक या परिस्थिति वास्तव में खतरनाक नहीं है। जब उन्हें ऐसी परिस्थिति में या उद्दीपकों के बीच कुछ समय तक लगातार रखा जाता है तो, वे धीरे-धीरे यह सीख लेते है कि उनकी चिंता या डर निराधार है। इस तरह से उपयुक्त पुनर्बलन ; के अभाव में उनकी चिंता या डर धीरे-धीरे विलोपित हो जाती है।

(v) **दृढ़ग्राही चिकित्सा या प्रशिक्षण** . इसका उपयोग उन व्यक्तियों के उपचार करने के लिए किया जाता है जिन्हे अनुबंधित चिंता अनुक्रियाओं के कारण अन्य लोगों के साथ अन्तवैयक्तिक संबंध; कायम करने में असमर्थता महसूस होती है।

दृढ़ग्राही चिकित्सा में ऐसे लोगों को दूसरों पर प्रभाव डालने का प्रशिक्षण देकर आत्म-सम्मान को ऊंचा उठाया जाता है। दूसरे शब्दों में, ऐसे लोगों में निश्चयात्मकता के गुण को मजबूत किया जाता है। निश्चयात्मकता से तात्पर्य अपनी भावनाओं की इस ढंग से अभिव्यक्ति करने से होता है कि उससे दूसरों के अधिकार तथा मनोभाव को किसी प्रकार का कोई ठेस न लगे।

(vi) **संभाव्यता प्रबंधन ;** - संभाव्यता प्रबंधन एक ऐसा सामान्य पद है जिसके अन्तर्गत उन सभी चिकित्सीय प्रविधियों को रखा जाता है जो क्रियाप्रसूत अनुबंधन के नियमों का उपयोग करते हुए व्यक्ति के व्यवहार में परिवर्तन, परिणामों ;ब्रवदेमुनमदबमेद्ध को नियंत्रित करके किया जाता है। 'संभाव्यता' शब्द से इस और इशारा होता है कि विशेष परिणाम (जैसे पुरस्कार या दंड) व्यक्ति के सामने तभी उपस्थित किया जाता है जब उसके द्वारा सिर्फ उस व्यवहार को किया जाता है जिसे मजबूत करना है या कमजोर करना है।

संभाव्यता प्रबंधन के तहत कई चिकित्सा प्रविधियों को रखा गया है जिनमें निम्नांकित छह प्रमुख है-

(i) शेपिंग

(ii) समय वहिर्गामी

(iii) संभाव्यता अनुबन्ध

(iv) अनुक्रिया लागत

(v) प्रीमैक नियम

(vi) सांकेतिकव्यवस्था

(vii) **मॉडलिंग ;** - जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है, मॉडलिंग एक ऐसी प्रविधि है जो प्रेक्षणात्मक सीखना पर आधारित है। इस प्रविधि में दूसरे व्यक्ति जैसे - माता-पिता या चिकित्सक को रोगी एक खास

व्यवहार करते देखता है तथा साथ-ही-साथ उस व्यवहार से मिलने वाले परिणामों से भी अवगत होता है। इस तरह के प्रेक्षण के आधार पर रोगी खुद भी वैसा ही व्यवहार करना धीरे-धीरे सीख लेता है।

मॉडलिंग की सफलता इस बात पर आधृत होता है कि रोगी मॉडल तथा उसके व्यवहार को कितना अधिक ध्यान देकर देखता है तथा उसे महत्वपूर्ण समझकर उसके व्यवहार करने की इच्छा व्यक्त करने की कोशिश करता है। अक्सर देखा गया है कि रोगी मॉडल के व्यवहार को मात्र एक नाटक समझकर उसकी उपेक्षा करता है। ऐसी समझने वाले रोगियों के उपचार में मॉडलिंग बहुत प्रभावकारी सिद्ध नहीं होता है।

(viii) **वायोफीडबैक विधि** ; - वायोफीडबैक एक ऐसी व्यवहार चिकित्सा है जिसे निटीजिल तथा उनके सहयोगियों 1991दू ने संभाव्यतों प्रबंधन का ही एक अनोखा प्रारूप माना है। व्यक्ति जब अपने आंतरिक एवं स्वायत्त अनुक्रियाओं का नियंत्रण व्यवहारपरक विधियों से करता है, तो इसे वायोफीडबैक कहा जाता है। इस प्रविधि में विशेष वैद्युत उपकरण के सहारे रोगी को अपनी शारीरिक क्रियाओं के बारे में सूचना प्रदान की जाती है। ऐसी शारीरिक क्रियाओं में मूलतः अनैच्छिक क्रियाओं जैसे हृदय की गति, रक्त चाप, त्वचा का तापक्रम, मस्तिष्कीय तरंग तथा अन्य संबंधितकार्य जिनका संचालन मूलतः स्वायत्त तंत्रिका तंत्र से होता है, प्रधान होते हैं। इन अनैच्छिक क्रियाओं में परिवर्तन लाने का प्रशिक्षण देकर रोगी को कुसमायोजित व्यवहार को दूर करके उसकी जगह पर समायोजित व्यवहार को सीखलाया जाता है। वायोफीडबैक विधि द्वारा उपचार करने में निम्नांकित चरण सम्मिलित होते हैं -

- (i) रोगी को उस शारीरिक अनुक्रिया जिसमें परिवर्तन लाना है, को मॉनीटर विशेष वैद्युत उपकरण द्वारा किया जाता है।
- (ii) उपकरण द्वारा सूचनाओं को श्रवण या दृश्य संकेतों के रूप में परिवर्तित कर उसे रोगी के सामने रखा जाता है।
- (iii) रोगी उस संकेत में परिवर्तन अपनी शारीरिक क्रियाओं में परिवर्तन करके करता है।

16.4.3 मानवतावादी-अस्तित्वात्मक उपागम (Humanistic-Existential Approach)

मानवतावादी मनोवैज्ञानिकों ने व्यक्तिवादिता (individuality) को महत्व दिया है जिसका तात्पर्य है कि वे व्यक्ति की विशिष्ट विशेषताओं को मुख्य मानते हैं। इस प्रकार अस्तित्वावादी भी व्यक्ति की अद्वितीयता (uniqueness) मूल्यों के अर्जन (quest for values), अर्थ की प्राप्ति, आत्मनिर्देशन और आत्मपूर्ति की स्वतंत्रता (freedom for self-direction and self fulfillment) आदि को अधिक महत्व देते हैं। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि दोनों उपागमों में व्यक्ति की प्रवृत्तियों पर अत्यधिक बल दिया गया है। परन्तु व्यक्ति में पाई जाने वाली प्रवृत्तियाँ व्यक्ति के असामान्य (मनोविकृतजन्य) व्यवहार का कारण बनती हैं।

मानवतावादी उपागम के समर्थकों का मत है कि :-

- (i) अत्यधिक मनोरचनाओं के प्रयोग से व्यक्ति यथार्थ से हट जाता है और उसमें असामान्यता आ जाती है।

- (ii) प्रतिकूल दशाओं में किया गया अधिगम दोषयुक्त होता है जिससे व्यक्ति में असामान्यता के लक्षण पाये जाते हैं।

16.4.3.1 मानवतावादी चिकित्सा के स्वरूप एवं लक्ष्य (Nature and Goals of Humanistic Therapy)

मानवतावादी चिकित्सा एक सूझ-केन्द्रित (insight-focused) चिकित्सा है जो इस बात की पूर्वकल्पना करता है कि किसी भी असामान्य व्यवहार का उपचार व्यक्ति की आवश्यकता तथा प्रेरणा (motivation) के स्तर में वृद्धि करके की जा सकती है। इसे मनश्चिकित्सा के परिघटनात्मक मॉडल (phenomenological model) के तहत रखा गया है तथा इस तरह की चिकित्सा को कुछ विशेषज्ञों द्वारा मानवतावादी-अस्तित्ववात्मक चिकित्सा (Humanistic-Existential therapy) भी कहा जाता है।

मानवतावादी चिकित्सा के लक्ष्य को इस प्रकार उल्लिखित किया जा सकता है-

- (i) इस चिकित्सा में क्लायंट को एक व्यक्ति के रूप में वर्द्धित करने पर पर्याप्त बल डाला जाता है। इसमें चिकित्सक क्लायंट या रोगी को अपने अनोखे अन्तःशक्ति (potential) को पहचानने एवं उस तक पहुँचने में मदद करते हैं।
- (ii) इस चिकित्सा में क्लायंट तथा चिकित्सक के बीच के संबंध को एक प्रधान कारक माना जाता है जिसके सहारे वर्द्धन (growth) होती है। यह एक वास्तविक अन्तर्व्यक्तित्व संबंध होता है जो क्लायंट में ऐसे मानवीय अनुभूतियों को उत्पन्न करता है जो अपने आप क्लायंट में वर्द्धन लाता है।
- (iii) इस तरह की चिकित्सा की सारभूत कल्पना यह होती है कि क्लायंट की बीती अनुभूतियों को परिवर्तित नहीं किया जा सकता है तथा वह क्लायंट के भविष्य के लिये उतना महत्त्वपूर्ण नहीं होता है।

16.4.3.2 मानवतावादी चिकित्सा में परिघटनात्मक मॉडल के तहत चिकित्साओं के प्रकार एवं विधियाँ (Types and Methods of Humanistic therapies on the basis of Phenomenological model)

उक्त तथ्यों के अनुरूप परिघटनात्मक मॉडल (Phenomenological model) में रोगियों का उपचार किया जाता है। इस मॉडल के तहत निम्नांकित चिकित्सा को मुख्य रूप से रखा गया है-

- (i) क्लायंट केन्द्रित चिकित्सा (Client-centered therapy)
- (ii) गेस्टाल्ट चिकित्सा (Gestalt therapy)
- (iii) लोगोचिकित्सा (Logotherapy)
- (iv) अस्तित्ववादी चिकित्सा (Existential therapy)

इन सभी का वर्णन :-

(i) क्लायंट-केन्द्रित चिकित्सा (Client-Centered Therapy)

इस चिकित्सा का प्रतिपादन कार्ल रोजर्स (Carl Rogers) द्वारा 1940 के दशक में किया गया। रोजर्स ने अपनी चिकित्सा विधि में रोगी के लिए क्लायंट (client) तथा चिकित्सक (therapist) के लिए सलाहकार (counselor) शब्द का प्रयोग किया।

क्लायंट-केन्द्रित चिकित्सा का उद्देश्य क्लायंट में ऐसी नयी अनुभूति पैदा करना होता है जिससे वर्द्धन प्रक्रिया का पुनर्चलन (restart) हो सके। इसके लिए चिकित्सक को इस प्रकार व्यवहार करना पड़ता है-

- (i) चिकित्सा प्रक्रिया में चिकित्सक क्लायंट की इच्छाओं एवं भावनाओं के प्रति इस ढंग से अनुक्रिया करता है जो योग्य एवं उत्कर्ष (worth) अवस्थाओं की उत्पत्ति में बाधक नहीं होता है।
- (ii) चिकित्सा प्रक्रिया में चिकित्सक क्लायंट को जैसा वह वर्तमान में है, पूर्णतः स्वीकार करता है।
- (iii) चिकित्सा प्रक्रिया में चिकित्सक क्लायंट को एक व्यक्ति के रूप में स्वीकार कर कार्य करता है।

उक्त तथ्यों के अनुरूप इस चिकित्सा में एक ऐसी अन्तर्व्यक्तित्व संबंध (interpersonal relationship) को उत्पन्न किया जाता है जिसका उपयोग व्यक्तिगत वर्द्धन (personal growth) के लिये क्लायंट आगे करता है।

- (ii) गेस्टाल्ट चिकित्सा (Gestalt Therapy) - गेस्टाल्ट चिकित्सा का प्रतिपादन फ्रेडेरिक एस. (फ्रिज) पल्स (Frederich S. (Fritz) Perls, 1967, 1970) द्वारा किया गया है। 'गेस्टाल्ट' (Gestalt) पद का अर्थ होता है - संपूर्ण (whole)। गेस्टाल्ट चिकित्सा मन तथा शरीर की एकता (unity) पर बल डालता है।

गेस्टाल्ट चिकित्सा का मुख्य लक्ष्य रोगी के वर्द्धन की रूकी प्रक्रिया को फिर स चालू करना होता है। इस लक्ष्य की प्राप्ति निम्नांकित दो तरह से की जाती है-

- (i) रोगी को उन भावों से अवगत कराने जो उनके व्यक्तित्व के प्रमुख हिस्सा हैं, परंतु जिसे उसने ठीक से नहीं समझने के कारण अलग रखा था।
- (ii) रोगी को उन भावों एवं मूल्यों (values) से अवगत कराया जाता है जिसे वे यह समझते हैं कि उनके व्यक्तित्व का यथार्थ हिस्सा है जबकि सच्चाई यह है कि व्यक्ति ने उन्हें दूसरे लोगों से लिया है।

इस तरह से गेस्टाल्ट चिकित्सा में रोगी या क्लायंट को आत्मन् (self) के उन यथार्थ पहलुओं को पुनः ग्रहण करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। गेस्टाल्ट चिकित्सा में वर्तमान अनुभूतियों पर बल डाला जाता है न कि दमित आवेगों या स्मृतियों की प्राप्ति पर तथा भविष्य के बारे में अनुमान लगाने की अनुभूतियों पर।

(iii) लोगोचिकित्सा (Logotherapy)

लोगोचिकित्सा की प्रविधि विक्टर फ्रैक्ल (Victor Frankl, 1963, 1965, 1967) द्वारा विकसित की गई है। चिकित्सा की यह विधि अस्तित्वात्मक सिद्धान्तों पर आधारित है। अतः कुछ लोगों ने इसे अस्तित्वात्मक चिकित्सा (existential therapy) का ही एक भाग माना है।

लोगो चिकित्सा (logotherapy) में 'लोगो' (logo) से तात्पर्य 'अर्थ' (meaning) से होता है। अतः इसे शाब्दिक भाषा में अर्थ पर आधारित चिकित्सा (therapy of meaning) कहा गया है। इस तरह की चिकित्सा में व्यक्ति की जिंदगी में अर्थहीनता के भाव से उत्पन्न होने वाली समस्याओं एवं चिन्ताओं को दूर करने की कोशिश की जाती है। दूसरे शब्दों में, इस तरह की चिकित्सा का संबंध व्यक्ति के अस्तित्वादी समस्याओं (existential problems) को दूर करना होता है क्योंकि ऐसी समस्याएँ आध्यात्मिक (spiritual) एवं मनोवैज्ञानिक तथ्य उत्पन्न करती है। इस तरह की चिकित्सा में रोगी के गत जिन्दगी की ऐतिहासिक पुनर्संरचना पर बल न डालकर उसके समकालीन आध्यात्मिक समस्याओं और उसके भविष्य या आगे के आशय (implications) को समझने पर बल डाला जाता है।

(iv) अस्तित्वादी चिकित्सा (Existential therapy)-

इस चिकित्सा विधि के प्रमुख समर्थक विन्सवैंगर (Biswanger, 1942) तथा मे, एन्जल एवं एलेनवर्गर (May, Angel & Ellenberger, 1958) हैं। यद्यपि इस चिकित्सा विधि में रोगी के उपचार या चिकित्सा में कोई निश्चित कार्य-विधि (procedure) तो अपनायी नहीं जाती है परंतु इसमें प्रत्येक व्यक्ति की वैयक्तिकता (uniqueness) तथा उनके मूल्यों एवं भावों (feelings) को समझकर रोगी के स्वस्थकर अस्तित्व के लिए एक माहौल तैयार किया जाता है। यद्यपि अस्तित्वाद (existentialism) में व्यक्ति के स्वतंत्र इच्छाओं (free will) तथा उत्तरदायित्व (responsibility) पर अधिक बल डाला जाता है, इसमें उन चिन्ताओं को भी महत्वपूर्ण माना गया है जिसे व्यक्ति अपनी जिन्दगी में मुख्य पसंद या चयन (choice) करने में अनुभव करता है। ऐसे पसन्द या चयन को अस्तित्वादी चयन (existential choice) कहा जाता है। ऐसे चयन पर व्यक्ति का अस्तित्व निर्भर करता है।

अस्तित्वादी चिकित्सा के प्रमुख लक्ष्य (goal) निम्नांकित हैं-

- (i) अस्तित्वादी चिकित्सक रोगी या क्लायंट को एक खुला एवं स्नेहपूर्ण वातावरण में अपने आप को दूसरों से संबंधित करने की पर्याप्त प्रेरणा देता है ताकि रोगी की यह चिन्ता दूर हो सके कि वह अकेला है।
- (ii) अस्तित्वादी चिकित्सा का लक्ष्य रोगी या क्लायंट में वर्द्धन तथा उचित चयन के लिये छिपी अन्तःशक्ति (potential) से उसे अवगत कराना है।

16.5 सारांश

नैदानिक मनोवैज्ञानिकों, मनचिकित्सकों, मनोविश्लेषकों आदि के ध्यान को मनोविकृति-जन्य कारणों ने आकर्षित किया है। सभी लोग यह जानने के प्रति उत्सुक रहे हैं कि मनोविकृतिजन्य व्यवहार क्या है? मनोविकृतिजन्य व्यवहार के नैदानिक स्वरूप (clinical picture), जिसमें ऐसे व्यवहारों के लक्षण (symptoms), हेतु विज्ञान (etiology) और उसके उपचार (treatment) को सम्मिलित किया जा सकता है, को समझने के लिए अनेक उपागमों (approaches) का प्रयोग किया गया है।

इस इकाई में तीन उपागमों तथा चिकित्साओं का वर्णन किया है, मनोविश्लेषणात्मक - उपचार पद्धति जिसमें फ्रायड के अनुसार रोगी के अचेतन में दमित अन्तर्द्वन्द्वों की खोज की जाती है और उनके उन्मूलन का प्रयास किया जाता है। व्यवहारवादी-उपचार पद्धति में मनोविकृतिजन्य व्यवहार तथा चिन्ता (anxiety), डर (fear) आदि का अधिगम पावलोयिन अनुबन्धन द्वारा किया जाता है।

मानवतावादी-उपचार पद्धति में मनोवैज्ञानिकों ने व्यक्तिवादी (individuality) को महत्व दिया है, कि वे व्यक्ति की विशिष्ट विशेषताओं को मुख्य मानते हैं।

इस प्रकार इस अध्याय में इन सभी प्रविधियों का वर्णन किया गया है।

16.6 संदर्भ ग्रंथ सूची

- मुहम्मद सुलेमान (2005), “मनोरोगविज्ञान” मगध विश्वविद्यालय, बोध गया पटना (बिहार)।
- एच. के. कपिल (2007), “असामान्य मनोविज्ञान” मनोविज्ञान विभाग, आर. बी. एस. कॉलेज, आगरा।
- अरूण कुमार सिंह (2001), “आधुनिक असामान्य मनोविज्ञान” स्नातकोत्तर मनोविज्ञान विभाग, पटना विश्वविद्यालय, (बिहार)।
- विनती आनन्द (2003), “मनोविकृति विज्ञान” शिबली नेशनल स्नातकोत्तर महाविद्यालय, आजमगढ़ (उ.प्र.)।
- रामचन्द्र सिंह (1999), “असामान्य मनोविज्ञान एवं आधुनिक जीवन” स्नातकोत्तर मनोविज्ञान विभाग, महाराजा कॉलेज, आरा, बिहार।
- नवरत्न हर्षवाल, “असामान्य मनोविज्ञान” युनिवर्सिटी पब्लिकेशन्स, जयपुर।
- रामपालसिंह वर्मा, “नैदानिक मनोविज्ञान” जियालाल शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान, अजमेर।

16.7 निबन्धात्मक प्रश्न

1. मनोचिकित्सा क्या है? इसके उद्देश्यों का वर्णन करें।
2. मनोविश्लेषण एक चिकित्सा विधि है, इस पर एक निबंध लिखें।
3. व्यवहार चिकित्सा की विभिन्न प्रविधियों का वर्णन करें।
4. मनोविकृति-विज्ञान के उपागमों के दो भागों का वर्णन करें।
5. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखें-
 - (v) निश्चयात्मता चिकित्सा
 - (ब) मनोशल्य चिकित्सा
 - (स) बायोफीडबैक प्रविधि
 - (द) मॉडलिंग।